राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

[सम्मान्य सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

आचार्य श्री विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार, जयपुर

ग्रन्थाङ्क ५३

राजस्थानी-साहित्य-संग्रह

भाग ३

(पांच राजस्थानी प्रेमवार्ताओं का सङ्कलन)

प्रकाशक

राजस्थान राज्य संस्थापित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE, JODHPUR

जोधपुर (राजस्थान)

१९६६ ई०

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यत अखिलभारतीय तथा विशेषत. राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

सम्मान्य सचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर,
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी,
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई, प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क ५३

राजस्थानी-साहित्य-संग्रह

भाग ३

(पांच राजस्थानी प्रेमवार्ताओं का सङ्कलन)

प्रकाशक

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

१९६६ ई०

राजस्थानी-साहित्य-संग्रह

भाग ३

पांच राजस्थानी प्रेमवार्त्ताओं का सङ्कलन

(विस्तृत भूमिका एव परिशिष्टादि सहित)

सम्पादक

गोस्वामिश्रीलक्ष्मीनारायण दीक्षित

कैटलॉगिङ्ग एसिस्टेन्ट

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जो ध पु र

भूमिका–लेखक

डॉ० नारायणसिंह भाटी, एम ए., (पी-एच.डी), एल-एल. बी.

सञ्चालक,

राजस्थानी शोध सस्थान, जोधपुर

प्रकाशनकर्ता

राजस्थान राज्याज्ञानुसार

सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान

जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाव्द २०२२ | भारतराष्ट्रीय शकाव्द १८८७ | खिस्ताव्द १९६६

प्रथमावृत्ति १००० | मूल्य– ५.५०

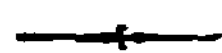
मुद्रक– हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर

अनुक्रम

वार्ताएं

परिशिष्ट

संचालकीय वक्तव्य



राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान की ओर से 'राजस्थान पुरातन ग्रथ-माला' के अन्तर्गत "राजस्थानी साहित्य-संग्रह-श्रेणी" में राजस्थानी भाषा की प्रतिनिधि स्वरूप उत्तम प्रकार की कृतियो को यथायोग्य प्रकाशित करने का हमारा सकल्प ग्रंथमाला आरम्भ करने के समय से ही बना हुआ है। तदनुसार राजस्थानी साहित्य-संग्रह के दो भाग पहले प्रकाशित हो चुके हैं।

राजस्थानी साहित्य-संग्रह, भाग १ का प्रकाशन १९५७ ई० मे हुआ, जिसका सम्पादन राजस्थानी भाषा और साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो० नरोत्तमदास स्वामी, एम० ए०, विद्यामहोदधि ने किया। इस सकलन मे: १–खीची गंगेव नींवावतरो दो-पहरो, २–रामदास वैरावतरी आखड़ीरी वात और ३–राजान राउतरो वात-वणाव नामक तीन राजस्थानी वर्णनात्मक वार्ताओ का प्रकाशन हुआ। इसी भाग के प्रारम्भ मे राजस्थानी गद्य के विषय मे श्री अगरचन्द नाहटा के दो निबन्ध प्रकाशित किये गये हैं जिनसे पाठकों को राजस्थानी कथा-साहित्य और राजस्थानी गद्यात्मक रचनाओ के वैशिष्ट्य का परिचय प्राप्त होता है।

राजस्थानी साहित्य-सग्रह, भाग २ का प्रकाशन १९६० ई० मे हुआ जिसका सम्पादन प्रतिष्ठान के प्रवर शोध-सहायक डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम०ए०, साहित्यरत्न ने किया है। इस पुस्तक मे वीरतासबधी तीन राजस्थानी कथाएँ हैं. १–देवजी बगड़ावतारी वात, २–प्रतापसिंघ म्होकमसिंघरी वात और ३–वीरमदे सोनीगरारी वात। तीनो ही वार्त्ताओ के साथ सम्पादक ने शब्दार्थ और टिप्पणियां दी हैं जिनसे पाठको को वार्ताओ के अर्थग्रहण मे सुविधा रहती है। साथ ही, सम्पादकीय भूमिका और परिशिष्ट मे परिश्रमपूर्वक प्राचीन भारतीय कथा-साहित्य, राजस्थानी कथा-साहित्य और प्रत्येक वार्ता से सबधित ऐतिहासिक और साहित्यिक-सौन्दर्य को प्रकट कर राजस्थानी कथा-साहित्य-विषयक जानकारी को अग्रेसृत किया गया गया है। उक्त दोनो ही प्रकाशनो मे राजस्थानी भाषा की प्राचीन कथाओ और गद्य के उत्कृष्ट उदाहरण सकलित हैं।

इसी शृंखला मे प्रस्तुत राजस्थानी साहित्य-सग्रह, भाग ३, ग्रथमाला के ५३वे ग्रथ के रूप मे पाठको को प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमे पांच राजस्थानी

प्रेमाख्यानो का सकलन है । इसका सम्पादन प्रतिष्ठान के कैटलॉगिंग सहायक गोस्वामिश्रीलक्ष्मीनारायण दीक्षित ने किया है ।

इन वार्ताओ का गद्य प्रसगानुसार पद्यांशो से अनुप्राणित है । राजस्थानी कथाएँ बडे परिमाण मे कही, सुनी और लिखी जाती रही हैं । ऐसी अवस्था मे कथा कहने वाले और लिपिकर्त्ता इन कथाओ मे अपनी रुचि के अनुसार परिवर्तन कर गद्यांश में पद्य जोडते रहे हैं । इस प्रकार राजस्थानी गद्य-कथाओ का परिष्कार और विस्तार होता ही रहा है ।

इस सकलन की कथाओ मे ऐतिहासिक पुट देने का भी प्रयत्न किया गया है किन्तु ऐतिहासिक तिथिक्रम की कसौटी पर वे तथ्य पूरे खरे नहीं उतरते हैं ।

सम्पादकीय वक्तव्य में अनेक तथ्यो का अध्ययनपूर्वक उद्‌घाटन किया गया है । इस पुस्तक को अधिकाधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया गया है । इस प्रकार पुस्तक को उत्तमतया सम्पादित करने के लिये श्रीगोस्वामीजी बधाई के पात्र हैं ।

राजस्थानी शोध सस्थान, जोधपुर के सचालक डॉ० नारायणसिंह भाटी ने अपनी विद्वत्तापूर्ण भूमिका मे राजस्थानी गद्य की प्राचीनता, राजस्थानी गद्य के विभिन्न रूप, राजस्थानी कथाओ का वर्गीकरण, प्रेम-कथाओ की सामान्य विशेपताएँ और वार्तागत विपयो का याथातथ्य निरूपण किया है जिससे इस प्रकाशन की उपादेयता अध्ययनार्थियो के लिये सवर्द्धित हो गई है । तदर्थ हम डॉ० भाटी को हार्दिक धन्यवाद देते हैं । साथ ही रिसालू की वार्ता से सम्बद्ध "रिसाळू री ओरत" शीर्षक चित्र उपलब्ध करने के लिये भी हम उनके आभारी हैं ।

इस पुस्तक के प्रकाशन-व्यय का एक अश "आधुनिक भारतीय भाषा विकास योजना (राजस्थानी)" के अन्तर्गत शिक्षा-मत्रालय केन्द्रीय सरकार, दिल्ली से प्राप्त हुआ है । इस सहयोग के लिये हम प्रतिष्ठान की ओर से उक्त मत्रालय के प्रति हार्दिक आभार प्रदर्शित करते हैं ।

आशा है कि इत पूर्व प्रकाशित इस प्रकार के साहित्य-सग्रह के दो भागो के समान यह तीसरा भाग भी विद्वानो को पठनीय एव उपयुक्त प्रतीत होगा ।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
शाखा कार्यालय,
चित्तौडगढ
दिनाक १-१-६६

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सचालक

भूमिका

राजस्थानी गद्य की प्राचीनता—

प्राचीन राजस्थानी साहित्य गद्य एव पद्य दोनो ही दृष्टियो से समृद्ध है। राजस्थानी पद्य की विपुलता एव उसकी विशेषता सर्वत्र ज्ञात है। परन्तु राजस्थानी गद्य की अपनी विशेषता और उसकी प्राचीनता के सम्बन्ध मे बहुत कम जानकारी अभी प्रकाश मे आ पाई है। राजस्थान की विभिन्न साहित्यिक सस्थाओ के सग्रह तथा अधुनातन शोध-कार्य के आधार पर यह कहा जा सकता है कि राजस्थानी भाषा मे जो प्राचीनतम गद्य मिलता है वह 'असमिया' आदि एक दो भारतीय भाषाओ को छोड कर अन्य भाषाओ मे नही मिलता। राजस्थानी गद्य के प्राचीनतम उदाहरण स्फुट रूप मे ही प्राप्त होते हैं परन्तु उनसे गद्य की बनावट और भाषा के रूप का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रकार के स्फुट उदाहरण शिलालेखो व ताम्रपत्रो मे देखे जा सकते हैं। राजस्थानी गद्य का प्राचीनतम उदाहरण बीकानेर के नाथूसर गाँव के एक शिलालेख मे अकित है जिसका समय स० १२८० दिया गया है।[1] अत १३वी शताब्दी मे राजस्थानी पद्य के साथ-साथ गद्य का निर्माण भी प्रारभ हो गया था, यद्यपि उस पर अपभ्रश की छाप विद्यमान है।

१३वी शताब्दी के पश्चात गद्य का निरन्तर विकास होता रहा है। सग्रामसिंह द्वारा रचित बालशिक्षा व्याकरण[2] मे प्राप्य राजस्थानी गद्य के उदाहरणो को देख कर यह कहा जा सकता है कि आचार्यो का ध्यान भी राजस्थानी गद्य की ओर १४ वी शताब्दी मे आकृष्ट होने लग गया था। प्राचीन गद्य के निर्माण मे जैन-विद्वानो का विशेष योग हमे नि सकोच भाव से स्वीकार करना होगा, क्योकि

---

१ – वरदा, वर्ष ४, अक ३, पृ० ३।

२ – इस ग्रथ का रचनाकाल १३३६ है।

उन्होंने न केवल स्वतन्त्र रूप मे वरन् बालावबोध, टव्बा तथा टीकाम्रो म्रादि के रूप मे भी राजस्थानी गद्य को अपनाया है तथा उसको पनपाने की चेष्टा की है। इन दृष्टि से तरुणप्रभसूरि द्वारा स० १४११ मे लिखित पडावश्यक बालावबोध यहा उल्लेखनीय है। १५ वी शताब्दी के अतिम चरण तक आते आते राजस्थानी गद्य मे काफी निखार आ गया था और अपने साहित्यिक रूप मे उसकी स्थापना हो चुकी थी जिसके प्रमाण मे माणिक्यसुदरसूरि द्वारा स० १४७८ मे रचित वाग्विलास के गद्यांशो को देखा जा सकता है, जिनमे गद्य के परिमार्जन के साथ-साथ लयात्मकता, अनुप्रास एव वर्णन-कौशल की खूबी परिलक्षित होती है।

भाषा के क्रमिक विकास की दृष्टि मे १५ वी शताब्दी की रचनाम्रो मे अपभ्रंश का प्रभाव विद्यमान है क्योकि उनमे 'अउ' तथा 'अइ' के प्रयोग प्राय सर्वत्र मिलते है। इस समय की जैनेतर गद्य रचना अचलदास खीची री वचनिका मे भी इस प्रकार के उदाहरण देखे जा सकते है। शिवदास गाडण रचित यह रचना गागरोन के खीची शासक अचलदास तथा माडण के बादशाह के युद्ध को लेकर लिखी गई है जिसमे राजस्थानी गद्य का प्रयोग बहुलता के साथ हुआ है। उसकी अभिव्यक्तिगत विशिष्टता के आधार पर डा० टेसीटरी ने उसे प्राचीन राजस्थानी का एक क्लासिकल मॉडल कह कर उसके महत्त्व को प्रदर्शित किया है। यहा यह भी उल्लेखनीय है कि मुस्लिम सभ्यता के सपर्क के कारण राजस्थानी मे अरबी और फारसी के शब्दो का आगमन भी इस समय हो गया था। राजस्थानी गद्य के क्रमिक विकास का इतिहास प्रस्तुत करना यहा अपेक्षित नहीं है। अत यहा केवल यह बताना पर्याप्त होगा कि १५ वी शताब्दी के अन्त तक आते-आते राजस्थानी गद्य का परिमार्जन एक सीमा तक हो गया था और १६ वी शताब्दी मे तो वह अनेक साहित्यिक विधाम्रो का माध्यम बनने लगा। १७ वी और १८ वी शताब्दी मे गद्य रचनाम्रो का निर्माण ज्ञात तथा अज्ञात लेखको द्वारा विपुल परिमाण मे हुआ है जिसका अधिकाश भाग प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो मे आज भी सुरक्षित है।

- - -

वालावबोध, वार्तिक ग्रादि हैं । ग्रागे चल कर ग्ररवी फारसी ग्रादि भापाग्रो के महत्त्वपूर्ण ग्रथो का उलथा भी राजस्थानी गद्य मे किया गया है, जिसकी सामग्री हस्तलिखित ग्रथो मे हजारो पृष्ठो मे लिपिवद्ध हुई है। यह कहने की ग्रावश्यकता नही कि रामायण, महाभारत, पुराण, हितोपदेश ग्रादि को पूर्ण रूप मे ग्रथवा ग्राशिक रूप मे इस भापा के माध्यम से जनता तक पहुचाने का सफल प्रयास भी ग्रनेक विद्वानो ने किया है । स्थानीय रियासतो के प्राचीन राजकीय रेकार्डो को देखने से यह प्रमाणित होता है कि वडे लवे ग्रर्से तक इस प्रकार के काम-काज राजस्थानी भापा मे ही होते थे । ग्रत समाज की व्यावहारिक भाषा राजस्थानी ही थी ।

कथाग्रो का वर्गीकरण—

उपरोक्त गद्य के विभिन्न रूपो मे वात ग्रौर ख्यात का विशिष्ट महत्त्व है । मुहता नैणसी, दयालदास तथा वाकीदास की ख्याते वहुचर्चित हैं, परन्तु इन ख्यातो के ग्रतिरिक्त राठोडो, भाटियो, कछवाहो, चौहानो ग्रादि को ख्यातें भी उपलव्ध है, जिनका महत्त्व जितना साहित्यिक दृष्टि से नही है, उतना ऐतिहासिक दृष्टि से है । साहित्यिक दृष्टि मे वात-साहित्य एक ऐसी विधा है जिस पर सही माने मे राजस्थानी भापा गौरव का ग्रनुभव कर सकती है । ग्रन्य भारतीय भापाग्रो मे इतना विपय-वैविध्य तथा कलात्मकता से परिपूर्ण कथासाहित्य उपलव्घ होना कठिन है । इस कथासाहित्य को मोटे तौर पर पाच भागो मे विभक्त किया जा सकता है—

१ ऐतिहासिक २ ग्रर्ध ऐतिहासिक ३ पौराणिक
४ धार्मिक ५ सामाजिक

ऐतिहासिक कथाये प्राय ख्यातो के ग्राशिक रूप मे तथा स्फुट रूप मे उपलव्ध होती है, जो कि प्राचीन शासको, योद्धाग्रो तथा विशिष्ट प्रकार के चरित्र-नायकों को लेकर लिखी गई हैं । ग्रर्ध ऐतिहासिक कथाग्रो मे कल्पना तथा जन-श्रुतियो का वाहुल्य है, परन्तु वे ऐतिहासिक कथाग्रो के ग्रपेक्षा ग्रधिक कलात्मक है । इस प्रकार की कथाग्रो की वहुलता का मुख्य कारण मुगलकाल मे यहाँ घटित होने वाली ग्रनेकानेक घटनाएँ हैं जिनमे यहाँ के शासक वर्ग के शौर्य तथा कर्त्तव्यपरायणता व स्वामीभक्ति ग्रादि गुणो का वखान किया गया है । प्रत्येक साहित्य प्राचीन सामाजिक-परम्पराग्रो एव मान्यताग्रो मे प्रभावित ही नही होता, ग्रपितु ग्रपने पूर्वजो की थाती के रूप मे वहुत कुछ उनमे ग्रहण करने ग्रौर उस पर मनन करने को लालायित रहता है । ग्रत ग्रनेक पौराणिक प्रसग

उन्होने न केवल स्वतन्त्र रूप मे वरन् बालावबोध, टब्बा तथा टीकाश्रो आदि के रूप मे भी राजस्थानी गद्य को अपनाया है तथा उसको पनपाने की चेष्टा की है। इस दृष्टि से तरुणप्रभसूरि द्वारा स० १४११ मे लिखित षडावश्यक बालावबोध यहा उल्लेखनीय है। १५ वी शताब्दी के अतिम चरण तक आते आते राजस्थानी गद्य मे काफी निखार आ गया था और अपने साहित्यिक रूप मे उसकी स्थापना हो चुकी थी जिसके प्रमाण मे माणिक्यसुदरसूरि द्वारा स० १४७८ मे रचित वाग्विलास के गद्यांशो को देखा जा सकता है, जिनमे गद्य के परिमार्जन के साथ-साथ लयात्मकता, अनुप्रास एव वर्णन-कौशल की खूबी परिलक्षित होती है।

भाषा के क्रमिक विकास की दृष्टि मे १५ वी शताब्दी की रचनाश्रो मे अपभ्रश का प्रभाव विद्यमान है क्योकि उनमे 'अउ' तथा 'अइ' के प्रयोग प्राय सर्वत्र मिलते हैं। इस समय की जैनेतर गद्य रचना अचलदास खीची री वचनिका मे भी इस प्रकार के उदाहरण देखे जा सकते हैं। शिवदास गाडण रचित यह रचना गागरोन के खीची शासक अचलदास तथा माडण के बादशाह के युद्ध को लेकर लिखी गई है जिसमे राजस्थानी गद्य का प्रयोग बहुलता के साथ हुआ है। उसकी अभिव्यक्तिगत विशिष्टता के आधार पर डा० टेसीटरी ने उसे प्राचीन राजस्थानी का एक क्लासिकल मॉडल कह कर उसके महत्त्व को प्रदर्शित किया है। यहा यह भी उल्लेखनीय है कि मुस्लिम सभ्यता के सपर्क के कारण राजस्थानी मे अरबी और फारसी के शब्दो का आगमन भी इस समय हो गया था। राजस्थानी गद्य के क्रमिक विकास का इतिहास प्रस्तुत करना यहा अपेक्षित नही है। अत यहा केवल यह बताना पर्याप्त होगा कि १५ वी शताब्दी के अन्त तक आते-आते राजस्थानी गद्य का परिमार्जन एक सीमा तक हो गया था और १६ वी शताब्दी मे तो वह अनेक साहित्यिक विधाश्रो का माध्यम बनने लगा। १७ वी और १८ वी शताब्दी मे गद्य रचनाश्रो का निर्माण ज्ञात तथा अज्ञात लेखको द्वारा विपुल परिमाण मे हुआ है जिसका अधिकाश भाग प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो मे आज भी सुरक्षित है।

गद्य के विभिन्न रूप—

वालावबोध, वार्तिक आदि हैं। आगे चल कर अरबी फारसी आदि भाषाओं के महत्त्वपूर्ण ग्रथो का उलथा भी राजस्थानी गद्य मे किया गया है, जिसकी सामग्री हस्तलिखित ग्रथो मे हजारो पृष्ठो मे लिपिबद्ध हुई है। यह कहने की आवश्यकता नही कि रामायण, महाभारत, पुराण, हितोपदेश आदि को पूर्ण रूप मे अथवा आशिक रूप मे इस भाषा के माध्यम से जनता तक पहुचाने का सफल प्रयास भी अनेक विद्वानो ने किया है। स्थानीय रियासतो के प्राचीन राजकीय रेकार्डो को देखने से यह प्रमाणित होता है कि बडे लबे अर्से तक इस प्रकार के काम-काज राजस्थानी भाषा मे ही होते थे। अत समाज की व्यावहारिक भाषा राजस्थानी ही थी।

कथाओ का वर्गीकरण—

उपरोक्त गद्य के विभिन्न रूपो मे वात और ख्यात का विशिष्ट महत्त्व है। मुहता नैणसी, दयालदास तथा बाकीदास की ख्याते बहुचर्चित हैं, परन्तु इन ख्यातो के अतिरिक्त राठोडो, भाटियो, कछवाहो, चौहानो आदि को ख्यातें भी उपलब्ध है, जिनका महत्त्व जितना साहित्यिक दृष्टि से नही है, उतना ऐतिहासिक दृष्टि से है। साहित्यिक दृष्टि से वात-साहित्य एक ऐसी विधा है जिस पर सही माने मे राजस्थानी भाषा गौरव का अनुभव कर सकती है। अन्य भारतीय भाषाओ मे इतना विषय-वैविध्य तथा कलात्मकता से परिपूर्ण कथासाहित्य उपलब्ध होना कठिन है। इस कथासाहित्य को मोटे तौर पर पाच भागो मे विभक्त किया जा सकता है—

१ ऐतिहासिक २ अर्ध ऐतिहासिक ३ पौराणिक
४ धार्मिक ५ सामाजिक

ऐतिहासिक कथाये प्राय ख्यातो के आशिक रूप मे तथा स्फुट रूप मे उपलब्ध होती हैं, जो कि प्राचीन शासको, योद्धाओ तथा विशिष्ट प्रकार के चरित्र-नायको को लेकर लिखी गई हैं। अर्ध ऐतिहासिक कथाओ मे कल्पना तथा जन-श्रुतियो का बाहुल्य है, परन्तु वे ऐतिहासिक कथाओ के अपेक्षा अधिक कलात्मक है। इस प्रकार की कथाओ की बहुलता का मुख्य कारण मुगलकाल मे यहाँ घटित होने वाली अनेकानेक घटनाएँ हैं जिनमे यहाँ के शासक वर्ग के शौर्य तथा कर्त्तव्यपरायणता व स्वामीभक्ति आदि गुणो का बखान किया गया है। प्रत्येक साहित्य प्राचीन सामाजिक-परम्पराओ एव मान्यताओ से प्रभावित ही नही होता, अपितु अपने पूर्वजो की थाती के रूप मे बहुत कुछ उनसे ग्रहण करने और उस पर मनन करने को लालायित रहता है। अत अनेक पौराणिक प्रसग

सहज ही मे राजस्थानी कथा-साहित्य की निधि बन गये हैं। हमारी सस्कृति मे धर्म का स्थान सर्वोपरि रहता आया है, वह केवल देवालय तक ही सीमित न रह कर हमारे आचार-विचार और दैनिक नित्य कर्म को बराबर प्रभावित करता रहा है। ऐसी स्थिति मे धर्म की शिक्षा-दीक्षा तथा उसके अनुकूल आच-रण की प्रवृति डालने के उद्देश्य से विभिन्न धार्मिक-सम्प्रदायो ने अनेकानेक कथाओ का प्रचलन हमारे समाज मे किया। जिनमे एकादशी, शिवमहात्म्य, शनिश्चरजी, सत्यनारायणजी आदि की कथायें प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त प्राय प्रत्येक धार्मिक पर्व से सम्बन्धित कथाये आज भी सुनने को मिल सकती है।

सामाजिक कथाओ के अतर्गत नीति, प्रेम और आदर्श-परक कथाओ को रखा जा सकता है। प्राचीनकाल मे जब शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध आधुनिक ढग का-सा सभव नही था, तब इस प्रकार की कथाये ज्ञान-वर्द्धन तथा समाज की व्यावहारिक जानकारी का महत्त्वपूर्ण साधन थी। इनमे प्रेम-कथाओ की सख्या सबसे अधिक है जो कई उद्देश्यो से लिखी जाती रही हैं। इन कथाओ पर सर्वागीण रूप से विचार करने पर यह प्रतीत होता है कि इनमे अनेक तत्त्व विभिन्न रूपो मे गुम्फित होकर मानव-भावनाओ तथा तत्कालीन समाज की मनोदशाओ के अकन के साथ-साथ उनकी मान्यताओ पर सुन्दर प्रकाश डालते हैं।

कथाओ के विकास एव प्रचार की प्रक्रिया—

कथाओ की विविधरूपता के साथ-साथ उनके विकास एव प्रचार मे समाज के कुछ वर्गो का विशिष्ट योगदान रहा है जिसकी चर्चा यहाँ करना इसलिए आवश्यक है कि उसे जाने बिना इन कथाओ के उद्देश्य एव मर्म को समझना सहज नही है। इस दृष्टि से जैन विद्वानो, राजघरानो और चारण व भाटो का योग यहाँ उल्लेखनीय है।

जैन—जैन-विद्वानो द्वारा रचित अधिकाश कथा-साहित्य धार्मिक है। वह जैन यतियो और श्रावको द्वारा विकसित एव प्रचारित होकर उनके धर्मावलबियो मे विशेष प्रतिष्ठित हुआ। कई विद्वानो ने धर्मनिर्पेक्ष कथाओ का भी सर्जन किया। कुछ कथाओ मे लौकिक पक्ष की प्रमुखता है परन्तु उन्होने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उस पर धर्म का आवरण चढा दिया है। कथाओ के निर्माण की दृष्टि से ही नही अपितु उनकी सुरक्षा की दृष्टि से भी जैनियो की सेवाये अविस्मरणीय हैं। उनके नित्यकर्म मे स्वाध्याय एव लेखन आदि नियमित रूप से चलता रहा है जिसके कारण कथाओ के प्रचार एव उनकी सुरक्षा की तरफ

उनका ध्यान निरन्तर बना रहा। आज भी बडे-बडे मदिरो और उपाश्रयो मे इस प्रकार के ग्रथ बहुत बडी सख्या मे सग्रहीत हैं।

राजघराने—जिस काल मे प्रेम, नीति तथा ऐतिहासिक तत्वो को लेकर अधिकाश कथाओ का निर्माण हुआ है, वह काल मुगलसत्ता और सस्कृति से आच्छादित रहा है। आए दिन भू और भामिनी के अतिरिक्त मदिर और गायो के प्रश्न को लेकर युद्ध होना साधारण बात थी। अपने मान और गौरव की रक्षा के लिए वीर पुरुषो की कथाओ का निर्माण एव प्रचलन कर उत्सर्ग की प्रेरणा प्राप्त करना स्वाभाविक ही था। परन्तु इस प्रकार के युद्धो की क्लान्ति और सघर्षमय जीवन मे रस का सचार करना भी आवश्यक था जिसकी पूर्ति के लिए अनेकानेक प्रेम-कथाए बनती रही और अवकाश के क्षणो मे वे उनके लिए मनोरजन के साधन का काम देने मे सफल हुई। राठोड पृथ्वीराज की तरह अनेक राजा जहाँ युद्धकला व काव्यकला दोनो मे निपुण थे, वहाँ महाराजा मानसिंह तथा बहादुरसिंह जैसे शासको ने इन दो कलाओ के अतिरिक्त कथा-निर्माण की कला भी प्राप्त की थी। वैसे शासको का निजी योगदान उतना नही है जितना उनके आश्रय मे रहने वाले साहित्यकारो का है। इस प्रकार की रोमान्टिक कथाओ के प्रचलन के पीछे एक सामाजिक प्रक्रिया भी थी। एक राजघराने से उपहार के रूप मे लिपिबद्ध वातो की सुन्दर पोथिया दूसरे राजघरानो व विद्वानो को पहुँच जाया करती थी। एक घराने की लडकी जब दूसरी जगह व्याही जाती तो वह अपने साथ अपनी मन पसद कई पोथियें ले जाती थी। इस प्रकार यहाँ के रजवाडो मे इनका आदान-प्रदान होता रहता था। आज भी अनेक ठिकानो मे दूसरे स्थानो की लिखी हुई पोथियें उपलब्ध हो जाती हैं। कहना न होगा कि इस प्रकार के आदान-प्रदान मे कथाओ के प्रचार के साथ-साथ उनकी भाषा मे भी परिमार्जन हुआ है।

चारण व भाट—चारण तथा भाटो का सम्बन्ध यहाँ के शासक वर्ग के साथ तो घनिष्ठ रूप मे रहा ही है परन्तु समाज मे भी उनकी मान्यता व स्थान सदा से रहता चला आया है। उनके द्वारा राजस्थान मे साहित्य-रचना भी बड़े परिमाण मे हुई। राज्याश्रय के अतिरिक्त स्वतत्र रूप से भी वे अन्य साहित्य की तरह कथाओ का निर्माण भी करते थे। उनका सम्पर्क प्राय साधारण जनता से अधिक रहता था इसलिए जनता मे इस प्रकार की कथाओ के प्रचलन का श्रेय भी इन लोगो को ही है। दिन भर के कार्य से थक कर शाम के समय मनोरजन के लिए जब लोग हथाई पर बैठते थे तो प्राय कई नो कोई बारहठजी

या रावजी बीच मे आ जमते और लोगो के थोडेसे आग्रह पर बात की भूमिका बननी प्रारम्भ हो जाती थी। इन बातो को कहने की भी एक विशिष्ट कला है जो स्वय कथाओ से कम रोचक नही है। श्रोताओ का ध्यान आकृष्ट करने के लिए भूमिका बाँधी जाती है जिसमे प्रायः बात से सम्बन्धित भौगोलिक वर्णन अथवा देश विशेष की विशेषताओ का वर्णन रहता है। बात मे हुकारे का बडा महत्त्व है। बात कहने वाला पहले से ही श्रोताओ को सतर्क रहने तथा बात मे दिलचस्पी लेने को यह कह कर आगाह करता है कि 'बात मे हुकारो और फोज मे नगारो'। सब की जिज्ञासा को अपनी ओर केंद्रित कर फिर वह मूल बात पर यह कहता हुआ आता है—तो रामजी भला दिन दे, एक समय री बात, फला नगर मे फला राजा राज करतो हो। आदि २।

प्रेम गाथाओ की सामान्य विशेषतायें—

यह उल्लेख हम पहले कर आये हैं कि कथा-साहित्य मे शृगारपरक कथाओ का विशेष महत्त्व है। यहाँ सम्पादित बातो पर प्रकाश डालने के पहिले इस प्रकार की प्रेम-विषयक वार्ताओ की सामान्य विशेषताओ की ओर सकेत कर देना अनुचित न होगा। इन कथाओ मे प्रेमिका के सौन्दर्य का वर्णन अनेक उपमाओ, रूपको और उत्प्रेक्षाओ के सहारे किया जाता है। वेश-भूषा तथा हाव-भाव का चित्रण भी कथाकारो ने पूर्ण रस लेकर के किया है। जहाँ नायिका की कोमलता, प्रेम-लालसा व अलौकिक सौदर्य का वर्णन किया गया है, वहाँ नायक के शौर्य, शारीरिक गठन, घुड सवारी आदि का भी बखान किया गया है। उसे यथा-स्थान छैल-छबीला व रसिक-शिरोमणि भी सिद्ध किया गया है।

शृगार का सजीव चित्रण प्राय प्रकृति व महलो की साजसज्जा की पृष्ठ-भूमि मे किया गया है। वियोग और सयोग दोनो अवस्थाओ मे नायिका के भावोद्वेलन का वर्णन कही-कही षट्ऋतुओ के प्रभाव के साथ-साथ हुआ है तो कही वसन्त और वर्षा के सहारे। बाग-बगीचे व उद्यानादि उनके मिलन-केद्र के रूप मे वर्णित है। कही-कही प्रकृति के उपकरणो पर प्रेमातुर क्षणो मे मनुष्यो से भी अधिक विश्वास कर उन्हे प्रेम की सचाई के लिए साक्षी रूप मे स्वीकार किया गया है। प्रेम-सन्देशो के आदान-प्रदान के लिए जहाँ डावडियो तथा दूतियो आदि का सहयोग उन्हे मिलता रहा है वहाँ मालिन, तम्बोलिन व धोबन आदि ने भी पूरा जोखम उठा कर बडी चतुराई के साथ उनका काम कर दिया है। उनके शुभचिंतको की सख्या यहाँ तक ही सीमित नही है, पाले हुए मृग, सुग्गे व कबूतर भी अपने कर्त्तव्य से विमुख होना नही जानते। अश्व व ऊँट आदि

ने नायक को निश्चित स्थान व समय पर उसकी प्रेमिका से उसे मिलाया ही नही, अपितु सब की आख मे धूल झोककर सुरक्षित स्थान पर भी पहुचा दिया।

स्वजातीय प्रेमी-प्रेमिका के बीच मे जहा घरेलू व्यवधान, प्रेम-तत्त्व को प्रगाढता प्रदान करते हैं वहाँ विजातीय नायक-नायिका के बीच समाज का व्यवधान चित्रित किया गया है। परतु सच्चे प्रेम के सामने दोनो ही प्रकार के व्यवधान अन्तत बालू की दीवार की तरह ढह पडते हैं। नायक-नायिका का मिलन चाहे विधिवत् रूप से विवाह मडप के नीचे न हो, अथवा कुसुम शैया पर निश्चित रूप से पौ फट जाने तक सभोग का आनन्द लेने का अवसर उन्हे भले ही न मिला हो, परन्तु श्मशान की भूमि मे आकर उनके चिरमिलन मे ससार की कोई भी ताकत व्यवधान नही बन सकी। यह अलग बात है कि शिव-पार्वती की किसी प्रेमी-युग्म पर कृपा हो जाय और वे पुनर्जीवित होकर सामाजिक नियमो की पराजय से निर्मित गौरव महल मे फिर से प्रेम-क्रीडा करने लगे।

नायक-नायिका के प्रेम को चरम सीमा तक पहुचाने के लिए अनेक प्रकार के व्यवधानो का वर्णन तो किया ही गया है परन्तु इसके साथ-साथ नायिका के प्रेम को औचित्य प्रदान करने के लिए जहाँ च्युत नायक के वृद्धपन तथा कुरूपता, कायरता आदि का हास्यास्पद वर्णन किया गया है वहाँ शौर्य आदि का उत्कर्ष न केवल नायक तक ही सीमित रहा है, वह नायिका के चरित्र मे भी प्रकट किया गया है। कुसुमादपि कोमल सुकुमारी अपने प्रेमी से मिलने के लिए मेघो से आच्छादित तिमिराच्छन्न रात्रि में अपने घर से बाहर निकल पडना साधारण सी बात समझती है और रास्ते मे आने वाले किसी वन्य पशु व दुश्मन की हत्या करने में तनिक भी नही हिचकिचाती है।

प्रेम करना कोई हसी-खेल नही है। इसमें जितने साहस की आवश्यकता है उतनी चतुराई की भी। अनेको बार ऐसी परिस्थितिया आ जाती हैं जिनमे नायक-नायिका का बातचीत करना सभव नही होता, तब सकेतो के सहारे हृदय की मूक-भाषा मे सवाद सपन्न होते हैं। कही परिस्थिति कुछ अनुकूल-सी लगी तो लाक्षणिक काव्य-पद्धति उन्हें सहयोग दे जाती है।

अधिकाश प्रेम-चित्र यौवन के उद्दाम क्षितिज पर चित्रित है। जिनमें काम की लालिमा पर सुखद सभोग के अनेक इन्द्रधनुष तैरते हुये दिखाई देते हैं।

त्रिया मे धूर्ततापूर्ण चरित्रो को चित्रित करने की दृष्टि से लिखी गई कथाओ मे प्राय जादू, टोना, निम्न कोटि की सिद्धिया, भूत-प्रेतो व पाखण्डी

क्षण असह्य हो उठे। दूसरे ही दिन राणा भीम को ज्यो ही पता लगा कि कोई विलक्षण व्यक्ति अपने दलबल सहित सहेलियो की बाडी मे ठहरा हुआ है, तो उन्होने मिलने की इच्छा प्रगट की। जगमदिर मे दोनों का मिलना हुआ। राणा ने जब नमस्कार किया तो पुरोहित ने केवल राम राम कह दिया और आशीर्वाद आदि न दिया। राणा ने क्रुद्ध होकर इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि मै अनमी हू और रघुवश तथा नरवर के शासको के अलावा किसी को नमन नही करता। महाराणा ने उसके अनमीपने के औचित्य को स्वीकार किया परन्तु जब उसने साधारण ब्राह्मण न होकर तलवार के बल पर खेलने वाला योद्धा अपने आपने को कहा और इसी सदर्भ मे परशुराम के द्वारा २१ बार क्षत्रियो का विध्वस करने की बात आई तो फिर बात बढ गई। राणा ने उसके दल-बल को देख लेने की चुनौती तक दे दो। पुरोहित ने अपने डेरे पर लौट कर शिवलाल धाभाई को सारी बात कही। धाभाई ने किसी प्रकार की परवाह न करने को कहा और अपनी सहायता के लिये फौरन अपने पगडी बदल भाई मिवाने के राव बहादुर को चुने हुए योद्धाओ के साथ सहायतार्थ आने के लिये लिखा। राव बहादुर आ पहुचा।

ज्योही तीज का त्योहार आया, पुरोहित अपने साथियो सहित अफीम आदि का सेवन कर तीज का उत्सव देखने पीछोले पर एकत्रित हो गए। उधर हीरा भी अपनी सहेलियो के साथ बन ठन कर वहाँ आ पहुची। सुनिश्चित योजना के अनुसार देखते ही देखते बगसीराम ने हीरा को अपने घोडे पर बिठाया और वहा से निकल पडा। मेले मे भगदड मच गई और शहर मे शोरगुल हो गया। राणा भीम ने पता लगते ही अपनी फौज भेजी। दोनो पक्षो मे घमासान युद्ध हुआ। पुरोहित ने हीरा और उसकी दासी केसर को पहाडी की ओट मे घोडे से उतार दिया और स्वय विपक्षियो पर टूट पडा। काफी समय तक युद्ध होने पर दोनो पक्षो के अनेक योद्वा मारे गये परन्तु विपक्षियो की क्षति अधिक हुई। पुरोहित हीरा को लेकर अपने निवास स्थान लौट गया। अपने सहयोगियो का आभार प्रकट किया और हीरा के सौन्दर्य का निश्शक होकर उपभोग करने लगा। छहो ऋतुओ मे विभिन्न त्यौहारो का आनन्द लूटते हुये अनेकानेक प्रकार की प्रमक्रीडाओ मे रत होकर समय व्यतीत करने लगा।

कथा का वैशिष्ट्य—

यह कथा अनमेल विवाह के दुष्परिणामो को प्रकाश मे लाने की दृष्टि से लिखी गई है। हमारे देश मे अनमेल विवाह की प्रथा काफी लवे समय मे

प्रचलित रही है। राज्य सत्ता, धन सत्ता अथवा घराने के बडप्पन की होड को लेकर प्राय अनमेल विवाह होते रहे हैं। मुगलो मे भी यह प्रथा प्रचलित रही है और उसके दुष्परिणाम भी उन्हे भोगने पडे हैं। जलाल और बूबना की बात इसका उदाहरण है। हीरा जैसी सुन्दरी का विवाह माणिकचन्द जैसे कुरूप व्यक्ति के साथ कर देने से ही हीरा का मन उसके उपयुक्त प्रेमी ढूढने के लिये विकल हो उठता है और सयोग से बगमीराम जैसे सुन्दर और साहसी नवयुवक के सपर्क मे आकर उसे अपना जीवन अर्पण कर देती है।

कथा को रोचक बनाने के लिये लेखक ने स्थान-स्थान पर गद्य व पद्य मे बडे ही सुन्दर वर्णन किये हैं। इस दृष्टि से उदयपुर नगर, बूदी, सहेलियो की बाडी, हीरा का सौदर्य व शृगार, उसके महल की साज-सज्जा, बगसीराम व उसके साथियो का ठाट-बाट तथा प्रेमी युग्म की क्रीडाओ का वर्णन द्रष्टव्य है। कही कही उक्ति-वैचित्र्य भी देखते ही बनता है।

प्रेम की रात प्रेमियो के लिये प्राय. बहुत छोटी हो जाया करती है। प्रथम मिलन की रात ढलने को हुई है उस समय हीरा की मनोवृत्ति का वर्णन लेखक ने सुन्दर सवादात्मक शैली मे किया है। यथा—

वगसीराम कहै छै—परभात हूवो, मदर झालर घटा बजायो।
हीरा कहै छै — बालम, परभात नही, बधाई बाजै छै। अऊत घर पुत्र जायो।
प्रोहित कहै छै — प्यारी, प्रभात हुई, मुरगी बोल रही छै।
हीरा कहै छै — कुकडा मिलाप नही छै।
प्रोहित कहै छै — प्यारी, प्रभात हुवो, चडिया बोलै छै।
हीरा कहै छै — बालम, प्रभाति नही, याका माळा मे सरप डोलै छै।
प्रोहित कहै छै — प्यारी, प्रभात हुवो, चकई चुपकी रही छै।
हीरा कहै छै — बालम, बोल बोल थाकी भई छै।
प्रोहित कहै छै — दीपग की जोति मदी भई छै।
हीरा कहै छै — तेल को पूर नही छै।
वगसीराम कहै छै — सहर को लोग जाग्यो छै।
हीरा कहै छै — कोईक सहर मे चोर लाग्यो छै.
प्यारो कहै छै — प्यारी, हठ न कीज्ये, अब वहुन कर डेरानै हूकम दीज्ये।
(पृष्ठ २६)

सपूर्ण वात मे गद्य का प्रयोग वडी काव्यात्मक शैली के साथ किया गया है। उसमे लय के साथ साथ तुकान्तता भी है, जिससे उसे पढते समय काव्य का सा आनद आता है। इस दृष्टि से एक उदाहरण यहा दिया जाता है—

'हीरा की सहेलिया हसा को डार । अदभुत कवळ वदन सोभा अपार । यूं कवळ की पाषडीया एक बरोबर सोहै । वा सहैलिया मे हीरा परगुरूपी मन मोहै । कीरतिया को भूमकौ तारा मडल की शोभा । आफू की क्यारी पोसाष मन लोभा । केसरिया कसुमल घनबर पाटबर नवरग पोसाष राजै छै । अतर फुलेल केसरि कसतुरी सुगध छाजै छै ।' (पृ० १५)

लेखक व्यग का प्रयोग करने मे भी बडा प्रवीण है । व्यग के सहारे दूल्हा और दुलहिन की अनमेल जोडी का चित्रण बडी ही खूबी के साथ किया गया है, जिसे पढते ही पाठक की सहानुभूति हीरा के साथ हुए बिना नही रहती । हीरा के मन की बात हीरा के मुख से सुनिये—

'सुणि केसरी, असो षावैद पायौ छै । कपूर को भोजन काग नै करायौ छै । गधेडा रै अग पर चदन चढायौ छै । अन्ध कै आगै दरपण दीषायो छै । गूंगं के आगै रगराग करायो छै । नागरवेल को पान पसु नै चबायो छै ।' (पृ. ५)

लेखक ने जहाँ एक ओर परिमार्जित गद्य का प्रयोग किया है वहाँ कविता को भी सुन्दर सृष्टि की है । उसने स्थान-स्थान पर दूहा, सोरठा, गाथा, कुड-लिया, पद्धरी, भमाल, उधोर, चद्रायणा, भुजगप्रयात, छप्पय, त्रोटक, गीत अर्धाली आदि अनेक छदो का सफल प्रयोग किया है । काव्यकला की दृष्टि से कुछ पद्याश यहाँ उल्लेखनीय हैं ।

हीरा की मनोदशा—

हीरा मन आकुल भई, आयो लेष अनथ ।
चात्र हीरा चदसी, केत राहासो कथ ॥ ३१ ॥

फीकै मन फेरा लिया, अतर भई उदास ।
आष मीच रोगी अवस, पीवत नीम प्रकास ॥ ३२ ॥

× ×

हीरा मद आतुर हुई, चित पीतम की चाह ।
विषधर ज्यू चदन बिना, दिल की मिटै न दाह ॥ ४२ ॥

× ×

प्यारी पीव प्रजक पर, ऊलही उर अवलूव ।
मानु चदन वृच्छ मिल, भुकी क नागणि भूव ॥ २१४ ॥

शिकार वर्णन—

> ताता अपार प्राक्रम तुरग, कूदत छबि जावत कुरग ।
> चढि चले प्रोहित राण चग, अत बलवीर जोधार अग ॥
>
> वण सुभट घाट हैमर वणाये, आपेट रमण कीनो उपाये ।
> घमसाण चले घण थाट घेर, बाजत घाव नीसाण भेर ॥
>
> चमकत सेल पाखर प्रचड, दमकत ढाल नीसाण दड ।
> भ्रमकत घोड पुर वरण वज, रमकत गगन मग चढीये रज ॥

× ×

> हलकार प्रोहित कोप कीन, ललकार म्यान तरवार लीन ।
> पेख्यो क गज धरै अनड पय, धायो क बाज चीडकली धवक ॥
>
> अति जोम पीरोहत कर अपार, दमकत तडत बाई दुवार ।
> कटचौ क शीस केहरि कराल, फटचौ क मानु तरबूज फाल ॥ ६९ ॥

(पृष्ठ ९)

युद्ध वर्णन—

> चहुवाण इतै भालो अचल, ऊत राव प्रोहित ऊरडै ।
> वीर हाक-घमच विषम, भुके वदूका सो कड(डै) ॥२६३॥
>
> हणण माच हैमराण गणण घोपा रवै डूगर ।
> पणण वाजया ज पापरा वुज पूरताल धरणधर ।
> ठणण वदूका ठोर गोलिया गिणण गिण गनगत,
> टणण धनम टकार भणण पर तीर भणकत ॥
>
> सिधवा राग समागमण गणण भेर श्रवक वज्ये ।
> धीरवै घाट परचा पडै, विषम थाट भारथ वजे ॥ २६४ ॥

(पृ० ३६)

इस रचना का लेखक अज्ञात है। परन्तु यह घटना राणा भीम के समय की है, इसलिए यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसकी रचना १९ वी शताब्दी के उत्तरार्द्ध मे हुई है । उदयपुर की प्रकृति-सुषमा, सहेलियो की वाडी तथा राणा भीम के ठाट-बाट का वर्णन कवि ने विशेष रस लेकर किया है जिससे वह स्वय उदयपुर का निवासी हो तो कोई आश्चर्य की बात नही, परन्तु उसने पुरोहित वगसीराम के ऐश्वर्य, शौर्य आदि का वर्णन भी उतनी ही दिलचस्पी के साथ किया है और युद्ध मे राणा भीम की राजकीय सेना को उससे हारता हुआ बताया है जिससे यह सम्भावना

अधिक वजन रखती है कि वह बगसीराम के साथियो की मण्डली मे से ही उसका आश्रित कोई कवि रहा होगा।

२ राजा रीसालू री बात

कथा साराश—

एक समय श्रीपुर नगर मे शालिवाहन राजा राज्य करता था। उसके स्वर्गवास होने पर समस्तकुमार गद्दी पर बैठा। उसके सात रानिया थी, किन्तु पुत्र एक के भी नही था। इस कारण राजा चिन्तित रहता था।

एक बार वह सूअर की शिकार खेलने के लिए निकला। शिकार का पीछा करते करते रात पड गई। उसने वही जगल मे ही ठहरने का निश्चय किया। वहा से कुछ दूर एक पहाडी पर आग जलती हुई दिखाई दी। राजा ने इसका पता लगाने को कहा, तब अन्य लोगो की तो हिम्मत नही पडी किन्तु एक गडरिये ने हिम्मत की और वह पता लगा कर आया कि वहा कोई सन्यासी तपस्या कर रहा है। जब राजा स्वय वहा पहुचा तो उसने देखा कि गुरु गोरखनाथ आखे बद किये समाधि मे लीन हैं। राजा बहुत देर तक एक पैर पर हाथ जोड कर खडा रहा, गुरु गोरखनाथ की कृपा हुई। वर मागने को कहा। राजा ने पुत्र मागा। गोरखनाथ ने अपनी गुलाब की छडी उसे दो और उसे फेंक कर आम प्राप्त करने को कहा तथा वह आम किसी रानी को खिला देने से उसके पुत्र पैदा होगा, जिसका नाम रिसालू रखा जाये ऐसा आदेश देकर राजा को विदा किया।

राजा ने ऐसा ही किया। कुवर तो उत्पन्न हो गया परन्तु ज्योतिषियो ने एक आशका खडी करदी। उन्होने अपनी विद्या के आधार पर पुत्र का जन्म माता-पिता के लिए घातक बताया जिसके निदान-स्वरूप बारह वर्ष तक पुत्र का मुह वे न देखे, इस प्रकार की व्यवस्था की गई। राजकुमार अलग से धाय मा के द्वारा पाला पोसा जाने लगा।

समय बीतता गया। जब वह ग्यारह वर्ष का हुवा तो आनदपुर के राजा मान और उज्जैनी के राजा भोज की ओर से कुवर के शादी के नारियल आये। कुवर अभी एक साल तक बाहर नही निकल सकता था और नारियल वापिस करना उनकी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल था। इसलिये कुवर का खाडा मगा कर नारियल स्वीकार किये गये और राजकुमारियो का विवाह खाडे के साथ कर दिया गया।

राजकुमार ने जब धाय मा की लडकी से बाहर निकलने के प्रतिबंध की जानकारी चाही तो उसने सच्ची-सच्ची बात कह दी। वह बडा दु खित व कुपित हुआ तथा राजा की अनुपस्थिति मे दरीखाने मे आ बैठा। ज्योतिषी महाराज से उसकी झडप होना स्वाभाविक ही था। राजा को पता लगते ही राजकुमार को देश निकाला मिल गया। वह काले घोडे पर सवार होकर वहा से विदा हुआ।

अनेक प्रकार की बाधाओ को झेलता हुआ वह एक नदी किनारे पहुचा तो उसने अनेको मुड पडे हुये देखे। उन्हे हँसता देख कर वह और भी चकित हो गया। जब उसने इसका भेद जानना चाहा तो उसे पता लगा कि यहा के अगरजीत नामक राजा की राजकुमारी को प्राप्त करने के लोभ मे इनकी यह गति हुई है। वह स्वय अगरजीत के महल तक जा पहुचा और बाजी खेलने का प्रस्ताव रखा। चौपड बिछाई गई। पहले तो राजकुमार हारता गया, उसने अपनी सारी वस्तुये खो दी। आखरी दाव सिर को बाजी पर लगा देने का था। दोनो मे निश्चित लिखा पढी हुई। कुवर ने इस बार अपनी लघु लाघवी विद्या के सहारे गोरखनाथजी के पासे वहा प्रस्तुत कर दिये। कुवर जीत गया। राजा सिर देने के पहिले बडा दु खित होकर रानियो से मिलने गया तो राणियो ने राजा को बचाने की युक्ति से राजकुमारी का विवाह रिसालू के साथ कर देने का प्रस्ताव रखा। रिसालू ने उदारतापूर्वक प्रस्ताव को स्वीकार किया, किन्तु जिस लडकी की मनोकामना के फलस्वरूप अनेक राजकुमारो के मुड धराशायी हो गये थे, उसे पापिनी समझ कर उसके साथ विवाह करने से इन्कार कर दिया। दूसरी लडकी केवल दस माह की थी परन्तु रिसालू उसके साथ विवाह करने को राजी हो गया। विवाह के पश्चात् लडकी को अपने साथ ले वहा से विदा हुआ। लघु लाघवी कला से उसने एक हिरण और सुग्गा मुग्गो के जोडे को अपनी परिचर्या के लिये पकड लिया।

वहा से ज्यो ही एक नगर मे पहुचा तो पता लगा कि नगर उजाड पडा है। किसी राक्षस के आतक से वह नगर खाली हो गया था। रिसालू ने उसे पुन आबाद करने की दृष्टि से उस राक्षस का वध करने की ठानी। गोरखनाथजी से प्राप्त तलवार से उसने राक्षस को खतम कर दिया। वहा से भागे हुये लोग पुनः आकर बस गये। नगर पुन आबाद हो गया। समय बीतते-बीतते राजकुमारी ग्यारह वर्ष की हुई।

रिसालू का हिरण बाग मे चरने का बडा शौकीन था। जलाल पाटण के बादशाह हटमन का बाग पास ही पडता था। वहा वह प्राय. रात को पहुच

अधिक वजन रखती है कि वह बगसीराम के साथियो की मण्डली मे से ही उसका आश्रित कोई कवि रहा होगा।

२ राजा रीसालू री बात

कथा साराश—

एक समय श्रीपुर नगर मे शालिवाहन राजा राज्य करता था। उसके स्वर्गवास होने पर समस्तकुमार गद्दी पर बैठा। उसके सात रानिया थी, किन्तु पुत्र एक के भी नही था। इस कारण राजा चिन्तित रहता था।

एक बार वह सूअर की शिकार खेलने के लिए निकला। शिकार का पीछा करते करते रात पड गई। उसने वही जगल मे ही ठहरने का निश्चय किया। वहा से कुछ दूर एक पहाडी पर आग जलती हुई दिखाई दी। राजा ने इसका पता लगाने को कहा, तब अन्य लोगो की तो हिम्मत नही पडी किन्तु एक गडरिये ने हिम्मत की और वह पता लगा कर आया कि वहा कोई सन्यासी तपस्या कर रहा है। जब राजा स्वय वहा पहुचा तो उसने देखा कि गुरु गोरखनाथ आखे बद किये समाधि मे लीन हैं। राजा बहुत देर तक एक पैर पर हाथ जोड कर खडा रहा, गुरु गोरखनाथ की कृपा हुई। वर मागने को कहा। राजा ने पुत्र मागा। गोरखनाथ ने अपनी गुलाब की छडी उसे दी और उसे फेंक कर आम प्राप्त करने को कहा तथा वह आम किसी रानी को खिला देने से उसके पुत्र पैदा होगा, जिसका नाम रिसालू रखा जाये ऐसा आदेश देकर राजा को विदा किया।

राजा ने ऐसा ही किया। कुवर तो उत्पन्न हो गया परन्तु ज्योतिषियो ने एक आशका खडी करदी। उन्होने अपनी विद्या के आधार पर पुत्र का जन्म माता-पिता के लिए घातक बताया जिसके निदान-स्वरूप बारह वर्ष तक पुत्र का मुह वे न देखे, इस प्रकार की व्यवस्था की गई। राजकुमार अलग से धाय मा के द्वारा पाला पोसा जाने लगा।

समय बीतता गया। जब वह ग्यारह वर्ष का हुवा तो आनदपुर के राजा मान और उज्जैनी के राजा भोज की ओर से कुवर के शादी के नारियल आये। कुवर अभी एक साल तक बाहर नही निकल सकता था और नारियल वापिस करना उनको प्रतिष्ठा के प्रतिकूल था। इसलिये कुवर का खाडा मगा कर नारियल स्वीकार किये गये और राजकुमारियो का विवाह खाडे के साथ कर दिया गया।

राजकुमार ने जब धाय मा की लडकी से बाहर निकलने के प्रतिबध की जानकारी चाही तो उसने सच्ची-सच्ची बात कह दी। वह बडा दु खित व कुपित हुआ तथा राजा की अनुपस्थिति मे दरीखाने मे आ बैठा। ज्योतिषी महाराज से उसकी झडप होना स्वाभाविक ही था। राजा को पता लगते ही राजकुमार को देश निकाला मिल गया। वह काले घोडे पर सवार होकर वहा से विदा हुआ।

अनेक प्रकार की बाधाओ को झेलता हुआ वह एक नदी किनारे पहुचा तो उसने अनेको मुड पडे हुये देखे। उन्हे हँसता देख कर वह और भी चकित हो गया। जब उसने इसका भेद जानना चाहा तो उसे पता लगा कि यहा के अगरजीत नामक राजा की राजकुमारी को प्राप्त करने के लोभ मे इनकी यह गति हुई है। वह स्वय अगरजीत के महल तक जा पहुचा और बाजी खेलने का प्रस्ताव रखा। चौपड बिछाई गई। पहले तो राजकुमार हारता गया, उसने अपनी सारी वस्तुये खो दी। आखरी दाव सिर को बाजी पर लगा देने का था। दोनो मे निश्चित लिखा पढी हुई। कुवर ने इस बार अपनी लघु लाघवी विद्या के सहारे गोरखनाथजी के पासे वहा प्रस्तुत कर दिये। कुंवर जीत गया। राजा सिर देने के पहिले बडा दु खित होकर रानियो से मिलने गया तो राणियो ने राजा को बचाने की युक्ति से राजकुमारी का विवाह रिसालू के साथ कर देने का प्रस्ताव रखा। रिसालू ने उदारतापूर्वक प्रस्ताव को स्वीकार किया, किन्तु जिस लडकी की मनोकामना के फलस्वरूप अनेक राजकुमारो के मुड धराशायी हो गये थे, उसे पापिनी समझ कर उसके साथ विवाह करने से इन्कार कर दिया। दूसरी लडकी केवल दस माह की थी परन्तु रिसालू उसके साथ विवाह करने को राजी हो गया। विवाह के पश्चात् लडकी को अपने साथ ले वहा से विदा हुआ। लघु लाघवी कला से उसने एक हिरण और सुगा सुगो के जोडे को अपनी परिचर्या के लिये पकड लिया।

वहा से ज्यो ही एक नगर मे पहुचा तो पता लगा कि नगर उजाड पडा है। किसी राक्षस के आतक से वह नगर खाली हो गया था। रिसालू ने उसे पुन आबाद करने की दृष्टि से उस राक्षस का वध करने को ठानी। गोरखनाथजी से प्राप्त तलवार से उसने राक्षस को खतम कर दिया। वहा से भागे हुये लोग पुनः आकर बस गये। नगर पुन आबाद हो गया। समय बीतते-बीतते राजकुमारी ग्यारह वर्ष की हुई।

रिसालू का हिरण बाग मे चरने का बडा शौकीन था। जलाल पाटण के बादशाह हटमल का बाग पास ही पडता था। वहा वह प्रायः रात को पहुच

जाता था। जब हठमल को उसका पता लगा तो वह स्वय एक रात उसको शिकार करने के लिये वहा आया। हठमल उसका पीछा करता-करता रिसालू के महल के पास वाले बगीचे तक आ पहुचा। रात अधिक हो जाने के कारण वह वही सो रहा। उधर जब बहुत देर तक हिरण वापिस नही आया तो रिसालू स्वय उसकी खोज मे बाहर निकल पडा। रानी ने प्रभात मे जब महल से बाहर झाका तो बडे निश्चित ढग से हठमल अपने दाढी के बाल सवारता हुआ, अलसायी हुई आँखो से झरोके की तरफ देख रहा था। राणी ने भी निश्चिन्तता, साहस और मदभरी आखें देखी तो वह उस पर आसक्त हो गई। रिसालू तो बाहर गया हुआ था ही, रानी के सकेत पर हठमल महलो मे पहुच गया और दोनो प्रेम-क्रीडा करने लगे. सुग्गा-सुग्गी को यह असह्य हुआ तो उन्होने उसे टोक कर अपना कर्तव्य पूरा करना चाहा। परन्तु उनकी इस गुस्ताखी की सजा रानी ने सुग्गी के पर नोच कर उसी समय दे दी। सुग्गा फौरन उड कर सभी बातो की खबर राजा को दे आया। राजा पहुचा तब तक हठमल वहा से रवाना हो चुका था। राजा ने रानी के सब रग ढग देखे तो उसे सशय हुए बिना न रहा। दूसरे दिन राजा सुग्गे को साथ ले घूमने निकला। कुछ दूर जाने पर सुग्गा उड कर पुन महल पर आया। उस समय हठमल रानी के साथ प्रेम-क्रीडा कर रहा था। सुग्गे ने फौरन इसकी सूचना राजा को दे दी और फिर महल पर आकर व्यगात्मक ढग से उन्हे कुकर्म करने की सजा मिलने का सकेत किया। हठमल ने आने वाले खतरे को भाप लिया और काम मे उन्मत्त रानी से बडी कठिनाई के साथ विदा लेकर घोडे पर वहा से निकला। रास्ते मे ही हठमल और राजा मे मुठभेड हो गई। हठमल राजा के भाले से मारा गया। रानी से दुश्चरित्र का बदला लेने के लिये वह हठमल का कलेजा उसके पास ले गया और उसे शिकार का मास बता कर, पका कर खाने को कहा। रानी ने ऐसा ही किया।

रानी राजा की नजरो से गिर ही चुकी थी। सयोग से एक योगी अपनी स्त्री को खो चुकने के बाद दूसरी स्त्री की मनोकामना लेकर राजा के पास उपस्थित हुआ। राजा ने अपनी रानी उसे देदी। योगी के साथ रानी रवाना तो हो गई परन्तु उसके मन मे अनेक प्रकार के सकल्प-विकल्प उठ रहे थे। आगे जाकर उसने देखा तो हठमल रास्ते मे मरा पडा था। उसे कौए नोच रहे थे। मन ही मन रानी अपने प्रेमी की यह दशा देख कर विलाप करने लगी। जोगी को कह कर उसे जलाने के लिए चिता बनवाई, और जोगी को पानी लाने के बहाने तालाब पर भेज कर पीछे से हठमल की देह के साथ जल मरी।

अब राजा ने उस नगर मे रहना उचित न समझ कर वहा से राजा मान की नगरी आणदपुर को कूच किया। वहां जाकर तालाव पर स्नानादि करने लगा। अनेक सहेलियो के साथ राजकुमारी भी वहा पानी भरने आई थी। उसने इस सुन्दर युवक की ओर कटाक्ष किया, तथा दोनो मे साकेतिक ढग से एक दूसरे के प्रति अनुराग व्यक्त हुआ। रिसालू वहा से सीवा मालिन के घर पहुचा जिसने जँवाई के आने की खवर राजा के दरवार मे पहुचाई। राज-लोक मे वड़ी खुशिया मनाई जाने लगी। रिसालू का स्वागत किया गया। वह राजमहलो में ठहरा। रात पडने पर राजकुमारी सोलह शृंगार कर अपने पति से मिलने आई तो महल का दरवाजा वद था। उसने दरवाजा खटखटाया। अनेक प्रकार के प्रेम-भरे उलाहने कोमल शब्दो मे देने लगी, पर दरवाजा न खुला। इतने मे वर्षा प्रारभ हो गई। राजकुमारी ने दरवाजा खुलवाने का यह कह कर प्रयत्न किया कि मेरा शृगार भीग रहा है, अब तो यह मजाक छोडो। दरवाजा फिर भी न खुला, तव उसने अपनी दासी से कहा—इसे तो थकावट के कारण नीद आगई है। मैं अपने प्रेमी का वायदा तो निभा आऊ। रिसालू तो नीद का वहाना करके सोया हुआ था। उसने सभी वातें सुनली। राजकुमारी जव महलो से नीचे उतरी तो वह उसके पीछे हो लिया। राजकुमारी सीधी प्राणनाथ सुनार के यहाँ गई। वरसती हुई रात मे दरवाजा खुलवा कर अदर गई तो प्राणनाथ ने उसे देर से आने पर वुरी तरह डाटा। राजकुमारी ने वडी विनम्रता के साथ माफी मागते हुए अपने दुष्ट पति के आ जाने की वात कही। तव तो सुनार और भी विगडा और कहने लगा—तव तो तू इसी तरह टालमटोल करती रहेगी। तव राजकुमारी ने उसी विनम्र भाव से उसे आश्वासन दिया कि चाहे जितनी देर हो जाय किन्तु मैं आपकी हाजरी अवश्य वजाऊगी। रिसालू यह सव कुछ दर-वाजे के पास वैठा हुआ चुपके से देख रहा था। उसने उनके सभोग की उन्मुक्त क्रीडायें भी देखी। प्रभात हो गया। राजा राणी से पहले अपने महल मे आकर सो गया। कोई पहचान न ले, इसलिए राणी भी पुरुष का वेश धारण कर महलो मे पहुची। राजा को जगाया तो वह वनावटी निद्रा से आलस मरोड़ता हुआ उठा। राणी ने रात को दरवाजा न खोलने के लिए वड़े मान और प्रेम भरे वाक्य राजा को सुनाये।

कुछ समय पश्चात् राजा ने कहा कि उसे कुछ सोने का काम करवाना है अत. सुनार को वुलवाया गया। राणी भी वही उपस्थित थी। राजा ने सुनार से वातचीत प्रारभ की। उसने देखा कि सुनार और राणी की प्रेमभरी नजरें वार-वार आपस मे टकरा रही हैं। उसने उपयुक्त अवसर देख कर पानी की

झारी मगवाई और अजली मे सकल्प लेकर 'श्रीकृष्णारपुन्य छै' कहकर रानी का हाथ सुनार के हाथ मे दे दिया। राज-परिवार ने रिसालू को बडा उलहना दिया, परन्तु उसने यह कह कर वहा से विदा ली कि मैंने तुम्हारी लडकी को उसी प्रकार तज दिया है जिस प्रकार साप केचुली को छोडता है।

रिसालू को अब केवल भोज की लडकी से मिलना था। वह सीधा उज्जैन पहुचा। उसके सकेत के अनुसार जब बगीचे मे आम का झूमका गिर पडा, तो भोज की लडकी ने समझा कि रिसालू आ जाना चाहिए था परन्तु निश्चित अवधि तक वह नही आया। इसलिए अब प्राण त्याग देना ही उचित होगा। नदी के किनारे उसके लिए चिता बन चुकी थी। रिसालू आकर वही बाग मे ठहरा। लडकी जलने के लिए चिता के पास पहुची तब रिसालू ने वहा पहुच कर अपने आने की सूचना दी। लडकी को जलने से रोक दिया गया और यह निश्चय होने पर कि लडकी का पति रिसालू यही है, दोनो सुख के साथ राज-महलो मे आनद भोगने लगे। रिसालू को विश्वास हो गया कि ससार मे पतिव्रता और सती नारिया भी हैं।

वहा से फिर अपनी रानी सहित अपने माता-पिता से मिलने चला। महादेवजी की कृपा से उसका फौज-बल भी बढ गया था। शहर के बाहर तालाब पर उसने फौज सहित पडाव डाला। राजा समस्तजीत किसी प्रबल शत्रु को आया जान, पहले तो भयभीत हुआ, परन्तु जब पता चला कि बारह वर्ष का वनवास भोगने के बाद यह उसका पुत्र ही आया है तो उसके हर्ष का ठिकाना न रहा। पूरे शहर मे खुशिया मनाई गईं और रिसालू को बडे स्वागत के साथ राजमहलो मे लाया गया।

कथा-वैशिष्ट्य

कथाकार का उद्देश्य—

राजस्थानी कथा साहित्य मे राजा भोज, विक्रमादित्य, रिसालू आदि प्रसिद्ध व्यक्तियो को लेकर अनेक प्रकार की कथाये बनी हैं। उनमे त्रिया-चरित्र को प्रगट करने वाली कथाओ का अपना महत्व हैं। इस प्रकार की घटनाये वास्तव मे इन महापुरुषो के जीवन मे घटी या नही, यह कहना बडा कठिन है। परन्तु यह स्वीकार किया जा सकता है कि इन विभूतियो का व्यक्तित्व इतना महान् था कि जिसे महत्तर बनाने के लिए ये मानव की अनेकानेक प्रवृत्तियो को जानने के जिज्ञासु निरन्तर बने रहे और अपने ज्ञान की पिपासा को शान्त करने के लिए अनेक प्रकार की कठिनाइया भी इन्होने झेली।

सौन्दर्य से ओतप्रोत सुकुमार नारी मनुष्य की काम-पिपासा को शान्त करने का साधन सृष्टि के प्रारभ से ही रही है। इसलिए उसके सौन्दर्य और व्यक्तिगत विशिष्ट गुणो की असख्य कल्पनाये अलग-अलग युगो मे होती रही हैं। एक ओर मनुष्य नारी की सम्मोहन-शक्ति से जहा अभिभूत होता रहा है वहा वह उस पर पूर्ण अधिकार रखने के लिए ही सचेष्ट रहता आया है। अपना पूर्ण अधिकार खो देने की कल्पना उसे भयभीत भी करती रही है जिसके कारण वह अपनी अत्यन्त प्रिय वस्तु को सशय की दृष्टि से भी देखता आया है। दूसरी ओर, नारी अपना सब कुछ पुरुष को अर्पण कर सन्तोप और सुख का अनुभव करती रही है, वहा वह मनुष्य के कृत्रिम अधिकारो से बुने हुए सामाजिक नियमो के जाल मे दम घुट जाने के कारण मनोवैज्ञानिक विवशताओ की विशेष परिस्थितियो मे उस जाल को तोड कर सब के सम्मुख आ खड़ी हुई है ।

इस प्रकार की कथाओ के नारी-चरित्रो को देखने से नागी और पुरुष के अधिकारो की असमानता तथा दाम्पत्य जीवन की विशृखलता का अनुमान लगाने के साथ-साथ उस काल के मानव का नारी के प्रति दृष्टिकोण भी किसी अश तक समझ मे आता है ।

राजा रिसालू जब अगरजी की नगरी के पास पहुचा तो उसे पता लगा कि एक सुन्दर राजकुमारी को पाने के लिये कितने ही लोग अपनी जान गँवा बैठे है, फिर भला वह क्यो पीछे रहता यद्यपि कुछ ही समय पहले उसकी शादी राजा भोज और राजा मान की लडकी से हो चुकी थी। चौपड के खेल मे अगरजी से जीत जाने पर अगरजी का शिर न कटवाने के बनिस्पत उसकी वडी लडको के साथ शादी करने का प्रस्ताव उसके सामने रखा गया परन्तु अनेक मनुष्यो का वध उसके कारण हुआ था, इसलिये उसने यह रिश्ता अस्वीकार कर दिया। वस्तुस्थिति तो यह थी कि लोगो के प्राण लेने का खेल उसका पिता खेलता था, लडकी का भला इसमे क्या दोष ? एक ओर पिता के कुकृत्यो के कारण उसे पापिनी घोपित होना पडा और दूसरी ओर उसका भविष्य भी अनिश्चित हो गया। मनुष्य का नारो के प्रति मोह वडा अजीब होता है। रिसालू ने राजा की दस माह की कन्या के साथ शादी करली और उसे लेकर वहा से रवाना भी हो गया। अनेक प्रकार की कठिनाइयो को झेलने के वाद लडकी ग्यारह साल की हुई और उसका प्रेम-सम्वन्ध अचानक ही हठमल के साथ हो गया। रिसालू का उसके प्रति कुपित होना स्वाभाविक ही था, क्योकि वह उसको परिणीता थो। परन्तु मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यदि देखा जाय तो जो

लडकी एक पुरुष द्वारा शिशु-अवस्था से ही पाल पोष कर बडी की गई हो, उसके प्रति पिता का सा आदर और अनुराग की भावना का होना स्वाभाविक ही है। उसे अपना प्रेमी बना लेने की कल्पना बहुत कठिन है । ऐसी स्थिति मे प्रेमातुर पिपासा के वशीभूत वह अपना नवविकसित यौवन हठमल को अर्पित कर देती है। उसका प्रेम वास्तव मे सच्चा है, इसीलिये वह योगी के साथ न जाकर हठमल की चिता मे जल मरती है ।

राजा मान की लडकी के साथ रिसालू की शादी कोई ११-१२ वर्ष पहिले हो चुकी थी। क्योकि रिसालू को देश निकाला मिल चुका था और उसका निश्चित पता भी मालूम नही था, ऐसी अवस्था मे सुनार के लडके से उसका प्रेम हो गया। सुनार जैसे साधारण व्यक्ति से एक राजकुमारी का प्रेम होना चौका देने वाली बात अवश्य है, किन्तु इसके पीछे सपर्क की सुविधा विशेष कारण प्रतीत होती है क्योकि सुनार लोग प्राय रनिवास मे गहने आदि बनाने के सबध मे बातचीत करने पहुच जाया करते होगे। रिसालू को जब उनके प्रेम-सबध का पता लग गया तो उसने सुनार को ही राजकुमारी देदी और वह उसे अपने घर ले गया। इससे एक ओर जहा रिसालू की उदारता प्रकट होती है वहा राजा मान की घरेलू व्यवस्था का भी पता चलता है। राजकुमारी के चरित्र के बारे मे घर वालो को सब कुछ मालूम हो जाने पर भी वे राजकुमारी को उसी समय किसी प्रकार का उलाहना या दण्ड नही देते अपितु रिसालू से ही प्रार्थना करते हैं कि वे इतनी सुन्दर राजकुमारी का परित्याग इस प्रकार की घटना के कारण न करे और सारी बात को वही पर दबा कर उनके घर की प्रतिष्ठा को बचाने मे सहयोग दे। रिसालू का कोई भी बात नही मानना स्वाभाविक है क्योकि कोई भी व्यक्ति, दुश्चरित्र नारी को जान-बूझ कर पत्नी के रूप मे स्वीकार करना नही चाहता।

राजा रिसालू के जीवन मे इस प्रकार की घटनाओ के घटने से नारी-जाति के प्रति उसका विश्वास उठ-सा गया था। फिर भी वह अपनी एक और विवाहिता रानी राजा भोज की राजकुमारी को भी परख लेना चाहता था। निश्चित अवधि समाप्त हो जाने पर वह अपने वायदे के अनुसार उज्जैनी नगरी पहुच गया। न मालूम इस बीच मे कितनी उलटी-सीधी कल्पनायें राजा भोज की लडकी के सबध मे की होगी। परन्तु ज्यो ही वह वहा पहुचा, उसने देखा कि अवधि के समाप्त हो जाने के कारण राजकुमारी चिता मे जल कर भस्म हो जाने को तैयार है। तब उसे विश्वास हुआ कि सभी स्त्रिया एक सी नही होती।

स्त्री या पुरुष का चरित्र सस्कारो से ही बनता और बिगडता है। बात की ऊपरी घटनाओ को देखने से तो नारी-जाति के प्रति अविश्वास का भाव जगता है परन्तु उनकी गहराई मे जाकर विचार करने से कथाकार का उद्देश्य यही मालूम देता है कि परिस्थितियो की छाप मनुष्य के मनोभाव पर पड़े बिना नही रहती।

सामाजिक परिस्थितियां व मान्यतायें

राजकुमारी का पानी भरने सखियो के साथ तालाब पर जाना, स्वय खाना आदि पकाना, जल-क्रीडा करने सहेलियो के साथ जाना आदि कथा मे वर्णित है। इससे पता चलता है कि आभिजात्य-वर्ग के लोगो का सीधा सम्पर्क जनता से था।

जूआ आदि खेलना और उसमे अपने प्राणो की वाजी लगा देना तथा उसके दुष्परिणामो के कारण दु खद घटनाओ का होना भी महाभारत-काल की तरह उस समय मे भी मौजूद था।

जैसा कि प्रायः राजस्थानी लोक कथाओ मे मिलता है। पशु-पक्षियो को इन्सान की तरह पढा लिखा कर चतुर बताया गया है। हरिण व सुग्गे-सुग्गी राजा रिसालू के विश्वासपात्र मित्र की तरह उसका काम करते है और उसकी अनुपस्थिति मे उसके महलो की निगरानी भी रखते है। मौका आने पर स्वामि-भक्त नौकर की तरह प्राणो का मोह छोड कर अपने कर्तव्य को पूरा करते है।

अनेक प्रकार के अवतारो व उनकी सिद्धियो आदि से नायक को अचानक सहायता मिल जाने के कारण कथा मे अप्रत्याशित परिवर्तन आ गये है। गोरख-नाथ की सिद्धि तथा लघु-लाघवी विद्या के बल पर ही रिसालू बड़ी से बडी कठिनाइयो मे से पार होता हुआ आगे बढता है और अन्त मे महादेवजी की कृपा से वह बहुत बडी फौज का मालिक भी बन जाता है।

कई घटनाओ को घटित कराने के लिये ज्योतिष का भी सहारा ले लिया गया है।

ये सभी तत्व तत्कालीन समाज की मान्यताओ और रूढियो को हमे अवगत कराते है।

वर्णन एव शैली

कथा मे स्थान-स्थान पर नारी-सौन्दर्य के अतिरिक्त सुन्दर प्रकृति-वर्णन भी किया गया है। प्रकृति-वर्णन प्राय. पारम्पर्य रूप से ही हुआ है। परन्तु उससे वातावरण की सुन्दर सृष्टि अवश्य हो गई है। यहा वर्षा का वर्णन उल्लेखनीय है :—

"इतरा माहे वरषा काळ रो मास छै। श्रावण रो महिनो छै। तठे उतराधरा पमी (गी, गा) री चाली थकी घटा आई छै। मोर, पपीया, कोइला कहुका कीया छै। डैडरिया डरू डरू कर रह्या छै। धरती हरीयो काचू पहरण री आस धरी छै। (पृ० ११५)

पद्याशो मे भी कुछ पद्यो मे प्रकृति के उद्दीपक रूप की सुन्दर अभिव्यजना क गई है —

"वरषा रित पावस करे नदीया प (ष) लके नीर।
तिण विरीया सूकलीणीया, घणीयास्या घरचौ सीर ॥ २२६ ॥
परवाई भीणी फूरे, रीछी परवत जाय।
तिण विरीया सूकलीणीया, रहती पीव-गल लाय ॥ २२७ ॥ (पृ० ११५)

जहा तक शैली आदि का प्रश्न है, इसमे गद्य और पद्य का प्रचुर प्रयोग हुआ है, परन्तु कथा को रोचक बनाने के लिए तथा उसे गति प्रदान करने के लिए सवादात्मक शैली को प्रधानता दी गई है। कुछ एक सवाद तो बडे ही प्रभावोत्पादक बन पडे हैं जिससे लेखक के कलात्मक सृजन का अनुमान लगाया जा सकता है। पद्याशो के अन्त मे 'बे' अक्षर का प्रयोग प्रायः सर्वत्र मिलता है, जो कि शायद इसी कथा के आधार पर प्रचलित खयालो की शैली के प्रभाव के कारण है। जहा तक भाषा का प्रश्न है उस पर पजाबी का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है।

कथा-भिन्नता

राजस्थानी भाषा मे लिपिबद्ध कथाओ के विभिन्न रूपान्तर भी प्राय मिलते हैं। मूमल, सोरठ, ऊजळी जेठवा आदि कुछ वातें राजस्थानी और गुजराती दोनो मे ही प्रचलित रही हैं। राजा रिसालू की वात भी गुजराती भाषा मे भी उपलब्ध होती है जो इस ग्रन्थ के परिशिष्ट १ (क) मे प्रकाशित की गई है। दोनो की कथा-वस्तु मे तथा स्थानो आदि मे भी अन्तर है। उदाहरणार्थ कुछ एक भिन्नताये इस प्रकार हैं —

राजस्थानी	गुजराती
१ शालिवाहन का पौत्र समस्तकुमार का पुत्र रिसालू।	१ शालिवाहन का पुत्र रिसालू।
२ राजा भोज एव राजा मान की पुत्रियो का नाम नही।	२ राजा भोज की पुत्री का नाम सामलदे और धारा नगरी के मान कछवाहा की पुत्री का नाम धारा।

३ अगरजी की नगरी का नाम नही।	३ अगरजी की नगरी का नाम विराट है।
४ अगरजी की छोटी पुत्री का नाम नही।	४ छोटी पुत्री का नाम फूलवती है।
५ राक्षस द्वारा उजाडे गये नगर का नाम द्वारका।	५ सीधडी गांव।
६ जलाल पाटन का वादशाह हठमल।	६ हठीयो वणभारो, जाति का राज-पूत, गढ गागल का चहुवाण राज-पूत, सोरठ मे नवलरक गाव वसा कर रहा।
७ योगी की पत्नी का किसी ने हरण कर लिया।	७ योगी के साथ सुन्दरी के त्रिया-चरित्र का ऐन्द्रजालिक वर्णन।
८ फूलवती का हठमल के साथ सती होना।	८ फूलवती का झरोखे से कूद कर आत्महत्या करना।
९ प्राणनाथ सुनार।	९ कुमतीओ सुनार।

परिशिष्ट १ (ख) मे प्रकाशित रिसालू के दोहो मे भी कुछ भिन्नता है।

कथा का मूल लेखक कौन रहा होगा ? इसका पता वात से नहीं लगता परन्तु कथा के अन्त मे आए हुए एक पद्याश मे नर्वद नामक चारण का उल्लेख अवश्य आया है जिसने कि प्रचलित वात मे दोहे आदि जोड कर उसे वर्तमान रूप दिया है।

बात नागजी नागवन्ती री

कथा-साराश—

कच्छ के स्वामी जाखडे अहीर के राज्य मे दो तीन वर्ष तक निरन्तर अकाल पडा। जब कोई व्यवस्था वहा न बैठ सकी, तब वे बागड प्रदेश के राजा धोलवाडा के वहा पहुचे। दोनो मे अच्छी मेल-मुलाकात हो गई तथा वे दोनो पगडी-बदल भाई हो गये। धोलवाडा के नागजी नाम का पुत्र था। नौकर-चाकर जब चारो ओर काम मे लग जाते तब वह स्वय एक खेत की रखवाली किया करता था। उसकी भावज परमलदे उसका खाना खेत मे ही दे आया करती थी। एक बार वह जाखडे अहीर की लडकी नागवती को भी साथ ले गई। रास्ते मे परमलदे ने नागवती से जिद्द किया कि नागजी जब स्नान करके प्रभात मे सूर्य को जल चढाते हैं तो उनके पैरो के चिन्ह कुकुम से अकित हो जाते है। नागवती ने इस पर बडा आश्चर्य व्यक्त किया और कहा कि यदि ऐसी बात है तो मैं नागजी से शादी कर लूगी। बात सही निकली।

नागजी भी नागवती के सौन्दर्य को देख कर मुग्ध हो गये। उनके विवाह मे एक अडचन यह थी कि दोनो के पिता आपस मे पगडी-बदल भाई बने हुये थे। इसलिये बिना किसी को मालूम हुये उन्होने खेत मे ही विवाह कर लिया। अब वे खेत मे ही आनद से रहने लगे। परन्तु जब खेत काट लिया गया तो सभी को अपने-अपने घर वापिस जाना पडा। नागजी आम के वृक्ष के नीचे घोडे पर सवार होकर विदा होने के लिए तैयार हुए तब नागवती ने आम को साक्षी बना कर अपना प्रेम व्यक्त किया तथा प्रेम का निर्वाह करने की दोनो ने अपने हृदय मे दृढ प्रतिज्ञा की।

नागजी की चेष्टाओ को देखकर उसके पिता को सदेह हो गया। अत वह नागजी को घर से निकलने की इजाजत तक नही देता था। विरह की व्याकुलता मे नागजी क्षीणकाय होकर बीमार रहने लगे। वैद्य बुलाये गये, परन्तु बीमारी का कुछ भी पता नही लगा। नागजी ने एक दोहे मे अपने हृदय की बात कहते हुए कीमती मूदडी उस वैद्य को दी। तब वैद्य को बात समझ मे आई। उधर मे नागवती ने भी अपना कीमती हार उसी वैद्य को दिया। वैद्य ने नागजी की चारपाई वहा से हटवा कर अलग कमरे मे लगवा दी जिससे नागवती मौका निकाल कर नागजी से मिल सके।

होली के दिन नागवती गैहर देखने के बहाने से गढ मे नागजी से मिलने आई, परन्तु नागजी कही दिखाई न दिये। तब एक दासी की सहायता से वह

नागजी के पास महल मे पहुची । संयोग से इन दोनो को पलग पर सोता हुआ नागजो के पिता ने देख लिया । क्रुद्ध होकर ज्योही उसने अपनी तलवार निकाली, नागवती का पिता जाखडा अहीर भी आ पहुचा और उसने उसका हाथ पकड लिया ।

दूसरे दिन नागजी को देश-निकाला दे दिया । नागवती की सगाई हाकड़े परिहार से की हुई थी, अत उसे फौरन आकर नागवती से शादी कर लेने की सूचना दी । रवाना होते समय नागजी अपनी भावज से मिले । तब भावज ने उससे कहा कि तीन दिन तक वह बाहर वाले बगीचे मे ही ठहरे । उसने दोनो का मिलान कराने का वायदा भी किया । हाकडा सूचना मिलते ही फौरन आ पहुचा । दोनो तरफ विवाह की तैयारिया होने लगी । नागवती ने जब परमलदे को मिलने के लिए बुलाया तो वह अपने साथ स्त्री के वेश मे नागजो को भी ले आई, यद्यपि सभी लोग चौकस थे कि कही वेश बदल कर नागजी यहा न आ जाय ।

नागजी किसी तरह से नागवती के पास पहुच गये । नागवती ने भी इन्हे पहिचान लिया और हथलेवे के बाद रात को बाग मे आकर मिलने का वायदा किया । नागजी अपने स्थान पर लौट गए और रात पडने पर बगीचे मे नागवती का इतजार करने लगे । हथलेवे के बाद नागवती सिर मे दर्द होने का बहाना बना कर एकान्त मे चली गई और वहा से चुपचाप बगीचे की ओर निकल पडी । नागजी काफी देर तक बडी उत्सुकता से नागवती का इन्तजार करते रहे, परन्तु जब नागवती नही पहुची तो विरह के दारुण दु ख ने उन्हे कटारी खाकर चिर निन्द्रा में सो जाने को मजबूर कर दिया । अनेक विघ्न और बाधाओ को पार करती हुई, वर्षा मे भीगती हुई नागवती जब नियत स्थान पर पहुची तो नागजी अपना दुपट्टा ओढ कर सोये हुए थे । पहले तो नागवती ने समझा कि ये रूठ कर सो गये हैं, परन्तु उसने जब नागजी को मरा हुआ पाया तो वह अत्यन्त दु खित होकर विलाप करने लगी । इतने मे नागजी का पिता वहा आ पहुचा और यह सारा दृश्य देख कर जाखडा अहीर को भी बुलाया । बडे ही मार्मिक और करुणाजनक परिस्थितियो मे लोकलज्जा-वश नागवती को घर लाया गया ।

प्रभात होने पर बरात रवाना हुई और ज्योही तालाब के पास पहुची तो नागजो को चिता जल रही थी । नागवती ने जब उस दृश्य को देखा तो उसका हृदय उसके वश मे न रहा और वह अपने हाथ मे नारियल लेकर सती होने के

लिए रथ से उतर पड़ी। देखते-देखते नागजी और नागवती का अग्निदेव की गोद में चिर मिलन हो गया।

सच्चे प्रेमियों का यह करुणापूर्ण जीवन-उत्सर्ग देख कर महादेव व पार्वती तुष्टमान हुए और उन्होंने उन दोनों को पुनर्जीवित कर दिया। अब दोनों आनंद और उल्लास के साथ जीवन-सुख भोगने लगे।

कथा-वैशिष्ट्य

राजस्थानी प्रेम-गाथाओं में नागजी और नागवती की प्रेम-गाथा का विशिष्ट स्थान है क्योंकि इनकी प्रेम-कहानी इस प्रकार की घटनाओं के साथ गुंफित है जिसमें कि प्रेम करुणा सामाजिक व्यवधान और इन्सान की मजबूरी का अद्भुत सम्मिश्रण हमें देखने को मिलता है। नागजी के साथ नागवती का प्रेम, नागजी के विशिष्ट गुण के कारण परमलदे के माध्यम से होता है और नागवंती अपने नैसर्गिक सौन्दर्य के कारण नागजी को पूर्ण रूप से अपने में आसक्त कर लेती है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि सामाजिक रीति-रिवाजों और बंधनों से एकाएक ऊपर उठना उनके वश की बात नहीं है। इसलिए वे अपना विवाह भी चुपके से खेत में ही कर लेते हैं। विवाह के पश्चात् वे एकान्त में ही आनंद का उपभोग करते हैं और समय हो जाने पर समाज का मुकाबला न कर चुप्पी साध लेते हैं। दोनों पात्रों में इतना घनिष्ठ प्रेम होने के बावजूद भी उनका इस प्रकार का व्यवहार उनके हृदय की कमजोरी को ही व्यक्त करता है। लड़की और लड़के के पिता दोनों ही अपनी सन्तान को प्रिय समझते हैं परन्तु यह जानते हुए भी कि नागजी और नागवती में बहुत गहरा प्रेम है वे समाज के भय से विचलित होकर उन्हें सहायता पहुंचाने के बजाय व्यवधान ही बनते हैं। अन्त में नागजी की मृत्यु के पश्चात् नागवती हाकड़े परिहार के साथ विदा होती है तो नागजी का पिता उस पर व्यंग करके नारी की दुर्बलता पर पुरुष के क्रूर पौरुष का आघात करता हुआ पुत्र-हानि से होने वाले विह्वल हृदय को आत्म-तोष प्रदान करना चाहता है। यह विडम्बना तत्कालीन समाज में नारी और पुरुष के सम्बन्धों को व्यक्त करती है। व्यंग्यात्मक दोहा इस प्रकार है :—

> ऊडै पड़वै पैस पिवसु पैजा मारती।
> तुं नागजीया एह, हूं ऊँ लागा बोल्डत ॥७४॥ पृ० १६२

इसमें कोई संदेह नहीं कि सभी पात्र समाज के बंधन से ऊपर उठने में असमर्थ रहे हैं। परन्तु अन्त में नागवती ने नागजी के साथ सती होकर अपने हृदय की कमजोरी पर ही विजय नहीं पाई, वरन् नागजी तक के प्रेम को उसने

चुनौती दे दी। इसी प्रकार नारी का सच्चा प्रेम पुरुष के प्रति कथा मे प्रकट किया गया है।

कथा के अन्तिम भाग मे करुणा और प्रेम का वडा ही अद्भुत मिश्रण हुआ है और वह भी नागवती का विवाह अन्य पुरुप के साथ होने की पृष्ठभूमि मे। यद्यपि नायक और नायिका का प्रेम वडी ही भावुकतापूर्ण शैली मे व्यक्त किया गया है तथापि यह प्रेम करुणा की रागिनी से ओतप्रोत है। अत विवाह अथवा अन्य किसी शुभ कार्य के अवसर पर इस गीत का गाना अशुभ माना जाता है। नागजी, भर्तृहरि आदि के गीत और दोहे सुन कर लोगो के हृदय मे अन्तत एक प्रकार के वैराग्य की भावना उत्पन्न हो जाती है।

कथा मे जहा तक उस काल की सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियो का प्रश्न है, ऐसा प्रतीत होता है कि दुष्काल पडने पर शासक-वर्ग प्रजा को महायता पहुचाना अपना फर्ज समझता था। इतना ही नही अपितु प्रजा की भलाई के लिये वे स्वय उसके साथ दूसरे देश मे जाकर वहा के शासक से जान-पहिचान करते और अपनी प्रजा के लिये समुचित व्यवस्था करवाते थे। प्रजा और राजा का यह घनिष्ठ सवध यहा तक ही सीमित नही था, चोर लुटेरो को दलित करने के लिये उनके पुत्र स्वय जोखिम उठा कर उनका पीछा किया करते थे। धोल-वाडा के राज्य का आतक उसके पुत्र स्वय नागजी ने समाप्त किया था। नागजी का स्वय खेत मे जाकर पहरा देना और उनकी भावज परमलदे का उनके लिये खाना लेकर जाना आदि इस बात को प्रमाणित करता है कि उस काल का शासक-वर्ग कितना कर्मठ और समाज के साथ घुला-मिला था।

भाषा-शैली

कथा की भापा का जहा तक प्रश्न है वह प्रसाद-गुणयुक्त और सरल है तथा बोलचाल की भाषा के अधिक समीप होते हुये भी उसमे साहित्यिक सौन्दर्य का अच्छा निर्वाह हुआ है। ठेट राजस्थानी के शब्दो के प्रयोग से सामाजिक वातावरण वनाने मे कथाकार को अच्छी सफलता मिली है। काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से कुछ दोहे राजस्थानी साहित्य की अमूल्य निधि कहे जा सकते है क्योकि उनमे भाव-गरिमा के साथ-साथ हृदय की तडफन और व्यग्यात्मकता का सुन्दर सम्मिश्रण हुआ है। उदाहरणार्थ कुछ दोहे इस प्रकार हैं—

> सज्जन दुरजन हुय जले, सयरणा सीख करेह।
> धरण विलपती यु कहे, आवा साख भरेह ॥ १६ ॥
> नागजी नगर गयाह, मन-मेलू मिळीया नही।
> मिळीया अवर घणाह, ज्यासु मन मिळीया नही ॥ १७ ॥ पृ० १५१

सामा मिळीया सैण, सैणी सूं सामा थया ।
उवे छुरीयां वैण, नहची निरताया नहीं ॥ ३० ॥ पृ० १५४

नागड़ा निरखू देस, परह थांसी थपीयो ।
हमां गया विदेस, सुगना ही सूं बालमां ॥ ३७ ॥ पृ०

सामण सूल न साल, मयणो मैतकीया मरी ।
जाण मजीठी चोळ, रंग न छोड़े साजीया ॥ ३८ ॥

चण्यो त्रिया को नेग, आसन दीठो सुतरजी ।
जानो कुनीया देस, नाटक कर गया नागजी ॥ ४० ॥ पृ० १५७

नागड़ा सूतो सूंटी ताण, नतळाया बोले नहीं ।
कदेक पड़सी काम, सोहरा करस्यो नागजी ॥ ५८ ॥ पृ० १६०

कळ में को कुमार, माटी रा भेळा करै ।
चाक चढ़ावणहार, कोई नवी निपावै नागजी ॥ ७७ ॥ पृ० १६२

वात मयाराम दरजी री

कथा-सारांश—

आबू पर्वत पर गुरु और चेला तपस्या करते थे । गुरु का नाम समर्थ ऋषि और चेले का नाम चतुर ऋषि । तपस्या करते-करते उन्हें तीन युग व्यतीत हो गये । ऐसे तपस्वियों की सेवा-शुश्रूषा करने और ज्ञान-चर्चा सुनने इन्द्राणी स्वयं आठ अप्सराओं सहित प्रस्तुत हुआ करती थी और कलियुग में गुरु-चेले की मंशा वहां रह कर तपस्या करने की नहीं थी । अतः उन्होंने वहां से विदा लेने से पहले इन्द्राणी और अप्सराओं से वर मांगने को कहा, क्योंकि उनकी सेवा से वे अत्यधिक प्रसन्न थे । इन्द्राणी ऐसे पहुंचे हुए ऋषि का पीछा छोड़ने वाली कब थी । उसने यही वर मांगा कि नरपुर में जन्म लेकर आप मुझसे विवाह करें और हम दोनों आनंद का उपभोग करें । वचनों से आबद्ध ऋषि को साम्याधार ग्राम में दुल्हे दरजी के घर मयाराम के रूप में जन्म लेना पड़ा और अमनवल (१) नगर में शिवलाल कायस्थ के घर इन्द्राणी ने जसां के रूप में अवतार लिया । आठों अप्सराएं जसां के पास दासियों के रूप में पहुंच गईं ।

जब जसां पन्द्रह वर्ष की हुई तो सामवगस गुरु के रूप में चेला चतुर ऋषि उसके पास पहुंच गया । वह वेदों का ज्ञाता तथा आगे-पीछे की जानने वाला था । शिवलाल कायस्थ गुरु की प्रतिभा से बहुत अभिभूत था इसलिए उसने जसां के वर ढूंढने तथा विवाह करने की जिम्मेवारी भी उसी पर छोड़ दी और वह

स्वय परदेश चला गया। अब विलब किस वात का था। जसा से प्रेम-पत्र लिखवा कर वह फौरन भाडियावास मयाराम के पास पहुचा और मयाराम की स्वीकृति तथा हाथ की मूदडी लेकर जसा के पास लौटा।

मयाराम जसा से विवाह करने के लिये वडी सजधज के साथ अलवल (र) नगर पहुचा। वरात मे घोडों और वरातियो की साज-सज्जा देखते ही वनती थी। वधाईदार ने ज्योही जसा को जाकर वधाई दी तो उसे ५०० मोहरे मिली। मालकी दासी को जसा ने वरात के सामने भेजा, तथा साथ ही मयाराम के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए उसे पहिचानने के लक्षण वताये। फिर मालकी मयाराम के पास पहुच कर उसे तोरण पर लाती है। उसके स्वागत मे कोई ५०० वेश्याये, भगतणे व ढोलनियें गाती हुई उसका स्वागत करती हैं। मयाराम का ठाट-वाट उस समय इन्द्र से कम प्रतीत नही होता है। उसका रूप तो कामदेव को भी मात करता है। सभी सखियो ने मयाराम के सौन्दर्य और साज-सज्जा की मुक्त-कठ से प्रशसा की। वडे ही ठाट-वाट के साथ विवाह-सस्कार सम्पन्न हुआ। दूसरे दिन जसा जव मयाराम के डेरे की ओर चली तो मदमस्त हाथी की सी चाल और उसके शृगार की अनुपम छवि लोग देखते ही रह गये। आधी रात होने पर दोनो रति-क्रीडा का आनद लेने लगे। वीच-वीच मे दासिया ठिठोली करने लगी।

दूसरे दिन जव मयाराम वहा से प्रस्थान करने का विचार करने लगे तो जसा के लिए मयाराम का विछोह असह्य हो गया। इतने सुन्दर वर को वह आसानी से किस प्रकार जाने देती। उसने अपनी दासियो की सहायता से शराव के प्यालो की मनुहार ही मनुहार मे युवक वर को मदमस्त वना कर उसका जाना स्थगित करवा दिया, फिर भला वर्षा ऋतु मे जाना सभव कैसे हो, क्योकि सामने ही सावण की तीज भी तो आ रही थी, जिसका ललित चित्र मयाराम के सामने जसा ने प्रस्तुत कर आनन्द का उपभोग और अनुकूल मौसम का लोभ देकर उसे भरमा लिया। शराव की मनुहारे निरतर चलती रही।

प्रेम की इन मदमस्त घडियो मे जव लज्जा और सकोच का निवारण हो गया तो वातो ही वातो मे अपने-अपने देश की वडाई करते समय दूल्हे-दुल्हन मे खटपट हो गई। मयाराम यह कह कर कि ऐसी कई सुदरिया मुझे उपलव्ध हो सकती हैं, वहा से विदा लेने को तैयार हुआ तव परिस्थिति को विगडते हुए देख कर मालू दासी ने जसा के राशि-राशि सौन्दर्य का वर्णन कलात्मक ढग से करते हुए 'ऐसी सुन्दरी को त्यागना वुद्धिमानी नही है' कहकर प्रेमी युग्म को

पुन भावात्मक सहजता के सूत्र मे बाधा। जसा ने भी गुस्से ही गुस्से मे कटु वचन कहने के लिए क्षमा मागी ।

कथा-वैशिष्ट्य

युद्धवीरो, दानवीरो और धर्मवीरो को लेकर यहा के कवियो ने पुष्कल परिमाण मे साहित्य-सृजन किया है। इन प्रमुख विषयो के अतिरिक्त कुछ चारण कवियो ने सभ्रान्त परिवार के नायको को छोड कर साधारण व्यक्तियो का नाम अमर करने की मनोकामना से भी साहित्य-निर्माण किया है। ये व्यक्ति किसी न किसी कारण से कवियो के कृपापात्र बन गये थे और उनको सेवाओ का पुरस्कार उन्होने उन्हे सबाधित कर साहित्य रचना के द्वारा किया है । राजिया, किसनिया, ईलिया, चकरिया आदि को सबोधित करके की गई रचनाओ के पीछे इसी प्रकार की कुछ बाते हैं। उन्नीसवी शताब्दी से इस प्रकार की रचनाओ के निर्माण की परम्परा विशेष रूप से राजस्थानी-काव्य मे गतिशील दिखाई देती है ।

मयाराम दरजी की वात भी इसी कोटि की रचना है। ऐसी किंवदन्ती प्रसिद्ध है कि भाडियावास (मारवाड) के प्रसिद्ध कवि मोडजी आसिया जब एक बार लबे अर्से तक बीमार रहे तब उन्ही के गाव के दर्जी मयाराम ने उनकी बडी सेवा की थी। अत कवि ने प्रसन्न होकर इस वात की रचना उसे नायक बना कर की।

जहा तक बात की कथावस्तु का सबध है उसमे दैविक अवतार से कथा प्रारभ होकर नायक-नायिका के उद्दाम यौवन मे झूलती हुई काम-क्रीडा और प्रेमी-युग्म की अनेकानेक चेष्टाओ को व्यक्त करती हुई समाप्त होती है। कथा मे जहा एक ओर अत्युक्तिपूर्ण वर्णनो का आधिक्य है, वहा कामुकता और नग्न शृगार का भी कवि ने वडी उदारता के साथ रस लेकर वर्णन किया है ।

राजस्थानी मे प्रेमपाती लिखने की विशेष परम्परा रही है। प्राय प्रेयसी भावुकतापूर्ण अलकृत शैली मे अपने प्रिय को अनेक प्रकार की उपमाओ से विभूपित करती हुई उसे पत्र लिखती है । इस बात मे भी रामबगस सुग्गे के साथ जसा अपने प्रिय मयाराम को पत्र लिखती है, जिसमे जसा के प्रेम-प्रदर्शन के साथ-साथ राजस्थानी सस्कृति के भी दर्शन होते हैं ।

'सिध श्री भाडीयावास वाली वाट मुहगी दसै, आतम का आधार मयाराम जी वसै, अलवल (र) थी लपावतु जसांको मुझरो अवधारसी। रामबगस राज नपै आयो छै, जीको कुरब वधारसी। अठा लायक काम विदगी लपावसी।

अठी दसाकी आप गाढी पुसीया रखावसी । पान-पानको, पिंडाको जावतो रखावसी । जावतो तो वलदेवजी करसी पण तावादार तो लपावसी । भरोसादार भला मनप जीव-जोग साथे लीजो । इद्र राजाकी तरैका वीद राजा (हो) वीजो। आपकी वाट भाळा छा । ओ दवस कदीया ऊगै, जसीकी भाग जागै, अलवल (र) आप आय पूगै ।'[1]

मोडजी आमिया वाकीदामजी के वशजो में प्रसिद्ध कवि हो गये हैं जिनकी रचना पावू प्रकाश विख्यात है । उन्होने इस कथा के निर्माण मे कुछ स्थलो पर अपनी विद्वत्ता और भाषा की विस्तृत जानकारी का सुन्दर परिचय दिया है। वास्तव मे ये स्थल ही कथा को साहित्यक महत्व प्रदान करते है । दो स्थल इस दृष्टि से यहा उल्लेखनीय हैं —

घोड़ो का वर्णन—

'पवन का परवाह 'गुलाव की मूठ' मवराजको गोटको, तारेकी तूट । आतसको भभको, चक्रीकी चाल, चपलाको चमको, चातीका ढाल । सीचाणै की झडप, हीडैकी लूव, पगराजका वच, पेतुमे पूव ऐहडा-ऐहडा पाच हजार घोडा सोनैरी माकना मज कीवा ।'[2]

जसा का सौन्दर्य-वर्णन —

'जसीया क्सोयक छै आपने भी उवारे जसीयक छै । पतीयासीको कमल, गगामी विमळ । भूभलीया नैणाकी, अमरतमा वैणाकी । ममीलो, वादलाको, वीज, होलीकी झाळ, सामणकी तीज । केळको गरभ, सोनेको पभ, सीळकी सती, रूपकी रभ । ताठी मरग, मगराकी मोर, पावासर को हम, मनकी चोर । जीवकी जडी, होयाको हार, अमीको टाहो, रूपको अवतार । काजालीकी साठी, गूजालीको भळको, गैलाको कवाण, हीडाको कलको । मुगलरी मीसची, वपायतरो झालो, मवरो गाटको प्रेमरो प्यालो । सोलैसो सोनो, राजहसरो वचो, वावनो चदण, रेसमरो गचो । करतीयारो झूवको, मोतीयारी लूव, हीरारो लछो, मरगरी झूंव । मनेहरी पालपी, हेनरो थाणो, नैणारो नरपणो, प्रेमरो कमठाणो। सरदरी पूनमरो चद, आसाढरो भाण, जसीयाकी नारीफ, वुवैका वापाण । मदवीको मछोळो, हायकी हाल, तीजणीयाको तुररो, रूपकी ममाल । कापको लाडू, मोतीयाको गजरो, जलालीयाको वको, जसीया को मुजरो। कलपव्रच(छ) रो डाळ, पारमरो टोळ, मेहरो महर, दरीयावरो छोल । तावडैरो छाह, अवारैरो

[1] पृ० १६६
[2] पृ० १६७

दीयो, सीयाळारो ताप, जका जसा घणा जुग जीवौ । हरषरी हीडौ, उदेगरी भेट, जीवरो जतन, इन्द्ररी भेट । किस्तूरीरो माफो, केसररी क्यारी, रूपरो रूषडो, रच(स) ना होनारो । भमरारो भणणाट, डीलारी दोली, दीपमाळारा दौर, भापररी होळी । गुलाल सही गढौ, आषारी पाणी, हीरारो हार । ग्रहणाकौ भल-लाटौ, तजको अबार, जसीयाको जीवणो वा ससार की सार । दातारो पाणी, कडीयारो केहरो, हालरो हस, भू आरी भमर, कुरजरी नस । अलकारी नागण, पलकारी कुरग, कठारी कोयल, सोनेरी अग । अणीयाळा नैणामे काजळकी रेषा, अमरतरा ठासा चदामे पेषो । सीदूर की बीदो भालूमे भळकै, काळीसी काठळमे चदो कन चळकै । अमोभता ऊतारे, सोभता धारे । वाल वाल मोताहल पोया, जाणे नवलाष नषत्र एकठा होया । बाजणा जाफर पैराया, घूघराका सुर गैरीया । अण भातकी जसीया, जकाकू चो(छो)डो चौ(छो) रसीया । माणोर्ना म्याराम जी, थानै दीनी छै रामजी । लो नी लाडीका लावा, पीचै (छै) करसो पच(छ) तावा । जावणकी वाता जाणा छा, मतवाळी कू नही माणा छा । वरसाळाका वादळ ज्यू ढाळका जल ज्यू, भाषरका पाणी ज्यू, वाटका वाणी ज्यू, चे(छे)ह मती चा (छा) डौ, थोडौ सो मन करौ गाडौ । भाली वागा षडौ, थोडा रहौ भलीया । पिण थामै किसो दोस, था कै सगो पलीया ।"[1]

बहुत ही साधारण स्थिति के नायक को लेकर लेखक ने इसे ऋषि का अवतार और जसा को इद्राणी का अवतार बताया है तथा उनकी साज-सज्जा और ऐश्वर्य का वर्णन भी बहुत ऊचे दर्जे का चित्रित किया है, जिससे उसका अत्युक्तिपूर्ण वर्णन उस समय के साहित्यकारो को भाया नही, इसलिए बात की सुन्दरता को स्वीकार करते हुए भी नायक के औचित्य का किसी कवि ने व्यग्या-त्मक ढग से उपहास किया है —

दर्जी कौडी दोढ रो, बणी लाख री वात ।
हाथी री पाखर हुती, दी गधे पर घात ॥

राजा चद प्रेमलालछी री वात

कथा-साराश—

राजपुर गाव मे रुद्रदेव नामक एक राजपूत रहता था । उसके दो औरते थी दोनो ही मत्रसिद्धि मे निष्णात थी, परन्तु पति इमसे अनभिज्ञ था । एक वार जव दोनो औरते पानी भरने जाने लगी तो छोटी ने रुद्रदेव से कहा—मेरा लडका पालने मे सो रहा है सो तुम उसका ख्याल रखना । वडी वहू ने कहा—

---

[1] पृ० १८२

गायो के आने का समय हो गया है। बछड़ा कही चूग न जाय, इसका तुम ध्यान रखना। थोडी देर मे बच्चा रोने लगा तो रुद्रदेव ने बच्चे को खिलाना शुरू किया किन्तु इतने मे गाये आ गईं। अत बच्चे को पालने मे छोड कर बछडे को बाधने लगा। उसी समय दोनो बहुवे पानी भर कर आ गईं। छोटी बहू ने देखा कि बच्चा पालने मे रो रहा है, और वह बडी के काम मे सलग्न है। ईर्ष्या के वशीभूत उसने ऐसे पति को मार देने का निश्चय कर अपनी ईंढुरी उसकी ओर फेंकी जिससे वह साप बन कर रुद्रदेव को डसने के लिये भागा। बडी बहू यह देखते ही सारी बात भाप गई। उसने अपने हाथ की लोटी साप पर फेंकी, सो लोटी नौलिया बन गई और उसने साप को मार डाला।

यह देख कर भोला राजपूत बडा भयभीत हुआ और मन ही मन वहा से निकल भागने की तरकीब सोचने लगा। औरते इससे ज्यादा होशियार थी, इसलिए उन्होने आपस मे विचार किया–अब यह अपने कब्जे मे रहने वाला नही है इसलिये इसे गधा बना कर रखा जाय। रुद्रदेव अपनी स्त्रियो से पिंड छुडाने के लिये विदेश मे कमाई के लिये जाने को उनसे कहता, किन्तु वे नही मानती। अन्त मे उन्होने प्रसन्न होकर, भाता साथ मे देकर सीख दी। रुद्रदेव मन ही मन बडा खुश हुआ और बडी तेजी के साथ वहा से चला। करीब दस कोस पर पहुचा तो उसे एक तालाब दिखाई दिया। वहा हाथ-मुह धोकर कलेवा करने का विचार कर ही रहा था कि इतने मे एक ढोली वहा आ पहुचा और उसकी याचना पर अपने कलेवे मे से एक लड्डू उस ढोली को दे दिया। ढोली बहुत भूखा था, इसलिये फौरन ही वह लड्डू खा गया। लड्डू खाते ही वह गधे के रूप मे परिवर्तित हो गया और तत्काल रेंकता हुआ उलटे पैरो रुद्रदेव के घर जा पहुचा। इधर जब रुद्रदेव ने यह करामात देखी तो स्त्रिया कही पीछे न आ पहुचे, इस भाव से आतकित तीनो लड्डू जल मे फेंक कर, वह भाग खडा हुआ।

स्त्रियो ने जब गधे को पुरुष बनाया तो वह ढोली निकला। अपनी योजना की विफलता ज्यो ही उनके समझ मे आई वे घोडिया बन कर वहा से रुद्रदेव के पीछे भागी। रुद्रदेव देवगढ नगर मे पहुचा ही था कि दोनो घोडियें उसके समीप आ पहुची। जान बचाने के लिये वह बेचारा एक अहीरन के घर जा पहुचा। पहले तो अहीरन ने उसे डाटा, परन्तु जब उसने सारी बात सच-सच बताई तो अहीरन बडी प्रसन्न हुई और उसने रुद्रदेव से वचन मागा कि वह उसके घर मे रहेगा। रुद्रदेव ने स्वीकार किया। अहीरन नाहरी बन कर घोडियो पर झपटी और उन्हे बहुत दूर तक भगा दिया।

रुद्रदेव ने देखा कि छोटी आफत से छुटकारा पाने के लिये बडी आफत मे आ फसे। वह किसी प्रकार रात को वहा से भी भाग निकला और चदराजा की आभोनगरी मे आ पहुचा। वहा राजा की लडकी का स्वयवर था। कौतूहलवश वह भी वहा जा पहुचा। सयोग से राजा की लडकी ने वरमाला इसके गले मे डाल दी। आनन्द और विलास के साथ वह राजमहलो मे रहने लगा। इतना हो जाने पर भी दोनो स्त्रियो ने उसका पीछा नही छोडा। वे चीले बन कर वहा आ पहुची और एक दिन रुद्रदेव जब झरोखे मे बैठा था तो उसकी आखे नोचने के लिये वे उस पर झपटी। रुद्रदेव भयभीत होकर महल के अन्दर लुढक गया। राजकुमारी ने एकाएक इस प्रकार की घबराहट हो जाने का कारण पूछा। पहले तो रुद्रदेव बात छिपाता रहा, परन्तु राजकुमारी के अत्यधिक आग्रह पर उसने सारी बात कह दी। राजकुमारी ने इसका निदान फौरन निकाल लिया। उसने अपने नूपुर उतार कर मत्र पढा और उन्हे झरोखे मे से ऊपर फेका तो नूपुरो ने बाज का रूप धारण कर दोनो चीलो को मार डाला।

रुद्रदेव ने देखा कि इस माया का कही अन्त नही है। ये औरतें मेरी जान लेकर छोडेगी। अत बेचारा अपनी जान बचाने के लिये वहाँ से भी रात को भागा। चद राजा को जब दामाद के चले जाने की खबर मिली तो उसने फौरन सिपाही पीछे भेजे। सिपाहियो से जब रुद्रदेव वापिस नही लौटा तो राजा चद स्वय मनाने के लिये पहुचे और इस प्रकार बिना सीख लिये ही रवाना होने का कारण पूछा। रुद्रदेव बेचारा क्या कहता ? परन्तु राजा ने जब अधिक हठ किया तो उसने सारी बात कह सुनाई। इस पर राजा चद ने कहा—'जब तक हमारे दिन अच्छे हैं, तब तक हमारा कोई कुछ नही बिगाड सकता, और फिर वीती बात कहने लगा—

"मेरी माता और पटरानी प्रभावती इसी प्रकार की मत्र-विद्या मे प्रवीण थी। वे अपनी विद्या के वल पर मुझे अघोर निद्रा मे सुला कर रात्रि को गिरनार के राजा के पास क्रीडा करने के लिये पहुच जाया करती थी। एक बार मुझे सशय हुआ, तो जिस वट-वृक्ष पर बैठ कर वे जाया करती थी, उस वट-वृक्ष की खोह मे पहले से ही मैं छिप गया और उनके साथ गिरनार जा पहुचा तथा वहा के रग-ढग देख कर वडा आश्चर्य-चकित हुआ। कुछ दिन वाद ही गिरनार के राजा की लडकी प्रेमलालछी का विवाह होने वाला था। उसमे इन दोनो को भी आमन्त्रित किया गया था। अत विवाह की रात को मैं इनके साथ गिरनार पहुचा। वरात वडी साज-मज्जा से आई थी। किन्तु दूल्हा वडा कुरूप था। अत उन्होंने यह युक्ति निकाली कि

दूसरे किसी खुबसूरत आदमी को फिलहाल दूल्हा वना कर भेज दिया जाय और शादी के वाद मे लडकी को अपने ही ले जायेंगे। सयोग से दूल्हा वनने के लिये मैं ही उन्हे मिला। जब मैं तोरण पर पहुचा तो मेरी पटरानी ने मुझे पहचान लिया।

मैंने शादी के समय तावूल से दुलहन की चूनडी पर यह दूहा लिखा—

अभो नगरी चद राजा, गिर नगरी प्रेमलालछी।
सजोगे-सजोग परणिया, मेळो दैव रे हाथ॥

वहा से मैं उसी रात अपनी नगरी तो पहुच गया परन्तु सास-बहू ने मिल कर मुझे सुग्गा वना दिया। दिन भर पिंजरे मे बद रहता और रात को पुनः चद वन जाता।

उधर कुरूप पतिदेव प्रेमलालछी के रगमहलो में सुहाग-रात मनाने पहुचे तो उनकी वडी दुर्गति हुई। बरात बिना दुलहिन के वापिस पहुची। प्रेमलालछी वडी दु.खित रहने लगी। परन्तु जब एक वर्ष वाद सावण की तीज के दिन उसने अपने विवाह के कपडे पहने तो चूनडी की कोर पर लिखा हुआ दोहा उसके ध्यान में आया। उसने सारी बात का अनुमान लगाकर अपने पिता से सहायता ली और मेरी नगरी मे आ पहुची। उसकी चतुर दासियो ने अपनी जासूसी के द्वारा मेरा हाल-चाल मालूम कर लिया और एक दिन दावत के बहाने जव वह स्वय महलो को देखने ऊपर पहुची तो उसकी एक चतुर दासी ने मेरे पिंजरे के स्थान पर तोते सहित दूसरा पिंजरा आले मे रख दिया और मुझे वहा से मुक्ति दिलाई। सास-बहू ने शाम को जब सुग्गे को सभाला तो सुग्गा दूसरा था। अत वे चीले वनकर मेरी आखे फोडने को डेरे पर आईं, उस समय मैंने तीर से उन दोनो को मार गिराया।"

अपना अनुभव सुनाने के वाद चद ने रुद्रदेव से कहा कि त्रिया-चरित्र का कोई पार नही होता है परन्तु मैंने तुमको प्रेमलालछी की पुत्री व्याही है। वह तुम्हारा कभी वुरा नही चाहेगी। इसलिये तुम आश्वस्त रहो।

कथा-वैशिष्ट्य—

इस वात की कथा-वस्तु पूर्णत त्रिया-चरित्र पर ही आधारित है। छोटी-सी वात मे अनेक स्त्रियो के चरित्र का उल्लेख हुआ है। राजा रिसालू की वात मे भी स्त्रियो के कुटिल चरित्रो पर प्रकाश डाला गया है। परन्तु इन दोनो कथाओ के निर्माण व घटनाक्रम मे वडा अन्तर है। रिसालू की वार्ता मे प्रत्येक

नारी-पात्र के जीवन की पृष्ठभूमि बाधने का प्रयत्न किया गया है जिससे उन नारी-पात्रो के चरित्र मे उत्पन्न होने वाले यौन-विकारो का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किसी हद तक सभव हो सकता है। इस कहानी मे जादू-टोने व मत्र-सिद्धियो के आधार पर अनहोनी घटनाओ को घटित कराते हुये नारी की यौन-पिपासा के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली अनेकानेक घटनायें वर्णित हैं। जादू-टोने का सहारा लेने के कारण कथा मे किसी भी नारी-पात्र का चारित्रिक विकास नही हो पाया है, जिससे कहानी केवल काल्पनिक स्तर पर ही न रह कर तिलस्मी बन गई है।

इस कहानी को पढने से सामाजिक तथ्यो की ओर हमारा ध्यान अवश्य ही आकर्षित होता है। कथाकार ने रुद्रदेव जैसे साधारण नायक से बात प्रारभ कर के चद राजा और उसके परिवार पर कथा को समाप्त किया है। अतः निम्न स्तर के समाज से लेकर राज्य-परिवार तक मे व्याप्त दुष्चरित्रता तथा यौन-कुण्ठाओ पर करारा व्यग हमे देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त यह बताया गया है कि एक ओर नारी को स्वयवर के माध्यम से अपना पति चुनने का पूर्ण अधिकार है तो वहा किसी सुन्दरी को छल के साथ प्राप्त करने के लिए असली दूल्हे के स्थान पर दूसरे दूल्हे को तोरण पर भेज दिया जाता है क्यो कि असली दूल्हा कुरूप था। इस प्रकार जहा एक ओर नारी की बडी दीन स्थिति बताई गई है, वहा दूसरी ओर पुरुष उसके सामने बडा निरीह चित्रित किया गया है। क्यो कि वे अपनी चतुराई तथा काम-पिपासा में उन्मत्त पुरुषो के विभ्रम के कारण उन पर शासन ही नही करती अपितु उनको मूर्ख और अपनी लालसाओ का खिलौना तक बना देती हैं।

लेखक ने जहा एक ओर दुष्चरित्रता का पूरा वर्णन किया है वहा दन्तकथा की मुख्य नायिका प्रेमलालछी के चरित्र को निष्कलक बताया है तथा उसकी चतुराई का भी बडा बखान किया है।

कथाकार ने मनुष्य के भाग्य को सर्वत्र प्रधानता दी है परन्तु दुष्चरित्रता मे लिप्त पात्रो का अन्त भी बुरा बताया है। अत कथा का वास्तविक उद्देश्य दुष्चरित्रता के दुष्परिणामो की ओर इगित करना कहा जा सकता है।

भाषा-शैली—

पूरी कथा गद्य के माध्यम से ही कही गई है जिसमे केवल एक दोहे का प्रयोग मिलता है। जहा तक कथा की भाषा का प्रश्न है वहा सरल, प्रसाद-गुण-

युक्त वोल-चाल की भाषा है। स्थान-स्थान पर अरवी व फारसी के शव्दो का प्रयोग भी मिलता है। कथा की शैली मे सवसे वडी खूवी राजस्थानी के ठेट मुहावरो का सफल प्रयोग है। अत कुछ मुहावरे यहा द्रष्टव्य है –

"भलो नही आपने, तिको दीजे काळा साप ने।
एस साख पतळी हुई ने घर माहे उडो तेह नही।
जाडो जीमता पतली जीमस्यां।
चौपडो जीमतां लूखी जीमस्या।
वाहर पालू।
वात बुरा मूल सूं कही।
मोसू लाल पाल करणो।
जीमण सू देखणो भलो।
वुरो चाहे तो भलो होवे नही।

उपसहार

प्रस्तुत सग्रह की पाचों वाते मूलत प्रेमविपयक होते हुए भी अनेक प्रकार की विभिन्नताये लिए हुए है। अत न केवल साहित्यिक दृष्टि से अपितु समाज-शास्त्र व भाषाविज्ञान की दृष्टि से भी इनका वडा महत्व है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के मान्य अधिकारी-गण इस प्रकार के साहित्य-सग्रह प्रकाशित कर राजस्थानी-साहित्य की अमूल्य निधियो को प्रकाश मे लाने का प्रशसनीय कार्य कर रहे हैं उसके लिये वे वधाई के पात्र हैं।

मेरे प्रिय मित्र श्रीलक्ष्मीनारायणजी गोस्वामी ने इन कथाओ को सपादित करने मे वडा श्रम किया है। अनेक प्रतियो के पाठान्तर तथा विस्तृत परिशिप्ट दे कर पुस्तक को साधारण पाठक व विद्वद्वर्ग, दोनो के लिए उपयोगी बना दिया है। उनकी इस साहित्य-साधना के लिये वधाई तथा मुझे इस पुस्तक की भूमिका लिखने का अवसर प्रदान करने के लिये धन्यवाद।

नारायणसिंह भाटी
सचालक
राजस्थानी शोध सस्थान, जोधपुर

जोधपुर
वसत पचमी, १९६५

सम्पादकीय

आज जिस प्रान्त को राजस्थान कहा जाता है उसका यह नामकरण अधिक प्राचीन नही है। बहुत प्राचीन काल मे इस भूभाग के नाम मरुप्रदेश, मरुभूमि तथा मरुस्थल आदि मिलते हैं जिसका आशय मुख्यतया वर्तमान पश्चिमी राजस्थान की मरुभूमि से ही रहा होगा। वैसे राजस्थान शब्द प्राचीन ख्यातो व वातो आदि मे प्रयुक्त हुआ है परन्तु उसका अर्थ वहाँ राजधानी अथवा किसी राजा के आधिपत्य के दस्तूर आदि से है। सस्कृत-व्युत्पत्ति 'राज्ञ स्थानम्' से भी यही अर्थ प्रकट होता है। 'यथा नाम तथा गुण' के अनुसार सस्कृत की विशेष व्युत्पत्ति इस नामकरण के औचित्य को और भी बढा देती है —'राजन्ते शौर्यौदार्यादिगुणैर्देदीप्यन्ते ये (नराः)ते राजानस्तेषा स्थान - आवासभूमि राजस्थानम्।' अर्थात् जो मनुष्य शौर्य-औदार्यादि गुणो से सर्वाधिक सुशोभित हो, उन मनुष्यो के रहने का स्थान 'राजस्थान' है। प्रान्त के वर्तमान नामकरण के रूप मे सभवत इस शब्द का प्रयोग सबसे पहिले प्रख्यात इतिहासकार कर्नल टॉड ने किया है जैसा कि उसकी पुस्तक 'एनल्स एण्ड एन्टिक्विटीज् ऑफ राजस्थान' से प्रकट होता है। जब कि इससे पूर्व यहाँ की रियासतो के समूह के लिए 'राजपूताना' शब्द प्रचलित रहा है क्यो कि अग्रेजो के ऐतिहासिक वृत्तान्तो मे यहाँ की रियासतो के लिये 'राजपूताना स्टेट्स' जैसे प्रयोग मिलते हैं।

यहाँ की रियासतो और इस भूभाग के लिए राजस्थान शब्द कब से प्रयोग मे आने लगा, यह इतना महत्त्वपूर्ण नही है जितना कि भारतवर्ष के इस भूखण्ड मे आर्यसस्कृति को जो सास्कृतिक और साहित्यिक देन इस प्रात ने अपने नाम के अनुरूप दी है, उसका है। राजस्थान वीरों का देश कहा गया है। यहाँ के निवासियो ने शताब्दियो से विदेशियो और विधर्मियो का सामना हर कीमत पर करना अपना धर्म और अन्तिम ध्येय समझा है। इतिहास साक्षी है कि धर्म और धरती के लिये जितना वलिदान यहाँ के वीरो ने किया है, वह भारत के इतिहास मे ही नही अपि तु विश्व के इतिहास मे अप्रतिम है।

वलिदान और तप से ओत-प्रोत यहाँ का इतिहास राजस्थान शब्द की पृष्ठ-भूमि मे होने से राजस्थान शब्द के साथ 'वीर' शब्द का सान्निध्य सहज ही हो जाता है। भारतीय सस्कृति मे वीरो का असाधारण महत्व समझकर उनका गुण-

गान अनेक रूपो मे हुआ है। वैसे वीर शब्द का उल्लेख अतिप्राचीन काल मे ऋग्वेदसहिता (१ १८४, १ १४४ ८, ४ २६.२, ५ २० ४, ५ ६१ ५), अथर्ववेद (२ २६ ४, ३ ५ ८), आश्वलायनादि - श्रौतसूत्र, पञ्चविंशब्राह्मण (१९ १ ४), बृहदारण्यकोपनिषद् (५ १३ १, ६.४.२८), छादोग्योपनिषद् (३ १३ ६), शरभोपनिषद् (११), नीलरुद्रोपनिषद् (२३), नृसिहपूर्वतापिनी (२ ३, २ ४), नृसिहोत्तरतापिन्युपनिषद् (२,४,५;६) आदि मे तेज, पराक्रम और शौर्यादि अर्थों मे मिलता है। इससे हमारी सस्कृति मे वीरो की विशिष्ट परम्परा ही लक्षित नही होती अपि तु सस्कृत-साहित्य मे आदर्श नायक के गुणो मे वीरत्व एक अनिवार्य गुण के रूप मे कवियो द्वारा अपनाया गया है।

राजस्थान के इतिहास मे युद्धो की अधिकता के कारण सहस्रो युद्धवीरो का उल्लेख हमे अनेक रूपो मे मिलता है परन्तु युद्धवीरो के अतिरिक्त धर्मवीरो, दानवीरो और दयावीरो की भी यहाँ कमी नही रही। वस्तुत युद्धवीर के उदात्त चरित्र के साथ अन्य वीरात्मक भावनाओ का गुंफन भी किसी न किसी रूप मे हमे दृष्टिगोचर हो ही जाता है। वैसे उत्साह को वीररस का स्थायीभाव रसशास्त्रियो ने माना ही है परन्तु त्याग और सयम की जो गरिमा चारो प्रकार के वीरो मे देखने को मिलती है वह भी इन वीरो के दृष्टिकोण की एकता को ही प्रतिपादित करती है। अत इन वीरो ने हमारी सस्कृति और धर्म को जो महत्त्वपूर्ण देन दी है उसका न केवल यशोगान ही अपि तु दार्शनिक लेखा-जोखा भी राजस्थानी साहित्य मे अनेक रूपो मे मिलता है। पद्यात्मक शैली मे इन विषयो को लेकर, सैकडो कवियो ने जहाँ अनेको महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक-काव्य लिखकर अमरत्व प्राप्त किया है वहाँ राजस्थानी-भाषा की विशाल गद्य-परम्परा मे वातो, ख्यातो, वचनिकाओ मे इस प्रकार की घटनायें भी अनेक प्रसगो को लेकर वर्णित की हैं। साहित्यिक दृष्टि से यह वात-साहित्य अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

'वात' शब्द वार्ता का अपभ्र श रूप है। भारतीय वाङ्मय मे वार्ता का प्रयोग ठेठ सीतोपनिषद् (३१), सामरहस्योपनिषद् (२५०,११), आश्रमोपनिषद् (२), आदि मे उपलब्ध होता है। प्रतीत होता है कि इससे पहले वार्त्ता के लिये 'कथा' शब्द ही प्रचलित रहा है क्यो कि 'ऐतरेय-ब्राह्मण (५ ३ ३), जैमिनीय-ब्राह्मण (६), जैमिनीयोपनिषद्ब्राह्मण (४.६ १ २), विष्णुधर्मसूत्र (२० २५) आश्वलायिन-गृह्यसूत्र (४ ६ ६), छान्दोग्योपनिषद् (१ ८ १), नारदपरिव्राजकोपनिषद् (४ ३), आदि मे इस शब्द का प्रयोग वार्त्ता के अर्थ मे मिलता है।

वार्त्ता का चाहे जो रूप प्राचीन वाङ्मय मे रहा हो किन्तु राजस्थानी-साहित्य मे यह शब्द विशेष अलकृत और सुव्यवस्थित साहित्यिक शैली मे लिखी

३. रसालु का पुनरागमन :

[मक्का की यात्रा, हजरत द्वारा स्वागत, मुसलमान-धर्म मे परिवर्तन, सियालकोट से समाचारो का आना, दीवारो का गिरना और मनुष्यो का बलिदान, जबीरो द्वारा हजरत को अपील, सियालकोट पर आक्रमण, नगर पर अधिकार, सलवान की मृत्यु और रसालु का राज्यारोहण]

४. राजा रसालु और मीर शिकारी

[रसालु की दक्षिण यात्रा, जगल मे मीर शिकारी से भेंट, मीर शिकारी का रसालु का शिष्य बन जाना, रसालु की शर्तें, मीर शिकारी और उसकी रानी, उसके द्वारा प्रतिज्ञाभग, मृग और मृगी की कथा, मीर शिकारी की मृत्यु, मीर शिकारी की पत्नी का रसालु से दुर्व्यवहार, मीर शिकारी की मृत्यु का दोषारोपण, रसालु की मुक्ति, मीर शिकारी का अन्तिम सस्कार और स्मारक]

५. राजा रसालु और हस

[रसालु का एक नगर मे प्रवेश, रसालु द्वारा तीस मील ऊँचा बाण चलाना, दो कौवो की कथा, उनका आकाश मे उड कर वापस आना, हस के घोसले मे शरण लेना, नर-काक द्वारा धोखा दिया जाना, राजा भोज का न्याय, रसालु और गीदड की कथा, रसालु और भोज, गीदड की मित्रता, हसो और कौवो को वापस बुलाना, रसालु की बुद्धिमानी]

६ राजा रसालु और राजा भोज .

[रसालु की यात्रा विलम्बित, उसका प्रस्थान, भोज का साथ चलना, उनका वार्त्तालाप, रानी शोभा के बाग मे पराक्रम दिखलाना, उनका आम्र-वृक्ष के नीचे ठहरना, राजा होम का आगमन, उसकी कविता, रसालु की बुद्धिमानी, रसालु और भोज दोनो मित्रो का बिछुडना]

७ राजा रसालु और गण्डगढ के राक्षस

[रसालु का स्वप्न, उसका पराक्रम के लिए प्रस्थान, ऊजड़ नगर और वृद्धा, वृद्धा की विपत्ति, राक्षस का भोग, रसालु और वृद्धा का पुत्र, रसालु और थीरा, थीरा और भीवू का पलायन, दूसरे राक्षसो से मुठभेड, राक्षसी ने टक्कर, राक्षमराज वैकलबाथ, भीवू और थीरा का दुर्भाग्य, थीरा का विलाप, गण्डगढ पर्वत मे कैद, गण्डगढ की चीत्कार, रसालु के तीर]

८ रसालु का तिलार, नाग और काग, डोढ काग (जगली कौवा) के साथ पराक्रम

[रसालु का झाऊमूसे को डूबने से बचाना और अपने साथ ले चलना, उसका एक सूने महल मे आगमन, चार घडिया, झाऊमूसे का कुण्ड मे पड जाना, राजा का जीवन खतरे मे, झाऊमूसे का काग और नाग से युद्ध, उसकी दुहरी विजय, राजा रसालु का जागरण, आभार-प्रदर्शन, झाऊमूसे का परामर्श, मित्रो का बिछुडना]

९ राजा रसालु और राजा सिरीकप :

[रसालु और सिरीसूक, सिरीसूक का बोलना, उसका निषेध और परामर्श, रसालु की यात्रा चालू, जुलाहा और उसकी बिल्ली, दो ग्रामीण युवक, वृद्ध सैनिक और बकरा, रसालु का श्रीकोट पर आगमन, सिरीकप के जादू का तूफान, रसालु और किले का घण्टा, रसालु और राजकुमारी झुधाल, राजाओ का मिलन, उनका कूट प्रश्नोत्तर, उनका खेल, रसालु की हार, रसालु की बिल्ली और सिरीकप के चूहे, सिरीकप की अन्तिम पराजय, उसका भाग जाना और फिर पकडा जाना, राजकुमारी कोकिलान का जन्म, जादूगर सिरीकप का अन्त, रसालु की कोकिलान के साथ विदाई]

१०. रानी कोकिलान का धोखा

[रसालु का खेडीमूर्त्ति मे बस जाना, कोकिलान का बाल्यकाल, धाय की मृत्यु, रसालू की शिकार, रानी कोकिलान का शिकार मे साथ जाना, उनके पराक्रम, हीरा हरिण कृष्ण मृग का अपमान और उसके द्वारा बदला, गजा और कॉंना, राजा होदी का खेडीमूर्त्ति मे आना, उसका कोकिलान से प्रेम, तोता और मैना, होदी का डर कर महल छोड़ना, व्याकुल रानी, होदी का धोबी और धोबिन से मिलना, उसका अटक पहुंच जाना]

११. रानी कोकिलान का भाग्य :

[तोते द्वारा तलाश जारी रखना, उसका हजारा मे अपने स्वामी से मिलना और रानी का भेद बताना, रसालु और उसका घोड़ा, उसका घर पहुचना, शादी को राजा होदी के पास भेजना, षडयन्त्र, होदी का खेडीमूर्त्ति आना, द्वन्द्वयुद्ध, होदी की मृत्यु, रसालु और कोकिलान, अपराध के प्रमाण, धीरे-धीरे दुर्घटना का रहस्योद्घाटन, रानी कोकिलान का अन्त]

१२ रसालु की मृत्यु

[रसालु द्वारा मृत शरीरो को प्राप्त करना, उनको नदी पर ले जाना, धोबी और धोबिन से मिलना, धोबी की कहानी, राजा का उसका मित्र बन जाना, उसके दुख और शक्ति का ह्रास, अटक की बुद्धिमती स्त्रिया, राजा होदी के भाई, खेडीमूर्त्ति पर आक्रमण, धोबी का सदेश और भविष्यवाणी, खेडीमूर्त्ति का घेरा, रसालु का शाप, युद्ध, रसालु की मृत्यु, सन्देश]

'मयाराम दर्जी की वात' की एक अन्य विशिष्ट प्रति इस सस्थान मे प्राप्त हुई है। उसका मन्थन करने पर ऐसा प्रतीत हुआ है कि जो वार्ता इस सस्करण मे मुद्रित हुई है वह अपूर्ण है। अत इस वार्ता का शेपाश और मुद्रित सस्करण की अपेक्षा इस प्रति मे जो अधिक दोहे प्राप्त हैं, वे यहाँ पाठको की जानकारी के लिये दिये जा रहे है

जाणण समजण वध जुगत, सषरापण सागेह।
आठू ही दासी अबै, एक जसीयल आगेह ॥१६॥ १६ के बाद[1]

ग्रहणा झब-झबे गजब, पाग फबै सिर पेछ।
उगतडो सूरज अबै, देष दबै दस देस ॥३१॥ ३१ के बाद

तेल पटा कसीयल तरह, रसीयल लाग रहत।
वसीयल हीय असीयल वनो, जसीयल बाट जोअत ॥३४॥ ३३ के वाद

यण तरै का वोदराजा मयरांम चवरीनू आवै है,
पेमरा पयाला नेत्रा सू पावे है,
विलकुल तो अलवेलो गूमरामै वै है।
करतीयो रा झूत्रकामै चदो जिम कहै है,
जोय जोय हेली मदरूप च(छ)क जावै है।
घूम घूंम रग मै सहेली इम गावै है ॥५०॥

गावै उभू गायणी, नरपै उभी नार।
मद-चकीया म्याराम रो, इद्र जिसो उणीयार ॥५१॥ ४८ के वाद

माणै नूप यम म्यारजी, दूलहो जसीयल देह।
दनकर तीन मसरम्न दप, वण धती पीउ मेह ॥६४॥ ५९ के वाद

---

१ यहां पर सभी जगह मुद्रित सस्करण की पद्यसख्या के बाद यह समझनी चाहिए।

वावल काठल वीजळी, वुग पकज उर चाढ ।
वादल काला वरसतां, आयो धुर आसाढ ॥६६॥ ६० के वाद

झड लागौ धीरा झरण, मोरा लोर मिलाव ।
वैरल सरपाटा वहै, भालण ज्यू भाड्चाव ॥६८॥ ६१ के वाद

उर-वसीया मैं ऐकली, वसीया कदे न वाग ।
इण पुल जसीयाइ घनै, रसीया साभल राग ॥७३॥ ६५ के बाद

म्यारौ आषै मालकी, रहै नही ऐक रीत ।
काछो(चो) रग कसूभरौ, पछो(चौ)लणरी प्रीत ॥७८॥ ६९ के वाद

चत्रमासौ वलवल सपर, अथ जल थल-थल आज ।
जिण पुल जसीयल तीजनै, माणौ अलवल(र) माज ॥११७॥ १०६ के वाद

मनछल छलरूपी मकर, वल-वल उठी वैल ।
अलवल(र) रहणौ आदरौ, छोडौ हल-वल छैल ॥११८॥

वीज-छटा धुर वादला, आव घटा छ(च)हुँ ओर ।
वाव मटा दीठा वणै, मीठा महकत मोर ॥१२३॥ १११ के वाद

लोरा जल लायौ लहर, पायो थल चहु पास ।
मोरा मल गायौ महक, चायौ इल चत्रमास ॥१२५॥ ११२ के बाद

उमड घटा उद्रीयामणी, वीज छटा छव वाह ।
विस जसडी लागै वुरी, निस पावस विण नाह ॥१२७॥ ११३ के बाद

वरछा झूवै वेल्हीया, लूंवै काठल लोर ।
कर-कर सोर कलाव कर, माणै रत धर मोर ॥१३०॥ ११५ के बाद

कांठल आभै काजली, वल-वल पवसी बीज ।
म्यारा अलवल माजली, तिण पुल रमसा तीज ॥१३२॥ ११६ के बाद

मगज अमर मूछां मयद, भमर डमर भणणंत ।
अरज गूमर मानौ अना, नवल वना नषतंत ॥१३५॥ ११८ के वाद
मालू आषै म्यारनै, जालू छाला झल ।
की हालू-हालू करौ, पालू छू पल-पल ॥१५०॥ १३२ के वाद
कहीया था आगु कवल, रहण अठै राजान ।
कर हठ क्यू वावौ कमर, नवल वना नादान ॥१५२॥ ,, ,,
क्यू हठ जाली कवरजी, वाली धण वीसार ।
जसा-वायक —
क्यू काळी अतरी करै, माली थूं मनूहार ॥१५३॥ ,, ,,

म्याराम-वायक —

अण जसीयल मानै अवै, कहीया बौल कुबोल ।
यण बोलारै उपरै, जासा अलवर षोल ॥१५४॥ „ „

मालू आषै म्यारनै, हठ कर तजो हलाण ।
कलहलीया केकाण ज्यू, करो पलाण-पलाण ॥१५७॥ १३५ (गीत पद्य-६) के बाद

म्यारा मारा मुलकमै, चोषी पाचू चीज ।
हीडै रागा वाग हद, तीजणीया नै तीज ॥१६२॥ १३९ के स्थान पर

वात का शेषाश इस प्रकार है—

वारता— ॥ म्यारामजी वायक ॥

अवै म्यारामजी बोलीया, दिल का पडदा षौलीया । वचना अमरत-वाणसी, सारा देसा सिरे सिवाणची । लूणका लहरा लेवै, उमग की छौला ए वै । सारी नदीया सू सिरै, कताबामै कव तारीफ करै । जिका जमना गगारै जोडै, तुठी थकी पाप-दालद तोडै । यण भातको माको देस, जठै केलासके भौलैभुलै महेस । जिकण सवाणछीका इसा भाषर छै नै इसाइ ठाकुर छै ।

॥ कवत ॥ अकल दुरग अण षलौ वडा परबत चहुं वल,
माही नदी लूणका नीर-धारा अत उजल ।
अन भाजा नीपजै रहै सब दन आवासा,
माता बकर षाय चढण ताता वरहासा ॥
पदमणी त्रीया उत्तम पुरष, पड अवगुण न हवै पछी,
मुरधरा तणा जोता मुलक, सिरै देस सिवीयाणछी ॥ १७३

वात—मुलक देसाकौ सरौ मारवाड, मारवाडका मुगटामण सिवाणची का पाड । सिवाणचीकौ चौगौ भाडीयावास, जठै माको रैवास । जकण देसमे हमै जावसा, अलवल फेर कदेक आवसा । जसा सहथी सात ही सहेलीयानै ले जावसा ।

मालू-वायक—

जद मालुडी इउ कहै छै—राज ! इठै क्यू न रहै छै ? सांत रत आवसी, वरषा रत जावसी । आभो उजल रग वरसी, गुडलापण दुर करसी । मोर कलासून करसी, कमोदण विकससी, वादल नकससी । आ रत जद आवैला, जसीअल मर जावैला । सूणौ नी भमर छैला, घण छोड क्यू चालसौ गैला ।

॥ दूहो ॥ देपण मुरधर देसनू, है जावणरी हाम ।
कर जोडे अरजी करा, मानो नी म्याराम ॥१७४॥

वादल गल जल वीपरै, एल सीतल अधकार ।
केकाणा हलवल करै, इण पुल क्यू असवार ॥१७५॥

रिल चित मलीया राजसु, विलकुलीया एक वार ।
चलीया जसीयल चौ(छौ)डनै, अलवलीया असवार ॥१७६॥

वात—मालू कहै—माकी अरज क्यू न मानो छो ?

इल सीतल अवदात वायव-जव-सम वलावल ,
डार माण डरपती नार भीडै पीउ कावल ।
भुअग भूम माय भलत भमर दाहृत वेजोगण ,
रूठ सगत न्ह रहृत तोमडछम तमोगण ।
दाजसी वना सीतल दहृण, रहृण अठै चत रीझीयै ।
रत पलग छाक माणो रमण, इण रत गमण न कीजोयै ॥१७७॥

वारता—जद म्याराम कह्यो—माको तो मन उठै लाग रह्यो । अवारु तौ जावाला, फेर थू कहै तौ आवाला । वेलीयानू कह्यौ कमरा वाधौ, सारा साज पुरणा पर साधौ । घोडा पर साकता मडाणी छै, जद जसा चढणकी जाणी छै । मालुनू कह्यो—कवरजी रापीया नही रहै, अब थु कासूं कहै । जद मालू कह्यौ—आपाकै म्यारामजी वना नही सजसी, आपा घणी करसा तौ आपानू तजसी । जद जसा भी सारी त्यारी कीधी, लषा अहृणा-पौसाषा साथे लीधी । जानी सिरदार दोढी आया, कलावत गाया । जद म्याराम जसानू कह्यौ—मै डेरा जावसा, सारा साज तारी करावसा । वीद-राजा घणा दना सू वारै आया, जानी घणा आणद चाया । मुजरा-सलाम कोधी, हाजरी लीधी; जण दनरो दुलहो ऐसो नजर आयो, नकी लीधी । अलवर की सहेलीया देपणनु आइ छै, आपकै तौ मारवाड की छढाइ छै । वछायता कीजे, की छका दीजै । आप ही पीजे, जसीयाको सुहाग अर कीजै । वछायता कराइ, दारूकी तुगा भराइ, जसाकै दोली कनात षडी कराइ । वीदराजा वराजीया, चद-सूरज-सा छाजीया । दारूका प्याला भराया, घोडा कायजै कराया । पणीयारीयाका टौला आवै छै, रूप देप मस्त होय जावे छै ।

दुहा ॥ कचन-पभ कलाइया, मणधर जेही ड[ड] ।
गज-गत चगी गोरडी, लाम्बा वैणी - डड ॥१७९॥

चद्रायणो— मसतक कुभ उपाड गहके मोर ज्युं ,
भरीया भूषण अग लहके होर ज्यु ।
पाणी कुंभ उपाड धरै पणीयारीया ,
परहा कहा जी, गज-गत चगी चाल सुचगी नारीया ॥१८०॥

अलवेली यण रीत चलती ओयणा ,
घमकै नेवर घाट विलोकै लोयणा ।
रस-भरीया ज्यान नरषण राजनु ,
लयौ महोलो नेह हटको लाजनुं ॥१८१॥

॥ दुहो ॥ लोयण मोहण लागणा, सोयण दीठ समैह ।
जोयण कण विष जाननु, भोयण भमर भमैह ॥१८२॥

वात—इसी पणीयारीया जल भरवानै आवे छेइ, मुजरा की सडासड लगाइ। जसीयलनै पेषै छे, म्यारामनु वेषै छै। मुषर हसै छे, आमै रूप बसै छै।

दुहा ॥ दूपटा भूज पेछा दयण, परछल अतरपट ।
अग-अग उजलतो उमग, छक मद अनग चट ॥१८३॥

॥ छद्रायणा ॥ इण सरवर री पाल हीडौलो बाधसा ,
दोवड रेसम डोर जरीतर साधसा ।
कसीया भमर सूजाण हलो किण काजनै ,
रीसीया मारूराण रमाडो राजनै ॥१८४॥

लूहर लूबा लार गुलाक दध मागसा ,
जसीहल कठ लगाय अबोलो भागसा ।
जो मारूराव सजोगी छक घणा ,
लासा जटाधर भेष पटाभर मेवणा ॥१८५॥

वात – इण तक अठे सारारौ समाध्यान कीधौ । म्यारामजी कह्यो–हमै ताकीद करो, सारा सभ उठा माथै धरो । ढोलीया-ढाढीयानै सीष दीधी, उणारी जसवाद लीधी । सारा सिरदार असवार हुआ । लारली सषीयारा कहा दूहा—

विरह विमासी वालमा, भामण गावै भीज ।
इण रतमै सी आवसी, कवण रमासी तीज ॥१८६॥

म्यारै सारी महलसुं, जत्र मिल कोहा जुहार ।
वीचडताइ सजना, पलक्या असूवार ॥१८७॥

पी म्याराजी पौंचसो, दुलहा मुरध [र] देस ।
लाडा था विण लागसी, निज घर दुसमण नेस ।।१८८।।

सायब आज सधावसो, रल-मल गावे रज ।
सायव उर तीय जीयसमी, हो मारू हीय हज ।।१८६।।

जसा सषीया परसीया, कमलमकरद वरसीया। जसा मन उदास हुओ, मालकी को कह्यो दूहो—

पित-माता परवार पप, नज भ्राता तजनेस ।
म्यारा व्याह विनोदसुं, तजीयो अलवर देस ।।१८६।।

ओ दुहो सुणीयो, पाचो म्यारामरे षवास दूहो भणीयो ।—

सपनै ही इण देसडे, आय न जीवयता ।
म्याली माडे मीहसू, आया कोस किता ।।१६०।।

जान सारी षडीया, जसा रथ चडीया । मिजला-मिजला भाड्यावास आया, घणेको छाकां मद छायो । ग्रहणाको भललाट, तेजको जललाट । आमाढरो भाण, रसराग जाण । मगजा मदध, वोप तेजवघ । ओपह दुवाह, वापाण वाह । काम की मूरत, रूपकी सूरत । रगरी रली, रसरी डली । आणदरी गली । माहरो चद्रमा सजोगणी कै लेषै, आसाढरो भाण बनो जोगणी कंब पेषे, तुररैरा तार तुटता, किलगी सोभ उठता । आपामै ललाया चुटती, रसरी घारीया वुठती । डेरानू आवे छै, भगतण-पातर गावै छै । अलवरकी सहेलीया देषै छे । इण तक म्याराम तबु दाषल हुओ । जद जसा जोतसीनू कह्यो–जान छ(च)ढणरो तीषो मोरथ दीजै, मनमानी नवाजस लीजै । जद जोसी कह्यो–जतो वागमै प्रस्थानो कीजो, परभातको दन नीको छै, सारो सूभ महुरताको टीको छै । परभातरी दुजी मजल करावी । आज तो डेरा वागमै दरावसी । सिरदार वागनु वलीया, जसाका मनोरथ फली [या] । वाग आणद उतरीया, जठै ठोड-ठोड कूड भरीया । घोडा वडलारी साप-तलै वाधीया । सिरदार उतर वागमै आया, जाजम गदरा वछवाया । भगतण-पातर गावै छै, चछ(च) लगा मचावै छै । अलवेलीया छैलाना नरषे है, वयण परस नेत्रा रस वरसै है । तवु षडा कीया, मोतीयारा गुछा रेसमरी लडा दीया । वागमै मेलायत पडो हुई, इन्द्र की पुरी हुई । चा(छा)-जा कबाणीया छूटा हैं, सरदरी पुनमरा चद उग-उग उठा है । झालरी फहरे है, चादणी चहरै है । कलस झगमगे है, अजव जेब जगे है । जण महलामे वराज भमर आलीजा रो भूप, गघरो गेंद, माणीगराको रूप । चायलाको तुररो, चवीनीको हार, आष्यारो अजन, आतमारो आधार । छोगालो छवीलो प्राण-

प्यारो, नैणाकों नरषणो ना है छिन न्यारो, मतवालीको माणग, रसजीणैको जाणग । जिण वागकी छौज जेती, दीठाइ'ज वण आवै कहा केती । वसत रत फल-फूल रही छै, आणदमइ छै । चद्रसरोवर छै, तीर माथै घणा तरोवर छै । केतकी, चबेली, गुलाब, चपाकी फुलवाद । आबाकी मजर, भमराकी गुजर । आबाकै उपरै कोयला टहुका करै छै, सुवा नीलकठ मैमथ हुआ फरै छै, रस भरै छे । मौर मैमत हुआ निरत करै है, एक-एकसु सिरै है । फुलवादीरी क्यारीयामै धावै है, टहुका करै है, गुदीमै गुचा धरै है ।

॥ दूहा ॥ महकै मीठा मोर, कहकै मीठी कोयला ।
आठ पहर छहु ओर, लपटाणी तरसु लता ॥१६१॥

वात – जण वागमै आय उतरीया । रूख सारा रसमजरासु भरीया । जसा महेला दापल वीही, रात घणी आणदसूं गई । दीपक जगायो, सनेह-रस पायो । साडी जरकसी पर म्यारामजी दुपटो ओढायो । भमर कली लपटायो । हीडोल षाट भूलै छै, च्यारू पय डुलै छे । म्याराम तन जागीया । जसा मन जागी । मदन-माहराजरी नौबत जोर बागी; कमल कलीया वषसी, भमर गुजार थागी । हमै सुरजरो भास हुओ, कमलारो वेकास हुओ । तम-दालदरो नास हुओ, जोतरो प्रकास हुओ । म्यारामजी अपौढी हुआ, दोढी-दस त्यार हुआ । मालूडी दारूरी मनुआर कीधी, दोय छक लीधी । मारवाड छा (चा)लणकी ताकीद कोधो । उठासु कसीया चद सरोवर आया । गौडा जाषोडा, पाया, कमरा सु कसीया छै, रभाका रसीया छे । बेलीयानू दारू पावै छे, केई जलमैं नावै छै, गायणो गावै छे । जद किसतुरी अरज कीधी । जसीयाकै मडसु वधाया ।

दूहा ॥ म्यारो अलवल देसती, आयो जसीयल व्याह ।
गावत बादी गीतडा, लीना कवर बधाय ॥१६२॥

वात – अण तक जान आइ । जानी सीष पाइ आपो-आपकै घरा गया । घररा घोडा, आदमी रह्या । हमे इण तक सुष माणै छै, इद्र भी वषाणै छै । नित सकारा जावै छै । असवारी आवै छै । सतषणा महल आकास छाया छै, आभा वादल भूक आया छै । अण देसरो चढती वेसरो पडदा छूटा छै, कला-वातु का बु टा छै । उग-उग उठा छे । चत्रगारी वणी, सोनै मैं वैडुरज-मणी, कडा, कठचा, वीटचा, पुणछ्या सु भरचो, उनालाको आवो मजरीसु इ भरचो । मोतीयाको गजरो, फूला को भारो, गाहडको गाडी रायजादो प्यारो । दरीयाइको रेजो आछो रग लागो । सोनैरै कडा मे हीडोल-पाट होडै छै । इद्र देप-देप भुलै छै । छ(च) दणका कपाटका जडीया छै हाटका,

गवाष छूटा है वाटका। इण तकरा महलायत वराजे। चवै म्याराम आसमांनरै चा(छा) जे। कोक-कलाको प्रवीण वीदराजा सुजाण, रंग-भमर नादान, चढती जवान। जसीया कटाच करै है, म्याराम रो मन हरै। अणारो सुष वषाणे, रात-दन मनछोजी लो जाँणे। म्यारामसा भोगी भमर, जमी आसमाँन लग अमर।

इती वात सपुरण। म्याराँमरी आसीया वुधजीरी कही स० १९१३ रा मती भद्रवा ब्द ७।

मुद्रित सस्करण मे पृ० १६७ 'रेंवत समजै रानमै' दोहा २७, पृ० १७७ 'जेले तुरगा रेशमी' गीत और पृ० १८५, 'वन सघन लसत मनु घन वसाल' छद पद्धरी १४०, जो प्रकाशित हुए हैं वे इस नई प्रति मे प्राप्त नही हैं।

उक्त वार्ताओ के अतिरिक्त इसमे तीन परिशिष्ट दिये गये हैं जिनका सक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

परिशिष्ट १ (क) मे राजा रिसालू की बात का जो सक्षिप्त रूप प्राप्त हुआ है, उसे अविकल रूप से यहाँ दिया है और (ख) मे इसी 'बात' के केवल जो स्वतन्त्र रूप से दोहे प्राप्त होते हैं वे ही दिये हैं। इन दोहो मे राजस्थानी, गुजराती, और पजाबी भाषा के शब्दो का मिश्रण है जिनका कि भाषा-विज्ञान की दृष्टि से महत्व है।

परिशिष्ट २ क ख ग. और घ मे विभक्त है। प्रत्येक वार्ता मे प्रयुक्त दोहा, कवित्त, कुण्डलियाँ, चौपाई आदि छन्दो के वर्गीकरण के साथ अकाराद्य-नुक्रम अलग-अलग दिया गया है।

परिशिष्ट ३ मे पाचो वातो मे पद्य एव पद्याश के रूप मे उपलब्ध कहावते, मुहावरे और सूक्तियो का सकलन कर अकारानुक्रम से दिया गया है जो कि शोधविद्वानो के लिए उपादेय होगा।

प्रति-परिचय—

प्रेमकथाओ की प्रतिलिपियाँ अनेक हस्तलिखित सग्रहो मे और सस्थाओ मे बिखरी पडी हैं, यहाँ तक कि कई प्रसिद्ध कथाओ की बीसियो प्रतिलिपियाँ तक प्राप्त हो सकती है। यहाँ प्रकाशित वातो को यथासाध्य प्रामाणिक रूप देने के लिए मैने कुछ महत्त्वपूर्ण प्रतियो का प्रयोग किया है जिनका विवरण इस प्रकार है —

१. वगसीराम प्रोहित हीराँ की वात इसका केवल एकमात्र गुटका राज-स्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर मे है। ग्रन्थ-सख्या ५८६७ है। साइज-

सेन्टी मीटर मे १६ १×२७, पत्र स० ६५, पंक्ति १६, अक्षर १६ हैं। लेखन काल २०वी शती है। इसमे लेखन प्रशस्ति नही है।

२ राजा रिसालू री वात. इस बात के सम्पादन मे मैंने ७ प्रतियो का प्रयोग किया है। ५ प्रतियो का मूल वार्ता मे और २ प्रतियो का परिशिष्ट १. क और ख मे। पाँचो प्रतियाँ क ख ग घ. ङ सज्ञा से अङ्कित की गई है। क सज्ञक का पाठ आदर्श मान कर ऊपर दिया गया है और ख ग घ ङ का पाठान्तर मे प्रयोग किया है।

क सज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, ग्र स ३५५३, साइज १८×१२ ३ से मी, पत्र स —१२७–१५६, पक्ति १६, अक्षर ३६ है। गुटका है। लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है —

"सवत १८७८ रा वृषे मिति माह वद ७ गुरवासरे लिखत चूतरा [चतुरा] नागोर नगर मध्ये ॥श्री॥"

ख. सज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर स० ६२६, साइज १३ × ११ से मी, पत्र-७, पक्ति १३, अक्षर ४४ है। लेखन प्रशस्ति निम्न है—

"सवत् १८६० ना कात्तिक विद ८ बुद्धे सपूर्ण। लिखित मुनी गुलाल-कुसल। श्रीमान कुए।

ग सज्ञक—रा प्रा प्र, जोधपुर, ग्रन्थ सख्या ३६६०, साइज २६ ३×११ से मी, पत्र १५, पक्ति १३, अक्षर ३३ हैं। लेखन प्रशस्ति—

"सवत् १८६० वर्षे मती वैसाष वदि ५ दिने वार आदित्य दिने लि० ऋ० रामचद ग्राम कागणी मध्ये ॥ श्री

घ सज्ञक—राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर; गुटका न० ३५७३ (६०), साइज २०×२८.८ से.मी, पत्र १७१–१७५, पक्ति ४०, अक्षर ३२ हैं। लेखन अनुमानत १८ वी शती है। गुटका जीर्ण-शीर्ण है।

ङ सज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, गुटका नं० १०७०१, साइज १६.३×११ ८ से मी, पत्र स० ६९, पक्ति ११, अक्षर १८ है। सचित्र प्रति है। लेखन प्रशस्ति—

"स० १८६२ रा मिती चैत सुद ७ अर्कवासरे ॥ मैडता नगरे ॥ श्री।"

परिशिष्ट १ (क)—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, गुटका न० ४६०५, साइज १५ ८×१२.५ से. मी, पत्र २६, पक्ति १४, अक्षर १८ हैं। लेखन प्रशस्ति—

"ली/प/अनोपवीजय ग।/सवत् १८७५ रा आसाढ सुद ३ दने ॥श्री॥"

सेन्टी मीटर मे १६ १×२७, पत्र स० ६५, पंक्ति १६, अक्षर १६ हैं। लेखन काल २०वी शती है। इसमे लेखन प्रशस्ति नही है।

२ राजा रिसालू री वात. इस बात के सम्पादन मे मैंने ७ प्रतियो का प्रयोग किया है। ५ प्रतियो का मूल वार्ता मे और २ प्रतियो का परिशिष्ट १. क और ख मे। पाँचो प्रतियाँ क ख ग घ. ङ सज्ञा से अङ्कित की गई है। क सज्ञक का पाठ आदर्श मान कर ऊपर दिया गया है और ख ग घ ङ का पाठान्तर मे प्रयोग किया है।

क सज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान जोधपुर, ग्र स ३५५३, साइज १८×१२ ३ से मी; पत्र स—१२७–१५६, पक्ति १६, अक्षर ३६ है। गुटका है। लेखन प्रशस्ति इस प्रकार है —

"सवत १८७८ रा वृषे मिति माह वद ७ गुरवासरे लिखत चूतरा [चतुरा] नागोर नगर मध्ये ।।श्री।।"

ख. सज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर स० ६२६, साइज १३ ×११ से मी, पत्र-७, पक्ति १३, अक्षर ४४ है। लेखन प्रशस्ति निम्न है—

"सवत् १८९० ना कात्तिक विद ८ बुद्धे सपूर्णं। लिखित मुनी गुलाल-कुसल। श्रीमान कुए।

ग सज्ञक—रा प्रा प्र, जोधपुर, ग्रन्थ सख्या ३६६०, साइज २६ ३×११ से मी, पत्र १५, पक्ति १३, अक्षर ३३ हैं। लेखन प्रशस्ति—

"सवत् १८६० वर्षे मती वैसाष वदि ५ दिने वार आदित्य दिने लि० ऋ० रामचद ग्राम कागणी मध्ये ।। श्री

घ सज्ञक—राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर; गुटका न० ३५७३ (६०), साइज २०×२८.८ से.मी, पत्र १७१–१७५, पक्ति ४०, अक्षर ३२ हैं। लेखन अनुमानत १८ वी शती है। गुटका जीर्ण-शीर्ण है।

ङ सज्ञक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, गुटका न० १०७०१, साइज १६.३×११ ८ से मी, पत्र स० ६९, पक्ति ११, अक्षर १८ है। सचित्र प्रति है। लेखन प्रशस्ति—

"स० १८९२ रा मिती चैत सुद ७ अर्कवासरे ।। मैडता नगरै ।। श्री।"

परिशिप्ट १ (क)—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिप्ठान जोधपुर, गुटका न० ४६०५, साइज १५ ८×१२.५ से. मी, पत्र २६, पक्ति १४, अक्षर १८ हैं। लेखन प्रशस्ति—

"लो/प/अनोपवीजय ग।/सवत् १८७५ रा आसाढ सुद ३ दने ।।श्री।।"

वार्त्तागत-विषयानुक्रम

१. वात वगसीरांमजी प्रोहित-हीरां की

ख सज्ञक—राजस्थानी शोध सस्थान, जोधपुर के सग्रह का यह गुटका है। साइज १४.५×१२, पत्र० १४४—१५६, पक्ति० १४, अक्षर० २१ है। लेखन-प्रशस्ति इस प्रकार हैं —

"इति श्री राजा चदरी प्रेमलालछी रुद्रदेवरी वात सपूर्णं। सवत् १८३६ रा मती चैत्र वदि १४ चद्रवासरेः। पडीतचक्रचूडामणी वा०। श्री श्री श्री ७ श्रीकुशलरत्नजी तत्शिष्य प० श्रीश्रीअनोपरत्नजी मुनि खुस्यालचद लिपिकृतः। श्रीगुदवच नगरमध्ये ।। सेवग गिरधरीरी पोथी माहे सु लखी ।"

आभार-प्रदर्शन—

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के सम्मान्य सञ्चालक, परमादरणीय 'पद्मश्री' मुनि जिनविजयजी 'पुरातत्त्वाचार्य' का मैं हृदय से अत्यन्त आभार मानता हूँ कि जिन्होने अपने निर्देशन मे मुझे प्रस्तुत 'राजस्थानी साहित्य सग्रह-भाग ३' का सम्पादनकार्य सौप कर राजस्थानी भाषा के प्रति मेरी अभिरुचि का सवर्द्धन किया। साथ ही मैं प्रतिष्ठान के उपसचालक, विद्यारागपरायण प० श्रीगोपालनारायणजी बहुरा एम ए का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ जिनका कि मुझे स्नेहसौजन्यपूर्ण सहयोग एव सत्परामर्श सतत सुलभ रहा।

राजस्थानी भाषा के शोधविद्वान् एव प्रतिनिधिकवि डॉ नारायणसिंहजी भाटी ने अपने शोध-सस्थान तथा शोधप्रबन्ध-लेखनादिक अनेक महत्त्वपूर्ण कार्यों मे अत्यधिक व्यस्त रहते हुए भी मेरे स्वल्प अनुरोध से ही उक्त सग्रह की विशद भूमिका लिखने का कष्ट कर अपनी सदाशयता का परिचय दिया। एतदर्थ मैं इनके प्रति धन्यवाद-पुरस्सर हार्दिक आभार प्रदर्शित करना अपना कर्त्तव्य समझता हू।

मैं अपने सहयोगी मित्रो, विशेषत सुहृद्वर श्रीविनयसागरजी महोपाध्याय एव प० श्रीठाकुरदत्तजी जोशी साहित्याचार्य का भी आभार मानता हूँ कि जिन्होने मुझे सामग्री-सकलनादि कार्यों मे अपना अपेक्षित सहयोग प्रदान किया।

आनन्द भवन, चोपासनी रोड, जोधपुर
भाद्रपद शुक्ल ५ स० २०२२ वि०

गोस्वामी लक्ष्मीनारायण दीक्षित

वार्त्तागत-विषयानुक्रम

१. बात बगसीरांमजी प्रोहित-हीरां की

२. रीसालूरी वारता

३. वात नागजी-नागवन्ती री

४. वात दरजी मयाराम की

५. राजा चंद-प्रेमलालछीरी वात



वात वगसीरांमजी प्रोहित हीरांकी



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ वात वगसीरामजी प्रोहित हीरांकी लिख्यते

सोरठा— डसण ऐक सुडाल, वरदायक रिधसिध-वरण ।
विद्या वयण विसाल, आपीजै अपिर उकत ॥ १

गाथा चोसर— डसण येक गजमुप लवोदर,
धरणी कनकमुकट फरसीधर ।
पीतंवर सोभा तन वुपर,
विनायक दायेक विद्या वर ॥ २

दोहा— चाहत चातुर अधिकचित, लेपत सुणत लुभात ।
जथा अनुक्रम सम जुगत, वरणु अद्भुत वात ॥ ३

अथ उदय्यापूरको वरनन

कुंडलिय्या— उदिय्यापुरकी छव अधिक, सपति नगर समाज,
घर घर परजा लपपती, राणो भीम सुराज ॥
राणो भीम सुराज, तपोवल रंगसु,
सगता चुडा साथ, लिया दल सगसु ॥
उजल कोट उत्तग, इसी विधि वोपिया,
जाण क लकाकोट, कनकमय जोपिया ॥ ४

दरवाजा वणिया दुगम, कीना लोहकपाट ।
एक एकतै आगला, थटै सुभटा थाट ॥
थटै सुभटा थाट अनोपा थाहरा,
नरनायेक वलवीर पछाडै नाहरा ॥
किरमाला जुध कीव अरिंदा कालसा,
जाण क क्रोध अभग जुटै जम जालमा ॥ ५

वजै त्रमक धौंसर वजै, नोवति सवद निराट ।
मदमत पभु ठाण मय, थटै गयदा थाट ॥
थटै गयदा 'थाट' क फोजा थाहणा,
वणौं तुरगा वाल मृगाटा वाहणा ।



वात वगसीरांमजी प्रोहित हीरांकी



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ वात वगसीरामजी प्रोहित हीरांकी लिख्यते

सोरठा— डसण ऐक सुडाल, वरदायक रिधसिध-वरण ।
विद्या वयण विसाल, आपीजै अपिर उकत ॥ १

गाथा चोसर— डसण येक गजमुष लंबोदर,
धरणी कनकमुकट फरसीधर ।
पीतंबर सोभा तन वुपर,
विनायक दायेक विद्या वर ॥ २

दोहा— चाहत चातुर अधिकचित, लेपत सुणत लुभात ।
जथा अनुक्रम सम जुगत, वरणु अद्भुत वात ॥ ३

अथ उदय्यापूरको वरनन

कुंडलिय्या— उदिय्यापुरकी छव अधिक, सपति नगर समाज,
घर घर परजा लपपती, राणो भीम सुराज ॥
राणो भीम सुराज, तपोवल रंगसु,
सगता चुडा साथ, लिया दल सगसु ॥
उजल कोट उत्तंग, इसी विधि वोपिया,
जाण क लंकाकोट, कनकमय जोपिया ॥ ४

दरवाजा वणिया दुगम, कीना लोहकपाट ।
एक एकतै आगला, थटै सुभटां थाट ॥
थटै सुभटा थाट अनोपा थाहरां,
नरनायेक वलवीर पछाडै नाहरा ॥
किरमाला जुध कीध अरिंदा कालमा,
जाण क क्रोध अभंग जुटै जम जालमा ॥ ५

वजै त्रमक धौसर वजै, नोवति सवद निराट ।
मदमत पमु ठाण मय, थटै गयदा थाट ॥
थटै गयदा 'थाट' क फोजा थाहणा,
वणै तुरगा वाल मृगाटा वाहणा ।

ऊट प्रचड अनेक अग्राजै उधरैं,
घणहर भादुमास क जाणै घरहरै ॥ ६
चहुँ तरफा बणि चौहटा अटा वुतग अपड ।
घुमडे जाणे घनघटा दमक छटा छवि-डड ।
दमक छटा छविडड पताका देपिया,
पटा हाट व्यौपार जुहारा पेपिया ।
आभुषण नर नारि ईसी बिध वोपिया,
जाण क सुरपुर लोक इधक छबि जोपिया ॥ ७
पीछोलाको पेपवो मानसरोवर मोज,
पाणी भरै छै पदमणी चदवदनी मुप चोज ।
चदवदनी मुप चोज हसगति चाल्लवो,
हाव भाव गावत हबोलै हालबो ॥
तार जरी पोसाप वीच तन तेहडी,
इदपुरी उणियार विराजै येहडी ॥ ८
बाग अनेक वावडी अदभुत फूल अपार,
कोयल मोर चकोर पिक जपत भवर गुजार ।
जपत भवर गुजार गुलाबा जूथमैं,
लता फूल लपटात तरोवर लूथमै ॥
अवा चवा सुगध विराजै येहडा,
जाणे क वदरावन वसत छबि जेहडा ॥ ६
दोहा– ऊदयापुर राजै ईसो, राणो भीम सुरिद ।
कोडीधज जिणरै कैनै, चावो लिपमीचद ॥ १०
लिपमीचद किरति लीयें, दे दे दोलत दाव ।
भाट गुणीजन भोजिगा, पावै लाप पसाव ॥ ११
चैन मास पप चादणौ, सातम तिथि सकाज ।
अर धनिसा वृसपत अवर, सुक (भ) नक्षत्र पुपराज ॥ १२
उण पुल कन्या अवतरी, पूरव लेप प्रताप ।
चित वृत लिपमीचदकै, उछव घणो अमाप ॥ १३
छन्द पधरी– उपजी कोडीधज घरि आय, लपमीचद मन उछव लगाय ।
गई निसा भईयो परभात, त दन पचदुण वीते दिपात ॥
सेठ सवै जोतिस वुलाय, सुभ वीप्र लग्न जोये सुभाय ।
मिल्लि गावत कुलतिय तान मान,

वीच आगण स्यघासण वणाय, आभूपण कर त्रिये वैठ आय
अतर फुलेल चिरचत अग, सुभलिया किनका गोद सग ।
अदभुत सम मगल भये आण, वाजत्र वजे अनेक वाण ॥
द्वज विप्र मत्र आहुत दीन, किनका नाम हीरा सु कीन ।
चणक लेप छवि वीज चद, बालक मुरालकन रूप बृद ॥
नागरी अग सोभा नवीन, कनकनकै केल दोय पान कीन ।
भई सात वरसमै वालभाव, विधि विधि आभूपण तन वणाव ॥
अदभुत लसै छव गवर अग, पदमणि कोमल चपक प्रसग ।
ढुलडचा रमैं सग सपी ढूल, दमकत अग जरकस दकूल ॥
अग्यातजोवना भाव एम, नह जाणत जोवन आप नेम ॥ १४

दोहा– सात वरसाकी समय, गोरी मुगध अग्यात ।
जोबननै नहै जाणियो, वरण सुणज्यौ वात ॥ १५
कुच ऊपजे काची कली, हिवडै लागौ हाथ ।
मुगधा जाण्यो रोग मन, विसर गई सव बात ॥ १६
कह्यौ आपकी धायकू, कीयो वीराम अकाज ।
काल हुतै काची कली, भई सुपारी आज ॥ १७

धाय वचन

दोहा– हीरा चिंता परहरो, ऐं तो कुच ऊपजाय ।
देपे जाकै दूपसी, थाकै पीड न थाय ॥ १८
हीरा चिंता परहरी, धाये वचन उर धारि ।
सुघड सहेली साथमै, बिहरत हस विहार ॥ १९
वालकलीला वालपण, वीत्यो षेलत व्र द ।
हीरा तन सूरज हरप, आयो जोवन इंद ॥ २०

१ वात– य तै हीराके सरीर ऊपर सूरजरूपी जोवन आयो छै। हाव-भाव दरसायो छै। पाछै सूरजपाख जागी छै। मुप शोभा लागी छै। सूरजकी अरणोदै अवरमै भ्यासी छै। जोवनकी अरणोदै मुप ऊपर प्रकासी छै। सूरजकी उदै रपीसुर ध्यान करण लागा छै। जोवनकै उदै ऊर ऊत्तंग जागा छै। सरीरमैं रातिरूपी वालकपणो विलायो छै। दिनरूपी जोवन आगो छै। कवल-रूपी हीरांका नेत्र फूल्या छै। भव[र]कवल फूल जाणकर भूल्या छै। हीरा मुगधा ग्यातजोवना कहावे छै, दिल वीच चुपचतराय भावै छै। अव नोप-चोपकी वाता वणावै छै। सनेहकी चुप जगावै छै।

दोहा– चवदह वरसै अधिक चित, जोबन तणी जिहाज ।
जोवत अब टेढी निजरि, गह चालत गजराज ।। २१
मधुर बचन छबि चद मुष, ऊमगे ऊरज ऊतग ।
लीलबर ढाके ललित, सुभ कचन-गिर-शृ ग ।। २२
ऊडघन अबर छबि अधिक, वोपत अग अनत ।
मानौ बदल मेघके, कचनगिर ढाकत ।। २३
ललित बक छवि लोयणा, अति चचल उभकात ।
अंजणतै अटकायिया, अबै नतर उड जात ।। २४

२ बात– अब माइता व्यावकी होस कीनी छै । रामेसुर ब्राह्मणनै आग्या दीनी छै । रामेसुर अठासु गुजरातनै ध्यायौ छै । अहमदाबाद नगरमै आयौ छ। तदि कपूरचद सेठ सुणि पायो छै । सेठ आपका आदमी षिनाये रामेसुरनै बुलायौ छै । प्रोहितको घणो सिसटाचार कीनौ छै । टीको बधाय लीनौ छै । टीको पाचैकौ सावो थापि दीनौ छै । ब्राह्मणसू व्यावकी ताकीदी कीनी छै । कडा मोती सीरोपाव बीदा दीनी छै । उदैपुर आय ब्राह्मण बधाई दीनी छै । लिषमीचद हीराको व्यावकी ताकीदी कीनी छै । माणिकचदकी जान उदैपूर आई छै । कलावत भगतण्या गावै छै । नेगदार नेग पावै छै । यौ बीदराजा तोरण आयो छै । हीरानै हीराकी भाभी कहै छै—

भाभी वचन

दोहा– भाभी इम कहियो बयण, नणद सुणो छो नेम ।
मन कर देषो बीदमुष, तोरण आयो तेम ।। २५
आभूपण झमकत ऊठी, अग दमकत पटवोट ।
वाके द्रगन बिलोकता, चमक बाणकी चोट ।। २६
पकजमुष पर लीलपट, गवणत मनु गयद ।
मानु वदल मेघको, चालत ढाक्यौ चद ।। २७
बनडाको देष्यौ बदन, हीरा भई बिहाल ।
मानु होय गइ कुद मन, मुरझत चपामाल ।। २८
दुलही वनडो देपता, ऊलही उर विच आग ।
सगम देपो साहिवो, कीनो हस र काग ।। २९
हीरा मन व्याकुल भई, आयौ लेप अलेप ।
कनकथालमैछेद करि, मारी लोहा मेप ।। ३०
हीरा मन वाकुल भई, आयो लेप अनथ ।
चात्र हीरा चदमी, केत-राहासो-कथ ।। ३१

फीकै मन फेरा लीया, अतर भई उदास ।
आंप मीच रोगी अवस, पीवत नीम प्रकास ।। ३२

३ बात– तीसरै दिन समठुणी करि जानने विदा कीनी छै । हीरानै रथमै वठाण केसरी बडारणनै साथ दीनी छै । जान अहमदाबाद आई छै । कपूरचद घण हेतसु वधाई छै । अठै हीरा घणी बेपातर रहै छै । दुप-सुपकी बात केसरी बडारणिनै कहै छै । "सुणि केसरी, असो षावंद पायौ छै । कपूरको भोजन कागनै करायौ छै । गधाडारै अग पर चदन चढायो छै । अधकै आगै दरपण दीषायो छै । गूगेके आगै रगराग करायो छै । नागरवेलको पान पसुनै चबायो छै ।" यू हीरा दन दूभर भरै छै । पीहर आबाकी आतुर करै छै । माणिकचद कोठी सिधायो छै । पीहरया आणौ मेल हीरानै ल्याया छै । सायनी सहेल्याका झुलरा मिलबानै आया छै ।

दोहा– मोद न हीरा कुद मन, बदन रह्यौ विलपात ।
सनमुप आये सहेलिया, विधि विधि पूछत बात ।। ३३

हीरां वचन

सुप-सज्या समझै नही, गोभु वुधि गवार ।
बिडरूपी मुप दुर्बचन, तिनको मुझ भरतार ।। ३४

सहेलिया वचन

दोहा– हीरा चिंता परहरो, करो मतो मन कुद ।
गावो मगल गवरज्या, वा करसी आणद ।। ३५

४ बात– हीरा मनमै चिंता न कीज्यो । चित लाय र गौरि पूजिजे । आपकै पुज्यांको दूणो फल थासी । आप मनमै चावस्यौ जीस्यौ बर आसी ।

दोहा– हीरा तणी सहेलिया, दुरस दिलासा दीन ।
वीसराई उण वातनै, नागर ग्यात नवीन ।। ३६
सषी वचन पणि विध सुण्यौ, चिंता भई निचत ।
अति सुपदायक अगमै, हीरा मन हुलसंत ।। ३७
हीरा जोवत मन हरप, मोहत तन सुकमार ।
गुणसागर गजराज गति, अदभुत रूप अपार ।। ३८
चाहत जोवन अधिक चित, मदन भई ऊनमत ।
हीरा डोलत हसगत, सुघड सहेली सथ ।। ३९
छकी हीरा मदन छकि, वण वुध सदन वीसेप ।
चद वदन मुलकण दमक, रदन तडतकी रेप ।। ४०

५ वारता– अब हीरा मदकी छाकमै छाक रही छै। मीठीसी वाणी बोल मुपम कही छ। चदबदनीकै अग सोभा लागी छै। आपको बदन दरपणमै दिखावै छै। विधि विधि रग पोसाषा बणावै छै। हीराकै रूपकी समोबड कुण करै। मुनियाको मन डिगै। अपछराको वालो भोलो पडै छै। जोबना छाकमै डोढी निजरी जोवै छै। चदमुषी हीरा चकोरसषी मोवै छै। सुदर अलबेली हीरा अतिरूप छाजै छै। कामकदला क ऊरबसी क रभादिक राजै छै। सपियानके बिचि हीराको मुपारबिंद छै–जाणै तारा मडलमै पुन्यूको चद छै। केताकै दिन तो हीरानै सहेलीया बिलमाई छै। यु करता बरषा रति आई छै।

अथ हीराको विरहवर्णन

दोहा– कामातुर हीरा कहै, रबि राह बिहरत।
चाहत चातुर अधिकचित, आतुर होत अनत॥ ४१
हीरा मद आतुर हुई, चित प्रीतमकी चाह।
विषधर ज्यु चदन बिना, दिलकी मिटै न दाह॥ ४२
हीरा चाहैं छैल चित, जोबन हदो जोर।
किरणालो चाहै कमल, चाहै चद चकोर॥ ४३
पुरुष प्रीत हीरा तलफै, दुपद हीयो दाहत।
ऐसे वुद आकासमै, चात्रग मुष चाहत॥ ४४
हीरा सूती महलमै, सपीया तणौ समाज।
बिरषा ऋति आई विषम, गगन घटा धुन गाज॥ ४५
घणहर जल वरषत घुरत, चमकत बीजल चोज।
हीरा रोकी महलमै, फिर गई सावण फोज॥ ४६
चमकत बीज अचाणचक, झिझकत उठत जगात।
हीरा डरपत महलमैं, थरर थरर थररात॥ ४७
मदनातुर मेरो मरण, दुसतर वृषा दूसार।
कर ऊचो कर कहत है, हर हर मरजणहार॥ ४८
सूती सहै महैलिया, गहरी नीद गरद।
दरद नही छै दूसरा, दुपै जिका दरद॥ ४९
वरपन घणहर वीपरचौ, उजल्ल भयो अवास।
उडुगन जुथ अकासमैं, पूरण चद प्रकास॥ ५०
चमकण लागी चद्रिका, दमकत पङ्क दूधार।
ऊडगन लगे अगनिमे, विप सम लगत वयार॥ ५१

मोर-सवद लागे विपम, कोयल वोलै कराल ।
चात्रग विप वाणी चवत, हीरा रैन विहाल ।। ५२
घरणे परकार हीरा अठै, दुभर भरै दिवस ।
तो लायेक सपिया तवै, आमी पीवै अवस ।। ५३
चाहत हीरा छैल चित, उमगत मदन अरोड ।
भावै मन रसीयो भवर, जोवत अपनी जोड़ ।। ५४

अथ न[र]वरको प्रोहित वकसीरामजी वरननं

ढोला जकै समै हुवा

दोहा– अठै निवाई उपरै, राजत वगसीराम ।
प्रोहित जग मारै प्रगट, कविया पूरण काम ।। ५५

छंद झमाल– प्रोहित वगसीराम भमर छै क्रीतको,
वरदायक अरिजीतण वाटण वृत्तको ।
घोंडा भड घमसाण क थाटा घेरणो,
जुटै नगी समसेर अरिंदा जोरणो ।। ५६

कुंडलिया– साथ समाजत घण सुभट, अग्राजत आथांण,
आठै विराजत ईद सो, राजत प्रोहित राण ।
राजत प्रोहित राण, तपोवल रूपको,
भड घोडा घमसाण, समोवड भूपको ।
वगडावत वरवक आकण वारको,
मालेम वगसीराम चहुँ दिस मारिको ।। ५७
प्रोहित वूदी परणियो, रसियो वगसीराम,
सावण तीजा सासरै, कीनौ आवण काम ।
कीनौ आवण काम महोला कोडका[1] ,
जगम पडे अपार लीया भड जोडका ।
देपि झरोपै नारि हरप दरसावियो,
आज अवीणो कथ क वूदी आवियो ।। ५८
तीज तणे उछव तटै वाचौं घणौ वपाण,
निरभै गढ वूंदी नगर, राजै हाडा राण ।
राजै हाडा राण अरिंदा रीसका,
अहकार दुज हरण तमोगुण ईसका ।

---

१ वूदी नगरके पास कोडक्या नामक ग्राम है ।

कबिया लाष पसाव क छंदा कारणा,
मरदा हृदा मरदै क दैणा मारणा ।।५९

अथ बूंदी बरणन

दोहा– निरमल गढ बूंदी नगर, झुक परबत चहुँ ओर ।
अदभुत छबि चहुँ तरफ अति, मीठा बोलत मोर ।। ६०

छंद जाते उघोर– अति मीठा बोलत्त मोर, सुभ करत्त कोयेल सोर ।
वण बिबध बूंदीय बाग, लत लूंब तरवर लाग ।।
छबि नदी सागर छंद, उलसत जल अरबिंद ।
वोपत नीर अथाह, गवणत क छिव शाह ।।
तरकत्त नीर तरंग, सुर पोष दादुर संग ।
तट बाग छबि उत्तंग, ब्रछि बिबिधि बौरंग ।।
अदभूत फूल अपार, जुथ भवर करत गुंजार ।
सरसत फूल सूगंध, मिलि पवन सीतल मंद ।।
मंजरी फल दर मोर, चलबौल करित चकोर ।
अत्यादि षग धुनि अंग, प्रति फूल फूल प्रसंग ।।
वण होद सागर ब्रंद, मिलि नीर मधु मकरंद ।
जल भरत नारीह जुह, सिंगार हार समूह ।।
हालत हंस हुलास, पद कनक नृपर पास ।
मुप चंद सोभत मंज, कर फूल लोचन कंज ।।
सोहत कनक सिंगार, पोसाष चीर अपार ।
वण हीर हार विहार, रुचि निपट छबि नर नारि ।।
वनखंड अवर बिराज, मिल सूर स्यंह समाज ।
ओ घाट परबत अंग, उत्तंग श्रंग अभंग ।।
पलकत झरना षाल, नीझरत जल परनाल ।
अदभूत गिरद अनेक, ऊ विचै परवत येक ।। ६१

दोहा– उण गिरवरपै आयेकै, केहर तडव कीन ।
घणहर मानु इंद्रधन, भादैव जलधर मीन ।। ६२
माणत पदमणि महलमै, रशियो वगसीराम ।
सुप सज्यामै साभली, केहर तडव ताम ।। ६३
सुप सज्या तडव सुणी, मोहित घणं प्रकार ।
आय वणी, रमस्या अवै, सिंघा तणी शिकार ।। ६४

छंद पघड़ी– भयो प्रातकाल परकास भांन, वन पपी जन बोलत्त वाण ।
प्रोहित बोल्यो जव ईण प्रकार, मुरमा क थाट चढस्या सिकार ।।
ताता अपार प्राक्रम तुरग, कूदत छैवि जावत कूरग ।
चढि चले प्रौहित राण चग, अत वल वीर जोधार अग ।।
वण मुभट थाट हैमर वणाये, आपेट रमरा कीनौ उपाये ।
घमसाण चले घरा थाट घेर, वाजत घाव नीसारा भेर ।।
चमकत सेल पापर प्रचड, दमकत ढाल नीसाण दड ।
धमकत घोड पूर घरण धज, रमकत गगन मग चढीये रज ।।
वनपड एक उद्यान वाग, वन सूर स्यघ सावर व्रजाग ।
भुक भोम तरोवर घेरि भुड, पेपियो सिंघ प्रोहित प्रचड ।। ६५

सोरठा– केहर येक कराल, वनपडमै देष्यौ विहद ।
जगमग आष्या ज्वाल, पूछ कीया सिर ऊपरै ।। ६६
घोडा चड घमसाण, आय थया सहै येकठा ।
विधि विधि वोलत वाण, वतलाईजै वाघनै ।। ६७

दोहा– केहर वतलायो कना, थट घोडा भड थाट ।
वतलायो अव वाघनै, नागी पाग निराट ।। ६८

छन्द पघडी– वतलायो ईम केहरि वडाल, कोप्यो क आय जमजाल काल ।
जग्यो क सोर ढिग अगन जोम, घडहडो घीरत घण अगन घोम ।।
दगी क तोप वुदडा दीज, विलगी क मो घणघर कडक वीज ।
छुटचौ क वान अरजन छोह, मडल तारा टूटचौ समोह ।।
दव्यौ क पुछधार सरप हुठ, जग्यौ क नेत्र शिव जटाजुठ ।
जोगद अषाडै पर जगाय, यण भांति स्यघ सनमुप आय ।।
हलकार प्रोहित कोप कीन, ललकार म्यान तरवार लीन ।
पेष्यौ क गज धरै अनड पप, धायो क वाज चीडकली यधक ।।
अति जोम पीरोहत कर अपार, दमकत तडत वाई दुधार ।
कटचौ क शीस केहरि कराल, फटचौ क मानु तरवूज फाल ।। ६९

दोहा– प्रोहित कीनी जग प्रगट, सिंघा तणी सिकार ।
वूंदी गढ आयो विहसि, सरणा ईसा धार ।। ७०
अतरै अदभुत आबियौ, तीजा तणौ तिवार ।
अलवेली आभूपणा, निकसी कर कर नार ।। ७१
सावण घणौ सिरावियो, रसीयो वगसीराम ।
निरभै गढ वूदी नगर, तीज महोला ताम ।। ७२

कर जोडे येकण कह्यौ, रसीया प्रोहित राण ।
उदिय्यापुरकी गणगवर, बाचीजै बाषाण ॥ ७३

प्रोहित बचन

प्रोहित ईण बिधि पूछियौ, बेहद गवर बषाण ।
राय भाण चारण रसक, बोल्यौ तब यण बाण ॥ ७४

चारण बचन

दोहा– जगमग आभूषण जडे, भामण अति रसभीन ।
उदयापुरमै रूप अति, नागर ग्यात नबीन ॥ ७५
ऐक ऐकतै आगली, निपट सलूणी नारि ।
उदयापुरमै मब यसी, अपछरकै ऊणियार ॥ ७६
चहु तरफा डगर अचल, कीना सिखर कगूर ।
वाक बिचै सागर यसो, पीछोला जलपूर ॥ ७७
प्रगट महल जलतीर पर, सोहत सहर समाज ।
गवर अग्र मिल सुभटगण, बण ठण षेलत बाज ॥ ७८

प्रोहित बचन

दोहा– वोल्यौ प्रोहित बेलिया, सुणज्यो सब सिरदार ।
ऊदयापुर चाला अबै, बायक कह्यौ बिचार ॥ ७९

६ बात– प्रोहित बगसीरामजी सु साथिकाको बचन–अब प्रोहितजीनै साथका कहै छै । ऐक अरज सुणीजै । चैन बुझाकड चादसिघजीनै बुझ लीजै ।

चैनस्यघ वुझाकड चादस्यघजीको वचन

दोहा– चैन वुझाकड मुप बचनै, प्रोहित पुछै प्रमाण ।
उदयापुर चालो अवस, देपाला र दीवाण ॥ ८०
चादस्यघ वोल्यो वचन, प्रोहित सुणू प्रकार ।
उदयापुरकी गणगवर, परषाला नर नार ॥ ८१
ऊदयापुर चढियो अवम, विवधि निमाण वजाय ।
गवरत्या देखण वागमै, ऊतरीयो छै आय ॥ ८२
वण महेली वाडिया, विध विध फूल वणाय ।
ऊठै प्रोहित ऊतर्यो, उदयापुरमै आय ॥ ८३

चन्द्रायणो– ऊदयापुरमै आयकै प्रोहित ये रम्यो,
घण थट भडिजा मुभट ममदा घेर्मो ।

भवेंराईका पेच मगेज भ्रमाडिया,
विध ऊनरियो आय सहैली वाडिया ॥ ८४

कुडलिया– वणी विछायत वाडिया जाजमै गिलम जुहार,
आप दूलीचा उपरै अदभुत पुलै अपार ।
अदभुत पुलै अपार दूलीचा वोपिया,
जाग क पचरग फूल अपारा जोपिया ।
कीमपाप तकिया कममदा खूब है,
सजीवणकी जडी क जोत सबूब है ॥ ८५
उण गदीक ऊपरै राजत वगसीराम,
मिल घण थट दोहूँ मिसल कीना मुभट सकाम ।
कीना सुभट मकाम दुमामण क्रोधका,
जग जीवण है भीम गदाधर जोधका ।
जवर वीर छाजत अरिंदा जालका,
किरमाला धमचाल समोवड कालका ॥ ८६
राजन वगसीरामकै अभग सुभ[ट]थट येम,
छक छायल भुजवलमछर जवरायेलस्यघ जेम ।
जवरायेलस्यघ जेम भभका मोरका,
जवरायेल कर पीज भुजगम जोरका ।
भागणकी पणव्रत उपासी भाणका,
मोजा[जी]मन महरावण क रावण मारका ॥ ८७

दोहा– सुभटा जमा समाजमै, राजैम प्रोहित-राण ।
वणी सहैली वाडिया, वाचू कर वापाण ॥ ८८

अथ सहैलियां वाडीको वर्णन

७ **बात–** विध विध महेली वाडिया छाजै छै । आंवा, खजूरि, केला, नारेल, राजे छै । पिसता, छूहारा, दाप, विदामा ममैकत की छै । चपा, मरवा, मोगरा, जुही, जाये केतकी छै । वैवलमरी, नीवू, नारगी, भवीरी जुह छ । रेशमी, गुलाव, गैद, केवडा, समुहे छै । और लीलडवर तरोवर पर वेलिडिया लुम रहै छै । मीतल मुगध मद तीन प्रकारको पोन वहै छै । तरवेली सुगध फूल मजुरी फूलै छै । ज्याकै उपर भवर गुजार मवद भुलै छै । वाग वन कुजमै मयूर छत्र मडै छै । नाटक निरतक ऊचै मुर तडै छै । अवा डाल कोयेलिया टहुका करै छै । मोहणी मी वाणी वोल मन हरै छै । चकवा, कपोत, कीर, पग धुन सुणै छै ।

मानु कामदेवकी पोसाल बालक भर्यो छै। अनेक होद, सरोवर, दादर, मीन जल झूलै छै। तापै कमोद कवल फूलै छै। सुगध पर सोहै छै। भमर मन मोहै छै। उण वाटीमें अनेक महिल चत्रसाली छै। जरीका पडदा झरोपा गोप जाली छै। ऊण वाडियामें प्रोहित माजुम कसुमा करै छै। साथमें दारु दुबाराका प्याला फिरै छै। दूणा अमल चागणा चढावै छै। ऊगाव कर सोगुणा जोसमें आवै छै। तीरमदाज बदुकची हदफा उतारै छै। वालबधी कोडी पर तीर गोली मारै छै।

अथ रजपूताका वषाण

दोहा– पल-पायक रणपेतमें, बरदायक मजबूत।
राजा वगसीरामकै, पासि असा रजपूत॥ ८९

बात– जिके रजपूत कैसा, जगमें मजबूत, प्रथीराजका सामत जैसा, आकासकी बीज, कना जमराजकी पीज, आपका सीस पर पेलै, पडता आसमानकू झेलै। केहरका प्राक्रम मोरका भभका, बाराहका जोर, जलालियका धका, कालीका कलस, सतीका नारेल, मेरु का पेल, नगी समसेर बिजै जैतका प्यासी छै तीसु आवधुका अभ्यासी। जोवविद्याका सागर, रजपूतीका आगर। दातासु दातार, झुझासू झुझार। कीरतका कोट रजपूत कहिये, वगसीरामका सुभट असाड चहिये।

दोहा– सोहै जेहा जेहा सुभट, तेहा तेहा सिरदार।
वीरभद्र रजपूत विध, प्रोहित रुद्रप्रकार॥ ९०

अथ प्रोहितजीको वरणन

८ बात– प्रोहित पण कैसा, दातार करण जैसा। करताका बीद प्रथी पर कहावै, पगाकी पैराते पावै र पलावै। भीमका धमचाल, केवियाका काल। अरजुनका बाण, दुरज्योधनका माण। रसविलासका यद, वचनका हरचद। समेरका भार, कूमेरका भडार। अनेक पानदानवला धूकला उडावै छै, उदैपुरका बागमै बारा बजावै छै।

दोहा– वर्णे सहेली बाडिया, घोडा भड घमसाण।
अलुघो उछव रमै, राजै प्रोहित राण॥ ९१
उदयापुरपति ईंद सो, निरभय सुप नर नारि।
अब आई छै गणगवरै, उछव नगर अपार॥ ९२
हीराकै आयो हरप, सपिया तणो समाज।
अलवेलि ऊचारीयो, ऊछैव करस्या आज॥ ९३

आभूषण करम्चा ग्रवम, हिवड लागो हेत ।
गहगी पुजा गवरनै, मन वच करय ममेत ॥ ९४
मव मोलै मणगार है, मजण ग्राट प्रमाण ।
ग्रव हीग आरभियो, वाचु कर वापाण ॥ ९५

अथ हीरा गवर पुजण आभूषण आरभते–

छंद भूजगी प्रायात– पट बैठ हीरा मनान प्रसग, ग्रवीर गुलाव वरे नीर ग्रग ।
झलै नीरकी वूद केस झरते, पुलै रेसमी डोर मोती पिरते ॥ ९६
किये फूल मप्पेद वेणी क रगे, लसै नागणी दूधके फेण लगे ।
वणै वादल म्याम पाटी विचित्र, पुलै माग मोती क व्योम नपत्र ॥ ९७
पुणै मागकी ग्रोर मोभा प्रकार, धमै नीलके पर्वै मु गध धार ।
रमीली ग्रलप्प वणं म्याम रग, झुक(कै) रूपकी रामि छोटे भूजग ॥९८
उदार विमाल वण(णै) भाल ग्रग, तटै पेल चोगान काम तुरग ।
विराजै गुलाल किये भाल विंद, चपेटी मनू रोहणी ग्रग चद ॥ ९९
वणै नैण भूहार भाल विचत्र, पडै दीपको काजल हेमपत्र ।
विचित्र वणी भहकी रेप वक, वग्ची कामदेव कर(रा)मे धनक ॥ १००
लसै लोचन पजन मीन लीला, रचै पकज फूल सोभा रमीला ।
मुप मागर द्रग पलक सुघाट, किधू पेमके रूप लज्या कपाट ॥ १०१
दुन(नै) लोचन काजलै रीप दीनें, वणै कामदेव विप(पै) वाण मीनै ।
वणै नामिका कीर तुड(डे) विमोय, लसते किवू निप्पणी दीपलोय ॥१०२
विचै नासिका ग्रग्र मोती विराजै, मनू राजकै द्वार शुक्र(क्र) समाजै ।
वणै होट नीके मुरग विमाल, लसै विद्रमी कोमल व्यव लाल ॥ १०३
दुत दतकी दाडिमी हीर दाग, विचित्र पक मोहणी मत्र वाग ।
किये मजण गोर मोभा कपोल, उजासत हेमत वक(क्क) ग्रमोल ॥ १०४
मिण(णी) माणक हेम ताटक मडै, चलै भाण दोय जगा जोत चडै ।
लसै चवुका विंद जाडी लपेटचौ, चितें दूजकै चद भ्र गी वमटची ॥ १०५
मुप(प) मडल जोति मोभा विमोह, मुवासागर पूरण चद मोह ।
फवै स्वामक(का) वामना कज फूलै, झणाकार मत्तगण भ्र ग भूलै ॥ १०६
वणी कठ सोभा विमाल वमेपा, रुचै नीलकठ कवू सपरेपा ।
जुत पोतकठ मणी नील भूवी, लसै मेरश्रृ ग नदी स्याम लूवी ॥ १०७
वलै कठकी मोभना कीण भाम, पिये पानको पीक लाल प्रकास ।
उरज्ये प्रकामन मोभा ग्रसभ, विधू यम्रतग पूरण हेमकुभ ॥ १०८

कुच(च) कचुकी रेसमी तारकद गहीर मनो कुंभ ढाक्यौ गयद ।
बर कोमल सोभ बाहू बिराजै, छबीले मनू कजके नाल छाजै ॥ १०९
फबै बाहैं(ह) बाजु(जू) मिण(णी) जोति फूलै, भुक्यो चदनी सापपै नाग भूलै ।
विराजै नग सोवनी चु(चू)डबंध फबै मोहणी प्राणकै कांम फदं ॥ ११०
जु(जु)हार मिणी पुचिका हाथ जोपै अघ(वै)पकजं मडल भ्रंग वोपै ।
कली चपकी आगली सोभ कीनै, नप उज्जल चद सोभा नवीनै ॥ १११
पुनीत नष रंग मैंदी प्रकासै, विभूषत मानू करा लाल भासै ।
किय(ये) हाथफूल भरणकार कीनै, लैं(ल)सै कामकी नोबतं जीत लीनै ॥११२
हो(हि)ये फूलमाल कीये हीरहार, दुत चदनी मालसी कामद्वारं ।
सुभ त्रि(त्री)वली उहूकै रोम सग, तिरै नागनी अबुधी सतरग ॥ ११३
सुरग दुती नाभि गभीर सोहै, मनू छैलको भ्रंग रूपी विमोहै ।
कटी ककनी हेम भकार कीनै, लसै केहरी लक्पै बाधी लीनै ॥ ११४
जरी तार पट्ट बिराजै ज हर किये कोमल जक (लज्जेक) लक पूर ।
ललीत पद नूपुरै घोष कीनै ॥ ११५

पद कोमल लाल य(ए)डी प्रकासै, कील मोगरा अगुली साबि कासै ।
सुचगी नषाकी जगाजोत सोभा लसै अष्टमी चदसे प्राण लोभा ॥ ११६
विणे मोचडी हीर मोती बिचित्र, पद मोह लीनै किध् हन-पुत्र ।
म(ग)ती जोबनाकी चलै मद मद, गहीर चल्यो जोम छाक्यौ गयद ॥ ११७
विभूषै सरीरं पड(ट) नील बूंद, घण बादल मेह ढाक्यो गिरदं ।
प्रभा चीर सोभा जगाजोति मडै, चम(क)कै घटामैं क बीजू प्रचडै ॥११८
करै हावभावं कटाछ किलोल, बिराजै पिकं यम्रत मज बोल ।
मुप चद्रहास हरै प्राण मोह, छिब देष डोलै मुनी छद छोह ॥ ११९
चढै अत्तर बासना अग चोज मिलया(या)गर चदनं गंध मोजं ।
किये काज हाथ चतै रूप काज, मन(नो) मोद मानै सहेली समाज ॥१२०

छप्पै– सपिया तणै समाज ललित गहणा नीलबर ।
किमतरी केवडा इहक परमल घण इबर ।
ग्यानजोवना गहर मदन छक लहर समाजत,
बणि हीरा द्रग बिकम रनक रनादिक राजत ।
कुकमको बैंदी लिलाट कर, चद बदन छिब चषक चित,
चानदत देषण गवर गवणी उठ गयद गति ॥ १२१

उदयापुर त्रिय अवर विवध मन राग वणावत,
चदमुपी मिल चलय गवर ऊचै स्वुर गावत ।
जोवण कोतुक जात नागरी ग्यात नवेली,
जुथ जुथ जगमगत अग सोभा अलवेली ।
आई समाज देपण गवर, कनकजरी भूपण करी,
पीछोलाको पाल पर, यद्रपरी सी ऊतरी ।। १२२

दोहा– पीछोलै आई प्रगट, हीरा उच्छव हेत ।
वाकी द्रगनि विलोकता, ललता मन हर लेत ।। १२३
आंनन सपियाको अवर, आठमै(म) तिथ(थी)उजास ।
विचै वदन हीरा विमल, पूरण चाद परकास ।। १२४

अथ उदयापुरकी गवर पिछोलै आगमण

दोहा– उदयापुर निकमी गवर, बिधि विधि भूपण आण ।
गज वाजा सुभटा गरट नरभय वजत निसाण ।। १२५
रछ्यक आये गवरके, जुथप जुथ जवान ।
नर नारी घण थट नरप, चल छोडा चोगान ।। १२६
नर नारी मोभत निपट, लाप लोक लेषत ।
पीछोलाकै ऊपरै, दुत गवरा देपत ।। १२७
धजा फरकत दल मघर, वाजा वजैत विमाल ।
गवरचा भड हय थट गरट, पीछोलाकी पाल ।। १२८
कोयल सुर मिल नायका, गावत गीत गहीर ।
हय ध्यावत धर थरहरत, विवध पिलावत बीर ।।१२९

९ **अथ बात–** यण परकार गोरचा पीछोलै आवै छै। नायकां वारा जुथ मिलावै छै। ऊचै स्वर गावै छै। ललिता समूहमैं हीरा मनलोभा छै। नागर-वेली अलवेली अग सोभा छै।

हीरांकी सहेलियांको वरणंन— हीराकी महैलिया हसाको डार। अदभुत कवल वदन सोभा अपार। यु कवलकी पापडीया एक वरोवर सोहै। वा सहै-लियामै हीरा परागरूपी मन मोहै। कीरतियाको भूमकौ तारामडलकी सोभा। आफूकी क्यारी पोसाष मन लोभा। केसरिया कसुमल घनवर पाटवर नवरग पोसाप राजै छै। अतर फुलेल केसरि कसतुरी सुगंध छाजै छै। अतरग वहूरंग सपिया अपार छै। पदमणी, चत्रणी सुदर सुकुमार छै। कनक-आभूपण जरी मोती हीर हार छै। यसी सहलीयाकै विचै हीरा विराजै छै। मानु अपछरामै रभाकी सोभा। मनलोभा चदमुपी उडगनमै चद्रमाकी सोभा। यण प्रकार हीरा

सहलियामै उछव करै छै। गवरकै वोली दोली घुमर दे दे फिरै छै। गोरिका गीत कोयलस्वर गावै छै, जोडका जवानकी सगत पाऊ श्रो वर चावै छै। हीराको रूप देष सुरद मनमै जाणै छै। धन्य छै ऊ पुरुस जु इ नारिनै महलमै माणै छै।

अथ पीछोलै उपर प्रोहितको आगमण

प्रोहित बचन

दोहा– बोल्यौ प्रोहित बागमै, सुभटा तणै समाज।
ऊदयापुरकी गणगवर, अब देषाला आज ॥ १३०
बोल्यो प्रोहित वेलिया, बिध विध रग बषाण।
अमला करो दुणा अथग, तुरगा करो पलाण ॥ १३१
आरभ उछव गवर, रसिया बगसीराम।
माजिम अमला भागि मिल, कीनौ कैफ सकाम ॥ १३२
सरस पियाला साथमै, दारू फिरै दुवार।
चकन धुत कैफा चढै, अदभुत सुभट अपार ॥ १३३

प्रोहितकी असवारी

छद जात ऊधोर– अदभुत सुभट अपार, उतग अमल उदार।
वण बिवध आवध बाण, एम पनगा करत पलाण ॥
राजत प्रोहित राण,
ओतग भाल उदार, केसरि तिलक प्रकार ॥
आजानबाहु अभग, ओपत कोट अल(न)ग।
चष रत वोपत चग, पर कमल फुल प्रसग ॥
झलहलत किरणा भाग, पट तार पचरग पाग।
पोसाष अग अपार, कलि रग रंग प्रकार।
कट कस्ये पेसकवज, वण षाग ढाल बिरज ॥
बधे निषग कधे बपाण, कर लीय तीर कबाण।
कमर कसत कटार, धारत कर चोधार ॥
परचंड उठत पैड, वण कान मोती बैड।

अथ नीलविडग घोडाकी वरणन

छद जाते त्रोटक– तीन प्राक्रम यक तुरगम यु, भण नाम सनील विडगम यू।
तन पाटि कनोतिय तीषण यु, लस दोय मनु छिब देषण यू ॥
कर सोहत कुकड कदम य, मषतूल रोमावल वधम यू।

छंद पधड़ी– भयो प्रातकाल परकास भान, वन पपी जन वोलत्त वाण ।
प्रोहित वोल्यो जव ईण प्रकार, मुरमा क थाट चढस्या सिकार ।।
ताता अपार प्राक्रम तुरग, कूदत छैवि जावत कुरग ।
चढि चले प्रौहित राण चग, अत वल वीर जोधार अग ।।
वण सुभट थाट हैमर वणाये, आषेट रमण कीनौ उपाये ।
घमसाण चल्ले घण थाट घेर, बाजत घाव नीसाण भेर ।।
चमकत सेल पाषर प्रचड, दमकत ढाल नीसाण दड ।
धमकत घोड पुर धरण धज, रमकत गगन मग चढीये रज ।।
वनपड एक उद्यान वाग, बन सूर स्यघ सावर व्रजाग ।
झुक झोम तरोवर घेरि झुड, पेषियो सिंघ प्रोहित प्रचड ।। ६५

सोरठा– केहर येक कराल, वनषडमैं देष्यौ विहद ।
जगमग आष्या ज्वाल, पूछ कीया सिर ऊपरे ।। ६६
घोडा चड घमसाण, आय थया सहैं येकठा ।
विधि विधि वोलन वाण, बतलाईजै वाघनै ।। ६७

दोहा– केहर वतलायो कना, थट धोडा भड थाट ।
वतलायो अव वाघनै, नागी षाग निराट ।। ६८

छन्द पधडी– वतलायो ईम केहरि वडाल, कोप्यो क आय जमजाल काल ।
जग्यो क सोर ढिग अगन जोम, घडहडो घीरत घण अगन घोम ।।
दगी क तोप वुदडा दीज, विलगी क सो घणघर कडक बीज ।
छुटचौ क वान अरजन छोह, मडल तारा टूटचौ समोह ।।
दव्यौ क पुछधार सरप हुठ, जग्यौ क नेत्र शिव जटाजुठ ।
जोगद अषाडै पर जगाय, यण भाति स्यघ सनमुप आय ।।
हलकार प्रोहित कोप कीन, ललकार म्यान तरवार लीन ।
पेष्यौ क गज घरै अनड पप, धायो क बाज चीडकली यधक ।।
अति जोम पीरोहत कर अपार, दमकत तडत वाई दुधार ।
कटचौ क शीस केहरि कराल, फटचौ क मानु तरवूज फाल ।। ६९

दोहा– प्रोहित कीनी जग प्रगट, सिंघा तणी सिकार ।
वूंदी गढ आयो विहसि, सरणा ईसा धार ।। ७०
अतरै अदभुत आवियौ, तीजा तणौ तिवार ।
अलवेली आभूपणा, निकसी कर कर नार ।। ७१
सावण घणौ सिरावियो, रसीयो वगसीराम ।
निरभै गढ वूदी नगर, तीज महोला ताम ।। ७२

कर जोडे येक्म कह्यौ, रसीया प्रोहित राग ।
उदियापुरकी गणगवर, वाचीजै वखाण ॥ ७३

प्रोहित वचन

प्रोहित ईन विधि पुछियो देहु गवर वखान ।
राय भान चारण रसक बोल्यौ तव बच वांन ॥ ७४

चारण वचन

दोहा– जगमग आभूषण जडे, भामण अति रसभीन ।
उदयापुरमैं रुप अति नागर ग्यान नवीन ॥ ७५
ऐक ऐकनै आगली निपट मलूणी नारि ।
उदयापुरमैं सब उसी, अपछरकै उणिहार ॥ ७६
बहु तरणा डगर अचल, सीता निरवर कपूर ।
वाक विचै सागर वसो पीछोला जलपूर ॥ ७७
प्रगट महल जलनीर पर, मोहित सहर समाज ।
गवर अप्र मिल सुभटगन, वण ठण पेलन वाज ॥ ७८

प्रोहित वचन

दोहा– बोल्यौ प्रोहित वेलिया, सुणज्यो सब सिरदार ।
उदयापुर चाला अवैं, वायक कह्यौ विचार ॥ ७९

६ बात– प्रोहित बगसीरामजी सु साथिआंको वचन–अब प्रोहितजीं साथका कहै छै । ऐक अरज सुणीजे । चैन वृन्दाबन चांदणिधजीनै वुझ लीजे ।

चैनसुख वृन्दाबन चांदम्यचजीको वचन

दोहा– चैन वृन्दाबन नृप वचनै, प्रोहित पुछै प्रमाण ।
उदयापुर चालो अवस, देखला र दीवाण ॥ ८०
चांदम्यच बोल्यो वचन, प्रोहित सुणू प्रकार ।
उदयापुरकी गणगवर, परखांला नर नार ॥ ८१
उदयापुर चढियो अवस विवधि निसाण बजाय ।
गवरचा देखण कारमैं, उतरीयो छै आय ॥ ८२
वण म्हेली वाडिया, विध विध फूल वणाय ।
ऊठै प्रोहित उतरयौ उदयापुरमैं आय ॥ ८३

चन्द्रायणो– उदयापुरमैं आयकै प्रोहित ये रह्यो,
घण थट भडिजा सुभट समदा घेरयो ।

भवैंराईका पेच मगेज भ्रमाडिया,
बिध ऊनग्यो आय सहैली वाडिया ।। ८४

कुंडलिया– वणी बिछायत बाडिया जाजमै गिलम जुहार,
आप दूलीचा उपरै अदभुत पुलै अपार ।
अदभुत पुलै अपार दूलीचा वोपिया,
जाण क पचरग फूल अपारा जोपिया ।
कीमपाप तकिया कममदा खूब है,
सजीवणकी जडी क जोत सवूव है ।। ८५
उण गदीक ऊपरै राजत वगमीराम,
मिल घण थट दोहूँ मिसल कीना सुभट सकाम ।
कीना सुभट सकाम दुमामण क्रोधका,
जग जीवण है भीम गदाधर जोधका ।
जबर वीर छाजत अरिंदा जालका,
किरमाला घमचाल समोवड कालका ।। ८६
राजन वगसीगमकै अभग सुभ[ट]थट येम,
छक छायल भुजवलमछर जवरायेलस्यघ जेम ।
जवरायेलस्यघ जेम भभका सोरका,
जवरायेल कर पीज भुजगम जोरका ।
भागणकी पणव्रत उपासी भाणका,
मोजा[जी]मन महरावण क रावण मारका ।। ८७

दोहा– सुभटा जसा ममाजमै, राजैम प्रोहित-राण ।
वणी महैली वाडिया, वाचू कर वाषाण ।। ८८

अथ सहेलिया वाडीको वर्णन

७ बात– विध विध सहेली वाडिया छाजै छै । आवा, खजूरि, केला, नारेल, राजे छै । पिसता, छूहारा, दाप, बिदामा समैकल की छै । चपा, मरवा, मोगरा, जुही, जाये केतकी छै । वैंवलसरी, नीवू, नारगी, भबीरी जुह छ । रेशमी, गुलाव, गैद, केवडा, समुहै छै । और लीलडवर तरोवर पर बेलिडिया लुम रहै छै । मीतल मुगध मद तीन प्रकारको पोन वहै छै । तरवेली मुगध फूल मजुरी फूलै छै । ज्याकै उपर भवर गुजार मवद भुलै छै । वाग वन कुजमै मयूर छत्र मडै छै । नाटक निरतक ऊचै मुर तडै छै । अवा डाल कोयेलिया टहुका करै छै । मोहणी मी वाणी बोल मन हरै छै । चकवा, कपोत, कीर, पग घुन सुणै छै ।

मानु कामदेवकी पोसाल बालक भरयौ छै। अनेक होद, सरोवर, दादर, मीन जल झूलै छै। तापै कमोद कवल फूलै छै। सुगध पर सोहै छै। भमर मन मोहै छै। उण बाडीमै अनेक महिल चत्रसाली छै। जरीका पडदा झरोपा गोप जाली छै। ऊण बाडियामै प्रोहित माजुम कसुमा करै छै। साथमै दारु दुवाराका प्याला फिरै छै। दूणा अमल चोगणा चढावै छै। ऊगाव कर सोगुणा जोसमै आवै छै। तीरमदाज बदुकची हदफा उतारै छै। बालबधी कोडी पर तीर गोली मारै छै।

अथ रजपूताका बषाण

दोहा– षल-षायक रणषेतमै, बरदायक मजबूत।
राजा बगसीरामकै, पासि असा रजपूत ।। ८९

बात– जिके रजपूत कैसा, जगमै मजबूत, प्रथीराजका सामत जैसा, आकासकी बीज, कना जमराजकी पीज, आपका सीस पर पेलै, पडता आम-मानकू झेलै। केहरका प्राक्रम सोरका भभका, वाराहका जोर, जलालियका धका, कालीका कलस, सतीका नारेल, सेरु का पेल, नगी समसेर विजै जैतका प्यासी छै तीसु आवधुका अभ्यासी। जोधविद्याका सागर, रजपूतीका आगर। दातासु दातार, झुझासू झुझार। कीरतका कोट रजपूत कहियै, बगसीरामका सुभट असाइ चहियै।

दोहा– सोहै जेहा जेहा सुभट, तेहा तेहा सिरदार।
वीरभद्र रजपूत बिध, प्रोहित रुद्रप्रकार ।। ९०

अथ प्रोहितजीको वरणन

८ **बात–** प्रोहित पण कैसा, दातार करण जैसा। करताका बीद प्रथी पर कहावै, षगाकी षैराते षावै र षलावै। भीमका धमचाल, कैबियाका काल। अरजुनका बाण, दुरज्योधनका माण। रसबिलासका यद, वचनका हरचद। समेरका भार, कूमेरका भडार। अनेक षानदानवला धूकला उडावै छै, उदैपुरका बागमै वारा बजावै छै।

दोहा– वर्णौ सहेली बाडिया, घोडा भड घमसाण।
अलुधो उछव रमै, राजै प्रोहित राण ।। ९१
उदयापुरपति ईद सो, निरभय सुष नर नारि।
अब आई छै गणगवरै, उछव नगर अपार ।। ९२
हीराकै आयो हरप, सषिया तणौ समाज।
अलबेलि ऊचारीयो, ऊछैव करस्या आज ।। ९३

आभूपण करस्या अवस, हिवड लागो हेत ।
गहगी पुजा गवरनैं, मन वच करय समेत ।। ९४
मव मोलै सणगार है, मजण आद प्रमाण ।
अव हीरा आरभियो, वाचु कर वापाण ।। ९५

अथ हीरा गवर पुजण आभूपण आरभते–

छंद भूजगी प्रायात– पट वैठ हीरा मनान प्रसग, अवीर गुलाव धरे नीर अग ।
झलै नीरकी वूद केस झरते, पुलै रेसमी डोर मोती पिरते ।। ९६
किये फूल मप्पेद वेणी क रगे, लसै नागणी दूधके फेण लगे ।
वणै वादल स्याम पाटी विचित्र, पुलै माग मोती क व्योम नपत्र ।। ९७
पुणै मागकी ओर मोभा प्रकार, धसै नीलके पवै मु गध धार ।
रमीली अलष्प वणे स्याम रग, भुक(कै) रूपकी रासि छोटे भूजग ।।९८
उदार विमाल वण(णै) भाल अंग, तटै पेल चोगान काम तुरग ।
विराजै गुलाल किये भाल विंद, चपेटी मनू रोहणी अग चद ।। ९९
वणै नैण भूहार भाल विचत्र, पडै दीपको काजल हेमपत्र ।
विचित्र वणी भहकी रेप वक, घरची कामदेव कर(रा)मे धनक ।। १००
लसै लोचन पजन मीन लीला, रचै पकज फूल सोभा रमीला ।
सुप मागर द्रग्ग पलक सुघाट, किवू पेमके रूप लज्या कपाट ।। १०१
दुत(तै) लोचन काजलै रीप दीने, वणै कामदेव विष(पै) वाण मीनै ।
वणै नामिका कीर तुड(डे) विमोय, लसते किधू निष्पणी दीपलोय ।।१०२
विचै नासिका अग्र मोती विराजै, मनू राजकै द्वार शुक्र(क्र) समाजै ।
वणै होट नीके सुरग विसाल, लसै विद्रमी कोमल व्यव लाल ।। १०३
दुत दतकी दाडिमी हीर दाण, विचित्र पक मोहणी मत्र वाण ।
किये मजण गोर सोभा कपोल, उजासत हेमत वक(क्क) अमोल ।। १०४
मिण(णी) माणक हेम ताटक मडै, चलै भाण दोय जगा जोत चडै ।
लसै चवुका विंद जाडी लपेटचौ, चितै दूजकै चद भ्र गी वमटचौ ।। १०५
मुप(प) मडल जोति सोभा विमोह, मुवासागर पूरण चद मोह ।
फवै स्वासक(का) वामना कज फूलैं, झणकार मत्तगण भ्र ग भूलै ।। १०६
वणी कठ सोभा विमाल वसेपा, रुचै नीलकठ कधू सपरेपा ।
जुत पोतकठ मणी नील भूवी, लसै मेरश्रृ ग नदी स्याम लूवी ।। १०७
वलै कठकी सोभना कीण भाम, पिये पानको पीक लाल प्रकास ।
उरज्ये प्रकासत मोभा असभ, विधू यम्रतग पूरण हेमकुभ ।। १०८

कुच(च) कचुकी रेसमी तारकद गहीर मनो कुभ ढाक्यौ गयद ।
बर कोमल सोभ बाहू बिराजै, छबीले मनू कजके नाल छाजै ॥ १०६
फबै बाहे(ह) दाजु(जू) मिण(णी) जोति फूलै, भुवयौ चदनी सापपै नाग झूलै ।
विराजै नग सोवनी चु(चू)डबध, फबै मोहणी प्राणकै काम फद ॥ ११०
जु(जु)हार मिणी पुचिका हाथ जोपै, पघ(घै)पकज मडल भ्र ग वोपै ।
कली चपकी चागली सोभ कीनै, नप उज्जल चद सोभा नवीनै ॥ १११
पुनीत नष रग मैंदी प्रकासै, विभूषत मानू कण लाल भासै ।
किय(ये) हाथफूल भणकार कीनै, लै(ल)सै कामकी नोबत जीत लीनै ॥११२
हो(हि)ये फूलमाल कीये हीरहार, दुत चदनी मालसो कामद्वार ।
सुभ त्रि(त्री)वली उहकै रोम सग, तिरै नागनी त्रबुधी सतरग ॥ ११३
सुरग दुती नाभि गभीर सोहै, मनू छैलको भ्र ग रूपी बिमोहै ।
कटी ककनी हेम भकार कीनै, लसै केहरो लकपै दाधी लीनै ॥ ११४
जरी तार पट्ट बिराजै ज हर किये कोमल जक (लज्जेक) लक पूर ।
ललीत पद नूपुरै घोष कीनै ॥ ११५

पद कोमल लाल य(ए)डी पकासै, कील मोगरा पगुली सबि कासै ।
सुचगी नषाकी जगाजोत सोभा लसै चप्टमी चदसे प्राण लोभा ॥ ११६
विण मोचडी हीर मोती बिचित्र पद मोह लीनै किधू ह्न-पुत्र ।
म(ग)ती जोबनाकी चलै मद मद, गहीर चल्यो जोम छाक्यौ गयद ॥ ११७
विभूषै सरीर पद(ट) नील बृ द, घण बादल मेह ढाक्यो गिरद ।
प्रभा चीर सोभा जगाजोति मडै, चम(क)कै घटामै क बोजू प्रचडै ॥११८
करै हावभाव कटाक्ष किलोल, बिराजै पिक पसत मज बोल ।
मुष चद्रहास हरै पाण मोह, छिब देष डोलै मुनी छद छोह ॥ ११९
चढै पत्तर बासना पग चोज, मिलया(य्या)गर चदन गघ मोज ।
किये काज हार्थ चतै रूप वाज, मन(नो) मोद मानै सहेली समाज ॥१२०

छप्पै– सषिया तणौ समाज ललित गहणा नीलबर ।
किसतूरी केवडा डहक परमल घण डबर ।
ग्यातजोबना गहर मदन छक लहर समाजत,
बणि हीरा द्रग बिकन रसक रभादिक राजत ।
कुकमको बैंदी लिलाट कर चद बदन छिब चधक चित,
चानंदत देषण गदर गवणी उठ गयद गति ॥ १२१

उदयापुर त्रिय ग्रवर विवध मन राग वणावत,
चदमुपी मिल चलय गवर ऊचै स्वुर गावत ।
जोवण कोतुक जात नागरी ग्यात नवेली,
जुथ जुथ जगमगत ग्रग सोभा ग्रलवेली ।
ग्राई समाज देपण गवर, कनकजरी भूपण करी,
पीछोलाको पाल पर, यद्रपरी सी ऊतरी ॥ १२२

दोहा– पीछोलै ग्राई प्रगट, हीरा उच्छव हेत ।
वाकी द्रगनि विलोकता, ललता मन हर लेत ॥ १२३
ग्रांनन सपियाको ग्रवर, ग्राठमै(म) तिथ(थी)उजास ।
विचै वदन हीरा विमल, पूरण चाद परकास ॥ १२४

ग्रथ उदयापुरकी गवर पिछोलै ग्रागमण

दोहा– उदयापुर निकसी गवर, बिधि विधि भूपण ग्राण ।
गज वाजा सुभटा गरट नरभय वजत निसाण ॥ १२५
रछ्यक ग्राये गवरके, जुथप जुथ जवान ।
नर नारी घण थट नरप, चल छोडा चोगान ॥ १२६
नर नारी सोभत निपट, लाप लोक लेषत ।
पीछोलाकै ऊपरै, दुत गवरा देपत ॥ १२७
धजा फरकत दल मघर, वाजा वजैत विसाल ।
गवरचा भड हय थट गरट, पीछोलाकी पाल ॥ १२८
कोयल सुर मिल नायका, गावत गीत गहीर ।
हय ध्यावत धर थरहरत, विवध पिलावत वीर ॥१२९

९ **ग्रथ बात–** यण परकार गोरचा पीछोलै ग्रावै छै। नायका वारा जुथ मिलावै छै। ऊचै स्वर गावै छै। ललिता ममूहमैं हीरा मनलोभा छै। नागरवेली ग्रलवेली ग्रग मोभा छै।

हीराकी सहेलियांको वरणन— हीराकी महैलिया हसाको डार। ग्रदभुत कवल वदन सोभा ग्रपार। यु कवलकी पापडीया एक बरोवर सोहै। वा सहैलियामै हीरा परागुरूपी मन मोहै। कीरतियाको भूमको तारामडलकी सोभा। ग्राफूकी क्यारी पोमाप मन लोभा। केमरिया कसुमल घनवर पाटबर नवरग पोसाप राजै छै। ग्रतर फुलेल केसरि कसतुरी सुगध छाजै छै। ग्रतरग वहूरग सपिया ग्रपार छै। पदमणी, चत्रणी सुदर सुकुमार छै। कनक-ग्राभूपण जरी मोती हीर हार छै। यसी सहलीयाकै विचै हीरा विराजै छै। मानु ग्रपछरामै रभाकी मोभा। मनलोभा चदमुपी उडगनमैं चद्रमाकी सोभा। यण प्रकार हीरा

सहलियामै उछव करै छै। गवरकै वोली दोली घुमर दे दे फिरै छै। गोरिका गीत कोयलस्वर गावै छै, जोडका जवानकी सगत पाऊ श्रो वर चावै छै। हीराको रूप देष सुरद मनमै जाणै छै। धन्य छै ऊ पुरुस जु इ नारिनै महलमै माणै छै।

अथ पीछोलै उपर प्रोहितको आगमण

प्रोहित बचन

दोहा– बोल्यौ प्रोहित बागमै, सुभटा तणै समाज।
ऊदयापुरकी गणगवर, अब देपाला आज।। १३०
बोल्यो प्रोहित वेलिया, बिध विध रग बपाण।
अमला करो दुणा अथग, तुरगा करो पलाण।। १३१
आरभ उछव गवर, रसिया बगसीराम।
माजिम अमला भागि मिल, कीनौ कैफ सकाम।। १३२
सरस पियाला साथमै, दारू फिरै दुवार।
चकन धुत कैफा चढै, अदभुत सुभट अपार।। १३३

प्रोहितकी असवारी

छद जात ऊधोर– अदभुत सुभट अपार, उतग अमल उदार।
वण बिवध आवध बाण, एम पनगा करत पलाण।।
राजत प्रोहित राण,
ओतग भाल उदार, केसरि तिलक प्रकार।।
आजानबाहु अभग, ओपत कोट अल(न)ग।
चष रत वोपत चग, पर कमल फुल प्रसग।।
भलहलत किरणा भाग, पट तार पचरग पाग।
पोसाष अग अपार, कलि रग रंग प्रकार।
कट कस्ये पेसकबज, वण षाग ढाल बिरज।।
बधे निषग कधे बषाण, कर लीय तीर कबाण।
कमर कसत कटार, धारत कर चोधार।।
परचड उठत पेड, वण कान मोती बैड।

अथ नीलबिडग घोडाको वरणन

छद जाते त्रोटक– तीन प्राक्रम यक तुरगम यु, भण नाम सनील विडगम यू।
तन पाटि कनोतिय तीषण यू, लस दोय मनु छिब देषण यू।।
कर सोहत कुकड कदम य, मषतूल रोमावल बधम यू।

चप सालगराम सुलछणसी, छवि पूछ मयोर कि पुछनसी ।।
तन रोम प्रभा मपतूलनसी, दरसत मयंक दरपणसी ।
उर ढाल छिवन ओराटकसी, कर पड विराजत फाटकसी ।।
वण अंग असंभव तेज वली, नट नाच सहोदर जत्र नली ।
धर पोड कठोर ध्रमंकत यू, झल पथर आगि झिमंकत यू ।।
ऊचकत अपार उलटणकी, नटवंत क वालक नटणकी ।
अदभुत्त तुरंगम अगमकै, वर जोड न नीलविडंगमकै ।। १३५

दोहा– अत वल चंचल सवल अति, अदभुत प्राक्रम अंग ।
रंग तुरंगम रणि रिसक, वणियो नीलविडंग ।। १३६

छंद ऊधोर– भणिया किम विडंग, अदभुत प्राक्रम अंग ।
पर पीठ कनक पलाण, तन तंग रेसम ताण ।।
चल झुल जरकस चीर, अतर चिरचत अवीर ।
ईस विध वण्यो केकाण, अव कीयो हाजर आण ।।
चढि चलै प्रोहित चंग, तम अवर सुभट तुर[ग]
रजपूत हैमर रंज, धर पोड धड धड धुज ।।
मत्र चले मिल येक संग, अत्याद वीर अभंग ।
सव येक रंग समाज, कर गवर ऊछैवे काज ।।
घण थाट हैमर घेर, भणकत त्रवक भेर ।
चमकत वरछीये चोकुल निसाण, भट विवध आवध वाण ।।
रस रंग प्रोहित राव, वण विवध रूप वणाव ।
वण सुभट घण थट वाज, सोभत अधक समाज ।। १३७
राजत वगसीराम किये गवर देपण काम ।

दोहा– असवारी छत्र अधिक, पीछोलै सु पियार ।
रमिया वगसीरामकु, निरपत सव नर नारि ।। १३८

१० वात– प्रोहितकी असवारी पीछोलै आई। अलवेली नायकाकै मन भाई। अलवेलिया असवार घोडा पिलावै छै, पांच पांच वरछीका टेका दिरावै छै। प्रोहितकी असवारीको घोडो नीलविडंग फरै छै। नाना प्रकारकी गतामै ईगा-ईगा करै छै। केसरिया कसुमल लपेटा पर सोनाका तुररा लटकै छै। भवराईका पेचपवा ऊपर लटकै छै। पीछोलाकै पाणी उपर गुलावका फूल तिरावै छै। आलीजा असवार घुडचडीकी वदुका सु हदफा लेजावे छै। रायेजादा रजपूतानै ऊदैपुरको लोग घणा रंग दाषै छै, अर ऐ वाता प्रोहित ऊदैपुरमै अमर रापै छै।

अथ प्रोहित-हीराको नैन मिलाप

दोहा— मिणधारी छिवतें उछर, प्रोहित प्रेम प्रकास ।
देख्यो हीराको वदन, हरपत उमग हुलास ॥ १३९
करहु ता पाछै करै, हीरा रूप निहार ।
देपण दो पेटा चढ्या, अलवैलिया असवार ॥ १४०

छप्पै— अलेवेलिया असवार यण विध देपण आई,
गजगामन गुसा गहर छोक मदन छत छाई ।
भाजन ग्रहणा भार पदमणी रूप प्रकासन,
कुनण तन दमकत विवध पोसाप विलासन ।
चदमुपी मृगलोचनी, कर कटाछै हीरा कहु,
हाव-भाव करि मोह्यो रमियो वगसीरामहु ॥ १४१
घोडा भड घमसाण पापरा वगतर पूरा,
चोधारा चमकत जवर पग दात जवूरा ।
जवरायल जोधार छाक मन मछर छाया,
अलवेलिया असवार आजे पीछोलै आया ॥
वा विचै पिरोहत यद, वदन तेज अधिको वहै,
सुण वडारण केसरी, करे पवरि हीरा कहै ॥ १४२

हीरा वचन

दोहा— सुण वडारण केसरी, हरिप हीयमैं होत ।
ऐ वुलो भलै आवियो, देपौ वहै देमोत ॥ १४३
मो मनमै रमियो भवर, लागत प्यारो लोय ।
आण्या देख्यो आज मै, जोडी हदो जोय ॥ १४४
करि गमण अव केसरी, पवरि ल्याव कुस्याल ।
कवण नाम रहै छैं कठै, माचो कोहो सवाल ॥ १४५

११. वारता— केसरी वडारणि रूपकी सागर, गुणाकी आगर । आधी कह्या सरव जाणै, पैलाका मनकी पछाणै । हीराका वचन सुणि केसरी ध्याई, वगसी-रामकी असवारीकै नजीक आई । प्रोहितनै देख्यौ, साप्यात कामदेव पेख्यौ । वगसीरामकै सनमुख आय ऊभी, नीलविडग घोडाकी वागनै विलूवी ।

केसरी वडारण वचन

दौहा— काई नाव क जातिय्या, किण देस किण गाम ।
ऊदयापुरमै आईया, कहै दीजै किण काम ॥ १४६

अथ लालस्यघ दरोगाको वचन

लाल दरोगो वोलियो, मुछां कर विमरोड ।
अवर देस नह छै इसो, जिण ऊप[र] सर जोड ।। १४७
वृछ सरोवर छवि विमल, परघल भूरत पाहाड ।
वाग अनेक नदिया वहै, वन छै देस ढूढाड ।। १४८
रहै जतै उ राजवी, कोट निवाई कीध ।
सुजस विजै चहूं दिस सरस, लायेक भुजवल लीध ।। १४९

१२ वात—कमवेस घोडाको असवार लालस्यघ दरोगो कहै छै—प्रोहित हेल हमीर ढुढाडै देसमै रहै छै। निरभयगढ निवाई गाम छै, देगतेग बरदायेक वगसीराम नाव छै। देस परदेसमैं मारको कहावै छै, पाग त्याग अण गज वीर(व) वजावै छै। सहलिया वाडियामैं डेरा करवाया छै, उदैपुरकी गवर देषण आया छै।

दोहा– सुणत वडारण केसरी, गमण करी गजगत ।
हीरानै कहिया हरप, समाचार सरवत ।। १५०
प्रोहित आयौ पेमसुं, भाग तमीणै भाम ।
जोय तमीणो जोडको, रसियो वगसीराम ।। १५१
ऐ धुलो छिब सयअतै, अव देषीजै आप ।
मन वछित ओ छै मदन, मन कर करो मिलाप ।। १५२
आप जोड देप्यौ अवै, रापो प्रोहित रीत ।
औ वर दीनो गवरज्या, प्यारी करलै प्रीत ।। १५३
आलीजो छिब अगमैं, वर जोडी वापाण ।
प्रीत करीजै पदमणी, अवर नही अवसाण ।। १५४

प्रोहितजीनै हीरां कागद लषते

दोहा– हीरा मनमैं अति हरप, कागद लिपो प्रवीन ।
समाचार विध विध सकल, नागर हेत नवीन ।। १५५

१३ वारता– केसरी वडारणै हीराका हाथको कागद ले गमण कीनो, राधाकृष्ण पवासका हाथमै दीनो। केसरी भणै छै, राधाकृष्ण सुणै छै।

केसरी वचन

दोहा– कहैत वडारण केसरी, राधाकृष्ण सुणत ।
मालुम कर माहाराजसु, तन-मन कागद तत ।। १५६

कर जोड्या राधाकृष्ण, प्रोहित अरज प्रकास ।
कागद नजरचा कर दीयो, हीरा हेत हुलास ।। १५७

१४. बात– राधाकृष्ण पवास अरजको हुकम लीनु, कागद प्रोहितकै हाथमै दीनु। बगसीराम बाचै छै, मन मोद राचै छै। हेतको प्रकार, कागदका समाचार।

दोहा– हीरा यम लषियो हरष; करस्या पूरण काम ।
विध विध कागद वाचज्यौ, रसिया बगसीराम ।। १५८
बणियाणी चातुर घणी, आपतणी आधीन ।
बिध बिध कृपा कर मो घरै, आज्यौ विलब न कीन ।। १५९

प्रोहित वचन

दोहा– पर घर करा न प्रीतडी, प्रोहित बचन प्रकास ।
दाषा म्है ह्वा काच दिढ, रमा न धिय रत रास ।। १६०
बोल सुणत तब केसरी, हीरा पग विहार ।
कहिया बन मलाय का ' ' ''' ।। १६१
प्रोहित सुरभै प्रेमसु कर गहै मालुम कीन ।।

१५ बात– दूसरो समाचार प्रोहितनै बचायो, मदनमै छायो, कामदेव दरसायो ।।

हीरा वचन

दोहा– यम फद फसिया पगट, कसमसियेव सुकाम ।
घर बसिया पायो घरा, रसिया बगसीराम ।। १६२
सिरपै वारू साहिबा, प्यारा तन मन प्राण ।
मो सुगणीरा महलमै, रहज्ये प्रोहित राण ।। १६३
हसज्यौ कसज्यो षेलज्यौ, लीज्यो जोबन लेह ।
पलक न न्यारा पोढज्यौ, नाजक धणरा नेह ।। १६४
आप नही जौ आवस्यौ, हीरा कवण हवाल ।
महिला पदमण माणज्यौ, जोडीतणा जलाल ।। १६५
आप नही जो आवस्यो, रसिया प्रोहितराय ।
आपघात मरस्यु पवस, मरू कटारी षाय ।। १६६

१६ बात– यण प्रकार कागद पोहितनै बचायो, समचार बाचता हरष पायो । प्रोहित मिलापको बचन कहै छै। केसरी बडारण हेतका कान दे छै।

प्रोहित बचन

दोहा– कह दीजे तु केसरी, साचा बचन सुणाय ।
हीरा हदा महलमैं, आज्ये रंमाला आय ।। १६७

केसरी वचन

दोहा– हीरासु कही केसरी, विध विध निसचै बात ।
हीरा प्रोहित हेतसु, रग रमामी रात ।। १६८

१७. वात– केसरी समाचार भरणै छै। हीरा हेत कर सुरणै छै। प्रोहितजी महला आसी, तोनै रगकी राते रमासी। ईतरी बात हुई—प्रोहितकी असवारी सहैलिया वाडी गई। हीरा पणि आपकै महल प्राप्त हुई। हीरा झरोषै वैठी छै। सहैलिया वाडी कानी जोवै छै। अवै तो सूरज्य असतग हूवौ छै। पुजारी पुजा करण मदर परसै छै, अव ता सभ्या दरसै छै।

अथ सझ्या समै वरणन

छप्पै– अव सूरज्य आथम गहर सुनो वति गजिये,
मदर सभ्या समय सषधूनि सजिय ।
चमकत घर घर दीप मोद सजोगन मडत,
कलबलाव कोचरी तीपसुर घुघु तंडत ।।
जव कवल कुद बिछुडे चकव, इधक चद छवि उडगनिय ।
उदयापुर सागर अवर, कहर प्रफुलित कमोदनिय ।। १६९

दोहा– इण विध सूरज आथयो, पुरकर चद प्रकास ।
अव वरणत सोभा अधिक, हीरा महल हुलास ।। १७०

अथ हीराका महलको वरनन

छद जात पधरी– वणि महल सपतप म[ड] गगन वाट,
कण हेम जटत चदण कपाट ।
ऊतग झरोषे बण अलग, पट पाट जरी पडदा प्रसग ।।
विद्रमी थथ[भ] अनेक वान, बण विव्रध रग जाली वितांन ।
उण वीच विछायेत नरम अग, रेसम दुलीचा चादणी रग ।।
छिव हेम रग चित्राम वध, सरसत झपट नाना सुगध ।
चहु वोर महिल छित्र रग चोज, मानु अनग असमान मोज ।।
ढोलियो मद्ध चंदण सुढाल, विद्रमी ईस मोभा विलास ।
रेसमी वणत कोमल सुरग, प्रतिफुल गध सज्या प्रसग ।।
मिमरु गलीम गदरा मसद, सज्या कसत विध विध सुगध ।
विछयु प्रजेक मोभा विराज, सुप सागरको मानु समाज ।। १७१

दोहा– यण प्रकार सोहन महल, दमकत छवि ऊद्योत ।
दीपग लग प्रतिविंव दुत, हिलमल जगमग होत ।। १७२

अथ हीरां आभूषण आरभते

दोहा– आभूषण आरभयो, केसर मजण कीन ।
प्रोहित मलबा पेमसु, आतुर होत अधीन ।। १७३
मजण नीर गुलाब मिल, केस पास मुकरात ।
बैणी फूल सुगध बर, लेषत मन लोभात ।। १७४
तिलक तेल तबोल मिल, द्रग अजन ऊदार ।
ललित मुकत पाटी अलष, मिल सुगध सुकमार ।। १७५
मुगत मग सिंदूर मिल, कनक फूल छिब कीन ।
मज तिलक छबि चदमणि, पकज बदन प्रबीण ।। १७६
करण फूल मोती कनक, जगमग नगमणि जोत ।
लटकत मुकट लिलाट लै, उडगन छवि उद्योत ।। १७७
मगमद कुकम चद मिल, द्रग अजन छवि दीन ।
नकबेसर झमकत किनक, नाग पान मुष लीन ।। १७८
कज कठ त्रेवट किनक, परस लील मणि वोत ।
मुकता माल बिद्रुम बिमल, उजल हीर ऊदोत ।। १७९
सपत लडी कचन सुभग, हास हार सुहेल ।
नवसर कण नव रगके, चोमर फूल चमेल ।। १८०
चद्रहार ऊपर चमक, कचु[क] जरकस कीन ।
दमकत कूदण धुगधुगी, नग प्रतिबिंब नवीन ।। १८१
कामल भुज अणवट किनक, वाजुबध बिचार ।
कीय चुड नग जुत किनक, कर ककण झणकार ।। १८२
पहुची नग बिध बिधि प्रगट, पान फूल परकास ।
लालरग महदी ललत, अदभुत नख ऊजास ।। १८३
किनक मुद्रिका बज्रकण, दुत सोभा दमकत ।
हाव भाव पोसाष हित, चपलासी चमकत ।। १८४
ललवत किनक सहेलडी, विमल करत बिहार ।
नील जरी अबर लुकी, करत बिबध भूकार ।। १८५
छुद्र घंटका अधक छव, कटि प्रदेस दुत पुज ।
पग नूपुर पायेल प्रगट, गत मुराल धूनि गुज ।। १८६
विमल किनकके बिछये जावक पग थल जोप ।
लाल नषन मैंदी ललत, अरध चंद छबि वोप ।। १८७

पावपोस मोती प्रगट, गणवत मनु गयद ।
हीरा प्रोहित मिलन हित, ऊर ऊपजत अणद ॥ १८८

छद पधरी– आभुषण तन झमकत असेप, वण अग सग सोभा विसेष ।
विवध रग रग पोसाक वृद, अतर फुलेल चिरचत अनद ॥
केसर कसतुरी मिल कपूर, निरमल तन चदन बिरचत नूर ।
परमल अनेक मजन प्रसग, रभादिक सोभा रूप रग ॥
अपरग सपी केसरी आय, दीपक जोति दरपण दिपाय ।
हीरा मन अति कीनू हूलास, प्रोहित प्रचड मिलवो प्रकास ॥
मदनातुर हीरा मन मलाप, वर प्रोहितकी सगम वयाप ।
ललिता ज भई वस कामलीन, केसरी बडारणन वदा कीन ॥
वाडिया केसरी कर विहार, प्रोहित मिलवो मन मोद प्यार ।
अब कह वचन रस बस अनेक, हीरा मिलाप हित हेक हेक ॥ १८९

दोहा– अरध निसा आई अली, प्रोहित प्रेम प्रकास ।
हीरा मिलवा हेतकी, वाता कहत विलास ॥ १९०

केसरी वचन प्रोहितजीसूं

अरज करू चालो अवै, आपतणी आधीन ।
कामातुर हीरा कह र, दुष पावै छै दीन ॥ १९१
चकोर चाहे चदकू, मोर चहै घण मड ।
हीरा चाहे आपकू, प्रोहितराये प्रचड ॥ १९२

१८. बात– साहिब जेज न कीजै, रमिया भवर बेग पधारीजै । कोडे महोरकी राति जावै छै, हीरा पण महलम येकली दुप पावै छै ।

प्रोहित बचन साथकासु

छप्पै– प्रोहित यण प्रकार साथनै वात सुणाई,
हीरा मिलवा हेत अरध निस दूती आई ।
हरपण मिल्लण हुलास चाहै अब अवसर चुकत,
मुरछैत नारी महल मदनजुर प्राण म मुकत ॥
दिलको न कोई जाणे दरद, मुव्रत नही नारी मरद,
फिरै वव(च)न पाछो फरक, यु नहचै कर भुगते नरक ॥ १९३

अथ प्रोहित हीराको महल गमण आरभते

दोहा– हय चढियो परघय हुकम, चाकर लियो मु चग ।
माणीगर रसियो भवर, रग प्रोहित रग ॥ १९४

असवारी हद वोपियो, बणियो नीलबिडग ।
अधूल्यौ छबि इद सो, रग प्रोहित रग ।। १९५
कमर कटारी असी हथा, आयुध बिबध अभग ।
चकाधूत कैफा चढ्यौ, रग प्रोहित रग ।। ९६
हीरा मदन बिलास हित, अति मनमै ऊछरग ।
बचनको बाँध्यो बहै, रग प्रोहित रग ।। १९७
बहत अगाडी बीर बर, सेवो चाकर सग ।
दारण चाल्यौ चित निडर, रग पिरोहित रग ।। ९८
सहर कोट आयो सिधर, ऊतगत ऊनाड ।
दरवाजा मगल दुगम, किलफा जडी कवाड ।। १९९
दरवाजै प्रोहित दूगम, ऊभौ जोम अनत ।
चाकर सेवो केसरी, नासकमै निकसत ।। २००

१९ **वात–** प्रोहित मनमै बिचार करै छै। कवाड टुटै न घोडो कुदावाको दावा रै छै। प्रोहितका मनमै दाव आयो, नीलबिडग घोडानै कोटकी सफील कुदायो ।

दोहा– दाबत अतबल कूदियो, तूरत सफील तुरग ।
ऐल नही असवारनु, कुद्यो जाण कूरग ।। २०१
वेग तुरगम अति विहद, प्राक्रम तन भरपूर ।
गढ सफील झप्यौ गिगन, लफ्यौ जाण लगूर ।। २०२
नीलबिडग कुद्यौ लहर, प्रोहित मन हूलसत ।
कर जोडी यम केसरी, 'षमा षमा' आषत ।। २०३

२०. बात– प्रोहित इण प्रकार घोडो डकायौ, हीराका महलकै झरोषै नीचै आयौ। सेवै चाकर घोडाकी बाग पकड लीनी, केसरी बडारणि हीरानै बधाई दीनी। हीरा केसरीनै बधाईमै नवसर हार दीनो । केसरी मुजरो कर लीनो । रेसमका रसा प्रोहित चढि आयौ, हीरा गवर पूजबाको फल पायौ। हीरा बार बार मुजरो कर हरष धरै छै, मोती मोहोर मुगियास निछरावल करैछै।

हीरा बचन

दोहा– रमस्या सेजा रग, रली, [करस्या] पूरण काम।
आजि भला घर आबिया, जोडीतणा जलाल २०४
आजि भलाई आबिया, रति पूरण अनुराग ।
दरस तमीणो देषियो, भलो अमीणो भाग ।। २०५
गहर प्रजक सुगध अति, प्रोहित मदन प्रकास ।
प्रोहत चितवत सदनमै, हीरा बदन हुलास ।। २०६

चातुर वोल्यो मुप वचन, आतुर हीरा आप ।
तिरपातुर मेटो त्रया, तनु मदनातुर ताप ।। २०७
प्यारी आवो प्रजक पर, हावै भाव कर हेत ।
दपत रत रमस्या मदन, मन वच ऊमग समेत ।। २०८

छप्पै– सुणत गवर सक्रमी भ्रुणण, आभूपण भ्रमकत,
हाव भाव मन हरत दरस तानगो(पो)र ध्रमकत ।
मधुर मधुर मुलकत अधर पुलकत अरण अति,
ललत विलोकत ललत चहत हित मत्र अधिक चित ।।
हीरा ऊमगत मन ऊलस, कसमसर स ऊर कामकै,
ऊभी सनमुप आयकै, रसिया वगसीरामकै ।। २०९

दोहा– ऊभी सनमुप आयेकै, हीरा मन हुलसत ।
देप देप आनद अति, मद मद मुसकत ।। २१०
प्रोहित रसक प्रजक पर, ललित अक भर लीन ।
चूवत अधर निसक चित, डक रदनको दीन ।। २११
हीरा व्याकुल थरहरत, चमकत डरत चकीन ।
वद करत रित मदन छिव, देप वदन हस दीन ।। २१२
दपत दरस प्रजक पर, सपत करत हुलास ।
हीरा वगसीराम हित, कद्रप मुदत प्रकाम ।। २१३
प्यारी पीव प्रजक पर, ऊलही उर अवलूव ।
मानुं चदन वृच्छ मिल्न, भुकी क नागणि भूव ।। २१४

२१ वात– यू रगमै राति वितीत भई। हीराकी अवलाषा पूरण भई। रगमहलको समाज वणायो, प्राणपियारीनै रतिविलासको सुवाद आयो ।

वगसीरामजीको वचन

वगसीरामजी कहै छै—प्राणपीयारी अव डेरानै हुकम दीज्ये, प्रभातिको आगमण छै जेजै न कीज्ये ।

हीरा वचन

दोहा– अरज करत हीरा अधिकै, वायेक प्रेम वपान ।
मो सुगणीनै माणज्ये, रग तणी छै रात ।। २१५
प्यारा पलका ऊपरै, रापाला चित रीत ।
रातै घणी छै राजवी, प्रीतम अधिकी प्रीत ।। २१६

प्रोहित वचन

प्रोहित प्यारीनै कह्यौ, प्रितष हुवो प्रभात ।
पुजारी मदर प्रगट, झालर घट बजात ।। २१७

२२. **बात**– बगसीराम कहै छै– परभात हूवो, मदर झालर घटा बजायो । हीरा कहै छै – बालम, परभात नही, बधाई बाजै छै । अऊत घर पुत्र जायो । प्रोहित कहै छै – प्यारी, प्रभात हुई, मुरगी बोल रही छै । हीरा कहै छै – कुकडा मिलाप नही छै । प्रोहित कहै छै – प्यारी, प्रभात हुवो, चडिय्या बोलै छे । हीरा कहै छै – बालिम, प्रभाति नही, याका आलामे सरप डोलै छै । प्रोहित कहै छै – प्यारी, प्रभात हूवो, चकई चुपकी रही छै । हीरा कहै छै–बालम, बोल बोल थाकी भई छै । प्रोहित कहै छै – दीपगकी जोति मदी भई छै । हीरा कहै छै – तेलको पूर नही छै । बगसीराम कहै छै – सहरको लोग जाग्यो छै । हीरा कहै छै – कोईक सहरमै चोर लाग्यौ छै । प्यारो कहे छै – प्यारो, हठ न कीज्ये, अब बहूत कर डेरानै हूकम दीज्ये ।

दोहा– रग रात बीती असक, अरुणोदय आभास ।
बन पछी बोलत विमल, पकज फूल प्रकास ।। २१८
अक छोड प्रोहित उठचो, प्यारी रही प्रजक ।
हीरा मुर्छित पर रही, डसी भुजगम डंक ।। २१९
हिया पीतम परहरत, स्वातग भई सुभाय ।
भीर तबै कर अक भर, प्रोहित ऊर लपटाय ।। २२०

हीरा बचन

कर जोडी हीरा कहैत, अब कद मलस्यौ आप ।
एक घडी नै आवडै, तनकी मटै न ताप ।। २२१
लारै मोने लेवज्यौ, आपतणी आधीन ।
आप बना मरस्यू अवस, मरत नीर बिन मीन ।। २२२
वैले मिलीजै बालिमा, प्यारा तन मन प्राण ।
हिवडै राषू हेतसु, रसिया प्रोहित राण ।। २२३
मो मन मलियो बालमा, कहुक प्यारा कत ।
दीसत यक सम दूधमै, मानु नीर मिलत ।। २२४

प्रोहित बचन

दोहरा–बिलकुल बोल्यौ मुष वचन, रसियो बगसीराम ।
प्यारी साथ पधारस्या, जुदी नही यक जाम ।। २२५

प्यारी कर गह प्रेमसु, वचन दीयो मुप वाण ।
रहस्या भेलारा वयण, ईसटदेवकी आण ।। २२६
अवै भरावै ऊतरचौ, वचन कथन वर वीर ।
चाकर सग तुरग चढि, रावत मघ मन धीर ।। २२७
वणी सहैली वाडिया, आयो वीर अभग ।
वण बैठो गादी विमल, सुभट समाजत सग ।। २२८

वात– अथ राणाभीम वगसीरामको मिलाप आरभते ।।

राणाको वरणन

दोहा– वुदयापुर राजै यवक, राणो भीम सुरिंद ।
सुभट समाजत सूरमा, आजत राजत ईद ।। २२९

२३. **वात–** यण प्रकार राणो भीम, कीरतिको कीम, भोजतालाबिंद, चितको समद, आचारको ईंद, सरणाया साधार, हीदुपति पातस्याह, यकलकको अवतार, महिमा अपार, यसो राणो भीम । जोको दरगामै येक समै बात आई, ढिकडीये अरज गुदराई ।

ढिकडीयाको वचन

वात– प्रतप श्रीदिवान, येक ढूढाड देसको प्रोहित आयो छै, सातबीसी असवार घोडा आडवर वणायौ छै। सहलिया वाडियामै ज्यौकौ ऊतारौ छै, कीरतको भारौ छै, अनेकानै रीभ मोजा करै छै मनमै हजूरेसूं मिलवाकी ऊमग धरै छै । दातारको दातार, भूभारको भूभार, हेला हमेर ईंदको अवतार । वगसीरामनावै कहावै छै, मिलया हजूरिकीभी दाये आवै छै।

दिवानकोवचन

जव दिवान फूरमाई – म्हे भी मलस्या, देषणा स भुलणा नही, रूप, गुण देप(षा)ला, प्रोहितनै पेषोला। राणैजी हुकम कीयौ – प्रोहित वेग आवै, मिलवाकी मन भावै । यण प्रकार दीवान हुकम दीनो, छडीदारनै वदा कीनी । चोपदार सहैलिया वाडी आयौ, सुभटाका साजमै प्रोहित दरसायौ । अधुलौ प्रोहित माजम कसुमा लैछै, परगहैनै फुलमदका प्याला देछै । विधविध पुवी कसवोई लगावै छै, अनेक प्रकार वला-धुकला उडावै छै । वगमीरामकी हजूरे छडीदार आयौ, मुजरो करे दीवाणको हुकम गुदरायौ ।

अथ छडीदारको वचन

वात– प्रोहित साहिव, अपनै श्रीदीवान याद करैछै, आपका मलवाकी मनमै धरै छै, सुभटान साथ लोजै, सताव असवारी कीजै ।

प्रोहित बचन

बात– प्रोहित कहै छै -- मै तो ऊदैपुरकी गवर देपण आयो छो, म्हाकै सासरै बूदीमै चारण बषाण सुणायो छो । एक बार तो घरानै जावस्या, दीवान ईती कृपा करै छै तो फेर आवस्या ।

चोपदार बचन

चोपदार अरज करै छै – दीवान तो आपसु मिलवाकी आजी धरै छै ! दीवाणनै आप राजी राषस्यौ, मिलायकी दापस्यौ ।

प्रोहित बचन

जो दीवान मिलबाकी धारसी तो आजि जगमदर पधारसी । पीछोलै पेषाला, दीवाणनै भो देपाला ।

दोहा– जगमदर जगनीवासमै, जुगत आवै जो दीवान ।
प्रोहितराण मिलायकै, प्रगट कह्यौ प्रमाण ।। २३०

दीवाण जगमदार पधारवाकी असवारी बरणन

छडीदार बचन

छद भुजगी– धर(रे) बात निरधारर छडीदार ध्यायौ, अबै सानकुल दरबार आयौ।
कह(हे) राण भीम(मो) कहो बात कैसे, उचारी दुजाती सबै तु(तू) ऐसै ।।
छडीदार बोल्यौ सुणौ भीम बात, दिवाण मलापं मगेज दुजात ।
प्रथीनाथ आपे पीछोलै पधार, जग(गे)मदर राम राम जुहार ।।

राणो भीम बचन

तबै भीम बौल्यौ सुणौ बेगताम, अबै जेज कीज्ये नही येक जाम ।
जग(गे)मदर आज तो बेग जोहै, मन(ने)मान दान दुजात(ती)बिमोहै ।।
तबै चोपदार फरचौ बेगताम, जणायो सुभट(ट्ट)चलौ जामजाम ।।
फुबै राण भीम फुर(रै)माण फेर, बज्यौ दूक धूसा कर नाल भेर ।
जरी तारपट(ट्ट)षुलै झडचड, बिपचित्र मने षहोद ब यड(यड) ।
रचै स्याम लीला गज(जै) ढाल रु ड, पट आबृत रेसमी भूल पड ।।
सन बीर ऊतग ततै तुरग, सुभ हीरहार बनाथ(थ)सुरग ।
लसत नग पाटहेम पलान, मन(नै)मोद मानै चढैतै बिमान ।।
रचै चदन के जट हेम(म)रश्न, अदू तारपट(ट्ट)लपेटत मश्र ।
रसे रसम हेम रजु टरावै, मन बेगबान धन घोष मावै ।।
षुलै जोत नग जट(टे)हेम षास, लसै पालकी रग रग विलास ।
थटै नेष नेष छडीदार थड, चमकार हेम जटे डड चड ।।
बिभूषत्त अग्र बर(रै)दार माल, रचै मजघोप नकीब रस्याल ।

हूलै वेठ भीमग जरी तार पट(ट्ट), झुकै चामर सेत सोभा, झपट(ट्ट) ।।
मनु वद(द्द)ल हेमकी छत्र मंड, दमकार वज्र कण मोभ डडं ।
चल्यौ भीमराण समाज(जै)विचित्र, नट(टै)नाये(य)का रगराग निरत्र ।।
दहू वा वजे ताल भेरी म्रदग, रचे ग्रार भीतसिक(का, कै) रगरग ।
विमु(भू,मृ)पत्त गस्त्र पन(नै,ना)जोवबृद, करै कीतकी हाक भद्र कवद ।।
उडै हैमर पोड रज ग्रापड, नट व्योम भासी ढक्यौ मारतड ।
थटै सग लीनै सवै मेन थाट, घुमडे पीछोलै गई वीर घाट ।।
नरिंद तवै वैठयू नीर नाव, सुभट(ट्ट) हजूर सवै सग भावै(व) ।
जग(गै)मदर प्रापत(ते)ईद्र जैसै, ग्रत(ती)सोभमान विराजत्त ऐसे ।।
मिलेयू चहू गा महानीर मड, चलै मच्छ कि(की)लोल लोल प्रचड ।।२३०

दोहा— सगता चाडा सग मभट, यम जगमदर ग्राय ।
विवध विछायत भीमवर, वैठे सभा वनाय ।। २३१

अथ जगमदर जगनिवासको वरण

जाति पधरी— उपत जगमदर जगनिवास, पर दोहनको सोभा प्रकास ।
वण थभ लाल विद्रूम वसेस, ग्रतरग रग पथर ग्रसेस ।।
ऊनग पभ सोभा ग्रतूल द(दी)पत लपट रेसम दुकूल ।
गयदत किरम छिव रग रग, सोभा वितान जर तार सग ।।
वरण त्रिवध गोप जालीन वृद, छिव चित्र काच मकरद विंद ।
ऊतग झरोपा गिगन वक, वण छाजा तिखण घनक वक ।।
वण पडदा छटकत विवध रग ।
पुलकठ जडत मोती प्रसग, ग्रतरग गावटी छिव ऊतग ।।
सोभत क वैलगिरि किनक श्रग, थित माल सुगधन फूल थाट ।
कुदन चित्र म चदन कपाट, वण वाग तेरावर विध विधान ।।
पर गहर सपा फल फूल पान, जप ग्रोमन वेली गहर झड ।
मिल पवन सुगधन फूल '', झकार ससट गण ग्रग झूल ।।
मिलकोर पिक है तडत मयोर, सुर चकव कपोतन विवध मोर ।
यह विध जगमदर जग निवास, परस पर विमल सोभा प्रकास ।। २३१

दोहा— होद नीर चादर वहत, ग्ररु फुलवा दिस वोय ।
सुप समाज सोभा सरस, जगमिंदर द्रग जोय ।। २३२

छप्पै— जगमिंदर इम जोप राण भीमेण त्रिराजत,
ऊछव कर्त ग्रनेक सुभट थट स्यघ समाजत ।

दाषे हूकम दीवान बगसराम बुलायेहु,
मन मानत मिलाय जेज नै बेगा जाय हू ॥
जब पीछोला ऊपरै, चोपदार नावक चले,
बिबध महैली बाडिया, माहाबीर प्रोहीत मिलै ॥ २३३
चोपदार सुण बचन प्रोहित ऊसस,
सज पुनीत पोसाप क्निक सेनाह भलकस ।
ढाल षस षडगबध कट षूब सुभट थट आवध सगम,
भीमराण मेटवा तामस चढ चले तुरगम ॥
मालम अषड नवषंड मय, अनमी धिर प्रचड अत,
मारतड भल हरत मुष प्रलब भुज डडवत ॥ २३४

दोहा– प्रोहित अब चाल्यौ प्रगट, सुभट लिया षण स्यघ ।
बीर घाट प्रापत भये, अतबल बीर अभग ॥ २३५
चाले नाव जिहाज चढ परघ सग प्रचड ।
जगमदर आयौ जबै, अनमी मगज अषड ॥ २३६
दरगहै राणा की दरस, अनमी प्रोहित अग ।
मानु जुथ गयदमै, आयो स्यग अभग ॥ २३७

२४ **बारता–** यण प्रकार राणाकी दरगामै सुभट समाजसु प्रोहित आयौ । जिण प्रकार सुण्यौ तिण प्रकार दरसायौ । तबै राणै प्रोहितनु नमसकार कीनो, तबै प्रोहित राम राम कीनो । तब राणा रोस कीनो – आसरीवाद कु न दीनो ।

प्रोहित वचन

बात– प्रोहित कहै छै--अनमी छू, रूघबस बना ओर नरवर बना नमु नही । आपका सीस पर षेलु, औरनै हाथ माडू नही ।

राणा बचन

तब राणो कहै छै – अनमी पणो तो माहानै चाहिज्ये । यू आप ब्राह्मण छौ, आपनै क्यू ?

प्रोहित बचन

आप जाणू सो ब्राह्मण नही । जोध विद्याको साधिक, ईसटको आराधिकै छु सही ।

राणा बचन

जोधबद्या छित्रीबसमैं छै, जिका महाभारथमै कैरवा पाडवा दिषाई ।

प्रोहित बचन

माहाका बसमै द्रोणाचार्यंजी हूवा, जिका वा बना वानै किण पढाई ?

राणा वचन

छित्रीवसमैं म्हाकै छ चक्रच (व)रती हूवा, जिका प्रथवी जीत लीनी ।

प्रोहित वचन

माहाका वसमैं श्रीपरसरांमजी हुवा, जिका ईकईस वार प्रथी नछत्री कीनी । वगसीरामका वचन सुण राणैं भीम रोस कीनो, मनमैं अहकार आण यो जबाव दीनो ।

राणा वचन

दोहा– क्रोध कर राणों कह्यौ, दल वल लेऊगा देप ।
ऊदय्यापुर वधा अवस, पकडी जो हृद पेप ॥

प्रोहित वचन

प्रोहित वोल्यौ दिल प्रघल, आप जतन वाधो दीवाण ।
ऊदय्यापुरकी वाधु अवस, पकड पकडूलो प्रमाण ॥ २३८
रतनावत दिल रोसमै, प्रोहित चले पयाण ।
वचन वचन वाधी विथा, जग्यौ अग्नि घ्रत जाण ॥ २३९
चले प्रोहत नाव चढि, ध्यावत क्रोध अधीर ।
सुभट सजोरा सगमैं, वाडी आयो वीर ॥ २४०

छप्पै– चढे रीस चप चोल मुछ मिल भ्रगट भ्रमावत,
अपाडै पर आय जाणै जौगेन्द्र जगावत ।
कोप्यौ भीम कराल कना जमजाल क्रोधकस,
जगी सो(से)र ढिग ज्वाल इण विध प्रोहित उसस ॥
क्रोड वात नही चूकस्यू, सुणलीजो माची सुभट,
ऊदयापुर वधा अवस, पकडाला भुजवल प्रगट ॥ २४१

राजपुता वचन

दोहा– प्रोहित राण प्रचडका, सुभट वोल यक सग ।
वध पकडस्या वीरवर, जुटस्या पागा जग ॥ २४२
कर जोडी सुभटा कह्यौ, आज असाढ अभंग ।
सावण स लेस्या सही, तीजा चाढ तुरग ॥ २४३
भली वात प्रोहित भणैं, तीजा तणैं विवार ।
पकडाला वधा प्रगट, सव देपत ससार ॥ २४४

२५ वारता– इतनैं प्रोहितजीनैं सिवलाल धाभाई कहै छै – आज तो तीजा आडा पचीस दन कहै छै । माहाकी आ अरज छै – सिवांणी गावै छै । वो हू पाघडी-वदल भाई छा । काम पडचा मेहे(म्हे), वै जावा आवां छा । सो वडो वाडवी

छै। म्हांकै र उको बचन गाढो घणो छै। ऊमैं काम पड्या तो हु जाऊ, मैमैं काम पडया वो आवै। लाषा बाता रहै नही, ऊ ईसोईज छै। ऊधारा झगडाको लेवा वालो छे। भारथको भीम, सूरमाको सीम। केबियाको काल, नगी किरमाल। नेक बषत तमाण, देषते षबरियाण। जाक समसेर दसु देख सका, पाधरा सु पधरा, बकासु न्रिबका। झगडेकी अरदास्त, सस्त्रूका अभ्यासत। प्राक्रमका प्रथीराज, बुधिका रामाज। सोरका जोर कवारी घडारा यारुका यार। आड़ते आडा, ऐसे नागर सिवाणी बज्रकी ढाल, जैजै रावै बाहाद्र षलुका नाटसाल।

दोहा— कटक बिकट घण थट किया, घोडा घमसाणीह।
　　राव बाहादुर राजवी, सुर ईंद्र सिवाणीह॥ २४५
　　राव बाहाद्र सुभट रग, नाच घण बाषाण।
　　पर घट षेलै सीस पर, है झैले अस प्राण॥ २४६

२६. वारता— यू राव बाहादरनै कागद लषीजै, हलकारानै बदा कीजै। प्रोहित राणाक ऊदैपुरमै नोष-चोषै हूई, जिण बातको कागद सिवाणीनै लष दीनो, गीरधारी हलकाराने बदा कीनो। प्रोहितनैं सिवलाल कहै छै— अब तो गिरधारी हलकारो बाटा बहै छै। सो अठै ऊदेपुर आये राणा झगडा ऊपर आसी। लाषा बाता टलै नही। अगजीत षागा बजासी। अब गिरधारी हलकारो सिवाणी गयो छै। प्रोहितको कागद रावनै दीयो छे। राव कागद बाच परगहैने सुणायो छै।

परगह बचन

परगहै कहै छै बडो अवैसाण आयो, रावनै सूरवीर जाण कागद पढायो।

राव बचन

लाषा बाता ऊदैपुर गया राहाला, मेवाडाका रजपुता सू फूल धारा षेलाला। कैतो मेवाडानैं चापडै षेत मारलेस्या, जै आपा मरस्या तो प्रोहितजीकै अवसाण अपछैरा बरस्या। यू बात करता दिन असतग हुवो। राति बृतीतमान हुई। सूरजको प्रकासगान हुवो। रावै कटकनैं कहै छै— ठाकुरा, जेज न कीज्ये, ऊदैपुर दूर छै मनमै विचार लीज्ये। बला धोकला करीजै, घोडा काठी धरी लीज्ये। तब सारै साथ बणा कर लीनी। चरवादार घोडा काठी धर लीनी। इतै नगारची नगारै चोभ दीनी और कटकानैं तो कोट तालकै कीना, सात बीसी पायर हित साथ लीना। घोडाकै तो सछी पाषर अवारकै बगतर, टोप, झिलम जरै च्यार पानी दस्ताना चलितै, इतरा समाजकी सिलै सरब असबाराकी पा, राव चढयो। रावका रजपूत कैसा ? वैता कालकी चालकू पकडै ऐसा। रावका रजपूत, जगमै मजबूत, आवधाम कडा जुड, अडाभीडका अोनाड, षलाका बिभाड, नाहरा पछाड।

रावका रजपूतका वचन

दोहा– हक मल हल हुकन्नै, घुरै नगारां घावै ।
गढ उदैयापुरपै गवंण, रचै वाहदर राव ॥ २४७

छप्पै– रचे वाहादर रावै गवणत्र वाट गरज्ये ,
चढे कटक थट चलै करण भारत स कज्ये ।
अडा भीड़ आवधा करी वगतरां पणकत ,
वेग अगाटा वहत भिड ज फोरणाट भणकत ॥
ससत्र हजारा मु लिये, भला मजन मन भावियी ,
सीवाणीपति सूरमो येम उदैपुर आवियी ॥ २४८

दोहा– हलकारा मालुमै करी, प्रोहित सुणी प्रचड ।
सात वीम सुभटा सहत, आयौ रावै अपड ॥ २४९
सुभटा थट मनसुप मले, प्रोहित कर अतप्रीत ।
रावै भला आयौ किवू, रापण पणवृत रीत ॥ २५०

२७ वारता– प्रोहित कहै छै–रावत भला आयो, मोयर चाकरीरो हुकम दीज्ये ।

रावै वचन

रावै कहै छै– या चाकरी सहरै वारै गवर छै, ववा पकडज्ये ।

प्रोहित वचन

राव ठीक फूरमाइ, मेवाडा नै तरवारचा मार वंवा पकड लेस्या । लापा वाता चूकस्या नही । रांणा भीमको ऊदैपुर तिणकी आवरू पाड़ घोडा ताता पड़स्या । लारै वरा पूगसी तो वासु भी फूलवारा पेलस्या ।

रावर वचन

प्रोहित घणा रग छै । आप जमापात्रे कीजै । झगडाको काम पडिया म्हाकी भी हाजरी लीजै । यण प्रकार प्रोहितकै, रावै वाहादरकै वतलावण हूई । राव वाहादर चोगानमै डेरा दीना । प्रोहित आ[प]णी सहलिया वाडी छोड वाहर डेरा कीना । चाकर घोडा वाववा वास्ते मेपापर मेपचा वजावै छै, अगाडी-पछाडी घोडा अटकावै छै । दोनुही सिरदाराकी वछायेन, जाजिम चादण्या छटक रही छै । रसोईदार रसोईकी सजत कीनी छै । नैम स्यामके वपत रजपूताको मुजरो मोहलै लीनो छै । त्यूक आयौ । हीरा लपियो–राणा भीमकै, आपकै नोप-चोप हुई छै । राज्ये । हू तो अवै हुकमकी चाकरै छू । आन मोनै काई फूरमावो छौ ? हीरा कागदमै समाचार माथै चालवा का लपिया, प्रोहित परपिया ।

दोहा– हूतो चाकर हूकमकी, दुषी घणी छू दीन ।
लारै मोनै लेवज्यो, श्राप तणी श्राधीन ।। २५१
धन जोबनका थे धणी, तन मन श्ररपू तोय ।।
साथि लीज्यौ बालिमा, मति बीसरज्यो मोय ।। २५२
श्ररज लिषी छै बालिमा, मानज्यौ मेरी ह ।
साथि चालु साहिबा, चरणाकी चेरी ह ।। २५३
प्रोहित ममत पछाणियो, जोडी हदो जोये ।
मत बीसरज्यौ बालमा, मर जाऊलो मोये ।। २५४

छप्पै– मरत नीर बिन मीन श्राप बिन मो दुष ऐसौ ।
श्रच्छ बना बेलडी कहो श्रवलबन कैसौ ।।
रसिया प्रोहित राण लोयेणा श्रति हित लागै ,
रहस्यु दासी रीत श्रापकी राणी श्रागै ।। `
परगट मोन पकडज्यौ, कर लीज्यौ तन बध कस ,
बामि(लि)म मति बीसरज्यौ, श्राप बना मरस्यू श्रवस । २५५
प्रोहित लषियो प्रगट श्राज तीजा श्राडबर ,
साघ(ध)ण कामण सुषद श्रग श्राभूषण श्रबर ।
तीजा ऊछव ताम गावै त्रिय मगल गासी ,
पहर बषत पाछैलै श्राज पीछौलै श्रासी ।।
उण बषत श्राप सज श्रावैज्यौ, प्यारी वीरू घाट पर,
प्रगट तोनै पकडस्या, ये बाता राषण श्रमर ।। २५६
कर गवण केसरी चलत मन बात हरष चित ,
बणियाणी उर धार ऊमग श्राई सनमुष श्रत ।
हीरा पुछत हरष कैहो कैसी किम कीजै ,
कह्यौ श्रबै केसरी किनक सगार करीजै ।।
बीरू घाट कीनो बचन, मो तो येकण सग मिल ,
प्यारी साथ पधारस्या, श्रबलाषा पूरण श्रसिल ।। २५७
हीरा मनमै श्रति हरष बिवध पोसाष बनाई ,
तीज पहर तीसरै ऊमग पीछौलै श्राई ।
बीरू घाट बसेष केसरी सघ(ध) कहावत ,
प्यारी चाहत पीव षूटकन है जेज षटावत ।।
श्रछै उडीकत श्रातुरी, श्रतचचल जोवत गढी ,
प्रोहित श्राजि न पेषियो, तन तालाबेली चढी ।। २५८

तन भीड कडी र बगत्तर यू, करबार वाहादर राव किधू ।।
कर जोप जग्यौ सिवनेत्र किधू, भिड भीड भुवा रन ऊभ रयू ।
गण देपत चडै(ड) गत (तै,त) थन यू, मा(म) नु कोप तै भुड मयदन यू ।।
अति क्रोध बी (वि) रोध म अगम यू, जबरायल जग्यौ क भुजगम यूं ।
वण धु (धू) धल जोग विकट (ट्ट)ण यू,
पर कोप उलट (ट्ट)ण पट (ट्ट)ण यू ।।
यम राव बाहादर कोपित तै, मिल सु(सू)र समागम युध(द्ध) मतै ।
तब ऊपडै(ड) बाग तुरगनकी, धर हेमल योर ध्रमकत यू ।।
मिल पापर होट ठमकत यू, रण रोप चढे मुष सूरन के ।
नर भीत दिनकर नूरन के, चप जोल सुरग चमकत यू ।।
दरसत क आग द्रमकत यू .. . . ।
मिल राव बाहादर जोध मिल(ले), भिड भारथमे तरवारि भले ।। २६६

३० बात– ईण तरै महाभारथको झगडो जुड्यौ झगडाको भार सारो राव ऊपर पड्यौ । अठ्याव को परधान ममदयारषा षेत पड्यौ ।

अथ महमदय्यारषाको गीत

बागी धमचाल कटक दोहू ऐ वैल कढि किरमाल कराली ,
प्रलैकाल भिली उण पुलमै किलम तुरगत काली ।
वाज अट झुझ वलोबल वीजल पाग विलगे ,
राव तणो प्रधान प्रघल रण भेडता पल दल भगे ।।
जुड घमसाण ग्रीधणी जोवण वीर वपाण वजाडी ,
रग पठाण मेवाड पर रूठौ बिढ(ठ)के वाण विभाडी ।
पिसणा घणा तणा मद पाडे पतद लोहा पूरा ,
पूगो मैहमदपा ऊचै पद वरेगो हूरा ।। २६७

अथ प्रोहित जुध वरणन

छद जाते पधरी– कोप्यो क अवै प्रोहित कराल, जग्यौ क सोर ढिग अगन ज्वाल ।
छूट्यौ क वान असमान छोहै, टूट्यौ क घोप पण वीज तो है ।।
जग्यौ क मानु योगेंद्र जोत, दग्यौ क तोप गौला उदोत ।
रूठ्यौ क भीम चढे जंग रीस, फूट्यौ क सिध जल धार कीस ।।
जौप्यौ क जग सुग्रीव जोव, कौप्यौ क अगहन हनुवत क्रोव ।
फूकार सेस पुछट्यौ फूणद्र, विछुट्यौ क सिव जटा वीर भद्र ।।
यण भाति प्रोहित कोप अग, जवरायल सुभट मिल सग जग ।

छप्पै– भीम राण साभले कहर प्रजले कोप कर ,
मूछ भ्रकुटत मिले धूत चष चोल रग धर ।
कहत वचन कोपियो पिरोहत जाण व यावै ,
मान मार मेवाड जीत आपणी जणावै ॥
ऊमरावा ऊपर हूकम, अतराई कालि फेरिया ,
मेवाड धण थट मिले, स घाट ईण बिधी रोकिया ॥ २६१
ऊट चढै आकलो यम राईको आयो ,
चढ्यौ चढ्यौ मुष चवै बिबध निज भेद बतागौ ।
बीर धीर बे(पै)दल चढै चहूँवाण च कारण ,
चढै नगारै चोट डेल वाडै झाला डारण ।
प्रोहित अबै पधारसी, अठै बणौली आवैता ,
चीरवो घाट अचाणचक रोक्यौ इण बिध रावता ॥ २६२
बा बात करता यतै पणि प्रोहित आयौ ,
चढै घाट चीरबै दूठ जबर दरसायौ ।
चढे नगारै चोट दोहू चढे कटक है ,
सबल चढे सूरमा चढे कायेर भये चक है ॥
चहूबाण इतै झाला अचल, ऊत राव प्रोहित ऊरडै ,
वीर हाक-धमच विषम, झुके बदूका सो कड(डै) ॥ २६३
हणण माच हैमराण गणण घोषा रवै डूगर ,
षणण बाजया ज पाषरा धुज षूरताल धरणधर ।
ठणण बदुका ठोर गोलिया गिणण गिण गनगत ,
टणण धनस टकार भणण पर तीर भणकत ॥
सिंधवा राग समागमण गणण भेर त्रमक बज्ये ,
चीरबै घाट परचा पडै, विषम थाट भारथ बजे ॥ २६४
धरण फोड धडै घडे गहिर गडे त्रमा गल ,
चोल रग लड चढे बीरबर रडे दोहू ह[य ?]बल ।
पवन मदगत पडी भाण रथ षडे णभुयण ,
जब ऊरड जोगणी जुडे नारद रण जोयण ॥
गरडी बदुक धाया, गिगन तीर सो क जडतडे ,
चीरबै घाट परचा पडै, जग थाट प्रोहित जुडे ॥ २६५

अथ रावै बाहादर युधवरणन

छद जाते त्रोटक– अब राव बहादर कोप कियू, लनकारत सेल त्रभाग लियू ।

तन भीड कडी र वगत्तर यू, करवार वाहादर राव किधू ।।
कर जोप जग्यौ सिवनेत्र किवू, भिड भीड भुवा रन ऊभ रयू ।
गण देपत चडै(ड) गत (तै,त) थन यू, मा(म) नु कोप तै भुड मयदन यू ।।
अति क्रोध वी (वि) रोध म अगम यू, जवरायल जग्यौ क भुजगम यूं ।
वण घु (घू) धल जोग विकट (ट्ट)ण यू,
पर कोप उलट (ट्ट)ण पट (ट्ट)ण यूं ।।
यम राव वाहादर कोपित तै, मिल मु(सू)र समागम युध(द्ध) मतै ।
तव ऊपडै(ड) वाग तुरगनकी, धर हेमल योर ध्रमकत यू ।।
मिल पापर होट ठमकत यू, रण रोप चढे मुप सूरन के ।
नर भीत दिनकर नूरंन के, चप जोल सुरग चमकत यू ।।
दरसत क आग द्रमकत यू .. . . ।
मिल राव वाहादर जोध मिल(ले), भिड भारथमे तरवारि भले ।। २६६

३०. वात– ईण तरै महाभारथको झगडो जुड्यौ झगडाको भार सारो राव ऊपर पड्यौ । अठ्याव को परधान ममदयारपा पेत पड्यौ ।

अथ महमदय्यारपाको गीत

वागी धमचाल कटक दोहू ऐ वैल कढि किरमाल कराली ,
प्रलैकाल भिली उण पुलमै किलम तुरगत काली ।
वाज अट झुझ वलोवल वीजल पाग विलगे ,
राव तणौ प्रधान प्रघल रण भेडता पल दल भगे ।।
जुड घमसाण ग्रीधणी जोवण वीर वपाण वजाडी ,
रग पठाण मेवाड पर रूठौ विढ(ठ)के वाण विभाडी ।
पिसणा घणा तणा मद पाडे पतद लोहा पूरा ,
पूगो मैहमदपा ऊचै पद वरेगो हूरा ।। २६७

अथ प्रोहित जुध वरणन

छद जाते पधरी– कोप्यो क अवै प्रोहित कराल, जग्यौ क सोर ढिग अगन ज्वाल ।
छुट्यौ क वान असमान छोहै, टूट्यौ क घोप पण वीज तो है ।।
जग्यौ क मानु योगेंद्र जोत, दग्यौ क तोप गोला उदोत ।
रूठ्यौ क भीम चढे जंग रीस, फूट्यौ क सिव जल धार कीस ।।
जोप्यो क जग सुग्रीव जोव, कौप्यौ क अगहन हनुवत क्रोव ।
फूकार सेस पुछट्यौ फूणद्र, विछट्यौ क सिव जटा वीर भद्र ।।
यण भाति प्रोहित कोप अग, जवरायल सुभट मिल सग जग ।

ऊपडत बाग हैमर अपार, धजकत कढी त[र]वार धार ।।
बीजलियो षाडो इम बहुत बार, कर बीज मनु घण चमटकार ।
मुष मार ललकार मड, प्रकार भले प्रोहित प्रचड ।।
ईत रमै ससिरबाहू अमाम, राजत प्रोहित फरसराम ।
चहूवाण देव झाला सुचित, ईत राव बाहादर यद्रजीत ।।
मिल राव प्रोहित जुग समेर, घण थाट सुरगम सुभट घेर ।
चालत षागा दहू गा प्रचड, रण धार बीर कटै रुड मड ।।
बिछुडत सीस घावन बिघाटै, फरसी क अग्र तरबूज फाटै ।
ऊछलत भेजी मगज येम, तरलत दहुडी फाटैत एम ।।
कुटत सीस तरवार तग, साहमी क रग छूटचौ प्रसग ।
घरा तुट भूजा तरवार घावै, वण राये साप पड बोज भावै ।।
छाती पर बरछी बहैत छेक, किचकार धार छबि रत्र पेष ।
दोहू तरफ बगतर फोड दीन, मानु तुछ कढचौ जलधार मीन ।।
तन फोड कारीय यार तस, बय फोडि सिला ऊकसत बस ।
किरमाल धार हेमर कटत, मनु आन हौय मिल धर बटत ।।
थण षाग जोध पछडत धावै, भभकत रैत्र परनाल भावै ।
जोगणी पत्र भरत्र जेम, अथाण दुहारी दूध एम ।।
मिल स्यभु झेलत रुडमाल, बगु षेलत लेवत बाल ।
जोगणी वीर नाचत जेम, अदभूत कान गोपग येम ।।
मिल बीर कहैत मुष मार मार, नाचत हरष नारद निहार ।
झूझार मरत किरमाल जग, अपछरा माल पहरत अग ।।
मानत विवाण चढ प्राण पेष, लेषत गवण कर यदु लोक ।
झडपडत गिगन मग ग्रीध झुड, मुष लेवत गुद पल रुड मुड ।।
झडपडत घाव रत कीच भीन, मनु त(तु)छ नीर तडफडत मीन ।
यक पोहर बजी केवाण भारा, भारथ देष थभ्यो क भान ।।
अदभुत जग मडचौ ऊषेल, बड पडे षेत चहूवाण भेल ।
झाला पडिया घण षेत जघ, अब जीत्यौ प्रोहित बल अभघ ।। २६८
ईण राव बाहादर बडी रीत, जोधार षडचौ यण रग जीत ।

छप्पै– रगा केते नर रहे जिते भड सनमुष जुटे ,
चढ झाला चहू वाण फूलधारा तन फूटे ।
चमु घाट चीरवै विषम षग झाट बजाडे ,
कायरा भागे केते अवर घायल ऊबारे ।।

मेवाड़ देस प्रोहित मंडे वर गला अभग यू ,
विजैत्र मागल वाजिया जीत्यौ यण विध जग यू ।। २६९

३१ बात– अठी प्रोहित राव बाहादर, उठी चहूवाण, झाला, येक पहर तरवारि वही। हीरा अर केसरी वडारणे परवतकी किनरीमें रही। राव बाहादरका सिपाही भला लड़िया, अर तीन बीसी असवार षेत पड़िया। प्रोहितका भी रज-पूत भला घमचाल वागा, पचास तो काम आया, पचीसकै लोह लागा। घोड़ो नीलविडग काम आयौ, प्रोहितजी गरड़ादे घोडी असवार हूवा रणषेत सुझायौ। अब चादस्यघ वालै पोतो रसालदार काम आयौ। चैन वुझाकड़कै लोह लागा, चहूवाण झाला भागा।

अथ गीत चाद स्यघ वालै पोताका

वु(वु)रेत्र माला मचायी जग मेवाड़ चीरखो वाट वुयो जिण ,
वेला कल्ला नाग मौदे वीया गडा वार तीजो नयण ।
ज्वाला सो जगायो जेम ससवू करालो, रूप आयो चाद स्यघ ।। २७०
वगी हाक दवा मुगो गोलिया,
ऊजाले म छुटै जगै कोधवान मह वोला वीर जग।
सुकान दव वुलासै नगी पाग पला माथै तोप,
दगी गोला जिम भेलियो तुरग ।। २७१
चंद्रहामा पागाके प्रचडा झुड वीर चालै,
पुलै रुडमुडाके प्रजालै लोही पाल ।
पोतरै विहारी वालरि माथड़ाके पिछाडे,
करे सुर वीरा वा(वा)वा विहडा कराल ।। २७२
परे गोपालानु मार मडे फूल धारां पैत वरैगो,
विजैत नाम झूझार मधीर ।
करेगो प्रनिरा पुर लोही वार छके काली वरैगी,
अपछरा वाल पोता माहावीर ।। २७३

३२. बात– सातसै असवार झालाका भी काम आया, अर पांचसै असवार चहू-वाणा भी मरवाया। यण प्रकार प्रोहित झगडां जीत लीनो। उदैपुरको राणै भीम माहा सोच कीनो।

गीत प्रोयतजीको

घरे यण कटक चोग्वै वोटे चढि झाला चहूवाण ,
चटे प्रोहित राण वका रण चापडै वर वीजै ।
पग भाट वीट्टे वेह तरफा वाज वंदूका गुणियण स्यंवु गाडै,

अरदलकै उपर रतनावत बिहद षागा बजाई ।।
ताम करे केता षल तडल मिल जोगण रत माची ,
गैला पूर पलचर मिल ग्रधण रुड मिल सिव राची ।
ऊदैयापुरमै कीध अनोषी दारण हाथ दिषायौ ,
औ जोय बगसीराम निवाई यम हीरा लै आयौ ।। २७४

दोहा– बध पकड ल्याय बिहद, कियो अनोषो काम ।
यम निवाई आवियो, रसियो बगसीराम ।। २७५

प्रोहित बचन

दोहा– आप बिना होये न असी, जीतायो मम जग ।
कर जोड्या प्रोहित कैहै, राव बाहादर रग ।। २७६
बिहद लोह बजाययो, समर रह्यौ मम सग ।
कैरे षता त रुलकिता, राव बाहादर रग ।। २७७
मै तो कागद मेलयौ, आयौ चाल अभग ।
मेवाडा तो हथ मुवा, राव बाहादर रग ।। २७८
मो पणबृत राषो मुदे, आयौ बीर अभग ।
आप जस्यौ कुण छै अवर, राव बाहादर रग ।। २७९
राव कहै जीती किधू, तै मेवाड तमाम ।
किरमाला धोकल कियौ, रग बगसीराम ।। २८०
चहू वाण चढै चापडै, ईत झाला थट थाम ।
भेडा षला दल भाजिया, रग बगसीराम ।। २८१
चालो घाट चीरवै, झुक षाग यक जाम ।
बिजैत्र-मागल बाजिया, रग बगसीराम ।। २८२
अबै निवाई वुपरै, करो पुरण काम ।।

राव गोड(ठ) बरणन

रची बाहादर रावनै, प्रोयत गोठ प्रवीण ।
मिल सुभटा फुल मद, अत बटे अफीण ।। २८३
रची गोठ यम राव नु, मन तन करै ईत मान ।
बिध बिध भुजाई बिमल, जीमै षलक जिहान ।। २८४

३३. **वार्ता**– प्रोहित रावनै कहै छै– हू तो आपका हूकमैको आधीन छू । आपमैं काम पड्या याद करस्यौ । काम पड्या माथौ हाजरि छै । देही फूल-धारा परसी । रावनै वलदेव बगस घोडो येक गावै बीजलियो षाडो दे सिवाणी बिदा कीनौ ।

छप्पै– अव निवाई ऊपरै हीरा दिल प्रोहित ,
महल रग माणत सुपद समारस मोहित ।
कोक भेद वहू करत चिरत आसण चवरासी ,
रत विलास अनुराग वदन पर मदन विकासी ।।
कर हावैं भावैं मन वस करत, वचन विलासत वामकैं ,
माहा मनोरथ सिध मिल, रसिया वगसीरामकैं ।। २८५
प्यारी महल प्रजक पर सपुप सेज फूल पर,
मिल सुगध सुकमार काम लीला प्रकास कर ।
नव जोवन नत्यान दरस प्रतविव दषावत ,
रसकत वगसीराम भाम मनमैं अति भावत ।।
यण प्रकार भुगावत अतुल, धार अधिक सुप धामना ,
हीरा प्रोहित हितसु, करी सपुरण कामना ।। २८६

वरषा रति वरणन

अव वरपा रत घुमत घुमड घनहर घूमत ,
धर वरपत जलधार ललत वादल गिर लूवत ।
झमक वीज झमलत झपट पर पाय झोलत ,
सागर पादर भरै विमल दादर तट वोलत ।।
वनराय फूल दल विकस, सूर मयोर सुप सहलमैं ,
चत्र मास प्रोहित चतुर, माणत हीरा महलमैं ।। २८७
गिगन मलत घन घोर चपला चमकारुत ,
सागर नदी समाज मिल्लत सीतल मारुत ।
विस कमान वेलडी मजरा फुल सुगध मिल ,
गिरवर तरवर गहर डहक डवर ता फल ।।
दल साधक मनो सयोगता, चत्र मास अधिकौ चहैत ,
मिल हीरा प्रोहित महलमैं, रत विलास निस दिन रहैत ।। २८८
दोहा– चत्र मास नीला चिरत, वीत्यौ पेलत वाम ।
सीतल काल आयौ सरस, सजोगण मिल स्याम ।। २८६

सीत रति वरणन

छप्पै– सीतल्ल जल थल सरस पवन सीतल ऊतर पर ,
सजोगण सुप स्याम होत वृहणी-जन थरहर ।
नाग पा(पा)न तवोल गरम ऊपदी मदन गुन ,
तपत अगन 'नापणी तेल' मरदन चपक तन ।।

सुभ सीतकाल सकल, गरम ऊरज वामागना ,
प्यारी प्रोहित ऊर लय करी सिध मन कामना ।। २९०

अथ वसत रति बरणन

उसन धरण आकास उसन चल पवन असभवै ;
जल थल व्याकुल जीव पुन मग देत निरपिवै ।
प्यारी प्रीतम परस चदन चरचितै केसर मलत ,
कपुर अवर किसतुरी अरचित ।।
छुटत फवारा कुसमाद छबि, अति सुगध छिडकत अवर।
सुष समाज प्रोहित सरस, प्यारी हीरा महल पर ।। २९१

दोहा– यण प्रकार प्रोहित अठ, तन काल सुष ताम ।
नीत नबीन प्यारी नरष, हरषित पूरण हाम ।। २९२
रसक बृतीकी सीत रुत, हीरा परम सुहाग ।
अब बसत आई ऊमग, फबते होरी फाग ।। २९३
तरवर पत चदण त, वा सरवर मानसोरोर ।
छव रुत पतकि यधक छैवि, यू बसत रुत और ।। २९४
अपछरमैं और न यसी, रभा छबि सारीष ।
षटरुतमैं नही पेषजे, रति बसत सारीष ।। २९५
राजत ईधक वसत रुत, तरवर मजरि ताब ।
बहै रत पवन सुगधवर, गहै रत फूल गुलाब ।। २९६
बन उपबन फूलत बिषम, कवल फूल जल कीन ।
मन मोहत फुलवाद मिल, निरमल फूल नवीन ।। २९७
कज प्रफुलत सोभ कर, निरमल पुजत नीर ।
रजत मधुर सुगध कच, गुजत भवर गहीर ।। २९८
आबा पोहो रत छबि अधिक, निरषत सोभ नवीन ।
लालत मोनत स्वर लता, कोयल षग धुन कीन ।। २९९
मानत फूल सुगध मिल, सीतल मधुर समीर ।
वन ऊपवन पछी बिमल, कलरव कोकल कीर ।। ३००

होली का ष्याल वरनन

हीरा मनमैं अति हरष, सोहे प्रोहित सग ।
अभैराम देवर अवर, रमत फाग रस रग ।। ३०१
अवर त्रिया मिल येकठी, गावत होली गान ।
ऊडत गुलाल अवीर अत, अरण भयो असमान ।। ३०२

केसर होद भराय कर, आगण फाग असेप ।
नीर पतग गुलाव नवै, विध विध रग वसेप ।। ३०३
प्रोहित प्यारी पेल पर, अति भारी छवि येम ।
कर धारी सोभा किनक, पिचकारी रग पेम ।। ३०४
कर हीरा डोली करग, भरत रग भरपूर ।
रसिया वगसीरामकै, नापत सनमुप नूर ३०५
रग भरत प्रोहित रसक, अदभुत हास ऊदोत ।
पिचकारी लागे प्रगट, हीरा थरहर होत ।। ३०६
प्यारी फाग वसत पर, रसक तपी वर साल ।
लसत गुलाल सूरगमै, लसत अग छवि लाल ३०७ ।।
वकि चितवन तन वदन? मोहत छवि सुकमार ।
भामण डारत रग भर, प्रीतम पर पिचकार ।। ३०८
चदमुपी अगलोचनी, सक्रम चपल सभाव ।
झेली पिचकारी झुलत, डोली वाहू म डाव ।। ३०९
केसर अग्र कपूरको, मोहत कीच म काय ।
रग पतग गुलाव रुच, राती अगण राय ।। ३१०
अभैराम हीरा अवर, लेवत झयर गुलाल ।
देवर भोजाई दोऊ, पेलन फाग खुस्याल ।। ३११
धमकत पग घुवरा तडत दमकत ।
सोभा तन कड ककण झमकत ।।
रसक हस चमकरत दन वदन चद्र दिक(विक)सत ।
घरण रमझम छवि ध्यावत ,
कुमकुम जल भर कर गद्गुगत डोली फटकावत ।
पिचकारी यथा र पतग, जल विर फिर भर भर चपलगत ,
भाभी देवर ईधक चित, रग भा(फा)ग होली रमत ।। ३१२ *

दोहा– भाभी डोलत वहत भर, कर देवर पिचकार ।
उठ गुलाव धक बोल इन, वरण गिगन इकवार ।। ३१३

---

* [बम] धमक्त पग घूघरा कर ककण झमकत ,
रसक हास चमकत रदन वदन चन्द्र विकसत ।
तन सोभा दमकत तडत धरण रमझम छवि ध्यावत ,
कुमकुम जल भर गद्गुगत कर डोली झटकावत ।।
पिचकारी यथा र पतग, जलधिर फिर भर भर चपलगत ,
भाभी देवर ईधक चित, रग फाग होली रमत ।। ३०९

सुभ सीतकाल सकल, गरम ऊरज वामागना ,
प्यारी प्रोहित ऊर लय करी सिध मन कामना ।। २९०

अथ वसत रति बरणन

उसन धरण आकास उसन चल पवन असभवै ;,
जल थल व्याकुल जीव पुन मग देत निरपिवै ।
प्यारी प्रीतम परस चदन चरचितै केसर मलत ,
कपुर अवर किसतुरी अरचित ।।
छुटत फवारा कुसमाद छबि, अति सुगध छिडकत अवर ।
सुष समाज प्रोहित सरस, प्यारी हीरा महल पर ।। २९१

दोहा– यण प्रकार प्रोहित अठ, तन काल सुष ताम ।
नीत नबीन प्यारी नरष, हरषित पूरण हाम ।। २९२
रसक बृतीकी सीत रुत, हीरा परम सुहाग ।
अब बसत आई ऊमग, फबते होरी फाग ।। २९३
तरवर पत चदण त, वा सरवर मानसोरोर ।
छव रुत पतकि यधक छैवि, यू बसत रुत और ।। २९४
अपछरमें और न यसी, रभा छबि सारीष ।
पटरुतमें नही पेषजे, रति बसत सारीष ।। २९५
राजत ईधक वसत रुत, तरवर मजरि ताब ।
बहै रत पवन सुगधवर, गहै रत फूल गुलाब ।। २९६
बन उपबन फूलत बिषम, कवल फूल जल कीन ।
मन मोहत फुलवाद मिल, निरमल फूल नवीन ।। २९७
कज प्रफुलत सोभ कर, निरमल पुजत नीर ।
रजत मधुर सुगध कच, गुजत भवर गहीर ।। २९८
आबा पोहो रत छबि अधिक, निरषत सोभ नवीन ।
लालत मोनत स्वर लता, कोयल षग धुन कीन ।। २९९
मानत फूल सुगध मिल, सीतल मधुर समीर ।
वन ऊपवन पछी बिमल, कलरव कोकल कीर ।। ३००

होली का ख्याल वरनन

हीरा मनमें अति हरप, सोहै प्रोहित सग ।
अभैराम देवर अवर, रमत फाग रस रग ।। ३०१
अवर त्रिया मिल येकठी, गावत होली गान ।
ऊडत गुलाल अवीर अत, अरण भयो असमान ।। ३०२

केसर होद भराय कर, आगण फाग असेप ।
नीर पतग गुलाव नवै, विध विध रग वसेप ।। ३०३
प्रोहित प्यारी पेल पर, अति भारी छवि येम ।
कर धारी सोभा किनक, पिचकारी रग पेम ।। ३०४
कर हीरा डोली करग, भरत रग भरपूर ।
रसिया वगसीरामकै, नापत सनमुप नूर ३०५
रग भरत प्रोहित रसक, अदभुत हास ऊदोत ।
पिचकारी लागे प्रगट, हीरा थरहर होत ।। ३०६
प्यारी फाग वसत पर, रसक तपी वर साल ।
लसत गुलाल सूरगमै, लसत अग छवि लाल ३०७ ।।
वकि चितवन तन वदन, मोहत छवि सुकमार ।
भामण डारत रग भर, प्रीतम पर पिचकार ।। ३०८
चदमुपी अगलोचनी, सक्रम चपल सभाव ।
झेली पिचकारी झुलत, डोली वाह म डाव ।। ३०९
केसर अग्र कपूरको, मोहत कीच म काय ।
रग पतग गुलाव रुच, राती अगण राय ।। ३१०
अभैराम हीरा अवर, लेवत झयर गुलाल ।
देवर भोजाई दोऊ, पेलत फाग खुस्याल ।। ३११
धमकत पग घुघरा तडत दमकत ।
सोभा तन कड ककण झमकत ।।
रसक हस चमकरत दन वदन चद्र दिक(विक)सत ।
घरण रमझम छवि ध्यावत ,
कुमकुम जल भर कर गद्गुगत डोली फटकावत ।
पिचकारी यथा र पतग, जल घिर फिर भर भर चपलगत ,
भाभी देवर ईधक चित, रग भा(फा)ग होली रमत ।। ३१२ *

दोहा– भाभी डोलत वहत भर, कर देवर पिचकार ।
ऊठ गुलाव धक वोल इन, धरण गिगन इकधार ।। ३१३

* [वम] धमकत पग घूघरा कर ककण झमकत ,
रमक हास चमकत रदन वदन चन्द्र विकसत ।
तन सोभा दमकत तडत घरण रमझम छवि ध्यावत ,
कुमकुम जल भर गडुगत कर डोली झटकावत ।।
पिचकारी यथा र पतग, जलधिर फिर भर भर चपलगत ,
भाभी देवर ईधक चित, रग फाग होली रमत ।। ३०९

छुटत दडी गुलाब छिब, फुलकत ऊर फुर फाव ।
देवर मुष पर डोलचा, सटकत बहुत सताव ।। ३१४
देपत घु घट ओट दे, बकी द्रगनि बिसाल ।
लीन बसत गुलालमैं, लसत अग छबि लाल ।। ३१५
अभैराम हीरा अवर, हीरा भाभी हेत ।
षेलत फाग बसत गुल, लायक फगवा लेत ।। ३१६
रमत फाग बीत्यौ रिसक, सझ्या समय प्रसग ।
प्यारीनै प्रोहित कहै, रमस्या अब रतरग ।। ३१७
रग ष्याल रा व्यापगत, रात वष्यात ऊमत ।
चद गिगन ऊडन चमक, सजोगण हुलसत ।। ३१८
सुष सज्या सझ्या समय, रगमहल रस रींत ।
परमल फूल प्रजक पर, प्रोहित बैठ पुनीत ।। ३१९

प्रोहित बचन

कए बडारणि केसरी, प्यारी महल प्रजक ।
रग रु(लु)टाला राज्येकौ, आज भरे कर अक ।। ३२०

केसरी वचन

प्यारी राज पधारज्यो, हीरा ईधक हुलास ।
माणीजै रत रग महिल, प्रोहित मदन प्रकास ।। ३२१

हीरां बचन

प्यारी चाहत महल पर, जिण रो ईतनो जीव ।
कहै तोनु किण बिधि कह्यौ, प्रगट अमीणै षीव ।। ३२२

केसरी बचन

चाहत बेगी इधक चित, जादा कवण जबाब ।
प्यारी बेगी महल य(म), स्यामा लाव सताब ।। ३२३
विध विध कर कहियौ बयण, प्रोहित हेत प्रकार ।
प्यारी आव महल पर, अव बेगी ईण बार ।। ३२४
वले येम कहियौ वचन, भेटाला कर भावै ।
महला पदमण माणस्या, ललिता वेगी लावै ।। ३२५
आप पधारीजै अवै, जेजै न कीज्ये जोये ।
वाटा जोवै वालमा, महिला हेत समोय ।। ३२६

हीरां वचन

पिचकारी मो ऊपरै, नाष्यौ भर कर नीर ।
पेलत डारचौ ष्यात कर, आष्या वीच [अ]वीर ।। ३२७
पिचकारी झटकत प्रगट, रटकत प्रोहित राये ।
अटकी नहै पट ऊतटै, सटकत आप दुपाये ।। ३२८
पिचकारी धारा प्रगट, पटकत आप दुषेम ।
लापा वाता महलमै, आज न आस्या ऐम ।। ३२९
पिचकारी कत जोर पर, अत डारी भर अग ।
आज[न] महिला आवस्या, प्रोहित सेज प्रमग ।। ३३०
गड गड दडी गुलाबकी, प्रीतम जोर प्रकास ।
आज नही म्हे आवस्या, तन दूपत तन त्रास ।। ३३१
गोटत गेंद गुलावकी, चाली फर हर चोट ।
पटकी लगी कपोल पर, अटकन घुघट ओट ।। ३३२
डोली झपटी डाव कर, रपटी पाप(य) गिरीन ।
जोये वाता अटपटी, कपटी प्रीतम कीन ।। ३३३
कहै दीज्ये तु केसरी, निरमल वात निसा[ये]पे ।
लोभी मैं ओलष लीया, अत कपटी छौ आप ।। ३३४
कर गमण तव केसरी, आई महल ऊदार ।
मन मगेज मुलकत मली, प्रोहित हेत प्रकार ।। ३३५

प्रोहित वचन

कहै वडारण केसरी, प्यारी कठै प्रबीण ।
गुणसागर गजगरत, ललत काम लव लीण ।। ३३६

केसरी वचन

राजतणी वा रायधण, मन कर बैठी माण ।
आज न महला आवसी, रसिया प्रोहित राण ।। ३३७
पिचकारी लग[गि] पीवकै, सीतल भयौ सरीर ।
षटकत लोही षेलकौ, आष्या बीच अवीर ।। ३३८
कहियो हीरा इम कथन, मद मद मुसकात ।
आज न महला आवस्या, रग न रमस्या रात ।। ३३९
कह्यौ वडारण केसरी, हीरा माण अथाह ।
आप विना नहै आवसी, नाजक घणरा नाह ।। ३४०
ऊतर आयौ आगणै, ऊभो सनमुप आय ।

छुटत दडी गुलाब छिब, फुलकत ऊर फुर फाव ।
देवर मुष पर डोलचा, सटकत बहुत सताव ।। ३१४
देषत घु घट ग्रोट दे, बकी द्रगनि बिसाल ।
लीन बसत गुलालमैं, लसत ग्रग छबि लाल ।। ३१५
ग्रभैराम हीरा ग्रवर, हीरा भाभी हेत ।
षेलत फाग बसत गुल, लायक फगवा लेत ।। ३१६
रमत फाग बीत्यौ रिसक, सझ्या समय प्रसग ।
प्यारीनै प्रोहित कहै, रमस्या ग्रब रतरग ।। ३१७
रग ष्याल रा व्यापगत, रात वष्यात ऊमत ।
चद गिगन ऊडन चमक, सजोगण हुलसत ।। ३१८
सुष सज्या सझ्या समय, रगमहल रस रींत ।
परमल फूल प्रजक पर, प्रोहित बैठ पुनीत ।। ३१९

प्रोहित बचन

कए बडारणि केसरी, प्यारी महल प्रजक ।
रग रु(लु)टाला राज्येकौ, ग्राज भरे कर ग्रक ।। ३२०

केसरी वचन

प्यारी राज पधारज्यो, हीरा ईधक हुलास ।
माणीजै रत रग महिल, प्रोहित मदन प्रकास ।। ३२१

हीरा बचन

प्यारी चाहत महल पर, जिण रो ईतनो जीव ।
कहै तोनु किण बिधि कह्यौ, प्रगट ग्रमीणै षीव ।। ३२२

केसरी बचन

चाहत वेगी इधक चित, जादा कवण जबाब ।
प्यारी बेगी महल य(म), स्यामा लाब सताब ।। ३२३
विध विध कर कहियौ बयण, प्रोहित हेत प्रकार ।
प्यारी ग्राव महल पर, ग्रब बेगी ईण वार ।। ३२४
वले येम कहियौ बचन, भेटाला कर भावै ।
महला पदमण माणस्या, ललिता वेगी लावै ।। ३२५
ग्राप पधारीजै ग्रवै, जेजै न कीज्ये जोये ।
वाटा जोवै वालमा, महिला हेत समोय ।। ३२६

हीरां बचन

पिचकारी मो ऊपरै, नाख्यौ भर कर नीर ।
पेलत डारयौ ब्यात कर, श्राप्या वीच [अ]वीर ।। ३२७
पिचकारी झटकत प्रगट, रटकत प्रोहित राये ।
अटकी नहै पट ऊतटै, सटकत श्राप दुपाये ।। ३२८
पिचकारी धारा प्रगट, पटकत श्राप दुपेम ।
लापा वाता महलमै, श्राज न श्रास्या ऐम ।। ३२९
पिचकारी कत जोर पर, श्रत डारी भर श्रग ।
श्राज[न] महिला श्रावस्या, प्रोहित सेज प्रमग ।। ३३०
गड गड दडी गुलावकी, प्रीतम जोर प्रकास ।
श्राज नही म्हे श्रावस्या, तन दूपत तन त्रास ।। ३३१
गोटत गेंद गुलावकी, चाली फर हर चोट ।
पटकी लगी कपोल पर, श्रटकन घुवट श्रोट ।। ३३२
डोली झपटी डाव कर, रपटी पाप(य) गिरीन ।
जोये वाता श्रटपटी, कपटी प्रीतम कीन ।। ३३३
कहै दीज्ये तु केसरी, निरमल वात निसा[यि]पे ।
लोभी मे श्रोलप लीया, श्रत कपटी छौ श्राप ।। ३३४
कर गमण तव केमरी, श्राई महल ऊदार ।
मन मगेज मुलकत मली, प्रोहित हेत प्रकार ।। ३३५

प्रोहित वचन

कहै वडारण केसरी, प्यारी कठै प्रवीण ।
गुणसागर गजगरत, ललत काम लव लीण ।। ३३६

केसरी बचन

राजतणी वा रायधण, मन कर वैठी माण ।
श्राज न महला श्रावसी, रसिया प्रोहित गण ।। ३३[illegible]
पिचकारी लग[गि] पीवकै, सीतल भयौ [illegible]
पटकत लोही पेलकौ, श्राप्या वीच [illegible] ३३[illegible]
कहियो हीरा इम कथन, मद मद [illegible]
श्राज न महला श्रावस्या, रग न [illegible]
कह्यौ वडारण केसरी, हीग मा[illegible] ।
श्राप विना नहै श्रावसी, नाजक [illegible] ।
ऊतर श्रायी श्रागणै, ऊभो सनमुख [illegible] ।

हाथ पकड हीरा तणो, रसियो प्रोहित राय ।। ३४१
कर पकडी इम कहत है, चद बदनी मुष चोज ।
प्यारी हठनै परहरो, महला कीज्ये मोज ।। ३४२
नरषो मो पर शुभ नजरि, कर मत हठ बे काम ।
प्यारी चालो महल पर, तन मन अरपू ताम ।। ३४३
अरज करू छू आपसु, निपट पियारी नारि ।
महिला चालो पदमणी, बाद न कीजै वार ।। ३४४
प्यारी सागर प्रेमका, मती करो हठ भा[मा]ण ।
रगमहला चालौ रमा, सुन्दर चत्र सुजाण ।। ३४५

हीरा बचन

बक भुकट बोली बयण, ऊभी हाथ ऊभाड ।
आज न महला आवस्या, राज्ये करू ली राड ।। ३४६

प्रोहित बचन

हीरा सुणज्यौ हेतकी, निरषत सनमुष नूर ।
प्यारी ऊभो हुकम पर, कर मत नैण करूर ।। ३४७

हीरा बचन

दिल कपटी मैं देषिया, अत बल ले ऊपावै ।
पिचकारो मो ऊपरै, डारी भर भर डावै ।। ३४८
कोमल तन पर जोर कर, मो पिचकारी मार ।
पैला कीऐ पीडनै, लावै नही लगार ।। ३४९
दाब कर बाही दडी, ताकत चोट सताब ।
अत कोमल मो अग पर, गड गड पप गुलाब ।। ३५०
गैदा छटक गुलाबका, नटता बायौ नीर ।
अग चटक थरहरत अत, आष्या षटक अबीर ।। ३५१

केसरी वचन

कहे वडारण केसरी, हीरा देषो हेत ।
पीतम वडो अधीन पर, माना बचन समेत ।। ३५२

हीरा वचन

लाप वात चालू नही, टालु नहे मन टेक ।
तपसी वालक और नृप, त्रिया हठ छै येक ।। ३५३

वचन अफटा वहै गया, अब भुठो अवसाण ।
ऊठचा कर मन क्रोध अत, रूठचौ प्रोहित राण ।। ३५४

प्रोहित वचन

रुप गरवकी राजवणि, मत मेलज्यौ माण ।
ज्येज नही अब जावस्या, पर घर करे पयाण ।। ३५५
सामा भेटण सासरै, हरपत मन हुलसात ।
गढ वूदी करस्या गमण, रहा नही इक रात ।। ३५६
रहस्या वूदी सासरै, अब चालाला आज ।
मुझ विणा यण महलमैं, रहज्यौ नीका राज ।। ३५७
उठ चात्यौ घर आगणै, रूठचौ प्रोहित राण ।
नहै वोला इण नारिसु, अब ठाकूरकी आण ।। ३५८
पीतम कारण पदमणी, ऊठ गमणी आधीन ।
कर गहै फैंटो कमरको, लोयण जल भर लीन ।। ३५९

हीरा वचन

मैं नु घणी विमुढ मन, आप गरीवनिवाज ।
त्यागीजै तकसीरनु, रसिया वालिम राज ।। ३६०
वाटौ तोनै जीभडी, कुटल वचन कहाय ।
रीस निवारो राजवी, मो पर कर मयाह ।। ३६१
मानै तागो वालिमा, प्राण तणै प्याराह ।
कथ निवारो कोधनै, नहै करस्या वाराह ।। ३६२
मानोजी रसिया भमर, जपु तिहारा जाप ।
प्रीतम मन हठ परहरो, अरज सुणीजो आप ।। ३६३
लोभी देपौ लोयेणा, एमी नजरि भर ऐम ।
मुप वाणी बोलै मधुर, प्रीतम करि हित प्रेम ।। ३६४
लापा वाता लाडला, माणो महिल मनाय ।
हिवडै नवसर हार ज्यू, लेस्या कठ लगाय ।। ३६५

प्रोहित बचन

कर फैंटो तजि कमरको, लपट मती हट लोय ।
रीस चढी छै राजवणि, मत वतलावे मोय ।। ३६६

हीरा वचन

वतलास्या म्हे बालमा, आप विना कुण वोर ।
प्राण अवारू पीव पर, जिदा कसन जोर ।। ३६७

राज कीयो छै रुसणो, ऊर मो दहत कदोत ।
आप न मानो मो अरज, मरू कटारी मोत ॥ ३६८

केसर बचन

आप तणी आधीनता, हीरा हाजर होय ।
जोवो इण पर शुभ नजरि, करो मती हठ कोय ॥ ३६९
राषीजै षावद सरस, नाजक घणरा नेम ।
प्राण दुषी प्यारी तणौ, कीजै अति हठ केम ॥ ३७०
चाल विलूबो इधक चित, वेलत रोवत चाण ।
लपटावो गल लाडली, रसिया प्रोहित राण ॥ ३७१
मीठा बोलो बचन मुष, हीरा पर कर हेत ।
महला जोयण माणज्यौ, सेझा पेम समेत ॥ ३७२

प्रोहित बचन

सुण वडारण केसरी, कथन पुराण कहत ।
लछण बाद लुगाईया, अकलि य[प]छै ऊपजत ॥ ३७३

हीरां बचन

करो पमो हीरा कहै, पीतम करजै प्यार ।
पगा बिलूमी पदमणी, आष्या नीर अपार ॥ ३७४
प्रोहित हीरा कर पकड, लीनी ऊर लपटाय ।
अत देषत आधीनता, मनकी रीस मिटाय ॥ ३७५

प्रोहित बचन

प्रोहित कहियो पदमणी, सुण लीज्यौ शुकमार ।
प्यारी थाका बचन पर, ऊपजी रीस अपार ॥ ३७६

हीरा बचन

दोहा– आप वडा छो ईसवर, मैं छु बुधि गवार ।
ऐधुला माणो अवै, पीतम सेजा प्यार ॥ ३७७

केसरी वचन

दपति विलसो सुप मदन, तन की मेटो ताप ।
रगमहिलमें राजवी, अवै पधारो आप ॥ ३७८
प्यारी पीतम हेत पर, चालो महिल सुचग ।
रति मिंदर सुदर सकै, ओपत मनो अभग ॥ ३७९

फुल अपार प्रजक फब, कत परमल इहीकाय ।
रगमहिल विलि सरसकै, ऊमत वैठो आय ।। ३८०

हसत लसत निरषत हरष, सर दो करत सुभाय ।
हीरा सोभत मन हरत, ऊभी सनमुष आय ।। ३८१
कला प्रकासत दीपकी, दूणा भासत दीप ।
रभा दिपा छबि रूपकी, स्यामा पडी समीप ।। ३८२
कहु ता दीनो कुरब, प्रीतम हेत ऊपाय ।
गादी ढली गलीमकी, ऊपर वैठी आय ।। ३८३
मिले कसु वा माजमा, कैफ अपारी कीन ।
तन मन मिल दोहु तरफ, ऊमगत पेम अधीन ।। ३८४

पीतम प्यारी सेझ पर, अति छिब प्रेम ऊदार ।
करत हरष अत केसरी, वारत लूण अपार ।। ३८५
भामण प्यारी अक भर, पीतम परम प्रजक ।
वक सरीर विलासमैं, लसत कवुतर लक ।। ३८६
पीतमकै उर सेझ पर, चदमुपी चिपटत ।
मानु भादवै मासकी, लता व्रछ लपटत ।। ३८७

अर्द्धाली–प्रीतम प्यारी पेम पर, सरस थाहत पेम अथाग ।
सर[रस] लुटत रत रगको, प्यारी पीतम सेज ।।
चदना नागनसी चपर, ऊलही दुलही रेम(ज) ।। ३८८

प्यारी छै अत प्राणकी, राप प्रीतम रीत ।
रगमहिल विलसण रमण, प्रतदन इधकी प्रीत ।। ३८९

छप्पै– रति विलास अनुराग करत निसदन कैतूहल ,
सुप सज्या सुपमादि महल माणत दपत मल ।
समै सार सिंगार रिसकै झला मन राजत ,
मास मास रुत मिलत सुप आनद समाजत ।।
सरसत वडारणि केसरी, रहत निरतर प्रीत रत ,
हीरा प्रीत हुलासकी, चली वात प्रोहित-चिरत ।। ३९०

दोहा– वात सही यण विधि वणी, जिण विधि मुणी जणाय ।
कवी तेण इण विधि कही, इण विधि हीरा आय ।। ३९१
कहू छद चद्रायेणा, कहु छपै सोरठा कीन ।
कहु कुडलिया वारता, दुहा प्रगट धर दीन ।। ३९२

राचत कहु सिंगार रस, कहु वीर रस कामकी ।
वणी वात हीरा विमल, रसिया वगसीराम की ।। ३६३
हीरा वगसीराम हित, वात वणी वख्यात ।
सूर वीर हरपत सुणत, लेपन रसक लुभात ।। ३६४

ईति श्री वार्ता वगसीरामजी प्रोहित हीराकी वात सपूर्णम् ।। शुभमस्तु ।। यद्रस पूस्तक द्रष्टा तद्रस लीषत मया । सुद्व अशुद्ध मशुद्वो वा मम दोसो न दीयते ।। श्रीरामचद्राय नम ।। श्री ।।





(श्री नारायणसिंह भाटी, सञ्चालक-राजस्थानी शोध संस्थान, जोधपुर के सौजन्य से)

रीसालूरी वारता

॥ श्री गणेशाय नम ॥

अथ रीसालूरी[1] वारता[2] लिप्यते[3] ।

[दूहा— गणपत देव मनाय की, समस्त(रु) सारद माय ।
वात रसालू रायकी, कहू रसिक सूपदा[य] ॥ १
लेप विधाताजि लीप्या, तीमही ज भुगते सोय ।
सूगण नरा मन जाणज्यो, वांत तणो रस जोय ॥ २
वेधालू मन वीधर्यों, मूरप हासो होय ।
जाणै सोई सूजाण नर, अवर न जान कोय ॥ ३
कथा रसिक कविराय की, जोभा कहत वनाय ।
रिसालू नृप विध कहू, वाचो चित्त लगाय ॥ ४
राग रंग रसकी कथा, प्रेम प्रीयास विलास ।
वात भेद स पै कहुं सूगणा पूरण आस ॥ ५][4]

१ अथ वारत्ता[5] — श्रीपूर नाम नगर, तिणरे[6] विपै राजा सालवाहन[7] राज करै छै । [[8] यू ईम घणा दिन विता । तरै सालिवाहण देवगत हूंवो । तरै प्रधान उम्रावा भेला हुयनै वडो पूत्र समस्त कुमर नामै, तिणनै पाट वेसाणियौ । वालक-वयमै जूवानपणो आयौ । तरै सारी वातमै, राज-काजरी रीतमै समझीयो । भली भात राज करै छै । राजारो तप-तेज जोरावर वधीयो । वीण स[म्यै] सीह, वाकरी भेला चरै छै । भोमीया, ग्रासीया साराहि आणनै श्रीहजूररी चाकरी करै छै । दुनीया घणो सूप पावै छै । व्योपारी परदेसा(सी) घणा आवै, जावै छै । तीणरो हासल घणो आवै छै । सारै ही सोभा राजरो घणी वधी छै । राजा समस्त देवतारा विलास ज्यू साता राणीसू करै छै ।

---

१. ख रीसालुकुमररी । ग. रीसालुकुअररी चोपई । घ रीसालुकुवरकी ।
२. ख घ वात । ३. घ में नहीं है । ४ चिन्हान्तर्गत दोहे ख ग. घ. प्रतियो मे नहीं हैं ।
५. ख. ग घ में नहीं है । ६ ख रे । ग. कै । ७ ख सालीवाहनरो पुत्र समस्त राजा । ग सालिवाहनको वेटो राजा समस्त (घ समसत राजा) । ८. कोष्ठकान्तर्गत पाठ ख. ग घ में निम्न रूप मे मिलता है—

३. **वारता**—Aईण भातसू सौच करता घणा दिन हुवा। ईकदा समाजीगरै विपै एक गायारै एवालो आयने पूकार घाली—जौ माहार गाया चरावा जावा, जिण रोहीमै सूर एक हाल्यौ छै, सू गायान दुप दैवे छै, तीणरौ जावतो कीजौ, ज्यूँ गायान सूप होवै। तर राजा सूणै नै मूछा हाथ फेरै नै वट घाल नै नगार-चीन कह्यौ—नगारै सताव हुवैं। ईसौ कैहनै रजवूत सीरदार सर्व तईयार हु वा। सारा ही सीरदार मूछा हाथ घाल नै हथीयार सरवस किया। घोडा पिलाण हु वा। नगारारी धूस पडी। सूरा पूरा असवार हूवा। राजा असवार हूय नै सिकार चालीयो।A

दूहा – **हथीयांरा पाषल जूडे, कलहलीया कै कोए बै।[1] ९**
हडवड आग होसता, वन दीस आये दौर बै।
एवालीयौ मारग चलै, वाजै नगारां ठौर बै॥[2] १०

४ **वारता**— [इण भात सूरनै सोधता, चालतान घणी वार हूई, पिण सूर लाधो नही। तठै सूरज आथव पीण लागौ। तरै रजपूता उमरावारा, सीरदारा सगलाइ राजाजीसू अरजे कीधी—महाराजै ! सूरजै आथमो छै, तिणसू पाछा चाल्यौ। तठै राजा सूण नै कहै छै—वडा सीरदारा ! वले पाछा कुण आवसी ? अठै ही डैरा कर दैवौ, परभातरा वलै सूरजै सोधनै सिकार करस्या। ईसो वचन सू राजा कह्यौ। तठै डैरा रौहीमै कीया। रात घडो चार पाच गई छै। तद एक आथूनी काणी अलगौ थको एक भापर उपर अगन वलतीरौ चानणौ दीठौ। तठै राजाजी चानणौ देप नै सारा ही उमरावानौ कह्यौ—जौ डूगर उपर अगन वलै छै, तीणरी पवर ल्यावौ। देखा उठ काई छै ? तरै उमरावा सूण नै बोलीया—माहाराजै ! आधी रातमै वादेव पवर करणनै जावा, सौ इण रोजगारमै काई मीलै ? तरै वलै राजाजी कहीयौ—ईण वातरी खबर ल्यावो तिणनै मोटी रीझ करू नै उणनै मोटा करू। तग उमरावा कह्यौ—माहाराज ! मारी तो आसग कोई नई, कुमूत कुण मरै, काई जाणा, उठै काई चरित्र छै ?]

A–A चिन्हान्तर्गत पाठ ख ग. घ में इस प्रकार लिखित है—

ख इसो चींतातुर थको राजा सदा ही रहे छे। हीवे एकवा समयरे वीषे राजा समस्त सीकार चढीया।

ग घ –तद ऐक सीमै (घ तदी एक दीन) राजा सीकार चढो (घ गयो)

१ २ – उक्त दोनो दूहे ख ग घ प्रतियो मे नही मिलते है।

[–] कोष्ठकान्तर्गत पाठ ख ग घ प्रतियो में निम्न रूप में वर्णित है—

ख सुअर वासे घणा अलगा गया। दीन अस्त हुउ। तरे वनमाही ज रहीया। गोठ गुघरी, वल त्यार हुई छै। सारो साथ जीम्या पछे रात घडी च्यार जाता राजाए डुगर उपर

Aतठै एक ईवाल्यो बोल्यौ—महाराजै। आपरो हुकम हूवै तो हू षबर ल्याउ। तरै राजाजी कह्यौ—तु षबर ल्यावै तो तीन मोटौ करू।A

तरै इवाल्यो भापररै चानणौ सामो चालीयो। रायन भाषर उपर चढीयौ। आगै देषै तौ Cबडी बडी कठफाडा बल रही छैC। केसरी, सीघ नाहर[1] बैठौ[2] छै। Dश्रीगोर्षनाथजी जोगैस्वर मूद्रामै तपस्यामै बैठा छचै, ध्यानमै पल लगाई रह्य छै, आया-गयारी पबर नही राषै छै। ईण भातसू एवालीयो देष नै पाछो आय नै राजाजीनू सारा ही समाचार कहीया—माहाराज! सिलामत, श्रीगोरषनाथजी तपसाम वीराजीया छैजी। सूण नै राजाजी सवा लाख री रीझ दीवी।D

आग बलती दीठी। तरे राजा उबरावानु कहीयो—आ अगन बले, तीणरी ठीक ल्यावो तो तीणनै रीझ देउ, मोटो करू, पटो वधारू। तदी उबरावा वीचार नै कहीयो—माहाराज! जुध, लडाइ होइ तो जावा, पीण अकालमीचमे तो मे कोइ जावा नही। काइ जाणा आगे कुण छै?

ग घ घणो अलगो गयो। दीन असुर (घ पहाडामै दीन अस्त) हुवो। तदी वनमै (घ उठै) रह्यो। घणी रात गयां पछै (घ घडी ४ रात गई छै तठै) राजाऐ डुगरी (घ डुगर) उपरै आग बलती दीठी। तदि राजा उमरावानै कह्यौ—अणी (घ ईण) डुगरी उपरै आग (घ अगन) बलै छै, तीणरी ठीक ल्यावो, तीणनै मोटो करू। तदी उमराव कह्यौ (घ बोल्यौ)—कठेई (घ महाराज, कठेइ) रण, सग्राम-जुध होवै तो जावा, पिण अकालमीचतो जावा नही। काई जाणा, कोइ (घ काई) छै?

A–A चिन्हाङ्कित पाठ ख ग घ मे इस प्रकार है—

ख तीण समे एक गोवालीयो उभो हतो। तीणनु उबरावा कहीयो—तु इण अगनरी ठीक ल्यावे तो तोनु मोटो करा।

ग घ तदी तीण समै गुवाल उभो थो (घ तठै गुवालीयौ पीण उभौ थौ) तणनै उमराव बुलावे नै कह्यौ—अण आगरी (घ तणीनै बुलायौ, उमरावा कह्यौ—आगकी) ठीक ल्यावै तो तोनै मोटो करा।

B–B ख तदी गोवालीयो डुगर उपर चढीयो। ग तदी गुवालीयो डुगरी चढचो। घ तदी गुवाल डुगर उपरै चढचो। C–C. ख ग घ वडा वडा लाकडा (ख लकड) वलै छै। १ ख नाहर आगे। २ ग घ बैठा।

D–D–चिन्हित पाठ ख ग घ प्रतियो में निम्न प्रकार है—ख श्रीगोरषनाथजी बेठा तपस्या करे छे। गोवालीयो इसो वरतत देष नै पाछो फीरचो। आयनै राजाने कहीयो—माहाराज! जोगीस्वर बेठा तपस्या करे छे। राजा इसो सुणने राजी हुआ। गोवालीयाने रीझ-मोझ दीघी।

ग गोरषनाथजी बैठा तपस्या करै छै। तदी देषी राजाजीनै आय कह्यो।

घ तदी राजानै आवै कह्यो—माहाराज! गोरषनाथजी तपस्या करै छै।

Aरीझ कर नै राजाजी एकला उभराण पगा भापर चलीया। चलता-चलता भापर उपर चढ नै श्रीगोरखनाथजीरो दरसण कीधो। गोरपनाथ पल पोल नई। तरे राजा एक पगरै पान मूहड़ा आगै उभौ रह्यौ, दोय हाथ जोडि रहौ छै, श्री गोरपनाथजीरौ ध्यान करै छै। ईण तरै सवा पोहर ताई राजा उभौ रह्योA।

तठै[1] श्रीगोरपनाथजी पल पोली[2]। आगै[3] Bदेपे तो राजा एक पगरे पाण उभो दीठौ। तठै श्रीगोरपनाथजी तुष्टमान हुय नै वोलीयाB—राजा! माग तन तूठो, चाहीजै सो मागलेB। Cइसौ राजा सुण नै सिलाम कर नै वोलीयौC—माहाराज! आपरै[4] परसादकरनै[5] सारी वातरी[6] दोलत छै, Dपिण ईक पूत्र कोई नही। तिणरौ मानै घणौ दूप छै सो आप तूठा छौ तो पूत्र दिरावौD।

[ईसो गोरपनाथजी सूणनै आपरा हाथम गुलावरी छडी थी, सौ राजानौ दीधी नै कहीयौ—जै आवारौ रूष छै, तिणरे एक वार छडीरी दीजै, सौ अवारी करी येक पडसी, तिका ताहारी राणीनै पवायजै, तिणसू ताहरै पूत्र होसी, तिण पूत्ररो नाम रीसालू दीजै, ईसौ कह्यौ। तठै राजा छडी लै नै चालीयौ]—

A–A चिन्हान्तर्गत पाठ ख ग घ मे निम्न रूप में वर्णित है—

ख पछे राजा समसत एकलो अलवाणो डुगर उपर चढीयो। आगे देषे तो श्री गोरष-नाथजी ध्यानमे वेठा छै। राजा पण उठे एक पगवराणो सवा पोर ताई उभो रहे ने सेवा करे छे।

ग तदी राजाजी ऐकलाई डुगरी चढचा। गोरषनाथजी नै देष्या। तदी उठाईसु उभा रह्या। एक पगवराणा सवा पोहर ताई सेवा कीधी।

घ तदी राजा पालौ एकलौ डुगर उपरै चढचौ। गोरषनाथजीनै दीठा। तदी परक्रमा दे एकण पगवराणा सवा पोहर ताई सेवा कीधी।

१ ख इतरे। ग घ तदी। २. ख उघाड। ग उघाडे। घ उघाडी।
३ ख कर। ग घ नै।

B–B ख देषे तो राजा उभो छे। इतरे श्रीगोरषनाथजी वोल्या—राजा। माग माग, हु तोनु तूठो, जे मागे सो देउ।

ग घ कह्यौ—राजा माग माग, तोनै (घ मे नहीं है) तुष्टमान हुवा।

C–C ख तरै राजा हाथ जोड ने कहे। ग घ. राजा कहै (घ कह्यौ)
४ ख ग घ आपरी। ५ ख ग दीधी। घ क्रपाथी। ६. घ मे नहीं है।

D–D चिन्हगर्भित पाठ ख ग घ मे यह है—ख राज तुठा तो प्रमांण। माहरे पुत्र नहीं, सो एक पुत्र दीउ। ग पिण ऐक मागु छु–सो ऐक पुत्र नही। घ पण बेटो नही।

[—] ख. ग घ प्रतियो में ऐसा पाठ मिलता है—ख तदी जोगीस्वर एक च(छ)डी दीधी। जा, माहरे वागमे आवारो गोठ छे, तीणरी इण छडीसु एक केरी पाडजे;

ढाल पजाबी[1]

दूहा – सालवाहण[2] नृपरावका[3] , श्रीपूरनगरक[4] राय[5] बे।
पूत्र नही जीस[6] कारणै, सेव्या सिद्धका[7] पांव बै ।। ११
चाल्यौ आंबां आगलै, धीमा पगला धरायबे ।[8]

५ वारता—Aईण वीधसू राजा डूगरसू'उतर नै आबा हैठै आयो नै छडीरी दै नै आबो ले नै आपरी फोजमै आयौ । सारा ही उमराव 'षमा षमा' करनै हकीगत पूछी । राजा हकीगत सारी कही । उमरावा सूण नै घणा राजी हूवा । इतरे रात्र गई, परभात हूवौ । तरै उमरावा अरज कीवी—श्रीमाहाराज ! अबे सीकार मनै करावो, नेगरमे हालो, श्रीगोरषनाथजीरो प्रमाण सिध करोA ।

Bतरे राजा वात मानी नै कुच कर नै नगरमै आया । संभा जोडि नै सवा पोहर दिन चढीया राजा राजैलोकमै गयौ । तठा पछै राणीनै बुलाय नै आबो दीधो न कह्यौ—हे राणी ! राते श्रीगोरषनाथजी सतुष्ट हुवा । ते फल दीधो । ओ थे फल षावौ, ज्यू थार पूत्र हौवै । तरै राणी श्रीगोरषनाथजीनै दिसाग सीलाम करै नै फल आरोगीयौ न तुरत आस्या रह्री । वडो हरष उपनोB ।

थारी पटरांणी गुणसुदरीने षवाडजे, ज्यु एक पुत्र होसी । माहरी रसालरे नामे तीण पुत्ररो नाम कु रसालु दीजे ।

ग घ अतरायकमै(घ तदी) गोरषनाथजी कहै छै (घ. कह्यौ आ)—माहरा हाथरी छडी ले जा, आबारै देजे (घ. दीजै) कैरी एक पाडजै (घ एक कैरी पडे जदी) रसरै नामै रसालू कुअर नांम देजे (घ माहानामै रीसालुरै नांमे बेटारौ नाम दीजै) ।

१ ख दुहो पजाबी । ग गोरषनाथजी वायक । घ. मे नहीं है । २ ग सालीवाहन । ३ ग नरपरावका । घ नृपरायरा । ४. ख श्रीपुरनगरका । घ श्रीनगरका । ५ ख ग घ. राव । ६ ख तस । ग घ जस । ७ ख सीध का । ग सीधांरा । घ सिद्धांका ८ यह अर्द्धाली ख ग घ. मे नहीं है ।

A–A ख हीवे राजा नमस्कार कर नीचो उतरयो । आय सीरदारनु मील्यो । प्रभात हुओ । ग घ तदी राजा आबो ले नै नीचो उतरयो ।

B–B ख घोडे असवार होय वागमे पधारया । उठासु आबो ले नै नगर माहे आया । राजलोकमे जाय पटराणीसु मील्या । राजा समस्त गुणसुदरीनु कह्यो—आपणे भाग्य जाग्यो । श्रीगोरषनाथजी तुठा, एक आबो दीधो छे सो थे षावो । आपणे पुत्र होसी । तद राणी सात सलाम करी फल आरोगीया । तीण दीनथी गर्भ रह्यो ।

ग नगरमै आव्या । राजलोकामै पधारया । तदी पटराणीनै कह्यो—आपणो भाग्य जाग्यौ । गोरषनाथजी तुष्टमान हूवा, सो फल दीधो छै, पुत्र होसी, ओ फल ये आरोगो । अतरायकमै पटराणी सात सलाम करी नै फल खाधो ।

घ सैहरमै आया । राजलोकामै आया । तदी पटराणीनै कह्यो—आपणो भाग्य जाग्यौ । ओ फल दीधो छै । श्रीगोरषनाथजी तुसटमान हुवा छै, पुत्र होसी । तदी पटराणी सात सलाम करे नै फल षाधो ।

दूहा– थाल भरी दाल चावला, लहै कटौरे हीयै वै ।
पडित पूछै वरण मछली, पूत्र सहै कीध यक वै ।। १२A

६. वारता—(अबे गरभ पालणा करता नव महोना हूवा, साढा मात दीन गया थका पूत्र जनमीयौ । श्री गोरपनाथजीरी वाचासू रीसालू नाम दीधौ । घरग प्रोहित ते डेरे गया छै) ।

अथ[1] दूहा[2] –वाजा[3] छत्रीस[4] वाजीया, पली[5] वाज्यौ[6] थाल वै ।
राजा[7] घर पुत्र जनमीयो[8] , रजवटकै रषवाल वै ।। १३
राजा मिल नांम थापोयो[9] , कवर[10] रीसालू नाम[11] वै ।
घर घर रग[12] उधावरणा, नृप[13] घर मगल गाम[14] वै[15] ।। १४
[नांटिक छ‹ ‹ुण गाजीया, गोरी गाव गीत वै ।
पान सूपारी वाटता, धन अजूनो आदीत वे ।। १५
मागणहारा मगता, दोजै त्यूनू दांन बे ।
पडित वेली ज्यौतसी, वधतो वधारौं मान वे ।। १६
हीव धरे जोतसी तेडोया, वेला लेवरण धाम बे ।
आया राजा आगलै, साझै अपणा काम वे ।। १७
लगन लेई नै जोईयौ, मोहूरत रूडो न होय बे ।
अगम तिगरण सासौ लहौ, राजानै कहै जोय बे] ।। १८

A–यह दूहा ख ग घ प्रतियो में नहीं है । (—)कोष्ठकान्तर्गत पाठ अन्य प्रतियो मे इस प्रकार है—ख नव मास साढी सात दीन पुत्र रो जनम हुउ । गोरषनाथजी रो वचन फल्यो । ग घ –महीना साढा सात दीन ७ जाता (घ महीना प्रतीपुर हुवा तदी) पुत्र हूओ । गोरषनायजीरी रसालरै नामै रसालुकूवर (घ रीसालु) नाम दीधो । घररो परोहीत (घ प्रौहीत) बुलायो ।

१ ग पडावाक । ख. ग में नहीं है । ख २ दुहो । ३ ख वाजो । ४ ख छत्री से । ५ ख पेली । ख वाजी । ७ ख समस्त । ८. ख जनमीया । ९ ख समस्त घर पुत्र जनमीया । १० ख भया । ११ ख रसालु । १२. ख. आणद । १३ ख घर । १४ ख. च्यार । १५ ग घ. प्रतियो में १३ वें और १४ वें दूहे की जगह उलट फेर से एक ही दूहा निम्न रूप में मिलता हे—

समस्तपुर पुत्र जनमीयो, भया रीसालू नाम वे ।
घर घर आणद वधावणा, घर घर मगल चार वे ।।

[—] कोष्ठकान्तर्गत दूहे ख ग घ प्रतियो मे अनुपलब्ध है ।

७. **वारता**—A हिवै पडित प्रोहित लगन, वेला, नक्षत्र जोय ने राजा आगै आयौ। आयनै बोलीया—माहाराज ! सिलामत, आपरै तो पुत्र हूवौ छै सो रगरली हुई छै, पिण मेह तो जोतसी छा सो माहने तो झूठ बोल्या ठोर नही छै। तिण वास्तै श्रीमाहाराज ! कहो तो साच कहा, कहौ तो कुड बोला ? तठै राजाजी बोलीया—प्रोहितजी ! थाहरा ज्यौतिसमै जिका समाचार हुवै, तिसा हिज कहौ; मै तो रीस करस्या तो माहरै हाण छै। तिणसू हुवै तिसि कहौ।A

B-तठै पडित बोलीया—श्रीमाहाराज ! ओ बालक करडा नक्ष[त्र] मैं जनम्यौ छै ने कुडली माहै ग्रह षोटा आया छै, वेला पिण षोटी छै सो माता-पीतानै विघनकारी छै, मोत-घात ज्यू छै। इण बालकरी मूहडौ वारै वरसताई देषणौ जूगत नही छै। इण वीधरा ज्यौतिसमै समाचार छै। श्रीमाहाराजरा मनमै आवै सो कराईजै, तठै राजाजी सूतनौ प्रोहितजीनै कहीयो—थे कहौ सोई ज प्रमाणौ छै।B

[तठै ब्राह्मन नै प्रोहितनै नालेर, सोपारी, तदुल, पान, फूल, रोकड चढायो दे नै सीप दीवी नै राजाजी धाय मातानै बूलाय ने केहै छै—माहरै कुवर हुवौ, तिणनै महिलामै गुपतपणै राषज्यौ, थेईज चाकरी धवरावा-निवरावारी करज्यौ। बालकरा जतन करावज्यौ नै बारै वरस ताई वार निकलवा देज्यौ मती। इण वातमै चूक पड्यौ तो गाढो ओलभौ षावस्यौ। इण भातसू धायनै राजाजी कहीयौ। तठै धाय बौली—श्रीमाहाराज ! सिलामत, आपरौ कह्यौ प्रमाण करस्यू। ईसौ कही नै धाय माता मेहलमै जाय नै गुप्तपणै बालकनै लेइ नै आपरै मैहलमै राषीयौ।

A–A चिन्हान्तर्गत पाठ के स्थान मे निम्न पवितया ही ख ग घ में उपलब्ध हैं—

ख इतरा घररा प्रोहीत जोतषी आया। लगन, वेला लीधी।

ग वेला लेवाई। घ तदी वेला लवाडी।

B–B–चिन्हमध्यगत वाक्यावली ख ग घ. प्रतियो में निम्न रूप में वर्णित हे—

ख जोतषीये वीचार राजानु कह्यौ– माहाराज ! करडा नषीत्र, कूड ग्रहमे जन्म हुओ छै सो माता-पीता मुष देषे सो मरे। तीणरे वास्ते वरस बारे सुधी कुअरजीने महीलामे गुप्त राषो, मुष देषो मती, बारे नीकलवा द्यो मती। कुवररो नाम रसालु दीधो।

ग तदी प्रोहीत कह्यो—माहाराज ! करडा नषत्रमे जन्म हुयो सो मा मुढो देषै तो मा मरै, वाप मुढो देषै तो वाप मरै नै मामा मूढो देषै तो मामा मरै। सो बारै वरस ताई मुढो देषो मती, मैहलामै राषो।

घ. तदी प्रोहीत कह्यो—माहाराज ! सलामत, कुवरजीरो मुहडो वाप देषै तो मरै, मा मुहडो देवै तो मा मरै। नान्नारो वारा वरस सुदी देषो मती।

सारी वीध वालकरी करता थकां ईग्यारै वरस हूवा। तठै एकदा समाजीगरै विपै राजा भौजरा घररा नै राजा मानरा घररा नालेर आया। तिणा साथें मत्रीसर आया छै। सू आय नै मीलीया, मूजरौ कीयौ, वाह पासाव कीया, आमी-सामी हकीगत, कुसल पूछीया। वडी पूस्याली हूई। तठै राजा मत्रीसरानू कहै—माहा ताई आवणौ हूवौ सो काई कारण छै ? सौ म्हानै कहौ।]

Aतठै प्रधान वोलीयौ—श्रीमाहाराज ! राजा भौजजी, श्रीमानजीरी वेटी ईयारी सगाइरो नालेर ल्याया छा, आपरा कुवर दीपावो। इण कारण आया छा। सो आप कुवरजी ने तेडावो, ज्यू नालेर वधावा इसी सून नै राजाजी मनमै वीचारीयौ—'कुवरनै वरस इग्यारे हूवा नै इक वरस वलै घटै छै, सो वार काढणौ, मूढौ देपणौ जोग नई, नै परवानै नालेर ल्याया सौ अवै ईगनै काई जाव देउ, सौ राजा ममस्त मनमै वीचारीयौ। तठै आपरा ठाव पाच सात उमरावानै लै नै आघा जाय नै राजा समस्त मनमै वीचारीयै उमरावानै कहेयौ—तठै ईणरी जाव काड देवौ। तरै उमराव वोलीयौ—श्रीमाहाराजाजी, ईणरो उतर तौ औ छै—अवारै तो ईणनै डेरा दीरावौ, पाणा दानारा जनन करावौ नै रातै सभा माड नै उमरावा, प्रधान सारा ही भेला हुय नै मनसौवौ कर न सारो ही जावतौ कर देस्या।A

Bतरै राजा समस्त पाछौ आयनै प्रधानैनू कहीयौ—आज तो आप डेरा करावो, भोजन करावो, सूवारे जवाव सारो ही हुय नासी, इसौ कह्यौ तठ प्रधान वोलीया—जौ हूकम, आपरो कह्यौ सौ प्रमाण छै। इतरौ कैह नै प्रधान उठीयो। परधान रा डेरा दीराया। पाणा-दाणारा जैतन कराया।B

[—] कोष्ठकान्तर्गत पाठ के स्थान में ग. घ. प्रतियो में निम्न पक्तिया ही उपलब्ध है—

ख—हीवे राजा इसो जाव सुण ने कुवर ने पाच धाया साथे महीलामै राष्या। इम करता वरस इग्यारे वतीत हुआ। तद उजेणीरो धणी राजा भोज तीण री वेटीरा नालेर आया। फेर राजा मानरी वेटीरा पीण नालेर आया।

ग तदी कुअर नै च्यार धाय्र लगाई। महीलामै राष्ये। तदी वरस अग्यारारा हूवा। तदी नालेर आयो।

घ तदी कुवरनै ऊचा अवास छै मेहलासु अलगा छै। तठै च्यार धाया ले गई। धायानै कह्यौ—मेहलामै रावजो। तदी वरस १२ हूवा। तदी नालेर आया।

A–A कोष्ठकगत पाठ ख ग में नहीं है तथा इसके स्थान मे ग में निम्न पक्तियाँ ही उपलब्ध है—

ग तदि राजा समस्तनै कह्यौ—सगाई करो।

B–B. चिन्हमध्यग पाठ ख ग घ प्रतियो में अनुपलब्ध है।

A हीव राजा समस्त रातरै पूहर सभा जोडनै सारा ही उमरावानै, प्रधाननै भेला करै नै मनसूबौ पूछीयो—अबै काई कीयौ चाहीजै। तठै इक प्रधान बोलीयो—श्री माहाराजा साहिबा ! सारा ही मनसोबा जाण देवौ। हु कहु सो कीजै—प्रभातरै प्रो प्रधान आवै तरै श्री कुमरजीरा हाथरो षडौ(पाडो) मगाय नै नालेर वदावो ने जानरी तारी करो। षाडो हाथीरे होद मेलने परणाय लावास्या। इसौ राजाजी सून नै वात मानी। साराहीरै वात दाय बेठी। अबै सभा बोहोड नै मेहला दापल हूवा।

परभात हूवौ, तठै राजाजी सभा जोडी। तठै प्रधान नालेर लेने आया। तठै राजा समस्तजी बोलीया—जावौ, उप्रावा कुवररो य(षा)डो ले आवौ। तठै प्रधान सून ने बोलीया—श्रीमाहाराजै ! सिलामत, षाडौ मगावौ छौ ने कुमरजीन नही तेडौ, तीनरौ काइ कारण छै ? तठै रातवालो प्रधान वो नामै 'जालमैसीघ' तिको वोलीयौ—श्री प्रधानना साहिबा ! माहरै घररी आ रीत छै—'वालक बारै वरसमै हूवै, तठा पछै सगलै माहादेवजीरी जात करै, तठा पछै तिन बालकरौ माता पिता मूहडौ देषे। सौ कुमर वरस इग्यारमै हुवो छै, एक वरस घटै छै। तिणसू आ रीत छै–माइत मूहडौ देषै नही। नै ताहरै मनमै कोई भरम हुवै तो थे देष आवौ'। तठै प्रधानै बोलीयौ—म्हारै कोई भरम नही, थे करसौ सौइ ठीक छै। तठै राजा समस्तजी कहीयौ—प्रधाना ! राजाजीरै जैज हूवौ तौ बारे बरसरो कुवरनै हुणनै दैवौ, पछै सगाई करज्यौ। तठै प्रधान बोलीया—कोई कारण नई, आप षाडो मगावौ।A

B दूहा– हुकम भलो माहाराजैरौ, नालेर दीधां ताम बे।
जान तयारो कीजीयौ, ज्यू सीज सगला काम बे ॥ १९
माहा[रा]ज धणी हूकमथी, जैज न होवै काय वै।
षासौ(डौ)वदाबी पूजीयौ, टीका अक्षत दाय बै ॥ २०

A–A चिन्हमध्यगत पाठ ख ग घ प्रतियो में निम्न वाक्यावली के रूप में ही द्रष्टव्य है—

ख तद राजा समस्त कह्यो—वरस बारा माहे एक वरस थाके छे, सो कुवरनु बारे तो काढा नही ने षडग मेलने परणावस्या।

ग वारै वरसमै वरस एक घटै छे सो वारणै काढा नही। घ तदी राजा समसत मनमै जाणी—वारै वरस वरसमै एक घटै छे सो तो वारणै काढा नही।

B–B ख ग घ प्रतियो में चिन्हान्तर्गत १९ से ३४ पर्यन्त दूहे एव ८ वीं वार्ता के स्थान में केवल निम्न पक्तियां ही समुपलब्ध हैं—

८. वारता—हीवै जानरी सझाई करी। वडा वडा उम्राव साथै कीया। भेला केसरीपा(या) कसूवा मीरपावै करचा। भेला गेहणासू जंडाव जडीयौ छै। सौभा सूरजैरी कीरणरी जलाहल लाग रही छै। तुरग सोनारी साप ते करी सोभैतै, वडा वडा हाथी सीणगारचौ छै।

दूहा– हय गरथ सीणगारीया, गुघरैरा घमकार बे।
षांडो मेघाडबरै, बेसारचौ सूषकार वे॥ २१

चढीया सहु जानीया घणा, जांनी कीधां बनाव बै।
मलपता मोजी थका, देता नगारा घाव बे॥ २२

उजेणीपूर आवीया, सभेला सिणगार बै।
वांह पासावे सहु मीलया, सगली धरी मनवार वै॥ २३

जाचक जै जै बोलीया, मे आगम जिम मोर बे।
दांनै करी राजी कीया, तोरण बाध्या तोर वे॥ २४

राजा भोजजी , पूछै वात उदार बै।
कवर नईकौ कारणौ, मत्रीसर तिण वार बै॥
बात क सारा नृप सूणी, राजी मन धर धयै[ध्यार]बै २५

हीव चवरी मडप तणे, फैरा लीया च्यार बे।
दत्त घणा वड दायचा, दीधा राज अपार वे॥ २६

तीहाथी मांन नृपत तणी, चवरी पूहता जाय वै।
पूरब बिध सहु जाणज्यौ, हरष मगल फूरमाय बै॥ २७

गाव मगल नारीया, परण्यौ षाडचौ नार बे।
दत्त घणा नृप आपीया, कर कर बहु मनवार॥ २८

जाचक बहु धन पोषीयो, सरीष किवी सारी जानै बै।
चलतां आया आंपणौ, नगर वधाई मान बै॥ २९

ख तठा पछे राजाइ जोतषीनु वोलाया। आछा लग्न जोवाडीया। व्याव माडीयो। राजाए पोतारा उवरावा साथे रसालुरो षाडो मेलीयो। उवरावे षाडासु रसालुजीरे दोय राणीया परणे लाया।

ग घ तदी आपरा उमराव षान (घ वाषो) सुलताण, मुगला, पठाण रसालुरा (घ समसत राजा कुवरजीरा) हाथरो षडग मोकल्यो (घ षजर दीधो)। परणी ल्याया (घ जान करे हाथीरी आबावाडीमै छै सो षजरसु पर परणी ल्याया)।

हरष बधाइनै आवीया, महिला ते दौउं नार बे ।
कुवर देषी मन राजीयौ, ए अपछैर अनूंहार बौ ।। ३०
कुण छै बाल वडी, सहीया जपै ताम बे ।
श्रीमाहराजा कुमरजी, राजा-राणी ए धाम बो ।। ३१
राजा तणौ षडग परणौनै, आज सूंपी तुझ हाथ बो ।
राजा राणी बौ रावली, विलसौ तन घन नाथ बौ ।। ३२
कुमर सूणनै चीतवै, कीम षडग परण्यौ जाय बे ।
मूझनै बीद बणाहये तौ, न कीयौ नृप कहायाय बौ ।। ३३
एहनो काइ पटतरो, निगे लहै सू साचै बौ ।
इम चीतवी हसि हस मिल्यौ, थाईसू वाता राच बौB ।। ३४

९ [वारता—इण भातसू सहेलियासू वात कीवी । समोभामा हुडनै राणीयासू राजी-वाजी हूवा । घणी राणीजी वाता कीवी । इम करता दीन १५ तथा वीस हूवा । तठे भोज, मानरा असवार, रथ, पालषी, चकडोल आणो आयो । वडा मत्रीसर लेवा सारू आया । आय नै समस्त राजासू मील्या । बाहु-पसाव हुवा । आमा-स्यामा कुसल पूछ्या । घणी मानवार हुई । असल आराईरा फूल साभा माहै फीरीया । वडी गोठ गुघरीया हुई ।

हीवै रातरा पोररी राणीया कुवरजी पासै आई । घणा रग-विलासरी वात हूई । तितरा माहै कुवरजी बोलीया—थारा घरारा आणा आया छै सो पीहर दोसा पधारो, मेह पिण वेगा आवस्या ।]

दूहा– राणी सूण पीउतै भणै, वेगा पधारण वार बौ ।
विरहन पामस्या तुम तणौ, विछडीया नीरधार बो ।। ३५

[—] कोष्ठगत पाठान्तर ख. ग घ प्रतियो मे निम्न प्रकार है—

ख हीवे कुवरजी दोय राणीया साथे सूष-विलास भोगवे छे । राजा भोजरी वेटी माहा रूपवत छे । तीण सु आप लयलीन रहे छे । इम करता दीन पचीस वतीत हुआ । तदी उजेणीसु आणो आयो । दुजी राणी ने पीण आणो आयो । तदी राजा भोजरी वेटीनु कुवरजी कहे– थे थारे पीहर जावो, मे पीण वेगा आवा छा ।

ग दीन दस तथा वीस'रह्या । परणे ल्याया' पछे आणो आयो । तदी 'रीसालु' राजा भोजरी वेटीने कह्यो—हु पिण (घ परणवा) आवु छू । '—' घ प्रति मे चिन्हगत पाठ अनुपलब्ध हैं ।

सग सूहेलो पीउ तणौ, दुहिलौ विछ्डवार वै ।
पीउ र अक्षर जीभ थी, नहीं छूटसी नार वै ।। ३६
कुमर कहैजी गोरीया, वहली करस्या वार वै ।
सूगणा सरीषो लोयणां, वेध्यां वांम नूहार वै ।। ३७
राजा भोजरी मांनरी, ये पूत्र गुणवत ।
रूपवती रलीयामणी, सौ क्यूं भूल कंत वै ।। ३८
वेलारा साजन भणी, त्रीसर सोई गीवार वै ।
इण वोध माहोमाहैथी, कीधी वात करार वै[1] ।। ३९

१० [वार्ता—ईण त्रीधसू कुवरजी, राणीग्रा वाता कीवी । तठै कुवरजी ग्रापरा हाथरी सवा लाषरी मूदडी सहीनाण वासत रीझ दीवी – ग्रा मूदडी हाथ थे परीहर्जो । न कडिया पजुर नावा सहित रीझ कीवी सू रीझ मान वेटीनै दीजो । कवरजी वोलीया । राजा भोजरी वेटीनै कहै—ग्रापणै थाहारै ग्रो मनाण छै – माहरी वाडी माहै एक ग्रावौ ग्रमृतफल नामै छै, तिणरै सात कैरीयागे झूवपो छै, तिको सदाइ कालो लागो रहै छै, (प)डियौ देपो तद जाणजो जू कवरैजी ग्रावसी । ग्रो मनाण छै । तरै राजा भोजरी वेटी वोली—श्रीमाहाराज कुवार ! इण सेहनाणीरी पवर कुकर पडसी, आवा ग्राठै नै उठै हुग्रा, जोड किसि विध लागसी ? तठै कुमरजी कहो—ग्रो ग्रावौ देवामी छै । साथै चीत सामरौ ग्रावौ कराय देवौ झूवपा सहित सौ ग्रठै पडसी । तरै थाहरा चितराम मो झूवपौ पडसी तरै नगै पडसी । इसौ कह्यौ तठै भोजरी वेटी कहै—श्रीमाहाराज कुवार ! ग्रो सेनाणै ठीक वतायो । इण भातसू परभातैरै राजा परवाननै वूलाव नै घणी भोलावण देनी नै गणीयान सीप दीवी । सौ ग्राप रा ठीकाणा पूहती ।]

---

१ ३६ से ३९ सख्या वाले दूहे ख ग घ प्रतियो में नहीं मिलते है ।

[—] कोष्ठकान्तर्गत पाठ भेद ख ग घ. प्रतियो मे इस प्रकार मिलता है—

ख इम कहे ने हाथरी मुद्रडी, कररो पजर दीवो । वले कहीयो—थारी वाडीमे एक ग्रमृतफल नामे ग्रावो छे । तीणरो सात केरी रो जुवधो एकण चोटसु पाडु तद माने डाया जाणजो । इम सुषवीलास करता प्रभात हुग्रो । तद ग्राणो करायो । वहु दोनु पीहर गई ।

ग घ तद 'नीसाणी दापल' हाथरो मुदडो दीधो । रसालु पजर (घ रीसालु जन) दीवो । ग्रावारी सात कैरी पडै जदी मुनै ग्रायो जाणजे । तदी वहू दोई पीहरा गई ।
'—' चिन्हित पाठ घ में नहीं हे ।

दूहा– नवल सनेह पीहर तणौ, पीण सासरीयौ परधान बै ।
सासरीयौ जुग जुग तणौ, सूष पीहर उन मान वे ।। ४०
कुलवटन्ती कामणि तणौ, सासरीयौ सीरदार बै ।
इश्वर गत जाणे षरी, आदर पु(कुं)जी नार बै ।।[1] ४१

११ वारता—इण भातसू षेग-कुसलथी पीहरै गई, माइतासू मीली । साराहीने सूष हुवो । हिवै कोईक दिन विता । हिव कुवरजीरा मनमै पूठली वात रात-दिन मनमै लाग रही छै । इतरा माहे धायमातारी बेटी 'मूधमाला नामै' तिका कुमरजी पासै कि काम आई । तर कुमरजी तीणनै पूछैवा लागा—जो मोने बाहिर नीकरावा नही दैवें नै पाडानै परणायौ, मोने वीद वणायतो न कीयो, सू काई जाणीजै छे ? इण वातरी षवर वतावै तो तुनै घणो मोटी करू, मूह माग्यो धन देउ ।

तठे इसा समाचार सूणन धायरी बेटी बोली—श्रीमाहाराजै कुमार ! आपरो जनम हूवो छो, तर घररो जोसी नै घररो प्रोयत तिण तो लगन देषो न कहीयो—श्री माहाराजा ! इण बालकरो जनमै पोटी वेलारो छै, नषत्र पोटो छै, तीणसू वार वरस ताई कुमरजी नें गुपतै रापज्योजो ने वार वरस ताई मा-बापरो मूडो देपे नही । ज्यो मूडो देषै तो विगाड उपजै, मोन घात ज्यू छै, सो कवरजी न तो [मह]ला दाषल करज्यो, इण भातसू प्रोहीतजी कहीयो । तिणसू थानै मीलामे रापै छै नै मूहडो देषै नही छै । इणाही जै कारणथी दोय राणी परणाइ छै । इसो जाब कुमरजी सूणने मनैम विचारीयो[2]—

---

१ ३९ एव ४०वा दूहा ख. ग घ प्रतियो मे अप्राप्त है ।

२ इस ११वी वारता की वाक्यावली ख ग. घ. प्रतियो मे निम्न रूप में वर्णित है—

ख हीवे एक दीन कुवरजी हजुरीया साकरनु पुछे—मानु महीला माहे पयूं राष्या, बारे निकरावा न्ही दीए सो कोण वास्ते ? तद सघलेइ हजुरीये अरज कीनी - माहाराज कवरजी ! आपनु करडा ग्रहामे जनमीया । तीणथी वरस बारे सुधी महील माहे राषे छे । प्रोहीतजी जोतसीए कहीयो छे ।

ग अर रीसालु कहुपाअनें कह्यो - मानें महला मे क्यु राख्या छै, बारणें क्यु नीकलवा दे नही ? तदी धाय कह्यो माहाराज ! आपरा घररो प्रोहीत बारा वरस ताई राख्या छ ।

घ अर रसालु कह्यो—धायनें पुछ्यो - मानें महलामें क्यु रापै छै, बारै क्यु नीकलवा द नही ? तदी रसालुनें धाय कह्यो - माहाराज ! आपरा घर रे पोहितजी कह्यो—कुवरनें बारे वरस ताई महलान राख्या छ ।

दूहा– देषो छोरू(डू)मूष सदा, माईत देषै मास वे ।
वार वरसरौ वध करौ, राख्यौ माता निरास वै ।। ४२
एहवो माता-पिता तरणौ, मोह जगतमे जांरण वे ।
मुभनू केदतरणी विधै, कीधो परवस प्रांरण वै ।। ४३
सीह तरणा जेवा वाछडा, किम वैधीया रहै वध वै ।
होरणहार सो होयसी, विधना कांमना ग्रध वै ।। ४४
पूत्र तरणी वांछा धरणी, होव जगमै जारण वे ।
ईरण थोडै हु जनमीयो, तो मुभ वध्या प्रारण वै ।। ४५
तो इहां वधमै सरघा, रेहवो उ जूगतो एह वे ।
होरणहार सौ होयसी, वूरी य भली को जेह वै ।।[1] ४६

१२ Aवारता—ईण भातसू कुवर मनमै वीचार नै पचास मोहरारो सकलो दीयौ न वग्जे राषी—पवरदार, कठहि जाव काढजे मती । इमौ कैहनै कुवरजी उठ नै महिला वारै आया नै चाकरानै कहीयौ—जे श्रीमाहराज कठै वीराज्या छै ? तत चाकर वोलीया—कुवरजी साहवजी ! श्रीमाहाराज तो सीकार पेलण गया छै । तठै इसो कुवरजी सूण नै महला हेठ उतरया । उतर नै दरीपानै पधारया ।A

Bसभा जोड तठै तिणही ज वार माहै राजाजीरौ प्रोहीत दरवार ग्रायो । नाव ग्राजवादास छै । तीणनै ग्रावतो देप न कुमरजी ग्रादमीयान पूछीया—ग्रो उजलायत ग्रापण दरवारम कुण ग्रावै छै ? तठै चाकर वोलीया—श्रीमाहाराजै कुवार ! ग्रो घररो प्रोहीत छै । ग्रापरी वेला लीधो तीको है । सो सूणन कुवरजी

---

१. ४२ से ४६ तक के दोहे ख. ग घ प्रतियो में ग्रप्राप्त है ।

A–A. चिन्हान्तर्गत पाठ के स्थान में ख ग घ में निम्नाश ही उल्लिखित है—

ख हीवे एकदा राजा समस्त सीकार चढीया । उठासु कुवरजी जाय दरीपानो कीधो ।

ग घ –तदी रीसालु म्हैलामैथी उतरे वारनै दरीपानै ग्राया । राजा तो सीकार गया था ।

B–B. चिन्हित पाठान्तर ख. ग घ प्रतियो में निम्न प्रकार से उद्धृत हे—

ख एहवे राजरो प्रोहीत जोतषी छे, सो ग्रादमी त्रीस-पेत्रीस लीया दुरवार ग्रावे छे । एहवे प्रोहीत पुछ्यो—जे दरीयाने डावडो कुण वेठो छे ? प्रोहीतजी ! ए माहाराजकुमार छे । तद प्रोहीत पीजने कहे—ग्रवारुही ज डावडानु काई उतावळी हती, वारे वरस माहे मास ६ थाकता हता ।

जाणीयौ—जैहि पापी उहि ज कुकरमारो करणहार छै। इतैरा माहै प्रोहितजी सभाने देषने उला(ठा)पेला चाकरनै पूछीयो—ओ रै ! ओ छै(छो)करो कुण छै ? ईतरा आदमी कु बैठाछै ? तठै कुवचन सूणने चाकर बोलीया—प्रोहितजी ! श्रीमाहाराज कुवार दरीषाने पधारया छै। तठै प्रोहित बोलीयो—अरै आज कुवर दरीपाणौ कीधौ, सू कोणरा हुकमसू कोधो छै ?B

[इसो चाकरानू सूणायनू बडी ठसक राष नै कुवरजी कनै आय नै वडी रीस कीधी नै कह्यौ—कुवरजी ! इसा उतावला हूवा सो तो मास इक घटै छै, पछै ही बारै आया हू ता। तठै कुमरजी बोलीया—प्रोहीत साहिबाजी ! थे मोनू बारै बरस ताई महलामै रापीया, ईसो काई कारण जाणीयो ? ततौ प्रोहितजी बोलीया—जे कुमरजि ! नक्षत्र ग्रहारी तरफसू काम करयौ छै नै मास इक घटै छै, सौ वलै मलैम राषस्या। तठै कुवरजी बोल्या—प्रोहितजी ! इतरा दीनै रयै हो सू घणी वात छै, अबै आपा सारू कोई नई। तठे प्रोहीत बोलीयो—आ वार तौ थाहरी कीतरीक वाता सारी वातम भोलो छु, थानू पीण अबारू मला दाषल करस्या। तठ कुवरजी रीस कर न उठीया। हाथम सोनारो गुरजै हूती सौ प्रोहितजीरा माथाम दीवी ने कह्यौ—तु म्हारै सीरायैत मारधम हुवो तो विर माहाराजरै वलै कोय नही ? पीण राजवीयारै थाका सरीषा घणा छै। इसौ कहीयौ।]

ग घ—तदि ईतरायकमै (घ अतरामै) प्रोहित आदमी वीस-तीससु आवै छै। तदी (घ. तदी कुवर देष्यौ यौ कुण आवै छै ?) उमराव कह्यौ—ओ यापरा घररो प्रोहित छै। आपनै वारै वरसताई (घ ताई माहे) अणी राष्या छै। तदी प्रोहीत आपरा आदम्यासु पूछ्यौ—ओ कुण बैठो छै ? 'तदी आदम्या कह्यो—राजाजीरो बेटो रीसालुजी छै।' तदी प्रोहितजी षीज्या—छोकरानै अबारू ज काई हुवो छै ? महीना पाच 'पछै' नीकालणो। यो। '–' चिन्हित वाक्य एव शब्द घ प्रति में अनुपलब्ध है।

[–] ख ग घ प्रतियो में पाठभेद इस प्रकार है—

ख.—तठा उप्रत प्रोहीतजी आय(प) कुवरजीनु आसीर्वाद वीधो। तद प्रोहीतजी[नें] कहे—प्रोहीतजी ! थे मानु महीला माहे क्यु राष्या ? तद प्रोहीत बोल्यो-कुवरजी ! आपने करेडे नषीत्रे, कूर ग्रहे महीलामे राष्या। तद कुवरजी कहे—ना ना, मानु तो थे राष्या छे। जदी प्रोहीत कहे—जाओ, मे राष्या छे उने फेर रापसा। इसो सुण ने कुवरजीनु रीस चढी। हाथमे सोनारी गुरज हती तीणरी प्रोहीतरा माथामे दीधी।

ग घ—तदी प्रोहित 'आवौ' आसरीवाद दीधो। अतरायकमै (घ तदी) कुअरजी बोल्या—क्यु प्रोहितजी ! वारा वरसा ताई 'मानै' क्यु (घ थे) राष्या था ? तदी प्रोहित कह्यो—हु काई रापु, नपत्र प्रमाणै रह्या। तदी (घ तदी कुअर) कह्यौ—न, मानै तो थे राप्या छै। तदी प्रोहीत कह्यो—'ना' मै राष्या, नै फेर राष्या (घ. फर राष्या छै)। तदी कुअरजीनै रीस चढी। तदी हाथमै गुरज थी, तीणीरी माथामै पाडी (घ तीणरी उपाडनै माथामै दीधी।) '–' चिन्हित शब्द घ प्रति में अप्राप्त हैं।

A तरै प्रौयतजी डेरै थकसू डेर नाठा, सो रोही काणी नीसरचा। आगै माहाराज समस्तजी सीकार करनै आबारी छाह सरौव[र]री पालै विराजीया छै। तठै प्रोहीतजी जाय पूकार घाली—श्रीमाहाराजा! श्रीराज! आज कुमार महीला बारे नीकल्यौ नै सभा जोड न बेठा छै। तठै हु जाय नै सीप देतो छो, तठै कुवरजी रीस करनै माहारी आबरू गमाई नै माहैरै माथामै सोनारा गुरजैरी दीवी। तठै राजाजी सूणनै न रीस करनै बोलीया—देषो हो ठाकुर, अवार थकी माहरा प्रोहितरौ माजनौ गमायो, इसो त ईण पूत्र वीना इ सारसू, सोनारी छुरी पेटाम मारी न जाय, तो अबै कुअरनै काई करणौ। तठै प्रोहीतजी बोलीया—माहाराज! घरमे राषै सौ तो फेर कोई विघनकार हुसी। इणनै नीनाएौनै सीप देवो। तठै राजाजी बोलीया—माहरै इण कवररो काम नही, इएनै दसवटौ दैस्या। देसोटा वीना कवर पाघरो हूव नई। तठै उमरावा सूणनै श्रीमाहाराजनै कहैण लागाA—

दूहा— एवडी रीस नै कीजीयै, बनै वासै बहु दुष बै।
बालक वयम नानडौ, देषो मती हिव मूष बै॥ ४७
जो तुमै रीसवतां हूवा, तो राषो घर मांह बै।
पीएा दीसोटौ देवता, राजवीया नही राह बै॥ ४८
वस राज(जी)रो राषएगी, कुए धएगी आयत होय बै।
वनवास अती दुष घएगा, क्यां जांएगा क्या जोय बे। ४६
राजा सूएनै बोलीयो, मूष मूषतो माहरौ बोल दै।
नीसरचो ते साचो हूसी, साचो ओहीजै बोलै बे॥ ५०

A-A ख. ग. घ प्रतियो में निम्न लिखित पाठ है—

ख तद प्रोहीत जाय राजा पासे पुकार कीधी। तद राजा कहै—बारै नीकलीयां पहीलै दीन घररा प्रोहीतने हाथ उपाड्यो, पछे काई करसी? सोनारी छुरी तो पेट मारणी तो कहीं नही। माहरे इण बेटा सु काम नही।

ग. तदी ब्राह्मण राजा नषै गयो, कह्यो—माहाराज! रीसालु माहरै वीधी। तदी कह्यो—माहरै अण बेटासु काम नही। तदी कह्यो—अणनै म्हैलामैसु नीकलता तो वेला न हुई, दन पण को न हूवा अनै घररो प्रोहीत मारचो। अबै काइ जाणा काई करसी? ऐसो मनमै चीतव्यो अर राजा दरबार आया।

घ. तदी ब्राह्मण सगला राजा नषै गया, पुकारचा। तदी ब्राह्मण सगला बोल्या—माहाराज! म्हानै रसालु कुवर मोनै मारचौ। तदी राजा मनमै डरप्यौ—अबै काई जाणा काई करसी? इणीनै महलामै नीकलता कौईक दीन नही हुवा, तदी घरारा प्रोहितनै मारचौ।

जाणीयौ—जैहि पापी उहि ज कुकरमारो करणहार छै। इतैरा माहै प्रोहितजी सभाने देषने उला(ठा)पेला चाकरनै पूछीयो—ओ रे ! ओ छै(छो)करो कुण छै ? ईतरा आदमी कु बैठा छै ? तठै कुवचन सूणने चाकर बोलीया—प्रोहितजी ! श्रीमाहाराज कुवार दरीषाने पधारचा छै। तठै प्रोहित वोलीयो—अरै आज कुवर दरीषाणौ कीधौ, सू कोणरा हुकमसू कोधो छै ? B

[इसो चाकरानू सूणायनू बडी ठसक राष नै कुवरजी कनै आय नै वडी रीस कीधी नै कह्यौ—कुवरजी ! इसा उतावला हूवा सो तो मास इक घटै छै, पछै ही बारै आया हू ता। तठै कुमरजी बोलीया—प्रोहीत साहिबाजी ! थे मोनू बारै बरस ताई महलामै रापीया, ईसो काई कारण जाणीयो ? ततौ प्रोहितजी बोलीया—जे कुमरजि ! नक्षत्र ग्रहारी तरफसू काम करचौ छै नै मास इक घटै छै, सौ वलै मलैम राषस्या। तठै कुवरजी बोल्या—प्रोहितजी ! इतरा दीनै रचै हो सू घणी वात छै, अबै आपा सारू कोई नई। तठे प्रोहीत बोलीयो—आ वार तौ थाहरी कीतरीक वाता सारी वातम भोलो छु, थानू पीण अबारू मला दाषल करस्या। तठ कुवरजी रीस कर न उठीया। हाथम सोनारो गुरजै हूती सौ प्रोहितजीरा माथाम दीवी ने कह्यौ—तु म्हारै सीरायैत मारधम हुवो तो विर माहाराजरै वलै कोय नही ? पीण राजवीयारै थाका सरोषा घणा छै। इसौ कहीयौ।]

ग. घ—तदि ईतरायकमै (घ अतरामै) प्रोहित आदमी वीस-तीससु आवै छै। तदी (घ. तदी कुवर देष्यौ यौ कुण आवे छै ?) उमराव कह्यौ—ओ यापरा घररो प्रोहित छै। आपनै बारै वरसताई (घ ताई माहे) अणी राष्या छै। तवी प्रोहीत आपरा आवम्यासु पूछचौ—ओ कुण बैठो छै ? 'तदी आदम्या कह्यो—राजाजीरो बेटो रीसालुजी छै।' तदी प्रोहितजी षीज्या—छोकरानै अबारू ज कांई हुवो छै ? महीना पाच 'पछै' नीकालणो। थो। '–' चिन्हित वाक्य एव शब्द घ प्रति में अनुपलब्ध है।

[–] ख ग घ प्रतियो में पाठभेद इस प्रकार है—

ख.–तठा उप्रत प्रोहीतजी आय(प) कुवरजीनु आसीर्वाद दीघो। तद प्रोहीतजी[नें] कहे—प्रोहीतजी ! थे मानु महीला माहे क्यु राष्या ? तद प्रोहीत बोल्यो-कुवरजी ! आपने करेडे नषीत्रे, क्रूर ग्रहे महीलामे राष्या। तद कुवरजी कहे—ना ना, मांनु तो थे राष्या छे। जदी प्रोहीत कहे—जाओ, मे राष्या छे उनें फेर राषसां। इसो सुण नें कुवरजीनु रीस चढी। हाथमें सोनारी गुरज हती तीणरी प्रोहीतरा माथामे दीधी।

ग घ—तदी प्रोहित 'आवी' आसरीवाद दीघो। अतरायकमै (घ तवी) कुअरजी बोल्या—क्यु प्रोहितजी ! बारा वरसा ताई 'मानै' क्यु (घ. थे) राष्या था ? तदी प्रोहित कह्यौ—हु काई राषु, नषत्र प्रमाणै रह्या। तदी (घ तदी कुअर) कह्यौ—न, मानै तो ये राष्या छै। तदी प्रोहीत कह्यौ—'ना' मै राष्या, नै फेर राष्या (घ फर राष्या छै)। तदी कुअरजीनै रीस चढी। तदी हाथमै गुरज थी, तीणीरी मायामै पाडी (घ तीणरी उपाडनै मायामै दीधी।) '–' चिन्हित शब्द घ प्रति में अप्राप्त हैं।

A तरै प्रौयतजी डेरे थकसू डेर नाठा, सो रोही काणी नीसरचा। आगै माहाराज समस्तजी सीकार करनै आवारी छाह सरौव[र]री पालै विराजीया छै। तठै प्रोहीतजी जाय पूकार घाली—श्रीमाहाराजा! श्रीराज! आज कुमार महीला वारे नीकल्यौ नै सभा जोड न वेठा छै। तठै हु जाय नै सीप देतो छो, तठै कुवरजी रीस करनै माहारी आबरू गमाई नै माहैरै माथामै सोनारा गुरजैरी दीवी। तठै राजाजी सूणनै न रीस करनै वोलीया—देपो हो ठाकुर, अवार थकी माहरा प्रोहितरी माजनौ गमायो, इसो त ईण पूत्र वीना इ सारसू, सोनारी छुरी पेटाम मारी न जाय, तो अवै कुअरनै काई करणौ। तठै प्रोहीतजी वोलीया—माहाराज! घरमै राषै सौ तो फेर कोई विघनकार हुसी। इणनै नीनाणैनै सीप देवो। तठै राजाजी वोलीया—माहरै इण कवररो काम नही, इणनै दसवटौ दैस्या। देसोटा वीना कवर पाधरो हूव नई। तठै उमरावा सूणनै श्रीमाहाराजनै कहैण लागाA—

दूहा— एवडी रोस नै कीजीयै, बनै वासै बहु दुष वै।
बालक वयम नानडौ, देषो मती हिव मूष वै॥ ४७
जो तुमै रीसवतां हूवा, तो राषो घर माह वै।
पीण दीसोटौ देवता, राजवीया नही राह वै॥ ४८
वस राज(जी)रो राषणी, कुण धणी आयत होय वै।
वनवास अती दुष घणा, क्या जांणा क्या जोय वे। ४९
राजा सुणनै बोलीयो, मूष मूषतो माहरौ बोल वै।
नीसरचो ते साचो हूसी, साचो ओहीजै बोलै वे॥ ५०

A–A ख ग. घ प्रतियों में निम्न लिखित पाठ है—

ख तद प्रोहीत जाय राजा पासे पुकार कीधी। तद राजा कहै—वारै नीकलीयां पहीले दीन घररा प्रोहीतने हाय उपाड्यो, पछे काई करसी? सोनारी छुरी तो पेट मारणी तो कहीं नही। माहरे इण वेटा सु काम नही।

ग. तदी ब्राहमण राजा नषै गयो, कह्यो—माहाराज! रीसालु माहरै दीधी। तदी कह्यो—माहरै अण बेटासु काम नहीं। तदी कह्यो—अणनै म्हैलामैसु नीकलता तो वेला न हुई, दन पण को न हूवा अनै घररो प्रोहीत मारयो। अवै काइ जाणा काई करसी? ऐसो मनमै चीतव्यो अर राजा दरबार आया।

घ. तदी ब्राह्मण सगला राजा नषै गया, पुकारचा। तदी ब्राह्मण सगला बोल्या—माहा राज! म्हानै रसालु कुवर मोनै मारचौ। तदी राजा मनमै डरप्यौ—अबै काई जाणा करसी? इणीनै महलासै नीकलता कौईक दीन नही हुवा, तदी घरारा प्रोहितनै

उमरावा वरज्या घणा, राज न मान्यौ कोय वै ।
वीधना लेप हुवै तीकै, उ टले टलीया टलाय वै ।। ५१
होणहार सौही ज हूवौ, स्याणपथी क्या होय वै ।
राजा कोपे भी भरचौ, वरजण सकौ कोय वै ।।* ५२

१३ वारता—Aईण भातसू उमरावा घणाई वरजीया, पीण रीसरै वसै राजा वाद चढीयौ थकौ कालो घोडो, कालो सीरपाव लै नै आपरा जीव-जोगरा आदमीयानै साथै मेलीया न वले राजाजी कहीयो—करडावणै करै तौ माटी पणै काढेजो कुवरनै काढसौ, तद दरवारमै आवस्यौ ।A

B इतरो सूणनै सीरपाव ले नै दरवार आया । आगै कुवरजी आदमीयानै देप न सारी जूलसाई देपी । देपनै मनम विचारीयौ—दीस छै प्रौहितरो उपगार हुवौ । इतरो वीचार करता आदीमी कुवरजी साँमा आया नै मूभरो कीयो न वोलीया—श्रीमाहाराजरो हुकम हुवौ छै-आप श्री सीरपाव कीजो, इण घोड चडै नै वनम पधारोजै । इसा समाचार श्रीकवरजी सूणनै सारा ही साथसू मूजरो करी ने वोलीयौ—वावा ठाकुरै, वाईजी साहिवारो हूकम प्रमाण न करू तो हरामपोर वाजु, तीणसू आवै सारे ही साथसू राम राम छै, परमेसर मीलासी तरै मीलस्या । इतरो कन घोड असैवार हुवा नै सीरपावैसू हेत कीयो, राजारो मोह छोडीयौ । तरै आपरी धाय माता वलै पवास, पासवान सूनणै(णनै) दीलगीर हूवा पोचावान साथै चलीया । सारा ही नगरमै पवर हूई । हिवै कुवरजी सारा ही साथसू सेहररे दरवाजै आया । तठ आवै वीछडता आपरा सनैई कुवरजीनै कहै छै B—

---

* ४७ से ५२ सख्या वाले दोहे ख ग घ प्रतियो में अप्राप्त हैं ।

A–A. चिन्हान्तर्गत अश का पाठान्तर ख ग. घ. प्रतियो में निम्न रूप मे वर्णित है—

ख. इसो चीतवी राजाइ चाकरी साथे कालो घोडो, कालो सीरपाव, त्रीपानीयो बीडो मेलीयो, कहीजे—राजा मा जोग नही ।

ग. अर चाकर हाथ तीन पानको बीडो मोकल्यो । कालो घोडो, कालो सरपाव दे नै देसोटो दीधो–ये मा जोगा नही ।

घ. तदी राजा चाकरी हाथै तीन पानरो बीडो दीधो । तदी कालो घोडो, कालो सीरपाव दे नै सीप दीधी ।

B–B. ख. ग घ प्रतियो मे चिन्हित अश इस प्रकार है—

दूहा– सीधावौ सीघ करो, पूरौ थाहरी आस वे ।
जतन करैजौ मारगा, मानै कीधो नीरास वै ॥ ५३
राज विना दिन जावसी, सो इक मास समांन वै ।
पीण थे मानै मत भूलज्यो, थै म्हारे जीवन-प्राण वै ॥ ५२
थांसू कटती रातड़ी, रहती मैं धणीयात वै ।
हिव मे परवस होयस्यां, कीणसू करस्यां वात वै ॥ ५५
ईम केहतां आंसू ढल्या, वीलपा सारा साथ वै ।
कुवरजी मील मील रोईया, सहु हुवा अनाथ वे ॥ ५६
साथ घिरयौ पूठो हीवै, कुवरजी मारग जाय वै ।
मनमै चीत घीरपै, लेष विघाता आय वै ॥ ५७
देषो सूषम दुषै हुवौ, होणहार सौ होय वै ।

ही वेलारै राणी तो कठिन छै, पिण आपरै अ(प्र)साद सारो हि जाव हुय जामी ।

दूहा– गोरषनाथजीरी सेवा करी, दीधा पासा हाथ वे ।
जाउ कुवर रीसालू वा, वेगो परण घर आव वौ ॥A ५८

ख. तद चाकरे आय कुवरजीनु तसलीम कर वीडो नीजर कीधो। तद रसालुए जाण्यो—राजाइ मानु सीप दीवी दीसे छै। एसो वीचार आप वीडो वाद ने एकलो घोड़े असवार होयने चालीया। कीणहीने कह्यो नही। तीण समीए धाय जाय कुवरजीरी मातानें कहीयो—आज राजाजी कुवर रसालु उपर रीस कीवी, देसवटो दीघो। तद माता इसो सुण-ने पाणीपथो घोडो, तोवरा दोय मोहरासु भरने दीना। रसालु मातारा महीला नीचे होयने आगे नीकलीयो—तद माता रसालुने देपने काइ कहे छे—

ग तदी रीसालुनै तो आगमच पवर पडी–मोनै सीप दीधी। तदी कीणहीनै पुछ्यौ नही। एकलो असवार होवे नै चाल्या। माउनै ठीक हुई—रीसालु कवरनै देसोटो दीघो। तदी माउ ऐक पाणीपाथो घोडो दीघो। तोवरा दोअ मोहरारा भरे दीधा। रीसालु माउरा गोपटा नीचै नीकल्यौ। माता रीसालुनै काई कहे—

घ तदी कुणीनै पुछौ नही। तदी असवार होयनै एकलौ चाल्यौ। तदी माउ कणीनै पुछ्यौ। तदी धाय कह्यो—माउजी! कुवरजीनै देसोटौ दीधौ। माउ तदी घोडो १ पाणी-पथो दीधो। तोवरा दोय मोहराका दीधा। तदी रसालु मारा मैहला नीचै नीकल्यो। रसालु-नै माउ काइ कहै—

A ख ग घ प्रतियो में ५३ से ५८ तक के दोहों के स्थान पर गद्यपद्यात्मक अंश इस प्रकार उपलब्ध है—

उमरावा वरज्या घणा, राज न मान्यौ कोय बै ।
वीधना लेष हुवै तीकै, उ टले टलीया टलाय बै ।। ५१
होणहार सौही ज हूवौ, स्यांणपथी क्या होय बै ।
राजा कोपे भी भरचौ, वरजण सकौ कोय बै ।।* ५२

१३ **वारता**—Aईण भातसू उमरावा घणाई वरजीया, पीण रीसरै वसै राजा वाद चढीयौ थकौ कालो घोडो, कालो सीरपाव लै नै आपरा जीव-जोगरा आदमीयानै साथै मेलीया न वले राजाजी कहीयो—करडावणै करै तौ माटी पणै काढेजौ कुवरनै काढसौ, तद दरबारमै आवस्यौ ।A

B इतरौ सूणनै सीरपाव ले नै दरबार आया । आगै कुवरजी आदमीयानै देष न मारी जूलसाई देषी । देषनै मनम विचारीयौ—दीम छै प्रौहितरो उपगार हुवौ । इतरो वीचार करता आदीमी कुवरजी सॉमा आया नै मूभरौ कीयौ न बोलीया—श्रीमाहाराजरो हुकम हुवौ छै–आप औ सीरपाव कीजौ, इण घोड चडै नै वनम पधारोजै । इसा समाचार श्रीकवरजी सूणनै सारा ही साथसू मूजरौ करी नै बोलीयौ—बाबा ठाकुरै, बाईजी साहिवारौ हूकम प्रमाण न करू तौ हरामषोर वाजु , तीणसू आबै सारे ही साथसू राम राम छै, परमेसर मीलासी तरै मीलस्या । इतरो कन घोड असैवार हुवा नै सीरपावैसू हेत कीयो, राजारो मोह छोडीयौ । तरै आपरी धाय माता वलै षवास, पासवान सूनणै(णनै) दीलगीर हूवा पोचावान साथै चलीया । सारा ही नगरमै षवर हूई । हिवै कुवरजी सारा ही साथसू सेहररे दरवाजे आया । नठै आबै वीछडता आपरा सनैई कुवरजीनै कहै छै B—

---

* ४७ से ५२ सख्या वाले दोहे ख ग घ प्रतियो में अप्राप्त है ।

A–A चिन्हान्तर्गत अश का पाठान्तर ख ग घ. प्रतियो में निम्न रूप मे वर्णित है—

ख. इसो चीतवी राजाइ चाकरी साथे कालो घोडो, कालो सीरपाव, त्रीपानीयो बीडो मेलीयो, कहीजे—राजा मा जोग नही ।

ग अर चाकर हाथ तीन पानको बीडो मोकल्यौ । कालो घोडो, कालो सरपाव दे नै देसोटो दीधो–थे मा जोगा नही ।

घ. तदी राजा चाकरी हाथै तीन पांनरौ बीडौ दीधौ । तदी कालौ घोडौ, कालौ सीर-पाव दे नै सीष दीधी ।

B–B ख ग घ प्रतियो मे चिन्हित अश इस प्रकार है—

दूहा– सीषावौ सीष करो, पूरौ थाहरी आस वे ।
जतन करैजौ मारगा, मानै कीयो नीरास वै ।। ५३
राज विना दिन जावसी, सो इक मास समांन वै ।
पीण थे मांनै मत भूलज्यो, थै म्हारै जीवन-प्राण वै ।। ५२
थांसू कटतो रातड़ी, रहती मै घणीयात वै ।
हिव मे परवस होयस्यां, कीणसू करस्या वात वै ।। ५५
ईम केहतां आंसू ढल्या, वीलपा सारा साथ वै ।
कुवरजी मील मील रोईया, सहु हुवा अनाथ वे ।। ५६
साथ घिरयौ पूठो हीवै, कुवरजी मारग जाय वै ।
मनमैं चीत धीरपै, लेष विधाता आय वै ।। ५७
देषो सूषम दुषे हुवौ, होणहार सौ होय वै ।

ही वेलारै राणी तो कठिन छै, पिण आपरै अ(प्र)साद सारो हि जाव हुय जामी ।

दूहा– गोरषनाथजीरी सेवा करी, दीधा पासा हाथ वे ।
जाउ कुवर रीसालूंवा, वेगो परण घर आव वै ।।A ५८

ख. तद चाकरे आय कुवरजीनु तसलीम कर बीडो नीजर कीधो। तद रसालुए जाण्यो—राजाइ मानु सीष दीधी दीसे छै। एसो वीचार आप बीडो वाद ने एकलो घोडे असवार होयने चालीया। कीणहीने कह्यो नही। तीण समीए धाय जाय कुवरजीरी माताने कहीयो—आज राजाजी कुवर रसालु उपर रीस कीधी, देसवटो दीधो। तद माता इसो सुणने पांणीपंथो घोडो, तोवरा दोय मोहरासु भरने दीना। रसालु मातारा महीला नीचे होयने आगे नीकलीयो—तद माता रसालुने देषने काइ कहे छे—

ग तदी रीसालुनै तो आगमच षवर पडी–मोनै सीष दीधी। तदी कोणहीनै पुछ्यौ नही। एकलो असवार होवे नै चाल्या। माउनै ठीक हुई—रीसालु कवरनै देसोटो दीधो। तदी माउ ऐक पाणीपायो घोडो दीधो। तोवरा दोअ मोहरारा भरे दीवा। रीसालु माउरा गोपडा नीचै नीकल्यौ। माता रीसालुनै काई कहै—

घ तदी कुणीनै पुछी नही। तदी असवार होयनै एकलो चाल्यौ। तदी माउ कणीनै पुछ्यौ। तदी धाय कह्यो—माउजी ! कुवरजीनै देसोटो दीधो। माउ तदी घोडो १ पांणीपंथो दीधो। तोवरा दोय मोहराका दीवा। तदी रसालु मारा मैहलां नीचै नीकल्यो। रसालुनै माउ कांइ कहै—

A ख ग घ प्रतियो में ५३ से ५८ तक के दोहो के स्थान पर गद्यपद्यात्मक अश इस प्रकार उपलब्ध है—

ख दुहा—पीउ रे दुध रसालु आ, रुडा रे सुकन मनाय बे।
रसालु चाल्या परणवा, वेग परणी घर आय बे॥ ७

रसालुवाक्य

माय वीडाणी पीता पारका, हम ही वीडाणा जाय बे।
षेवटीयाकी नाव ज्यु, कोइक सजोग मीलाय बे॥ ८

तद माता मृग प्रते काई कहे छे—

काला रे मृग उजाड का, रसालु पाछा फेर बे।
सोवन सीग मढावसु, गले रुपारी डोर बे॥ ९

रसालुवाक्य

हीरण भला केहर भला, सुकन भला के सोम बे।
उठो र अरजुन बाण ल्यो, सीध करे श्रीराम बे॥ १०

वारता—इतरो कहे रसालु आघा चाल्या। वनषड सारु षडीया। आगे वनगहनमे जाता सध्या समीए डुगर उपर आग बळती दीषी। तरे रसालु घोडो तले ही बाधी, डुगर उपर पालो चढीयो। उचो चढने श्रीगोरषनाथजीनु भेटचा। तद श्री गोरषनाथजी तुष्टमान हुआ, कहीयो—आव बचा! माग मांग, हु तुठो। तदी रसालु कहे—माहाराजा साहीब! आपरी दीधी सारी दोलत छे, पीण समुद्ररे पेले काठे राजा अगजीत राज करे छे, तीण अगजीतरी बेटी परणु, सो वर द्यो। तद श्रीगोरषनाथजी अनलपषीरी नलीरा पासा दीधा; जा बचा! तु इण हमारा पासासु चोपड षेलजे; तु जीपसी। रसालुए तीन सलाम कर पासा उरा लीधा।

दुहा—गोँरपनाथजी सेवा करी, लीधा पासा हाथ बे।
जाज्यो कुवर रसलुआ, वेगा परणी घर आव बे॥ ११

ग दुहा—पीया दुध फली करो, (रीसालु वा) रूडा सुकन मनाय बे।
रीसालु चाल्यौ परणवा, वेग परण घरी आव बे॥ ३

रीसालु मातानै फेर पाछो काइ कहै—

दूहा—माय षीडाणी बाप वड, हम ही माझ वडा।
षेवटीयाकी नावजु, कोईक सजोग मीलाव बे॥ ४

मातावायक—

दूहा—काला मृग उजाडका, रीसालु पाछा फेर बे।
सोवन सीगी मढावसु, रूपाकी गल डोर बे॥ ५

तदो रीसालु मृगनै काइ कहै—

दूहा—हीरण भला कैहर भला, सुकन भला कै स्याम बे।
उठो उरजण वाण ल्यो, सारैगा सव काम बे॥ ६

अथ वात- ईतरी वात अतरो कहै रीसालु आघो चाल्यो। आगै देषै तो रीसालु डुगरी उपरै आग वलै छै। वलती दीठी तदी डुगरी चढयौ। पल मेल्या थका गोरषनाथजी बैठा छै। पगे लागा। गोरषनाथजी कह्यो—रे वच्चा! माग, माग, तुष्टमान हुवा। तदी

[१४ वारता—ईसौ समाचार सूणनै श्रीगोरपनाथजीरे पगे लागी नै कुवरजी घोड चढनै प्रभाते चालीयो । सो समद्र तीरै गया । तठै समुद्रै उपर पाणीपथो घोडो चलायो सौ पार पूहता ।

रीसालु कह्यो--माहाराज ! आपरी दीधी सारी दोलत छै, पिण एक मागु छु—समुदररै पैले कानै राजा आगजीत छै, तीणरी वेटी हूं परणु । तदी गोरपनाथजी नलीरा पासा काढनै हाथ दीधा । अणी पासासू पेलजे । जा वचा ! जीतसी । तदी रीसालु पगे लाग नै पासा लीधा ।

गोरपनाथजीवाक

दुहा—गोरपनाथजीरी सेवा कीधी, दीधा पासा हाथ वे ।
जा जा कुवर रीसालुवा, वेग प[र]ण घर आव वे ।। ७

व दुहा—पीया दुवा थली करो, (रसालु) ऊठा हीसु सुकनवा दीचे वे ।
रीसालु चाल्यो परणवा, वेग परण घरी आव वे ।।

तदी रीसालु माउनै कांइ कहे—

माय वडारण वाप वड, हम ही माह जी वडा ।
पेवटीया पीवै नाव ज्यु, कोइ क मजोग मीलीया ।। ३

तदी माता मृगलानै काइ कहै—

काला मृग उजाडका, रीसालु पाछो फेर वे ।
सोवन सींग मढावसु, रूपाकी गल डोर वे ।। ४

तदी रीसालु फेर काई कहे—

दूहा—हरण्या भला केहरी भला, सुणी भला कै स्याम वे ।
उठो राजन वाण ल्यो, सरंगा सव काम वे ।। ५

अतरा वोल वचन कहे नै आघो चाल्यौ । आगै डुगर उपरै आग वलै छै । आग वलती दीठी तदी डुगर उपरै चढयौ । तदी गोरपनाथजीनै दीठा । तदी एक पगवराणी सवा पोहर ताई सेवा कीधी तदी गोरपनाथजी पल उघाडी नै कह्यौ—रे वचा ! तु वैठ । तदी रसालु पगा लागो । तदी गोरपनाथजी तुस्टमान हूवा । तदी रसालु वोल्यौ—माहाराज ! आपरी दीवी भारी दौलत छै, पीण एक वात मांगु छू—समुद्रतटे अपजीत राजारी वेटी हु परणु । तदी गोरपनाथजी नलीरा पासा करे दीधा । अणी पासासु पेलजे, जा वचा ! जीतसी । तदी गोरपनाथजीकै पगे लागी, पासा लीधा । तदी गोरपनाथजी काई कहै—

गोरपनाथजीवाक

दुहा—गोरपनाथजीरी सेवा कीधी, दीधा पासा हाथ वे ।
जा वचा तु जीतसी, वेगी जीत घर आव वे ।। ६

ख दुहा—पीउ रे दुध रसालु आ, रुडा रे सुकन मनाय बे।
रसालु चाल्या परणवा, वेग परणी घर आय बे॥ ७

रसालुवाक्य

साय वीडाणी पीता पारका, हम ही वीडाणा जाय बे।
षेवटीयाकी नाव ज्यु, कोइक सजोग मीलाय बे॥ ८

तद माता मृग प्रते काई कहे छे-

काला रे मृग उजाड का, रसालु पाछा फेर बे।
सोवन सींग मढावसु, गले रुपारी डोर बे॥ ९

रसालुवाक्य

हीरण भला केहर भला, सुकन भला के सोम बे।
उठो र अरजुन बाण ल्यो, सीध करे श्रीराम बे॥ १०

वारता—इतरो कहे रसालु आघा चाल्या। वनषड सारु षडीया। आगे वनगहनमे जाता सध्या समीए डुगर उपर आग बळती दीषी। तरे रसालु घोडो तले ही बाधी, डुगर उपर पालो चढीयो। उचो चढने श्रीगोरषनाथजीनु भेट्या। तद श्री गोरषनाथजी तुष्टमान हुआ, कहीयो—आव बचा! माग माग, हु तुठो। तदी रसालु कहे—माहाराजा साहीब! आपरी दीधी सारी दोलत छे, पीण समुद्ररे पेले काठे राजा अगजीत राज करे छे, तीण अगजीतरी बेटी परणु, सो वर द्यो। तद श्रीगोरषनाथजी अनलपषीरी नलीरा पासा दीधा; जा बचा! तु इण हमारा पासासु चोपड षेलजे, तु जीपसी। रसालुए तीन सलाम कर पासा उरा लीधा।

दुहा—गोरषनाथजी सेवा करी, लीधा पासा हाथ बे।
जाज्यो कुवर रसलुआ, वेगा परणी घर आव बे॥ ११

ग दुहा—पीया दुध फली करो, (रीसालु वा)रूडा सुकन मनाय बे।
रीसालु चाल्यो परणवा, वेग परण घरी आव बे॥ ३

रीसालु मातानै फेर पांछो काइ कहै-

दूहा—माय षीडाणी वाप वड, हम ही माफ वडा।
षेवटीयाकी नावजु, कोईक सजोग मीलाव वे॥ ४

मातावायक-

दूहा—काला मृग उजाडका, रीसालु पाछा फेर वे।
सोवन सींगी मढावसु, रूपाकी गल डोर बे॥ ५

तदो रीसालु मृगनै काइ कहै-

दूहा—हीरण भला कैहर भला, सुकन भला कै स्याम वे।
उठो उरजण वाण ल्यो, सारंगा सव काम वे॥ ६

अथ वात- ईतरी वात अतरो कहे रीसालु आघो चाल्यो। आगं देषे तो रीसालु डुगरी उपरै आग वलै छै। वलती दीठी तदी डुगरी चढ्यो। पल मेल्या थका गोरषनाथजी वैठा छै। पगे लागा। गोरषनाथजी कह्यो—रे वच्चा! माग, माग, तुष्टमान हुवा। तदी

[१४ वारता—ईसी समाचार सूणनै श्रीगोरपनाथजीरे पगे लागी नै कुवरजी घोड चढनै प्रभाते चालीयो। सो समद्र तीरै गया। तठै समुद्रै उपर पाणीपथो घोडो चलायो सौ पार पूहता।

रीसालु कह्यो--माहाराज ! आपरी दीधी सारी दोलत छै, पिण एक मांगु छुं—समुदररै पैलै कानै राजा आगजीत छै, तीणरी वेटी हूं परणु। तदी गोरपनाथजी नलीरा पासा काढनै हाथ दीधा। अणी पासासू पेलजै। जा वचा ! जीतसी। तदी रीसालु पगे लाग नै पासा लीधा।

गोरपनाथजीवाक

दुहा—गोरपनाथजीरी सेवा कीधी, दीधा पासा हाथ वे।
जा जा कुवर रीसालुवा, वेग प[र]ण घर आव वे ॥ ७

घ दुहा—पीया दुवा थली करी, (रसालु) ऊठा हीसु सुकनवा दीवे वे।
रीमालु चाल्यौ परणवा, वेग परण घरी आव वे ॥

तदी रीसालु माउनै कांइ कहै—

माय वडारण वाप वड, हम हीं माह जी वडा।
पेवटीया पीवैं नाव ज्यु, कोइ क संजोग मीलीया ॥ ३

तदी माता मृगलानै काइ कहै—

काला मृग उजाडका, रीसालु पाछो फेर वे।
सोवन सींग मढावसु, रूपाकी गल डोर वे ॥ ४

तदी रीसालु फेर काई कहे—

दूहा—हरण्या भला कैहरी भला, सुणी भला कै स्याम वे।
उठो राजन वाण ल्यो, सरैगा सव काम वे ॥ ५

अतरा वोल वचन कहे नै आघो चाल्यौ। आगै डुगर उपरै आग वलै छै। आग [illegible]
दीठी तदी डुगर उपरै चढयौ। तदी गौरपनाथजीनै दीठा। तदी एक पगवगणो [illegible]
ताई सेवा कीवी तदी गौरपनाथजी पल उघाडी नै कह्यो—रे वचा ! नु [illegible]
रसालु पगा लागौ। तदी गौरपनाथजी तुस्टमान हूवा। तदी रसालु वोल्यो—[illegible]
आपरी दीवी भारी दौलत छै, पीण एक वात मागु छू—समुद्रतटै अपजीत [illegible]
परणु। तदी गौरपनाथजी नलीरा पासा करे दीधा। अणी पासासु पेलजै, [illegible]
जीतसी। तदी गौरपनाथजीकै पगे लागौ, पासा लीधा। तदी गौरपनाथजी काइ [illegible]

गोरपनाथजीवाक

दुहा—गोरपनाथजीरी सेवा कीधी, दीधा पासा हाथ वे।
जा वचा तुं जीतसी, वेगो जीत घर [illegible]

दूहा– समूद्रं घोडै चालीयौ, पांणीपथौ जाय बै ।
नीरै आय न उतरयौ, नगर नणै निरषाय बै ।। ५६
हिवे कुवरजी हालीया, आया नदीया मझार बै ।
आगै अचभम देषीयौ, चमक्यौ चित मझार(बै) ।। ६०

१५ वारता—इतरे कुवरजी नदीमै आया । आगै देषो तो घणा रूड-मूड मिनपारा माथा पडा देषीया । तठै कूवरजीनै रूड-मूड माथा हसीया । तठै कुवरजी वोलीया—रे रूड-मूड ! हसीया, जिणरौ कारण वतावो । तठै माथा कहै—

दूहा– कुण तु इहा आयो अठै, किण ठामैं किण ठोर बै ।
कीहाथी आयो कीहा जावसी, साह अछै किनू चोर बै ।। ६१
इण देसै तु आवीयौ, माणसषाणौ देस बै ।
ओ सोर ताहरो तूटसी, तुम हमरा कन पडसी आय बै ।। ६२
इण कारण हसीया अमे, अब तु ताहारो बोल बे ।
मे साचा तुझनै कही, चोकस थारी पोल बे ।। ६३]

[—] १४ वीं, १५ वीं वारता तथा ५६ से ६३ तक के दूहो का पाठ ख ग घ प्रतियो में निम्नाङ्कित है—

ख वारता– रसालु सलाम कर नीचो उतरचो । इतरे प्रभात हूओ । घोडे चढ आघो चाल्यो । चालता चालता कीतरेके दीनें समुद्र आयो । नावमे बेसने समुद्र पार उतरचा । आगे अगजीतरो देस आयो । आगे चालता राजा अगजीतरो सहीर आयो । तीण सहीर कनारे रसालु गया । दरवाजा कने मनषारा माथा पडचा छे । तीके माथा रसालुने देष ने हसवा लागा । रसालु पूछचो—थे क्यु हसो छो ? माथा कहे—इतरा माथामे थारो मायो आवे पडसी ।

मस्तकवाक्य

क्यु चाल्यो रे मानवी, माणसषाणा देस वे ।
ओ सीर थारो तुटसी, आय पडसी हम पास वे ।। १२

ग अथ वारता– अतरायकमै रीसालु असवार होवेनै चाल्या । चाल्या चाल्या समुद्र पार हूवा । तदी अगजीत राजारो सैहर आयो । आगे देषै तो मनषारा माथा पडचा छै । जके माथा रीसालुनै देप नै हसवा लागा । तदी रीसालु कह्यो—थे क्यु हसौ छौ ? तद मुडीक्या कह्यौ–माका अतराका माथा पडचा छै, तणीमैं थारो पीण मायो पडसी । तदी मुडका फेरे रीसालुनैं काई कहे—

मुडीवाक्य

दुहा– काहा चालो रे राजवी, माणसपाणो गाम वे ।
सीर थारो पीण तुटसी, तु आसी माहरी ठाम वे ।। ८

१६ [वारता—ईसा समाचार कुवरजी सूणनै माथानू कहै छे—हु तो अगग्जी राजारी वेटी परणवा आयौ छु, राजा समस्तरो वेटौ छु। अठै माथा वढ छै, तिणरो कारण काई छे ? तठै माथा कहै छै—अरे रीसालू कवर ! राजारा पोलरा मूढ आगै नोवत द(ड)कौ देवै छै, सो हार-जीत कर छै। हारै, तिणरौ माथो वाढनै अठै नाप छै। सो इतरा माथा इण रीत भेला हुवा छै। सू इतरा माहलो काई जीतो नही। सो तु पीण जीतौ कोई नई।]

तठै कुवरजी माथानू कहै[1] —

दूहा– म्है[2] राजा राजवी, म्है[3] रावां उमराव[4] वै।
के तो सीर द्यां आपणौ, क राजारो ल्याय वै ॥ ६४
म्है मारचा किण रामरा, ईण रीतै ईण ठोर वै।
जीतने परण्या सूदरी, राजासू कर जोर वै ॥[5] ६५

१७ वारता—इसा समाचार माथानूं कह न चाल्या सहर तुरत। सेहरमै जाय नै किल्लेरै दरवाजे जाय ने उभा रहिया। नोवतरो डको दीयो। एक दोय डको देन प्रमाण राजा माहै सूण्यौ। मनमै जाणीयो—कोई क तौ आजै राजा फेर आयौ छै। मनमै राजी हूवौ अवार जीत लेसू। इतरै रीमालूरौ डकौ सूणत प्रमाण राजा अगरजीतजी जाणीयौ कोई क तो रमवावालो आयौ। तठै राजा वार नीकल नै नोवतपान आयौ। कवरजी मुझरौ कीयौ, माहोमाह मीलीया। राजा अगरजीत पूछीयौ—कठासू आया, कीणरा वेटा नै थे क्यू आयाछौ ? तठै रीसालू बोलीयौ—माहाराज ! सेरसू आयो छु। राजा समस्तजीरौ वेटो छु। माहरौ नाम रीमालू छे। थासू चोपड जीतवा आया छा। ईसो कहीयो।[6]

घ तदी रसालु असवार हूई चाल्या। रसालु समुद्रा पेसार हुवा। तदी आगै अपजीत राजारो सैहर आयो। तदी अगजीत राजारा सेहर पाघती मनुपना माथा पड्या छै। तहा रसालुनै देखी नै हस्या। तदी रीसालु कहियौ—थे कु हस्या ? अतरा माका माथा पड्या छै, पणयमाको पणायौ अठै पडसी। फेर मुड्याख्या काई कहै—

दुहा– काहा चाल्या वे राजवी, माणसखाणो गाम वे।
सीर थारो पीण तुटसी, तु आवसी ईण ठाम वे ॥

[—] कोष्ठान्तर्गत पाठ ख ग घ प्रतियो में अप्राप्त है।

१ ख रसालु वाक्य। ग तदी रीसालु मुडीक्यानै काई कहै। घ तदी रीसालु काई कहै। २. ख मे। ग मेह। ३ ख में नहीं है। ग मेह। ४ ख उपरला राव।
ग घ उपरलो राव। ५. यह दूहा ख ग घ प्रतियो में अप्राप्त है। ६ १७वीं वार्ताका गद्यांश ख. ग घ में इस प्रकार है—

तठे राजा अगरजीत विछायत कराय ने चोपड मगाई। रमवा बेठा तठै हारजीत कीवो। कुवरजी कैहै—म्हे हारा तौ पाणीपथौ घोडौ परा देवा, थे हारो तो ईसडौ घोडो उरो लेवा। इसो कोल करनै रमवा बैठा। तठै राजा अगरजीत बोलीयौ। पछै दूजी रामत वले माडी। तठै राजा अगरजीत बोलीयौ-तठै सीरपावरो साटौ कीयौ। तठे वले कुवरजो हारीया। तठै तीजी रामत माडी। तठै राजा अगरजीत बोलीयौ—अबै कांई हार-जीत करस्यो ? जौ म्हौ हारीयौ तौ माहरौ माथौ थे लीजौ न थे हारीया तौ थाहारौ माथौ मे लैस्या। ईसी हार-जीप कीवी। तठै कुवरजी वोलीया—दूरस छै। आप कहौ सौ परमाण छै। पिण आव(प)तो मोटा छै। इण वातरौ लीषत करवौ, साष घालौ। तठै राजा अगरजीतजी लीषत करायौ। हार-जीत करा सू सघ लीया। तठै कुवरजी लघु-लाघवी कला सू गोरपनाथजीरा पासा काढ मेलीया, आगला छीपाय लीया। हिवै सायदवाला आयने वेठा छै। जीवततम भूठ बोलै नही, भूठी साष भरे नई। इसडा आदमी षाणदानरा बेठा छै। तठै दोनू ही चोपड रमता कुवरजी श्रीगोरष-नाथजीरा परतापसू जीतीया। सारा ही साप भरी।

ख. रसालु इतरो कहे ने सेहर माहे गया। नोबतषाने जाय डको दीधो। फेर दोय, तीन डका दीधा। षेलवाकी तलासमे रहे। जद राजा अगजीत जाण्यो—आज दोय तथा तीन जणा षेलणनु आया दीसे छे। जद राजा अगजीत जीमतो उठी रसालु कने आया, जुहार कर मील्या।

ग अथ[1] रीसालु कह्यौ[2] अर[3] आघा[4] चाल्या[5] सेहरमै आया,[6] दरबार आव्या[7], नोबत नषै गया[8]। कोई राजासु षेलवा आवे, 'ततरा डाका नगाराकै दें', जतरा[9] जाणै[10] षेलवा आव्या[11]। तदी रीसालू[12] जाता ही[13] डाका दीधा। [तदी राजा अगजीत जाण्यो-आजे जणा दोअ–तीन षेलवा सारू आया दीसै छै।] तदी राजा जीमतो[14] उठ्यो, रसालु नषे आया।

घ १ अतरो। २ कहै राजा। ३ नहीं है। ४ आघो। ५ चाल्यो। ६ रसालु सेहरमै आव्यो। ७ गयौ। ८ दरीषानै जाय बैठो। '–' जदी दोय तीन डाका दे। ९ तदो। १० जाणै कोई राजासु। ११ आयो छै। १२ रसालु। १३ जाय दोय तीन [—] नहीं है। १४ जीमता।

— ख ग घ प्रतियोमें चिह्नित अश निम्न रूप में प्राप्त है—

ख पछे ख्याल माडीयो। तद रसालुए पेलो रामत तो घोडो हारयो। बीजी बाजी मोरारा तोबरा दोय हारया। तीजी बाजी फेर माडी। तद रसालुए राजारा पासा परा छीपाया। श्रीगोरषनाथजीरा दीधा पासा काढया। राजा अगरजीतने कहे—अवे कीण वातरी हार-जीप करसा ? तद रसालु कहे— माथारी हार-जीप करसा। तीजी बाजी रमता एका रसालु जीतो।

[तठै कुवरजी बोलीया—हिवै माहाराज माथो दीरावो। तठै राजाजी बोलीया—म्हारो माथो परो देसू थानै, पिण आप राजी हूवौ तो राजलोकसू मीलीयावू। तठै कुवरजी बोलीया—दुरसै छै, भलाई मीली आवौ। ईतरो सूणनै राजाजी माहै गया। राणीयासू मीलीया। सारी हकीकत कही। तठै राणी दलगीर हुई। तरै राजाजी दुहौ कहै छै]—

दुहा— उची मीदर मालीया, अवल सेभ्कडली रूप वै।
रिद्ध भडार ए देसडो, तो सरसी रांणी नृप वै ॥[1] ६६
सारा विडाणा हिव हूवा, जासी हमारा सीस वै ॥
सीस घणारा डूचीया, अव आया मूझ चोर वै ॥[2] ६७

राणीवायक्य[3]

किणस्यू[4] राजा थे रम्या,[5] किणथी वाजी अनूप वै[6]।
मै थानू[7] राजा[8] वरजीया, मति[9] षेलौ वाजी[10] भूप वै ॥ ६८

राजावायक[11]

होणहार सौ[12] नही मिटै[13], लेष लिष्या छैठी[14] रात वै।
भलो वूरो[15] सहु मांहरौ[16], करसी विधाता मात वै ॥[17] ६९

ग घ ख्याल माडचो (घ दरीयाना उपरै चौपड माडी, ख्याल माडचौ)। पहलि तो (घ तदी पैहला तो) घोडो हारचौ। पछै मोहरारा भरचा दोय तोवरा हारचा (घ पछै तोवरा दोय मोहराका हारचौ) तीजी (घ पछै तीजी) वाजी माडी। राजारा तो पासा छपाडे मेल्या (घ छीपाडे राख्या)। गोरषनाथजीरा दीवा (घ गोरषनाथजीरा) पासा काढचा। तदी कह्यौ—अवै काई लगावस्या (घ पछै ख्याल माडचौ। राजाजीरो मायौ लगायौ। रसालु कह्चौ—हु पीण मायो लगावसु)। तीजी वाजी रीसालु जीता (घ तदी रसालु वाजी जीत्या।)

[—] कोष्ठवर्ती अश ख ग. घ में निम्न रूप में वर्णित है—

ख तद राजा अगजीतने रसालु कहे—यागे मायो दीयो। राजा कहे—मायो त्यार छै, पीण थे एक वार मनु राजलोकमे जाणद्यो। रसालु कहे—भलाई पीधारो। जद अगजीत राजालोकमे जाय राणीने काइ कहे छे। राजा वाक्य—

ग घ तद राजानै कह्यौ—मायो ल्यावो (घ ल्याव)। तदी (घ. तदी राजा) कह्यौ—ऐक वार (घ मोनै एक वार) राजलोकामै जावण द्यो (घ. जावा द्यो)। तदी रीसालु कह्यौ—भला (घ. में नहीं है)। तदी राजा आगजीत कह्यौ—हु छु, राजा चाल्यो (घ तदी राजलोकमै जाय कहै। अगजीतवाक्य

१ २ ख ग घ. प्रतियोमें उक्त दोनो दूहो के स्थान में निम्न एक ही दूहा उपलब्ध है—

ख उचा महिल[18] आवास हे, गया हमारा छूट[19] वे।
सीर हमारा जीतीया, आया परपडी[20] चोर वे ॥

३ ख राणी वाक्य। ग. घ. राणी (घ. तदी राणी) काई कहै। ४. ख. ग घ कीण

समस्तसूत[1] रीसालूबो[2], श्रीपूरनगरका राव बे।
षेलत वाजी हारीयौ[3], जीता[4] हमारा डाव[5] बै ।।[6] ७०

राणीवायक[7]

राणी कहै सूण रावजी,[8] म[9] करौ चिंता[10] काय[11] बै।
सू कलीणी हू[12] बुध थी,[13] काज करेस्यू समाय बै[14] ।। ७१

१८ वारता—Aईसो राजानै राणी कहीयौ। राजी राजी हूवौ। तठै राणी आपरी दासीनै बोलाय नै कहै—समस्तरायरौ बेटै रीसालूनै जायने केहजे—श्रीकुवरजी साहैवा! राणीजी कहै छै-माहरी वडकुमारपुत्री आपनै दीधी, आप परणीज ने घरे पधारौ। माहाराज कुवर! भला ही पधारया मारो भाग जाग्यो, मार तो राजा वाला सगा छो, येक मारी कीन्या परणौ। ईमौ सूणने वडारण वारे आय नै कुवरजीनू कहीयौ—माहाराजकुवार! राणीजी आपन आसीस कहिछै ने वडी बेटी अनै इनात कीवी छै, सौ आप परणीजौA।

नवं। ५ ख राजींद हारीया। ग घ राजा हारीयो। ६ ख कीणने दीया अनुप बे। ग घ कीण नवं दीआ सीस बे। ७ ख थाने। ग घ तोनै। ८. ख राजींद। ९ ख ग घ मत। १० ख ग घ तुम। ११ ख ग राजा वाक्य। १२ ख ग सो (ग तो) राणी। १३ ख मीटे। ग मटै। १४ ख ग लेष (ख लेषे) लीष्या (ग लष्या) छठो। १५ ग भला बुरा। १६ ग माहरा। १७ यह दूहा घ प्रति में नहीं हे।

१८ ग. घ म्हेल। १९ घ छुट। २० ग. पड। घ षग।

१ ख ग समसतसुत। २. ख रसालुआ। ग रीसालुआ। ३ ख हारीया। ग जीतीयो। ४ ख उण जीत्या। ग जीत्या। ५. ख. ग सीस। ६. यह दूहा घ मे अप्राप्त है। ७ ख राणीवाक्य। ग तदी राणी काई कहै—दूहा। घ में नहीं है। ८ ख ग घ राजवी। ९ ख थे मत। ग घ मत। १० ग घ सोच। ११ ख ग घ राज। १२ ग हू सुकलीणी। घ जौ सुकलीणी। १३ ख ग घ असतरी। १४ ख तो करु तुमारो काज वे। ग घ करू तुमारा काज वे।

A–A ख चिन्हित अंश ख ग ग में इस प्रकार हैं–राणी राजा प्रते इसो कहेने दासीने बुलाई कहीयो—थु जाइने रसालुने कहे—कुवरजी! थे राजारो माथो लेने काइ करमो? राजा अगजीतरी बेटी परणो। तरे दासी आय रसालुने इसो जाव कह्यो।

ग राजा राणीनै ऐसो कह्यो। दासीनै बुलावै कह्यो—रसालु नवं जा कंहजे-माहाराज! भला पधारया, माहरे माथै भाग्य, आप पधारया तो कन्या परणो।

घ तदी राजानै कह्यो। कहे नै दासीनै बुलाई। रसालु नवं जाय कहे—ज्यों माहाराज! भला पधारीया, माहरे माथे भाग्य, राज! कन्या परणो।

[कुवरजी इसी सोणने बोलीया—थे कहो सो परमाण छै। पिण मार एण वातरी पूस कोई नई ने वलै कुवरीनी मथै घणा आदमी मूवा, सौ आ कुवरी माहा पापणी छै, सौ म्हे इणरो मूढो देपा नई। इसी सूणन दासी पाछी जायनै राणीनै हकीकत कही। तठै वलै दासीनै राणी कह छै—जा, तु कवरजीन कजै—श्रीमाहाराज कुवार! परणीजो, न आप माथो लेस्यो तीणनै आपने हाथमे काई आवसी? माहरो राज पराव हूय जासी। आप सगै छो, पत्रीवस छो। इतरो अरजै माहारी मानो। तठै कुवरजीनै दासो सारा समाचार कहीया। तठै कुवरजी बोल्या—दुरस छै, पिण ईन तो म्हे कोई परणोजा नही नै दुसरी कवरो हूव तो परणाय देवो, नही तर मै परा जासा। तठै दासी बोली—माराज-कुवार! दुजी तो वेटी मास दसरी छै, सो वालक छै। तिका थानू परणावा कूकर? तठै कुवरजी बोला—मानै दस मासरी डीकरी परणावोजो। म्हारे कोइ अटकाव नही।]

A तठै दासी सूणनै राणीनै कहौ। तठै राणी मास दस री कन्यारो व्याव कीनो। घणा कोड कीया। सूसरै जमाइनै घणौ प्यार वध्यौ। हीव कुवरजी दिन २० रह्य सीप मागी। नठै राजाजी वोल्या—कुवरजी माहव! इतरा वेगा पधारो, निणरो काइ जाव जाणीजै? तठै कुवरजी कहीयौ—श्रीमाहाराज धीरजै,

---

[—] ख. ग घ प्रतियो में निम्नाङ्कित पाठ है—

ख. तद रसालु कहे—इण हत्यारीरो नाम मत लीयो। इणरे वास्ते घणा पुरस मुआ छै। सो नहीं परणा। तदी दासी कहे— मे तो कन्या परणावारे वासते करता हता। माथो लीया राजरे हाये काइ आवसी? अर ओ गुनो माने बगसीस करो अर आप परणो। रसालु कहे—आ तो कन्या न परणा। दुजी वे तो परणा। इसो समाचार दासी आय राणीनु कह्यो। राणी कहे—दुजी कन्या तो मास छरी छै। सो परणे तो परणावां। दासी जाय रसालुने कह्यो—दुजी कन्या तो मास छरी छै। तदी रसालु कहे उवाहीज परणसा।

ग घ तदी (घ तदी रसालु) कह्यो—'कन्या तो नही परणा' ('—' घ. में नहीं है) अणहुतसरी कन्यारो (घ ईण हत्यारीको) नाम ल्यो मति। राजाको माथो ल्यावो। तदी (घ तदी दासो) कह्यौ (घ कही)—माहाराज! मायो लीधा काई हाथमै आवसी? 'माने गुनो बगसो' ('—' घ. मे अप्राप्त है) ये कन्या (घ राजकीन्या) परणो। तदी (घ तदी रींसालु) कह्यौ—आ तो नही परणू, ओर कोई होवे (घ हुवै) तो परणू। 'तदी राण्या कह्यो—माहाराज! मे तो ईणरै वासतै करता था' ('—' घ में यह पाठ नहीं है)। तदी राणी कह्यौ (घ क्यौ)—ओर तो छ मासरी छै (घ ओर तो माह सरीषी छै)। 'तदी राणी ओ कह्यौ' ('—' घ में नहीं है)। तदी रीसालूजी कह्यौ (घ रसालु कहीयौ) वाहीज (घ उवाहीज) परणस्या (घ परणसु)।

म्हारे बारे वरस वनवास करणो छै। सो तो कीया ही जा(ज)वणसी। तीणसू माने सीप दीराइजे, ठीक लागसी। तरे राणीजी कहायो—कुवरजी साहब! बालक कुवरी छै। सो थे तै जावो तो थाहरी सता छै अने रिण देवो तो मोटी वात छै। तठे कुवरजी कहीयो—थे कहै सो दुरस छै, पीण मेह तो लेजावस्या। दाण-पाणी छै तो मे वेगा ही मीलसा। तठे टीको ओभणो करने कुवरजीने सीप दीवो। हीवै कुवरजी राजाजीसू मीलनै घोडै चढीया। तरे बाइनै साथै चलाइ कुवर रीसालूजी च्याल्या जाये से। बाछेथी राणी सोकरीने कह्यो—जायो, बाइने ले आवो, जू बाइने धवरावा। तो वारे दासी आवने कह्यो—बाइ तो सासरै पधारीया। तठै राणी दूहो कहो छैΛ—

दूहा[1] —जलज्यो[2] पासा षेलणा, जलज्यो[3] षेलणहार बे।
दस मासारी ह डीकरी[4], ले गयो कुवर सार[5] बे॥ ७२

Λ–Λ चिह्नित अंश की वाक्यावली ख ग घ में अधोलिखित है—

ख तवी राजा अगजीत पडीतानु बुलाया। आछा लग्न जोवाया। आला-नीला कलस कर घणा ऊछावसु रसालुने परणाया तठे कुवरजी दीन १५ रह्या, चालवारो कह्यो—जेउ जणो आणो करवो, माने सीष दीयो, मारे अस्त्री मा साथे मेलो। तव राजा अगजीत कह्यो—वाइ नानी छे, मोटी होसी जद मेलसा। जव रसालु कहे—आणो त्यार करावो, ज्यु चाला। तवी राजा अगजीत पोतारी राणी छाने आणो करायो। बाइने वीदा कीधी। रसालु सारा सीरदारासु मीत, घोडे असवार होय वीदा हुआ चाल्या जाए छै। पुठाथी अगजीत राजारी राणी दासीनै कहे- बाईनु ल्यावो, ज्यु दुध पावा धवारा। तवी दासी कहे--बाइजी तो सासरे पधारग्या। राणी कहे—बाइ नानी छे। भुष लागी होसी, मा वीगर कीम कर रेहसी? तवी दासी कहे—काइ वीलाप करो छो? राणी कहे—पेटरी उपनी छे, तीणथी मोह आवे छे।

ग तदी रीसालुजीनै परणाव्या। घणा महोछव कीधा। दन दस रहे नै चालवा लागा तदी कह्यो—माहरी परणी मा साथे मेलो। तदी कह्यो—बाई नानी छै, मोटी होसी जदी मेलस्या। जदी रीसाल कह्यो—मे तो लेई जास्या। तदी बाईनै साथे ले चाल्या। बाईनै साथे दीधा। तदि रसालु मनमे चितव्यो—अगजीत राजानै उरो बुलावो, अबै तो सगा हूवा छा। राणीनै कह्यो—थारा राजानै उरो बोलावो, माहोमाहे जुहार करा, मेल करे नै मे चाला। तदी राणी कह्यो—मोटा छो, बहुजाण छो, राणीआ ये राजानै कहो। राजा रीसाल माहो माहे जुहार कीधो, घणो रस रह्यो। रीसालुजी चाल्या तवी रांणी दासीनै कह्यो—बाइनै ल्यावो, धवाव। ते दासी कह्यो—बाई सासरै गया।

घ तवी रसालुनै ओछव-महोछव करेनै परणायो। दन १० तथा वो[स] २० सु चालवा लागो तवी कहे माहरी परणी मो साथे मेलो। तवी मा कह्यो—बाई नानी छे, मोटी होसी जदी मेलस्या। तदी माउ दासी कह्यो- बाईजी तो सासरै गया। तवी माउ काइ कहे- ।

१ ख राणी वायक। २ ग जलजो। घ जलयो। ३ ग घ जलजो। ४ ग

१९ वारता—[हेव रीसालू कवर चाल्यौ। सू कठइ तो वसती लाभै छै, कठैई क रोहीमैं रहै छै नै राणीनैं भूप लागौ तरै व्याई हीरणीनैं पकडनैं चूघाय देवौ। ईण रीतसू जावता चालता ईक दिनरै समै मारगमै हालता येक कस्तूरीयो मृग केरके हेठै कुवरजी दीठो। नरै लघू-लाघवी कला करने मृगलानैं पकड लीधो। कोई क गाम ग्राया तठै हिरणनू घणू मीणगार करायौ। भला गुघरा गलामै रापीया। पटु गलारे वाधीयौ। सौनारा सीघ मढाया। मृपमलरी गादी मोरा उपर रापी। ईसा जतनसू हिरणनै लिया वहै छै। तठै येक दिनरै समै येक रुप उपरे सूवटो ने मेणा वेठा कल कर छै। कोणीहीरा पढाया छै। मीनपरो भापा वौलै छै। तठै कुवरजी लघू-लाघवी कलासू सूवा ने मेनानै पकड लीया। कीणही गावमै ग्रायनै पीजरौ करावणौ तेवडचो। इसौ विचार करता एक स्यौगवास नावै गाव ग्रायौ। तठै कुवरजी सूथार रो घर पूछ नै सूथाररै घरे गया। जायनै सूथारनै कहै छै]—

दूहा— रे सूथारजीरा डीकरा, पिंजरीयो घड देय वे।
तास मोहर इक मोलडी, ले तु पिंजर देव वे॥ ७३

मेरी छ मासकी कुवरी। ग घ छ मासकी डीकरी। ५ ख. रसालु कुमार। ग. घ कुंग्रर रसाल।

[–]. ख. ग घ प्रतियो मे निम्न वाक्यावली प्राप्त है—

ख. एहवे समे रसालु कुमर ग्रागे चाल्या जाए छे। जाता थका ऐक कस्तुरीयो मृग, एक हरणी जाड नीचे उभा छे। सो रसालुए पकडचा। राणीनु धवरावे। मृगनु पण पाली मोटो करे छे। फेर मारगे जाता एक सुवटो, एक मेना दीठा। सो पकडीया, साथे लीधा। तेहने भणावे छे, गुणावे, षवाडे, षेलावे। मृग, हरणी, सुवटो ने मेना इण चारारा ही घणा जतन करे छे।

ग ऐस्यौ राणी कह्यौ। ग्रवै रीसालु चाल्या जाय छै। जठै राणीनै भुष लागै तठै हरण्या पकडेनै चुपावै। ईम करता वरस ऐक हूवो। एक दीन वीषै चाल्या जाय छै। जाता थका ऐक म्रग हरणी स्मेथ भाड नीचै रसालुयै दिठा। तदि हरण, हरणी ग्रापडचा। कसतुरीया म्रगनै तो राष्यो। हरणीनै तो छोडे दीधी। सो वनमृगनै तो मातो करै छै। ऐक समै रीसालु कोइक गाम गया। तठै सूवो, मैना दीठी। ती वारे रीसालु सुवो-मैणा लीधी। घणा जतनसु राषै छै।

घ तदी रसालु चाल्या-चल्या जायै छै। जठै भुष लागी जठै हीरणी पकडी नै चुषावै छै। ईम करता वरस पच। इक दीन समीयौ सौ वनमृग दीठौ। तणीनै उरो पकड, नै सौ वनमृग्नै तो राप्यौ ग्रर मैनानै छोड दीधा। तदी एक गाममै ग्राया। तठै सुवौ, मैना दीठा तणीनै उरा लीधा।

तुरत मोहर लेई करी, घडीयो पंजर घाट बे।
सूवडो मेना वेसाडीया, जडिया बेहु कवाड बे ।। ७४
जतन करै च्यारु जीवतणा, एक ल्यौ कु वर अपार बे।
पाणी-पथो हयवरौ, च्याव्यै ज्या ता जात बे ।।* ७५

२० [वार्त्ता—इण विध सूपमै च्याराहिरा जतन करता थका घणा दिन हुवा छै। इतरै द्वारका नगरी आया। आगै दरवाजा माहे वडीया। तठै नगरी सूनी दीठी। तठै सूवानै कुवरजी पूछीयौ—औ काई जाणीजै। सूनी नगरी मगली दीसै छै? तठै सूवौ, मैना कुवरजीन कहै छै—श्रीमाहाराज कुवार! आजसू छ महीना पहली अमै आया छौ। सू अठै म्हारा साथरो सूवौ बैठो छौ। म्हे पिण उडता आया छा। तठै मील वेठा वाता कर छा। तठै म्है पीण पूछीयौ—औ नगर सूनो क्यू दीस छै? तरै उण सूवौ कह्यौ—इण सेहरमै राक्षस हौल्यौ छे। सौ आदमीयानै मार पाधा। घणा ज्यान कीया। तिण डरसू वलै मनष्य हु ता सो नामी गया। ईण तरे आ वात सूणी छी। सौ कुवरजी साहैवा ईसा वचन माहेना उण सूवै कह्या। ईण प्रकारै ओ नगर सूनौ हुवो छै।]

[तठै कुवरजी कहीयौ सू सारी हकीकत सूणनै सेहरमै चालीया। हाटै २ वाजार सूणा पडीया छै। तेल, घीरत, मौहरा, कपडौ चावल, दाल, दुसाला, गेहणा, मोती, माणक, हीरा, पना, पूपराज, पीरौजा, वासन, थाली, वाटका अनेक प्रकार की वसता पडो छै। पीण कोइ धणी नई। इण भात देपता देपता राजा भूवनमे गया। तठै सतभूमीयै अवासै चढीया। मेहलामै डेरो कीयो ने सूवाने कुवरजी कह्यो—हु रसोई लेनै आवू छु, जीतरै जावतौ कीजौ। इतरी कुवरजी वजारमे आयने कामेटीयारी हाटमै थाली, लोटा, चरी लीवी नै आटो, घरत, पाड लेने पाछा आया। रसोई जीमण करने जीमीया। ताजा हुवा। हिवै सूवानै कुवरजी कहोयौ—हु राणीरे वास्तै व्यई हीरनो ल्याउ छु, ये जावतो कीजो। ईसौ केहनै घोड चढी नै रोहीमे जावता एक तुरतगी व्याई हीरणी वच्चानै चुघावती देषी नै वचा सूधी लघु-लाघवी कलासू राणीनै वास्तै पकड

*७३-७५ तक के दूहे ख ग घ में अप्राप्त हैं।

[—] ख इम करता वरस पाच हुआ। ऐक दिन फीरता द्वारीका नगरी गया। देषे तो सर्व सुनी पडी छे।

ग ईम करता घणा दीन हूवा। एक दिनकै वीषै धारावाम नगर आव्या। आगै देषै तो धारावाम नगरी सुनी पडी छै, देता मारी छै। नगरी मे लोक कोई नही।

घ तदी धारावास नगरी गया। नगरी सुनी दीठी, देवता मारी।

लाया। राणीनै चूघाई, हीरणीरा जतन करनै आछी जगा रापी। पान-पाणरौ जतनै मोकलो कीयौ। हीवै दीन अस्त हूवौ। तठै कुवरजी सूवानै कह्यौ— थ जावतो घणी करज्यौ, हु राक्षसरौ जाब करी आऊ छु। तठै सूवो बौलीयौ]—

दोहा– राकस धूतारो अछै, मार्‌या पूरना लौक बे।
आप ईकलडा वाहरू, जतना करज्यौ जोग बे॥ ७६
था त्रीना सारी वातडी, सूनी हौय सोसार बे।
कुवर कहहे रे सूवटा, आइ राकस हार बे॥ ७७
मारी नै माथौ ल्यावसू, तौ आगल ततकाल बे।
ईम कहीयो लने बारने, उभौ कुमर न उजाल बे॥ ७८
गोरषनाथजीनै ध्याईयौ, मनमै साहस धीर बे।
इतरै राकस आयौ, वरड करड कृक्कार बे॥ ७९
दत कटका कुदतो, पवन उडावै धूल बै।
ईम चलतो पोले निकट, आयौ राकस मूल बै॥ ८०
कुमर चल्यौ सामो जवे, काढी षडग मूष बोल बे।
बल सभाय रे भूतडा, मारु वाजत ढोल बौ॥ ८१
तब राकस रूपै रवौ, ददुर पग धूज बो।
हुकार वक्कर हुलसीयौ, कुंवर षडग करि पूज बे॥ ८२
श्रीगोरषनाथजीरे ध्यानसू, षडगथी काढ्यौ सीस बो।
राकस वले नही चालीयौ, मारयौ विस्वा वीस बौ॥ ८३*

२१. Aवारता—ईण भातसू रापसनै मारनै माथो लेन कुवरजी सूवा कनै आया। सारी हकीकत कही नै कुवरजो सूवानै कहीयौ—सूवाजी! दाणा-

---

[–] कोष्ठवर्त्ती अश ख ग में निम्न रूपमें वर्णित है।

ख घर, हाट, बाजार, सर्व सुना पडीया छे। रसालु राजद्वारे गया। देषे तो सर्व सभाइ पडी छे। पीण सर्व नगरी माहे जीवमात्र इके ही नही। पछे रसालु नवषडे महीले चढया। उठे डेरा कीधा। घोडो नीचे परो बाधीयो। राणीरा मृग, सुवटो, हीरण, मेनारा, घोडारा जतन करे छे। रसालु राणी ने कहे–आ नगरी आपे वसावसा। एहवो वीचार करता दीन तीन हु[आ]।

ग तदि पैला-पैल रीसालू आव्या। सुना घर, हाट देष्या। नवषडं मैहल चढया। तिठै आप वीसराम लीधौ। आपरो सुवो, मैणा, मृग, घोडो, राणी सूषं रहै छै। ईम करता दिन तीन हूवा।

घ तदी राजारी पौल गयो। मैहला चढयौ। राणीनै मैहलामै ऊतारी। घोडौ पायगा वाघ्यौ। सुवौ, मैना उचा वाध्या। सुवो मैनासु घणो हेत।

* ख ग प्रतियो में उक्त आठों दूहो के स्थान पर निम्न गद्याश उपलब्ध है—

रहे जासी । तठै सूवौजी कहै—श्रीमाहाराजकुवार ! आ वात जोग छै । था करता सारी वात आमीण हुसी ।

हीव कुवरजी सदारा सदाई परभातरै समै घोडै चढणै नीकलै । सो पाच सो पाच पाच कोस ताई सहिररे गिरदाव घोडौ फेरै । तठै कोईक वटाउ निकलै तिननै ल्यावै, हवैली भौलाय देवै । धान, द्रव्य मोकलौ वतावै । ईण भातसू वस्ती करवा माडी । ईण भातसू वरस इग्यारे हुइ गया छै । थोडीसी सहरमै वसती हुई । पाचसै ५०० घररी जमीत हुई । राणी वरस ग्यारेमे हुई ।A

हिवै हिरण इकदा ममाजौगै मृगलो नै कुवरजी वाता करता मृगलौ वोलीयो—श्रीमाहाराजकुवार ! म्हारा जतन आप घणा करौ छो, षाण दाणारी कुमी काई न छै । पिण म्हे गोहिरा जिनाव[र] छो । सो रोहिमै फिरनै चारा, पाणी छै तौ आ नगरी सारी पाछी वसाय देवस्या । ज्यू आपणी धरतीमै नामगी

ख रसाल महील उपर बेठा छे । एहवे एक राषसनु रसालु आवतो दीठो । तीको राष्यस माहाक्रोधवत, वीकराल, क्रूड-नेत्र हाथमे काती छे, इसो दुष्ट राष्यस छे । तीणनु सहीरमे आवतो जाणी रसालु दरवाजे आय उभा रह्या । कमाड जडचा । इतरे आधी रात्र गया देत्य आयो । कमाड तोड ने माहे आयो । रसालुए आवतो देषी षडगरी दीधी । देता थका माथो, धड अलगो जाय पडचो । जद रसालुए षाच अलगो समुद्रमे नाष दीधो ।

ग रिसालु दैतनै हल्यो । दैत जाण्यो । अधरात्रे आप हल्यो जाणयै आप दरबाररै दरवाजे ऊभा रह्या । कमाड जडया छै । रात पोहर दोय गई छै । अतरायकमै वैत आयो । रीसालुरा हाथमैं षडग काढचौ छै । कमाड तोडे दैत आयो । रीसालुयै जाण्यौ, षडगरी दीधी । माथो अलगो जाय पडचौ । तदि रीसालु दैतनै अलगौ जायै नाख्यौ ।

घ प्रति मे न तो उक्त दूहे ही है और न इस राक्षस का वर्णन ही है ।

A-A ख पछे रसालु महीला गयो । राणीनु कहे—जीण नगरी उजड कीवी हती, तीणनु आज मे मारीयो । हीवे आ नगरी सुषे वससी । ईसो सुणीनें सर्व राजी हुआ । हीवे सुषे समाधे रहे छे । कस्तुरीयो मृग सूर्य उगा पहीली चरवा जाए छे । पोहर १ दीन चढता घरे आवे छे । पछे रसालु सीकार जाए छे । दीन पाछलो पोर एक रहे, तरे घरे आवे छे । इम सदा ही रहे । इम करता राणी वरस इग्यारेरी हुई ।

ग राजी होई राणीनै आय कह्यो—गाम उजड कीधो थो, तिणीनै तो मारचो छै । अवै गाममै वसती करावा । अस्यो मनमै वीचारचो । तदी रिसालु पोहर दीन चढता सीकार जायै छै पोहर दीन पाछलो रहता सीकारथी आवै छै ।

घ रसालु रूपर सीकार जायै । पाछलो पोहर रहे जदी पाछो आवै । राणी वरस ग्यारेरी हुई ।

तरा मन पूमी हुवै । तीणसू थे आग्या देवै तो रोहिमे चरवा जावा । तठै कुवरजी बोलीया—हीरजी ! आ वात तो थे सा रुही । पिण थान वद पोलनै सीप देवा नै पाछा आवो नही तो पछै थानै कठै जोवता फिरा । तठै हीरण बोलीयो—श्रीमाहाराजकुवार ! आप सरीपा हेतु माणस छोड ने जाता रहु, सो आ वात कदेही जाणज्यो मती ।

दूहा– जो सूरज आथूणमै, उगै दिनमै हजार वे ।
आगन जो सीतल पण करे, तो पिण हु नही वार वे ।। ८४
उत्तम जननी प्रीतड़ी, कीणही क वेला होय वे ।
ते छोडीनै वीसरे, ते जग मूरप होय वे ।। ८५
कुवरजी छाया माहरी, काया नानो मित वे ।
राज सला राजी हुवो, तो मूझ सोष द्यौ हित्य वे ।। ८६
घणा दीनारी प्रीतडी, कीम मुझ छाडी जाय वे ।
रूडा राजिद परपज्यौ, जीवूं ज्यां लग काय वे ।। ८७
कुवर कहै अहो हीरणजी, थां म्हां ईधक सनेह वे ।
जावो चरवा रोहीया, वहिला आज्यो तेह वे ।। ८८]

२२ *वारता—इण भातसू कूवरजी हीरणने सीप दीवी । हिवे सदाई रोहिमै चर-पी आवै । एकदा समाजोगन द्वारकासू सात कोस उपर जलालपटन नगर छे। तठे हठमल पातमाह राज करै छै। उण राकमरा भयसू घणा पीरानू पूजता ने राकसने मारीयो सूणीयौ ने नगर वसावानौ नाम सूणीयौ । तरे पातसा घणी राजी हूवौ । घणी सीरणी-वधाइ वेटी । तिको हठमल पातसा आपरा नगरसू कोस दोय उपर द्वारका सहमी नदी मीठा पाणीरी हुती, तीण माथै वाग लगावानी सला थी, सू राकसरा भयसू हुवो नही । ने(ते) भय मिटचो जाण ने नदी उपरै वाग लगायौ छै । माहीवला फूल हुवै छै । घणी वेला, घणी वेलडीया, गी(नी)लोतरी चीभडा, परवूजा, नीला गोहु, साल, दाल घणी नीपजै छै । इसडो वाग छै ।*

[–] ग घ में कोष्ठकगत पाठ अप्राप्त है तथा ख प्रति मे केवल इतना ही अश प्राप्त है—तदी राणी मृग, सूवटा, मेनारी जावता करे । ध्यान, वीनोद, हास्य रामण करे । इसी तरेसु दीन गुदार करे ।

– चिह्नगत पाठ ग घ प्रति में अप्राप्त है तथा ख प्रति का पाठ निम्न प्रकार है—पापतो एक सहीर छे। तठे पातसाह हठमल राज करे छे। तीणरे नवलपो वाग छे ।

[सौ येकदा समाजोगमे हीरणजी मजलसा करता कोस पाच ताई जाय निसरचा। तठै आगै बाग आयौ। देषनै माहै ऐठा मल फल-फूल पाया, पिण वागमै जाबतो घणो दीठो। तठै तौ पिण हीरण वीचारीयौ— जौ आ जागा भली छै, मारो चारौ पिण मौकलौ छै, पिण दिनरा तो वेत लागे नही, अवै रातरी चरवानै आवस्या। इसौ विचारनै हीरण पाछो वल्यौ। सू कुमरजीनै आयनै कह्यौ। तठै कुवरजी बोलीया—आज तौ हीरणजी मोडा कु आवीया ? तठै हीरणजी सारी हकीकत कही। तठै कु वरजी सूणनै हीरणीने कहै—

दूहा— **भौम पराई विगाडीया, वागां हुदा फूल वे।**

रषैयआ जडीमै पडौ, तौ हुयसी सहु धूल बे ॥ ८९

हिरणवाक्या

थाह सरीषा म्हारा वाहरू, सो क्यू डरपा जाय वे।

षासा म्है फल-फूलडा, नीलडा माहरे दाय वे ॥ ९०]

२३. Aवारता—ईसौ सूणत प्राण कुवरजी मू छा हाथ घालनै राजी हुयनै कहीयौ—हिरणजी ! हिवै हु थाहरै पूठीरषौ छु। आप त्रिद्रय सदाई हगाम करौ। हीवै हीरण सझ्या पडीया जावै सौ आधि रातरौ पाछौ आवै। यू करता वणा दीन हुवा। अबै तिण वागवाला रषवाला माली पातसाहरौ निजरानै फल-फूल लागा दीसै। ईण भातसू दातरा सेहनाण देषने पातसाह बोलीयौ—अरे वनमाली ! आज काल फल-फूल ईसा सेहनाण सहीत ने थोडा आवै, सो काई जाणीजे ? तठै माली वोलीयौ—माहाराज ! आज काल कोई क जानवर हील्यौ छै। सौ दीनरा जावता घणी करा छा, पीण रातरा वीगाड कर जावै छै। तठै पातसाह रीस करनै बोलीयो— अब गुलाम काफर, ईतनै रोज हमकु षबर क्यु कही नही ? मरदुद अपना माल षराब हुवौ छै, सो तु(ह)मारे ताई मोच नही छै, पीण आज तोने गुण माफ कीया। पिण आज वागमै हम आवगें, वीच अछी जगा वनवाय रषणी हम आवगौ, उस जनावर की सीकार करेगे।A

[—] कोष्ठगत गद्य एव पद्य ख ग घ प्रतियो में अनुपलब्ध हैं।

A–A. ख ग घ प्रतियो का पाठान्तर इस प्रकार है—

ख. जठे मृग जाय पातसाह हठमलरे वागमे हमेस चरने आवे छे। इम करतां घणा दीन वतीत हुआ। एक दीन पातसाह तीरे वागवान फल-फुल ले गयो। पातसाह हठमल फल-फुल काणा-कोचरा दीठा। वागवानने पुछ्यो—क्यु मे वागवान ! वहुत दीनसे एसा फल-फुल क्यु लाया, सो कारण काइ छे ? तदी वागवान कही—हजरत, सलामत कवलेयान, अधरातकु वागमे हमेस क्या वलाय आवती हे, सो वाग वीगाडे छे। पातसाह वाक्य—

दुहो— क्यारी[1] केसर द्रायकी[2], फल्या केल अनार वे।

कण चटे[3] इण वागमे, पुछु उणकी[4] सार वे॥

[ईसौ सून नै माली वागमै आय ने छानी जायगा आछी कर रापी । फूलारी विछायत आछी कीवी छै । ईतरै सभ्या पडो । तठै हठमल पातसाह आपरा तन-मनरा दोय चाकर ले ने कवान, तीर, आवध लेने वाग पधारीया । माली या(आ)यनै हारज(हाजर) हुवौ, मूजरो कर नै जागा बताई । तठै पातसाह तिण जायगा वेठ नै मालीनै कहै—

दुहा— क्यांरा केसर नीलडा, फूली केल अनार वे ।
इण कोटै इण वागमै, आसी ते लंहसी सार वे ॥ ६१
माली कहै पातसाहजी, मूझकु सीष दिराय वे ।
भोजनकी वीरीया हुई, सौ हु जांउ वार वे ॥ ६२
सूण सूण साहिव हठमला, आवेगा तेडा चोर वे ।
हमकु दीजै सीषडी, वहलौ आउ इण ठोर वे ॥ ६३
पातसाह अग्या तेहनै, दीधी माली जाय वे ।
हिव ते हीरणजी हालीया, चारो चरवा आय वे ॥ ६४
सझ्यासू घडी च्यारडी, रात गई तिहां हिरण वै ।
धीमे पग ठवतो वहै, देषी न(चं)दनी कीरण वै ॥ ६५]

ग घ अनै (घ में नहीं है) कसतुरचो (घ कसतूरीयौ) मृग हठिमल पातसाहरी वाडी चर चर घर आवै छै नीत प्रतै (घ चरै चरै आवै) ईम करता घणा दिन (घ दन घणा) हूवा । ऐक दिनकै समै वागवान फल-फूल लेई पातसाहजी हजुर गयो (घ. फल-फूल ले आयौ, पातसाहरी नीजरै फल-फूल कीधा) । कोई आवो, कोई आपो (घ. कोईक काणो) ईस्या (घ. ईसा) फल-फुल (घ. फुल-फल) देप्या । अतरायकमै (घ. तदी) पातसाहजी बोल्या— (घ. पातसाह वौल्या) क्यु वे वागवान ! 'ईतरा दिनमै ईस्या फल-फूल क्यु ल्यायो' ('—' घ में नहीं है) । तदि (घ तद) वागवान कह्यौ—माहाराज ! 'कोई आधी रात्रै आवै छे, कोई वलाय छै, सो वाग वीगाडी जाय छै, नीत प्रतै आवै छै' । ('—' घ कोईक अधरात रो वागमै आवै छै, वाग वीगाड जायै छै) । तदी हठीमल पातस्याहनै वागवान काई कहै छै (घ. तदी पातसाह वौल्यो—आप आथमतारा वेगा पदारज्यौ । वागवान काई कहै)— । वागवान वाक्य । १ ग घ क्यारा । २ ग. घ दाप का । ३ ग घ ईण कोट । ४ ग घ. पुंछु अणकी ।

[—] ख ग घ प्रतियों में निम्न पाठ मिलता है—

ख वारता—पातसाह साझरे समीए घोडे असवार होय वाग्रमे पधारचा । पातसाह घोडो वाघ, कवाण कसनें वेठो छे । वागवान पीण कने वेठो छे । एहवे रात्र पोहर तीन गई । तरे वागवान पातसाहनु कहे—हजरत, आपरे चउ(र)आ आया हे । तेरे मरजी होवे सो करणा । पीण हमकु तो घरा दीसा सीप देणा । वागवान वाक्य—

सुण सुण साहीव हठमला, आया तुमारा चोर वे ।
हमकु तो घर सीप द्यो, करयजे राजींद जोर वे ॥

२४ [वारता—तठै कुवरजी हीरणने हालतो देषीनै आपनै ठीक हुई। तठै कुमरजी हीरणनै वोलाय नै केह छै—

दुहा– सुणीयै मृगजी आजरी, रयणी गई रे सबे ।
अग-फूरक ठीक पोण, ए सूकनै दुषल सबै ।। ९६
सौ तुम आज इहा रवै, कालै करज्यौ काम बे ।
आज अजाडी उपजे, तीणसू रहौ ईहा धाम बै ।। ९७

हिरणवायक्य—

सूणीयै रीसालूराय की, चरीया वीण मुझ प्राण बे ।
रहता नही साहिब इहा, प्रभु करसी सौ प्रमाण बे ।। ९८
चालता ठी(छी)क छटकीया, सौ वहिलौ आवस बे ।
ईम कही हीरण उतावलो, चाल्यौ मारग देस बे ।। ९९
घूघरीयारा सौरसू, भागो जावे एण वे ।
तुरत वागमे आवीयो, हठमल ज्याण्यो नेण बे ।। १००]

A २५. वार्ता—तठै पातसाह गुघरीयारा झमकसू धरतीरा धमकारसू तीर-कवाण सावचेत करने रूपारा ओटामे जोवै छै। छानो-मानो चालै छै नै मनमै जाणै छै—आज मारा वाग विगाडनवालानू मारसू। ईसौ चितव्यौ थको रूपारी विडमै आवै छै। तठै हठमलरी छाया डीलरी हीरणमै पडी। तठै हीरण उचौ देषीयौ। तठै तीर साधिया थकी पातसाहनै देषीयौ। तठै हीरण पाल साधनै वागरी भीत कुदीयौ। तठै पातसाह लारै भागौ। सो हिरण सताबीसू आपरे

वारता—तद पातसाह हठमले वागवानकु सीष दीधी।

ग घ ऐस्यो पातस्या[ह] वागवानकै ताई कह्यौ—भला पातस्याह! सलामत, आप दीन आथमता ऐकला पधारज्यो। तदि पातस्याजि दीन आथमतै ऐकला पधारचा। वागवान वागमै एकलो वैठो छै। आधी रात्र गई छै। अतरायकमै वागवान घुघरा वाजता साभलनै पातस्याहजीसु कह्यो—माहाराज मानै सीष दिजै, थारो चोर आयो छै, अवै आपरी आप जाणो। वागवान पातस्यानै काई कहै[1]—

दूहा– सुणो पातस्या[2] हठीमल[3], आयो थारो[4] चोर वे।
मानै तो घर सीप द्यो, करज्यौ[5] साहीब चोर वे ।।

अथ वारता—तदी पातस्याहजी कह्यौ तु घरजा।

१ घ मे यह गद्य नहीं है। २. घ पातसाह। ३ घ हठमला। ४ घ थाहरो। ५ घ कीज्यों।

[—] ख ग घ प्रतियो मे कुवरजी एव हिरणका गद्य-पद्यात्मक सवाद अनुपलब्ध है।

A–A ख ग घ प्रतियो में २५, २६ एव २७वीं वार्ताओ की वाक्य-रचना इस प्रकार है—

ठीकाणे आयौ, नै पातसाह पोज जोवतो चद्रमारे चादणासू लार आवै छै। रात आधीरा पातसाह पिण सतभोमीया हेठो आयौ। हिरण पातसाने देपने छीप वेठौ नै पातसाह जोवे छै। तितर पपारो जावतुाईरो माहे कुवरजी कीयौ। तठै पातमाह पपारो सूणने वीचारीयौ-ओ हिरण रीसालूरौ छै ने रीसालू जागै छै, कदाचित पवर पडजावै तौ परावी हुवै, तौ अवार तौ कठैई छानौ रहणौ जोग छै नै परभाते हिरणनै सौधनै सीकार करस्या। ईमौ वीचारनै महीलारे पूठवाडे जावण लागौ। तठै महिलारै पूठै आगली वाडी फल-फूलारी हुती नै रीसालूरा परतापसू घणी फली-फूली छै। तिका वाडी पातसाह देप नै माहे जाय सूतौ।

तठै रिसालूनै हिरण याद आयो—रपे आज छीक हुई छै, हिरण कुशले आवै तो भलो। यू सोच रीसालू करै छै। तरै पोहर एक हुई। तठै कुवरजी हिरणरै पूटै आगा। हिरणनै देप्यो नही नै हिरण पातसाहरा डरसू अलगौ ढुढामै छीपीयो। नै कुमरजी सौच करै छै।

दूहा– रे फूटरमल हिरणला, रयणी गई सहु साथ वे।
आयो नही रे हिरणला, हुवौ वैरी हाथ वे॥ १०१

ख एहवे मृग घुघरा वाजतां वागरो कोट डाक माहे परच्यो। हठमल कहे—सुण वे, घणा दीन का जाता हता, अब काहा जाएगों। इसो मृग सुणके पाछो भागो। तद पीछे हठमल घोडे असवार होय मृग पुठे दोडीयो। मृग जाणे—आज मने मारसी। मेले नही(नई) पाछो जोवतो, जीभ काढतो, डरतो पाछो जाए छे। वासे हठमल होयके यु कहे—अव तेरी ठीक ल्यु। तदी मृग फीरतो फीरतो रात्ररो मारग भुलो, दीसा चुक हुउ, रसालुरा महीला नीचे होय आगे नीसरचो। तद हठमलवाक्य—

दुहा– जष्य राष्यस वेताल हे, साहुकार के चोर वे।
भागा भागा कहा जात हे, क्यु न करे फीर सोर वे॥ २२

मृग वाक्य

होणहार सो वुध उपजे, भवीतव्य कीणही न हाथ वे।
तेरा नाम हे हठमला, आवो कर मुझ साथ वे॥ २३

वारता– मृग इसो हठमलनु कह्यो। रसालुरा महीला दीसा मृग पाछो फीरच्यो। हठमल पीण पाछा फीर मृग दीसा दोड्यो। मृग नासने नवपडे महीले चढचो। हठमल वीचारे— क्या जाणा, काइ जीनावर छे? कठे ई वेस रह्यो होसी। ओर दीना मृग चरने पाछो आवतो जद रसालु सीकार जाता। जीण दीन मृग आया पेली सीकार चढीया। वासायी मृग राणी तीरे धुजतो, डरतो, नासतो, भागतो, जीभ काढतो, आयो। राणी

२६ वार्ता—इसौ विचारनै कुवरजी राणीनें आयनै कहीयौ—आज हिरण आयौ नही, तिणरी षवर करणे जावू छु, थे जाबताई करज्यौ। हिरण आवै तो जाबतो कीज्यौ। इतरौ कही नै घोडे चढी नै हथीयारा कसीयौ थकौ रोहीरो मारग सोधतो जाय छै। इतरै सूरज उगौ जाणनै हिरण उठ नै च्यारै हो कानी जोवतौ, हलवै हलवै हालतो थकौ महिला आयौ। आगै कुवरजीनै नही दीठा। तठै राणीनै पूछै छे—

दूहा— किहा गया कुवरजी प्रभातका, किण ठामै किण ठोर बे।
राणी कहै रे हिरणला, ताहरी बाहर जोय बे ॥ १०२
रातै नायौ तु हिरणीया, तिणसू षबरनै काज बे।
किहा तु हुतौ हिरणला, कहै तु कारण आज बे ॥ १०३
कुवरजी सोच घणो कीयो, तारै कारण रात बै।
तु इहा कुवरजी रोहीया, ताहरी कहि तु वात बै ॥ १०४

हिरणवाक्य

हिरण कहै राणी रातरी, वात नही कही जाय बे।
मै जीवत मिलीया तिकौ, लहज्यौ अचभो माय बे ॥ १०५
वागा नीलडा चरणनू, पूहता बाहर षी(धी)ठ बे।
लागी हु आगै चल्यौ, इहा हु आयौ नीठ बे ॥ १०६

वीचारीयो—आज मृगने डर घणो छै, सो काइ क तो कारण दीसे छे? तदी राणी नवषडे महीले चढी। उप[र]ली भोम चढने देषे तो एक नर रूपवत, कबाण कसीया वाग माहे झाडारा गोठ जोवे छै। इसो देषने राणी हठमलनु कहे—

ग अतरायकमै घुघरा वाजता थका वागमै डाके पड्यौ। अतरायकमै हठीमल पातस्या वोल्या—घणा दिनरो जातो थो, पीण आज ठीक पडसी। अतरो साभले म्रग पाछोही ज दोडचो। तदी हठीमल पीण पाछै हुवो। म्रग मन थकी जाण्यो—आज मोनै छोडै नही। पातस्याहजी कहै—घणा दीनरो जातो थो पिण आज ठिक पडसी। म्रग पाछो नाल नै जिभ काढतो दोडचो। तदि म्रग रातकै समै डरको मारचौ दसा भुल गयो। तदि म्हैलां आगलि नीकल गयो। तें पातस्या मृगनै काई कहै—

दूहा— जाण्या रीष्या विवताल है, साहूकार कै चोर वे।
भाग भाग काहा जात है, वयु न करै तु सोर वे ॥ १८

पातस्या मृगनै काई कहै—

दुहा— होणहार वुध उपजै, भवतव्या कणीहार वे।
तेरा नाम छै हठीमला, आयो कर मुज साथ वे ॥ १९

अथ वात— ऐस्यो मृग कह्यो—कहे नै म्रग दोडचो। आगै जाता मारगै सोच्यौ—हु तो दना भुले गयो, मैहल तो पाछै रह्यो। तदि मृग पाछो फिरचो। मैहलामै आयो। पाछै

छीपायौ तवेला ठाणमै, वाहर पूठै जोर वे ।
जाणू महिलरी वाडीयां, वाहर होसी कोर वे ।। १०७
तिनसू आयो थां कनै, इतरै उगौ भोर वे ।
थांसू मीलवा आवीयौ, वीती मूझमै जोर वे ।। १०८

२७ वार्ता—राणी हिरण-वाता साभलनै मैला चढी, पूठलो वाडीया सामो देपै छै । तठै हठमल पातसाह पिण सूतौ जागीयौ । सौ दाढीरा केसानै फूरकावै छै, आलस मोडै छै । तठै राणी जाणीयौ—हिरणरी वाहर दीसै छै । पिण वरस सोलै अठारै रहतानै हूवा, सो कुवरजीरा तप-तेजसू कोई आपणै नैडो फूरक्यौ नही, नै ओ परौ आदमी वाडीमौ आयनै सूतौ छौ नै परभात हुवा जाग्यौ । निरभय थकौ उभौ, तिकौ तौ कोई तरेदार दिसै छै ? इसौ राणी वीचार न वतलावण कीधी—A

दूहा– वाडी मेहला आदमी, साह अछै किनू चोर वै ।
रूपा छीपायौ क्यूं रह्यौ, ढीलौ हुवौ जू ढौर वै ।।[1] १०९
पर घर पर धरती तणा, भय नही मांनौ छौ मन वे ।
भौम वीडाणी होयसी, घरणी भौमनौ तन वै ।।[2] ११०
काचो कली मत लूवीयै, पाका लागेगा हाथ वै ।
जीवत जावैगा मानवी, नहि कौ विजा साथ वै ।।[3] १११

पातस्याह पीण आवे छै । आगे मृग हाफतो-कापतो राणी नपै आयो; राणी आगे आय ऊभौ रह्यौ । रीसालू सीकार गयो छै । तदि राणी वीचार्यौ—आज मृगने डर क्यु छै ? तदी राणी नवपडै महल चढी देख्यौ । देखै तो एक आदमी वाणसु भाड हेरै छै—जाणे मृग भाडमै छप्यौ छै । तदि हठीमल पातस्यानै काई कहै— ।

घ तदी पातसाहा वागमै आया । अतरै घुघरा वाजता सुणीया । तदी पातसाह वोल्यौ—घणा दीना रो जातो थौ पण आज ठीक पडसी । मृग साभलि पाछौ नाठौ । पातसाह पाछै आवे छै । मृग राणी कनै आयौ । जदी राणी जाण्यौ-आज मृगनै डर घणौ छै । जदी गोपडै आये नै देपै तो एक आदमी कवाण-तीर लेनै आवै छै । मृग डरकौ मार्यौ छीप्यौ छै । जदी राणी काई कहै—

१ ख ग घ का पाठान्तर निम्नलिखित है—

राणी वाक्य

दुहा– वागा 'माहेला' मानवी, साहुकार 'के' चोर वे ।
'दरपत ही' छीपतो फीरे, ढाढो 'गमायो के' ढोर वे ।। २४

'–' ग घ माहेला । कै । वागा माहि । हेरै कै ।

२ ३ दोनो दूहे ख ग. घ प्रतियो मे अप्राप्त हैं ।

पातसाहवाक्य[1]

किसका बै[2] आबा आवली[3] , कीसका बै दाष अनार बै[4] ।
किण पूरष हदी गोरडी, कीसका बै दरबार बै[5] ॥ ११२

राणीवाक्य[6]

रीसालू हदी गोरडी, उनका ह[दा] दरबार बै ।
तु कारण क्यू पूछ बै, ताहरै पष वार बै ॥
ईहा तु उभो किम रह्यौ, कैसौ तु हुसीयार बै[7] । ११३

[२८. वारता—ईसी वात कही । तठै हठमल पातसाह वाडी वाहरै आयौ । तठे राणी पातसाहरौ रूप देषतें मूस्ताग हुई । नैण-बाण आमा-सामा छुटा । तठै पातसाह मनमैं जाणीयौ—जै आ तौ मृस्ताक हुई तौ फतै हुई, सारी ही वात सभ्रगैं । ईसौ वीचारनैं हठमल बोलीयौ—अरी राणी ! मारो घोडौ तीसायौ छै, थौरोसौ पानी पावौ तौ भलौ काम करौ । तठै राणो कहै—

दूहा— तौरा नाम हठमला, हठिया छै मैरा भी नाम बै ।
विषकी बेली जौ चरै, तो ईण आदर आम बै ॥ ११४
विष बेलीका ईहा षरा, वाग ई चतुर सूजाण बै ।
आसो चरवा घौडलौ, तौ हु करिस प्रमाण बै ॥ ११५

१ ख हठमलवाक्य । ग तदी हठमल पातस्याह काई कहे । घ तदी पातस्याह काई कहे ।

२ ख कीसका रे । ग घ कीण हदा । ३ ख ग आबली । घ आबली वे राणी ।

४ ख कीसका रे दारम द्राप वे । ग घ कीण 'हदी तु' ('—' घ हदा) अनार वे ।

५ ख ग घ कीण हदी तु गोरडी, कीण हंदा दरबार (ख दुरबार) वे ।

६ ग राणी हठीमल पातस्यानै काई कहै-घ अप्राप्त है ।

७ ख ग घ प्रतियो में ११३वें पद्य एव अर्द्धाली की जगह निम्न दूहा प्राप्त है—
रसालु हदा आवा आबली, रसालु हदा दारम द्राष वे (घ रसालु सीच्या अनार वे) ।
रसालु हदी हु गोरडी, उण हदा दुरवार वे ॥ २६

[—] ख ग घ प्रतियो मे २८, २९ तथा ३०वीं वार्ताओ एव पद्यो का पाठभेद अधोलिखित रूप में मिलता है—

ग वारता—राणी हठमल प्रते इसो जाव दीधो । तद हठमल कहे—मारो घोडो तरस्यो छे, सो पाणी पावो । जदी राणी डरवा लागी । तद हठमलवाक्य—

पातसाहवाक्या

मे हठीया छु हठमला, हठ पातसाह मेरा नांम वे ।
अमृत-वेली मे चरू', जो सीर जावै तो जाय वे ।। ११६

राणीवाक्य

अमृतवेली जो चरौ, तौ घरस्यौ ईहा सीस वे ।
तव आवौ इण मेहलमे, जीवन विस्वा वीस वे ।। ११७
सूण हौ साहीव हठमला, सूरां हदा कांम वे ।
कायर षडग न वावमी, रकण देसी दाम वे ।। ११८
सूरा पूरा सौ हुसौ, आसी तै मेहल मझार वे ।
साई सीसनै दोय नै, आवौ मेहल अटार वे ।। ११९
हठमल मन काठौ करी, मौह्यौ रूप सनेह वे ।
चढवा लागौ चूपसू, पर त्रिय जोडव नि(ने)ह वे ।। १२०
एक षड चढ दूसरै, तीजै षडै जाय वै ।
सातमै चढनै वोलीयौ, थौडासा पाणी पाय वै ।। १२१
म्हे परदेसी दीसावरा, आयाताली जाय वे ।
नानासी नाजक गोरडी, थोडासा पाणी पाय वै ।। १२२
राणी झारी भर लेई, सीतल आछी नीर वै ।
अवल सूगंधा सामूडी, उभी आय नै तीर वै ।। १२३
झारी हठमल्ल हाथ लै, पाणी पीवन हाथ वै ।
झूकीयो सूंगणीरका चूवै(भ्रूवै), जाणै गहलौ वाथ वै ।। १२४

राणीवाक्य

कर ढीला घट सांघूडां, नीर ढुलो ढल्ल जाय वै ।
पथीडौ तिरस्यौ नही, नेयणा रहीयौ लूभाय वे ।। १२५

हु हठालु हठमला, हठीया हमारा नाम वे ।
मेगी पाग वत्रीस वड, उपर छोगा च्यार वे ।। २७

राणीवाक्य

तु हठालु हठमना, हठीया तुमारा नाम वे ।
वीषकी वेलडी जो चरे, तो सीर धरी इहा आव वे ।। २८

हठमलवाक्य

हु हठालु हठमलो, हठीया हमारा नमा वे ।
ए अमृतवेलडी मे चरु, जो सीर जावे तो नाप वे ।। २९

इसो कहे हठमल महीने चढयो ।

हठमलवाक्य

हम परदेसी पथीया, आया तीरस्या आज बे ।
जो सूगणी मन रजी कै, आपौ तौ सीझै काज बै ॥ १२६
षरीय उ(दु)हेलि छातीया, बाधी नैणा-बाण बै ।
ताकी त्रीस लागी षरी, राणी करीयै पिछाण बै ॥ १२७
राणी सूण मोहित हूई, कोधी घणूं मनूंहार बे ।
रीसालू हुदी गौरडी, चोरडी करवा त्यार बौ ॥ १२८
माणस ते नही ढोरडा, पर त्रीय राषै नेह बै ।
नारी पत छोडो तुरत, पर पूरषासू नेह बै ॥ १२९
ते नारी गढसूरडी, होवै जगमै हराम वै ।
त्यू ए रीसालूरी गोरडी, हठमलसू हित काम बै ॥ १३०

२९ वारता—इण भातसू जाब-साल करनै हठमल नै राणी बिछायत बैठा । माहो सनेहरी वाता करता, चौपड रमता पातसाह सारी ही वीध रीसालूरी पूछ लीवी, मनरी वात सारो ही लीवी । चतुराईरी कतासूं राणीनै मोहत कीवी ।

हठमलवाक्य

एक षड चढी दुसरे, तीसरे षडे आय बे ।
मे परदेसी पथीया, थोडासा पाणी पाव बे ॥ ३०

वारता— हठमल इसो कहीयो । तरे राणी कुजो भर पाणी पावा गई । हठमल पाणी पीवा लागो ।

राणीवाक्य

दुहो— फर चीदा दाव घणो, नीर ढुले ढुल जाय बे ।
पथी नही तु तरसीयो, नेणा रह्यो लोभाय बे ॥ ३१

वारता—जद हठमल पातसाह राजी हुऊ । राणी पीण षुसी हुई । दोनु नव षडे महीले चढचा । चोपड षेल्या ।

हठमल वाक्य

दुहो— चोपड षेले चतुर नर, दस दस मोहर लीगाव बे ।
नटण न पावे सुदरी, द्यो धुर अब्यर दाव बै ॥ ३२

राणीवाक्य

नाहर सेती अधीक वल, साहीव चतुर सुजांण वे ।
हस हस वाता करत सु, वगा (डा)सु कीसो गुमांन वे ॥ ३३

वारता— इम आमा साहमा दुहा-गाहा कहीया, रम्या-षेल्या, भोग-वीलास कीया । हठमल रसालुको षबर पुछी—सीकार कीण वेला जाए छे, कीण वेला पाछा आवे छे तीका कहो । तद राणी कहे— पोहर १ दीन चडता जावे छे, पोहर १ दीन पाछलो रहे, तरे आवे छे । इसो सुण ने हठमल असवार हायने घरे गयो । तठा पछे महीलार वारणे मेना हुती सो बोली—भला भाभीजी ! सवरा हुआ, थाने छ मीनारा पाली मोटा कीया था, सो आज आछो कीनो, पीण रसालु आइने आवणद्यो ।

दूहा— जे पर पूरषां कामनी, हील-मील पेलणहार वे ।
ते पतिनै काकर-समो, गिणै नित की नार वे ।। १३१

३० वार्ता—इसो पातसाह मनमै वीचारी नै राणीनै कहो—'तैरे ताई पातसाहकी मूदी करू, तैरा हाल हुकम, तैरा हुकम सारी पातसाहीमै करूगा । तेरी आण-दाण कोई लोपन पावै नही । धनकी धनीयानी करूगा । इस वातकै वीचै जौ कछू कूड है तो षूदा मैरै ताइ सभा देवेगा । या वातमै कसीर न जाणोयौ । तुमारा हीताकी कवूलायत इस तरफ रहैगी । अरी मेरा नगर नेहडा है । अव तुमारा मनकी तुम करो ।' तठै राणी वोली—पातसाह ! सीलामत, अवी ले चालौ तो ठीक है, नही तो रीसालू आवैगा तो वेत वनैगा नही । तठै पातसाह राणीनै लेनें उठीयो । तठै सूवो नै मेणा पीजरमै वेठो थो । तरै मेना केहवा लागो—

दुहा— दस मास हदी परणीया, कुंवर रीसालू तौय वे ।
सेवता सोलह वरसमै, कीधी तो मनमै जोय वे ।। १३२
रीसालू कुवरनें छोडनें, क्यू जावै घर ओर वे ।
पर पूरषासू नेहडौ, किम कीजै निज जौर वे ।। १३३

ग ऐस्यो हठमल पातस्याहनै कह्यो । तदी पातस्याहजी काई कहै—थोडो सो पाणी पावो, तीरस लागी छै । तदी राणी नीची उतरवा लागी । तद राणी पातस्याहरो नाम पुछ्यो । तदी पातस्याह राणीनै काई कहै—

दूहा— मेरा नाम छै हठीमला, नवहथा हठी होय वे ।
मेरी पाघ वतीस वड, उपर छोगा च्यार वे ।। २३

राणी पातस्यानै काई कहै- राणीवाक्य

दूहा— तु हठीमल तु हठीमला, हठीया तेरा नाम वे ।
रपी वेली जो चरै, सीर धरीया आव वे ।। २४

तदि हठीमल राणीनै काई कहै—

दुहा— हु हठवा हठीमला, हठीया मेरा नाम वे ।
रपी वेली जे चरै सीर जाऐ तो जाग्र वे ।। २५

तदि म्हैल चढ्या । राणीवाक्य—

दुहा—ऐक पड दुजै पड, तीजै पड आय वे ।
मे परदेसी पाथीया, थोडो सो पाणी पाव वे ।। २६

वात—राणी पाणीको कुजो भर लाई । पाणी पीवा लागा । राणी काई कहै—

दूहा—कर छींदो क्यु कर पीवै, नीर ढुल ढुल जाय वे ।
पयो नही तीसाईयो, नयणा रह्यो लोभाय वे ।। २७

३१ वार्ता—A. इसा दुहा मेणा राणीने कह्या । तठै रांणी पींजरो पोल ने मेणाने काढीने पापा पोस नापी ने छुरो लेगाने उठी । तठे सूवे विचारीयो—राजओ मेनेन मारसी तो मने उरा काढणी । इसो विचारने पीजरा माहेथी सूवो नीकल ने मैनाने चान्च पकडे ने उडीयो । सू सेहर बारे दिषणा दिसें कालो माहादेवरो देहुरो छी, तिणरे बारणें एक मोटो गाबी छे, तिणरे पेडरे षोपाल छे, तिणमें मेनाने बैसाण ने कहे छे—

दूहा— कामण हीयडा कोरणी, जीवत रही तु आज वे ।
हिव सारी सीष होयसो, नेह विलूधी नाज वे ॥ १३४

३२. वार्ता—हि । नाअकण राउ कनासू जो रती छुटी छे । मो हमे पाषा-परा वेगो ही आवसो । पोण पीणोरा जतन करजो करसू । कोण हो वार्तामे कसार

वात - तवी पातस्याह रजावंध हुवा । नव षंडे म्हेल सउवा, चोपड षेल्या । तवी रीसालूको वेई पुछवो—कवी सोकार जाएे छे, कवी पावें छे ? तवि रांणी कह्यो- पोहर दिन सकार घउतां जाएे छे, पोहर पाछलो रहता पावें छे । तवि हठीमल पातस्याह ने रांणीरो चीत-मन एकमेक हुवो । जाणे-अछरी रभा छे, ईणसु भोग भोगु, ऐसी तो देवतारे पर नही । सोव हठीमल भोग-वीलास करी नर-भवनो लाहो लीयो, ऐक मेक हुवा । पोहर वोय रहे ने सीष मागी । ताद राणी कह्यो- तुम्हे नीत-पत ईण वेला आवजो, ईम कहने सीष दीधी । आप घरे गया । ईतरे मणा बोली- भला, भाभी ! ये ऐसा हुवा । थाने महीनाका पाल्या था । सो थांरा तो ऐसा लषण छे । पिण रीसालु आईने आवासी ।

ग—वारता तवी पातसाह बोलीयो थोडो सो पांणी पावो । तवी राणी पावण लागी ।

दूहा कर लीधो पाणी पीवें, नीर दुजी दुजी आग वे ।
प री नही वीसाइयो, नेणां रह्यो सुभाय वे ॥ १७

तवी राणी पातसाहारो नाम पतुछो-

दूहा मेरा नाम हठ भला, नगहठ हठीला होय वे ।
मेरी पाग जो पड़, उपर लुगा रगार वे ॥ १८

वारता तवी राणी कह्यो--उवा पधारो । पछ नव पडे नउ गो । रसालु वेई पतुछो कठीयक सकार जायें छ ? पोहर दीन रहतां आय छे । पछे पातसाहा राणी माहो-माहे हस, रम छे । मारच-भरो लागो छे । सीष मागी । तवी राणी कह्यो- वे सवाई आवज्यो । पातसाह घरो गयो । पछ मणा बोली भाभीजी ! थे पण आछा हुवा ! माई रसालु आवतो ।

कोई पडण देउ नही। नै लारै राणी नै पातसाह सोच कीयौ। पातसाह कही–वेटै सूवटै घणी कीवी। अवै तो काम तरेदार छे। दूसो विचारै छै। तिण वेला सूवौ उडने सतभूमीया मेहला उपर आय वेठौ राणी नै पातसाहनै दूहो केह छै A—

[दूहा– है सूगणी म्हे पषीया, किणरे आंवा हाथ वे।
पिण छल कर म्हे छै तरचा, बलि माहरो नही नाथ वे॥ १३५
पिण थै जावो गोरडी, पातसाहरे साथ वै।
माहरो धणी जव आवसी, तद म्हे हौस्यां सूनाथ वे॥ १३६
साइद भरस्यां गोरडी, चौरडी कीधी चोर वै।
सांहां घर पू हती गोरडी, करि करि बहु मनवार वे॥ १३७
पिण को दाय-उपायथी, लासां थांनै इण ठोर वे।
रीसालूरी तुं गोरडी, म्है मैंतै कीधी जोर वे॥ १३८
भला तुम्हे सुषीया हुवौ, म्हे दुषीयारो देह वे।
साहिब करसी सौ भला, पषी पषी सा लेह वे॥ १३९
आजूनौं दिन अति भलो, जीवत रहीया म्हेह वे।
हिव सारा ही थौकडा, करस्या सारा जेह वे॥ १४०

३३ वार्ता—तठै पातसाह नै राणी सूवारा दूहा सूण्या। तरै मनमै जाणीयो–जे सूवटो काम पराव करे तो आज तो ओ काम न करणौ, सूवारै कोइ वता करस्या। इसौ पातसाह विचारने राणीनै कहै—है राणी! आज तो थ अठे ही ज रहौ, साथै ले जाऊ तो सूवौ छूटैपग छै, सौ उडनै कुवरजीनै कहै। कुवर घोडी दपटायने आपाने पोच ने दोन्हाहीनै मार नापै। तिणसू आज मानै सीप हुवै छै नै सूवारे यंक पवनवेग घोडो छै सो ल्यावू छ। तिण माथे थानै चढाय नै एक घोडी मे लेज्यावस्या।]

ग ईतरो कह्यो। तो वारे राणीनै रीस चढी। तदी मैणाको गलो पकडयौ, पीजरा माही थी काढीनै मारी। तदि सुवटो डरप्यो, जाण्यो–मोनै पीण मारसी। तदी सु वे चकोर यकै दाव कीधो। मोनै गरम घणी होवै छै। सुवानै पीजराम्हैथी परो काढयो। तदी सु वो मैणानै मारी तदी सुवो ऊचो जाय वैठो।

घ. तदी राणीनै रीस आई। तदी मैणारो गलो काटयौ। तदी सुवो डरप्यो। सुवो कैहवा लागो–मोने गरमाई घणी हूवै छै। पीजरा माहीथी परो काढीयो। सुवो उडे नै नवषडा मेहल उपरै जाये वैठो।

[–] ख ग घ में कोष्ठगत दोहे एव गद्याश अप्राप्त है।

A तठे राणी सूणने बोली–पातसाह ! सिलामत, आप कया सू प्रमाण छै । तिण षौज रमाया सारा हि थोक होसी । आप दिन पाच सात तौ घोडै चढिनै इण ही वेला पधारबो करो, विलास करे नै पधारबो करो । दिन पाच-सात पछै दाव लागसी, सो ही करस्या । धिरा काम सिध हूवै ।

दूहा– **उतावल कीया अलूझीयै, सनै सनै सहु हौय वे ।**
मालो सींचै सो घडा, रीत आया फल होय वे ।। १४१
कांम विचारीनै कहो, रहसी तिणारी लाज वे ।
ऊठ कहो उतावला, तो विणसाडै काज वे ।। १४२
षिजमत-ब धी रावली, जाणो चित्त मझार वे ।
रीसालू नै छोडस्यू , कोइ क डाव अटार वे ।। १४३
सूष करस्यू सारी वातरी, पषीडारी पूकार वे ।
लागवा नही द्यू एक ही, करस्यू हुय हुसीयार वे ।। १४४
आप षूसी पीउ पधारीयौ, दुष म करो कोई आज वे ।
साहिब सारा ही हुसी, आंपणा चित्या काज वे ।। १४५

३४ वार्ता—इसा समाचार पातसाहनै कहीया । तठै हठमल सेणासू सीष करनें घरा दीसा हालीयो सो घरे पूहता । ने राणी दीलगीर हुयने सूती । सूवौ सतभौमीया मेहला चढीयौ थको कुवरजीरी वात जोवै छै । A

B इतरै सागी वीरीया हुई । तठै कुवर घोडौ षिलावता आया । आगे सूवानै मेहीलरे इडारे वेठो दीठौ । तठै सूवानै कुवरजी पूछै—

दूहा– **आज उजाडा देसमै, फरहरीया पषाल वे ।**
चिहु दिसी जावौ चमकतौ, नैणा करीय विसाल वे ।। १४६
पीजरीयारा पोढणा, सौ इहा किम तुमे आज वे ।
क्या विध वीत क दाषीयौ, कैसा हूवा आज काज वे ।। १४७ B

A-A चिह्नगर्भित पाठ ख ग घ प्रतियो में नहीं है ।

B-B ख ग घ प्रतियो में गद्याश एव पद्यो के स्थान में निम्नाश ही प्राप्त है—

ख एहवे रसालु आया । तदी सुवटो रसालु प्रते काई कहे छे—

ग अतरायकमै रीसालु जी पीण आव्या । अनै सु वो बोल्यो । सुवो रीसालुनै काई कहै—

घ अतरै रसालु आयो । सुवो काई कहे— ।

सूवावाक्य[1]

पच्च[2] पखेरू सात[3] सूवटा[4], नव[5] तीतर दस[6] मोर बे।
राजा रीसालूरा मेहलसै[7], चोरी[8] कर गया चोर बे ॥ १४८

रीसालूवाक्य[9]

चोर इहां कुंण आवीयो, एहवो इहां कुण सूर बे।
साच कहै रे सूवटा, मत बोलेजे कूर बे ॥ १४९[10]

सूवावाक्य[11]

अहो अंहो कुवरजी रीसालूवा, मे नही वोलां झूठ बे।
म्है पिंजरारा वासिया, सो किम मदिर पूठ बै ॥ १५०[12]

[३५ वार्त्ता—तठै कुवरजी मनमै वीचारीयौ—सूवौ-मेणा पिंजरमै हु ता; सो सूवौ महिला उपरे वेठो, तिणरो कारण काईक तो छै ? इसौ विचारनै कुवर मेहला चढिया। तठै सारा हि चरित्र दीठा। सेझ रूदोली, विछाता सल दीठा, पानारा पिक ठामर दीठा। तठै राणीनै जगायनै कुवरजी पूछै छै—

दूहा- आज मेहिल आछौं वणौ, पर हथ लीधो लूट बै।
साचौ कहै बै सूवटौ, राणी कहो पर पूठ बे ॥ १५१
स्यू कीधो रांणी एहवो, चारित्र सलूणा नैण बे।
लट काली नारी कहौ, साच कहौ भोरी सैण बै ॥ १५२

३६ वार्त्ता—है राणी ! सूवै वात कही, सौ साची कै कूडी ? तठै राणी विचारीयो—इण सूवौ हरामपोर मारा चरित्र कुमरजीनु कहिया दिसै छै, पिण माहरा चरित्र आगै कुवरजी कठै पूगसी, कठा ताई साच कढावसी ? इसो विचारनै कुवरजीनै राणी कहै छै—]

---

१ ख सुकवाक्य दुहो। ग. घ. दुहो। २ ख पाच। ३ ४ ग घ उड गया। ५ ग घ दस। ६. ग. न. दोय। ७. ख. राजा रसालुरे मालीये। ग घ रीसालु हदा धवलहर। ८ ग. घ कोई चोरी। ९. १० ११ १२ ख ग. घ में अनुपलब्ध हैं।

[—]. ख ग घ. प्रतियो में केवल निम्न वाक्य ही प्राप्त है—

ख वारता-रसालु सुवटारा इसा वचन सुण ने राणीने कहे-जुउ राणी ! सुवटो काई कहे छे ? राणी कहे—

ग. वारता-ऐस्यो त्रीभाव सुण नै रीसालु राणीनै काई कहे—राणी ! सुवो काई कहे छै ? तदी कह्यौ—

घ. वारता – तदी रसालु कहे—राणी ! सुवौ काई कहै छै ? तदी राणी कहे—

दूहा– कूडौ बोलै छै सूवटौ, मेंना गई अवनास बे ।
तिणसू चूका ढोलडा, राज सुण्याया तास बे ॥ १५३A
हम की लोंयण लोइया, हमथी तोरया हार बे ।
हम ही सेझ हो रूंवली, हम हो न्होष्या तबोल बे ॥ १५४B

[कुंमरजीवाक्य

पिलंग छपीया छाटीया, ढीली भई यबदाण बे ।
तीर भया वीष हो रीया, किम कर चढीय कबांण बे ॥ १५५

राणीवाक्य

ऊ एकलडी महीलमै, तीणथी कीधी चोल बे ।
साच न बोल्यौ सूवटौ, गला हदी रोल बे ॥ १५६]

A. इस दूहेके स्थानमें ख. ग घ. में केवल निम्न वाक्य ही प्राप्त हैं—
ख. सुबटो जुठ बोले छे । ग जुठो बोलै छै । घ सुवो धूल षायै छै ।
B. ख ग घ. में निम्न दो दूहे प्राप्त हैं—

रसालुवाक्यं

दुहो– कीण ए लोयण लोइया, कीण ए तोडचा हार बे ।
कीण ए सेजा मुगवली, कीण राल्या तबोल बे ॥ ३५

रांणीवाक्य

हम ही लोयण लोइया, हम ही तोडचा हार बे ।
हम ही सेझा मुगवली, हम राल्या तबोल बे ॥ ३६

ग तवी रीसालु रांणी नैं काई कहै छै[१]—

दूहा– कीण[२] ही लोयण लोईया[३] बे रांणी[४], कीणही[५] तोडचा हार बे ।
कीणही[६] सेजा रूंवली, कीण ही नाष्या[७] तबोल बे ॥ २९

राणीवाक्य

मे ही लोयण लोईया[८] बे कवर[९], मे ही तोडचा हार बे ।
मे ही सेजां रूवली, मे ही नाष्या[१०] तबोल बे ॥ ३०

घ १. तवी रसालु कहै—। २ घ कण ही । ३ घ लुईया । ४. घ में नहीं है । ५. घ. कीण । ६ घ. कीणी । ७. घ राल्या । ८. घ. लुहीमा । ९. घ. मे नहीं है । १०. घ. राल्या ।

[—] कोष्ठगत सदर्भ एव १५५ तथा १५६वां दूहा ग घ. में अप्राप्त है तथा ख. प्रति में एक ही दूहा प्राप्त है जो इस प्रकार है—

रीसालुवाक्यं

पलग छीपाए छाटीये, ढीली भई अबवांण बे ।
तीर भाया हम ले चले, कीम कर चाढो कबांण बे ॥ ३७

A ३७ वार्त्ता—इसो सूण नै कुवरजी उचा जोवा लागा। तठै छातरै पीक नीजर ग्रायो। तठै कुवरजी वोलीया—रांणीजी साहिव! ग्रोर काम तौ थे कीया, पिण छातरे पिक किण लगायो? ग्रो पीकरो तौ जोवार हुवै नै सवा मण लोह डील उपर रापै, तिण विना इतरो उचो न लागै। तरै रांणी वोली—माहाराज कुवार! ग्रो पीक तो मे लगायो छै। ढोलीयै चीती सूती थी तरे मै छातनै वाह्यो। तठै कुंवर वोलीया—दूरस कही छै; पिण काना सूणीया तो न पतिज्यू, ग्राष्या दीठा पतिज्यू। सौ ग्रो ढोलीयो छै, तिण माथै सूय ने पीक वाहा। तठै राणी ढोलीया चित्ती सूय ने पिक नाष्यौ। सौ पीक पूठी माथा उपर ग्राय पड्यौ। इम दोय-तिन वार घणी मेहनत कीवी, पिण पीक पूठो ग्राय पडै। तठै कुवरजी वोलीया—राणीजी! घणी मेहनत कीवी, थाहरा गुण निजर ग्राया।A

Bइतरै सूवौ पिण महिलरा इडांसू उडनै कुवररो हाथरो ग्रगुठा उपरे वेठौ। सूवासू कुवरजी सारी हकीगत केह दीवी। मनमै जाणीयौ–जे कोई पूरप वलवत जोरावर छै, पिण दाणा-पाणी छै तो सारो हि जावतो कर लेस्या। इसो विचार नें कुवरजी सूवानै पूछीयो—सूवाजी! मेना कठै गई? तरै सूवो मनमै जाणीयौ–जै ग्रवै सागै वात कहु तौ राणीरो नाम हूवो, तरै सूवैं कह्यौ—माहाराज कूवार! मनै छोडनै जाती रही। तरै कुंवरजी वोलीया—सूवाजी! ग्रस्त्ररी कीणही री नही छै।B

Cयू वांता करता कुवरजीरो वोल हीरण सूणीयौ। तठै हीरण कुवरजीसू मीलवा ग्रायो। वीती, तीका वात ग्रहमी-सामी पूछी। तठै कुवरजी जाणीयो—निश्चौ हठीयौ पातसाह कहीजै, तीकोइ ज दिसै छै। इसौ विचार नै हीरणनै वरज ने कुवरजी सोय रह्या।C

A–A. चिन्हगत पाठभेद ख ग घ प्रतियों में निम्नोल्लिखित है—

ख. वारता– रसालु कहे—देषा, ये मा देषता नवपडाके छाजे तवोल नापो। तदी राणीइ पान-वीडी चावने छाजा सारु तवोल नाप्यो। सो राणीरे पाछो माथा उपर ग्राय पड्यो। जद रसालु कहीयो—थारा गुण जाण्या, थे वेसे रहो।

ग वारता– तदि रीसालु कह्यो—म्हा देपता नापो। तवोल नवपडं छाजै नाप देषालो तो थे साचा। तदि पान चाव्या। तवोल नाप्यो। माथा ऊपरं पाछो ग्रावी पड्यों। तदी रीसालु कह्यौ—ग्रवं वैसो। म्हे जाण्या या(या)नं।

घ तदी रसालू कहे—माह देपता पान तमापु पावी, नवपड्याकं छाजं तावोल नापो। तदी राणी पीक नाप्यो, सो पाछो माथा उपरं ग्रावी पड्यो। रसालु कह्यौ—ये ठकाणं वेसो, यहरो जाणो।

B–B यह ग्रश ख ग घ प्रतियों में ग्रनुपलब्ध है।

C–C ख ग. घ प्रतियों में चिह्नित ग्रप्राप्त है।

Aपरभातरो पूहर हुवौ। तठै घोडै असवार हुई यनै सूवानै ले सीकार चढिया। राणीनै जाबता दिवो। तठै सूवो नै कु वर सहिर बारे जायनै घोडौ छानी जायगामे राषीयौ नै सूवौ ने कु वरजी छानेसे उपरवाडै होय ने मेहलरी वाडीया आयने बेठा।

Bतठै सवा पूहर दिन चढीयो। तठै हठमल पातसाह नवलषै घोडै चढी नै राणीरा मेहला आयो। तठै सूवानै कु वरजी कहीयो—जावो, थे षबर ल्यावो। देषा, राणी एकली छै कै दोकली छै? तठै सूवोजी छानेसे महिला देषने पाछौ कु वरजी पासै आयौ। आय ने दूहो कहो—B

[दूहो– **करसू कर मेलावीया, सेझां लेत सवाद वै।**
डर किणरो नही कु वरजी, अब मत करी थै वाद बे॥ १५७

३८ **वार्त्ता**—तठै कु वरजी हथीयारा सझिनै पातसाहरो मारग जाय रूधीयो छै। पाणीपथौ घोडो षीलावै छै। तठै सूवाने कुवरजी कहीयौ—जा, तु षबर दे आव। तठै सूवौ उडनै मैहिला उपर आय बेठौ। टहुका दिया नै समस्या-बध दूहौ केह छै—

दूहा– **आइयो लेष आलाहका, दूष-सूषका विरतत बै।**
आवेगी यारो मोतडी, पर-बधो कुलवत यै॥ १५८

३९ **वार्त्ता**—इसौ दूहौ केहने किलोल कर बेठो छे। पाषा फरफराट करै छे। रोम रोम चाचसू समारे छै। इण भातसू घडी येक चरित्र करनें पातसाहनै सूनाय नै बोलीयो—

A–A ख ग. घ में निम्न पाठ है—

ख इम करता तीको दीवस वतीत हुउ। बीजे दीन रसालु सीकार चढीया। सुबटानु साथे लीयो। महीला नीचे छाना जाय बेठ रह्या।

ग तदी रीसालु दुजै दीन सीकार जाता सुवानै लारै ले गया। आप सीकाररो मीस करेनै मैहलामै ऐकत जाए बैठा।

घ दूजै दीन सकारको मस करेनै गयौ। सुवा नै हीरणनै ले गयो। सो आघोसो जाये नीचली भुममै छानोसो वैठो।

B–B ख. ग. घ. का पाठ इस प्रकार है—

ख. इतरे हठमल फेर आयो। उचो महीले चढयो। रसालु चढण दीधो।

ग. अतरायकमै पातस्याजी आया। हठीमल उचा चढया। रीसालुयै चढवा दीवो।

घ. अतरै दोरैकै वषत हठमल पातीसाह मैहल ऊपरै चढयौ। रसालु जावा दीधो।

[–] ख ग. घ. प्रतियो में कोष्ठगत गद्यपद्यात्मक अंश अप्राप्त है।

दूहा– आईयो कुंवरजी आवीया, सेहर कनै आश्रांम वे ।
रमो रे पथीडा समझिनै, उड जावो निज धांम वे १५९
इम टहुक्का सरला दीया, सतभौमीनै धांम वे ।
रांणी-हठमल तिहा सूण्यौ, उठीया छोडी कांम वे ।। १६०]

* ४०. वार्त्ता—इसा समाचार सूणनै पातसाह सावचेत हूयने, हथीयार पडिहार लेइने, आपरै घोडै आय नै पागडै पग दीधो । तठै राणी घणी वीरहमे मन्त हूई । तठै पातसाह राजा-मारी चाल पकडनै केह छै—

दूहा– रयणी दुषकी राश भी, भरसी गुंण सताव वे ।
ढोली सहु ढीली पडी, जावो कलेजा काप वे ।। १६१
मे विरहणी विरहा तणी, फोट सूवटा तुझ फोट वे ।
सूघरी घडीय छुटाय दी, जीवत वीधी चोट वे ।। १६२
हठमल हठ कर चालीयौ, निज मारग मन रग वे ।
आगे रीसालू देषीयो, तुरग कुदावे अभग वे ।। १६३*

[४१. वार्त्ता—पातसाहजी आपरा मारगमै चालता आगै रीसालू कुवरनै घोडौ कुदावतौ दीठौ । तठै पातसाह जाण्यौ—आज चोट हूसी । इम चालता आमा-साहमा मिल्या, वतलावण हुई । तठै कुवरजी कहै—रे हठमला वावला ! माहरा महिला माहि चोरी कीधी, तिणरो जाव दिरावो । तठै पातसाह वोलीयौ—तेरा मेहिलका चोर मे हू , तेरे करणा हुवै, सू ते करलै । तठै कुवर वोलीयौ—तु सूरवीर छै तो पेहली हथीयारां हाथ करो । तठै पातसाह वोलीयौ—हु हाथ करस्यू तरै थे कीतगीक वार रेहस्यौ ? यू मनवार करता कुंवर-पातसाह मूछा वट घाल्यौ । तरै रीसा करनै पातसाह सवा मणरो भालो काधै हुतो, सो कुंवर साहमो वाह्यो । तठै कुवरजी कलासू टालीयौ । सो भालो दूर जातो पल्यौ । तठै रीसाल आपरो भालो लेने पाछो वाह्यौ । तिण पातसाहरे छातीमे पूतो वाहिर पार निकल गयो । तरे हठमलजी घोडासू हेठा पडीया । तठे कुवर हेठो उतर ने पातसाह कने आयने कहै छै—

दुहा– नार पराई विलसतां, कांटा पूर तूटाय वे ।
सीस साई जव दीजीये, मीच पडै सूचि काय वे ।। १६४

– ४०वीं वार्ता का गद्य-पद्यांश ख. ग. घ प्रतियों में नहीं है ।

[—] कोष्टकान्तर्वर्ती ४१वीं वार्ता के गद्य-पद्यात्मक अंश की वाक्यरचना ख. ग घ प्रतियों में इस प्रकार वर्णित है—

सूण रे हठीया पातसा, ताहरो बल हिव फोर बे ।
हठमल धरती लोटात्तो, चोरी पडी सीर चोर बे ।। १६५
हिव रीसालू सीस कूं, वाह्या अपणा षग्ग बे ।
हठमलका सीस कपीया, ते मारगने वगाव बे ।। १६६]

४२ वार्ता—तठै पातसाहनो कालजो काढ, नै घोडारा तोबरामै घाल, नै माथारो लोही छागलामै लेने सेहरमै कुवरजी आया । आगै कीणही री हाटमे चरी लेइ, ने तेलरा घडा भरीया था सूनी हाट माहै, तिण चरीमे तेल लेने लोही भेला कीया, नै आपरे घोडै असवार हुय, ने नवलषो घोडो हाथे पाचने आपरा मेहलारी वाडीमै बाध दीयौ, नै आपरो घोडो सदाई जागा बाधीयो, ने सूवाने कहीयो—पातसाहनै मारीयौ छौ। इतरो केहने तोबरो, चरी जे(ले)ने मेहला कुवरजी आया । आयने राणीने कहीयौ—जे आज सीकार आछी कीवी छै । बडा सीरदारारा साथ भेला हुवा छा सो मेह तो आरोगीयासा ने ताहरै वास्तै लाया छा, सो सभाल लीज्यौ । इतरो कहीने हेठा उतरीया ने हीरण कने गया । अबे थै निसक थका तिण वागमै हगाम करि आवो । इसो केहने सूवाने कहीयौ—जावौ, थे राणीनै जितावणी कर देवज्यो । तठै राणी मास तोबरासू लेने राध्यौ ने तेलरो दीवो कीयो छै । हिवै मासने राधने षाधौ । तठै सूवो थाभै वेसने राणीनै सूणावै छै—A

ख हास-वीलास कर पाछो उतरता रसालुए वाट बाधी हती, तीण माहे आय पड्यो । रसालु बोलीयो—हठमल ! तु घणा दीनारो जातो हतो पीण आज हुसीयार हुज्यो, हु मारीया टाल मेलु नही । तव हठमल कहे—हु ताहरो चोर छु; तीण वास्ते पेलो लोह तु कर । तद रसालु कह्यो—पेली लोह तु कर । जदी हठमल कहे—माहरा हाथरी लागा तु कोणने मारसी ? तो ही पीण रसालु पेली लोह न कीधो । तरे हठमल नवहथो जोध-घोडे चढने सवा मणरो भलको साधने रसालुने भलको वाह्यो । तद रसालुए असवार थके टालीयो । अर रसालुए भलको साध हठमलनु वाह्यो । जद माथो आय आगे पडीयो ।

ग तीहा जाए भोग-वीलास कीधो । पोहर एक ताई रहे नै पाछो उतरचौ । तवि रीसालु वोल्यो, कह्यो—हठीमल ! घणा दीनरो जातो थो, आज ठीक पडसी, अबै तु समाव । तदी पातस्याह कह्यो—हू तो थाहरो चोर छु, पैहली तो तु दै । तदी रीसालू कह्यो—हू तो पैहली लोह न करू । तदी हठीमल कह्यो—मेरा हाथकी थ्याकर पीछै कौसकै वैगा ? तदि हठीमल पातसाह नवहथै घोडै चढ्यौ छै । तदि सवा मणको भलको साध्यो । रीसालु टाल्यो । रीसालु हठीमल सामो भलको संध्यौ, हठीमलरं वीधी । माथौ अलगो जाअ पड्यौ ।

घ. पातसाह रमे-षेले नै नीचै उतरचौ । तद रसालु कह्यो—घणा दीनरो जातो थो पण आज ठीक पडसी । रसालु भलको साधं नै हठमाल पातसाहरं वीधी । पातसाह हेठो पड्यौ । मायो वाढीयो ।

A ४२वीं वार्ता की वाक्य-रचना ख ग घ प्रतियोंमें निम्न रूप में लिखित है—
ख जद रसालुऐ हठमनरो कालजो काढ लीधो । चरवी की तेल काढीयो । पछे घरे

दूहा[1]– पीउ[2] कचोलै पीउ[3] वाटके, पीउ[4] दीवलैरी[5] धार वे ।
पीउ तो[6] पेटमे संचरयौ, अजे न धापी[7] नार[8] वे ॥ १६७[9]
हाथ पीउ[10] मूष[11] परजले[12], छिन[13] भर[14] रह्यौ[15] छिपाय[16] वे ।
जीवतड़ां[17] जूंग मांगीयो[18], मूवा[19] पीछै[20] राणी[21] पाय वै ॥ १६८

राणीवाक्य[22]

थे दीनां मे[23] जीमीया[24] मृगला[25] हुंदा[26] साहव[27] वे ।
जो जांणत[28] पीउ मारीयो, तो[29] करती कटारी[30] घाव वे ॥ १६९[31]

४३ वार्ता—इसी वात सूवेजी राणीने कही । कुंवरजी छाना थका वाता सूणी । तरै मनमै वीचारीयौ—आ अस्त्ररी मारे कामरी नही ।[32]

आया । कालजो ने तेल राणीनु दीवा । राणी जाण्यो—मृगरो कालजो दीसे छे । सो कालजो राधी पाधो । सव्याए तेल दीवे सीचीयो । तदी सुवटो राणी प्रते कांइ कहे छे—

ग तदि रीसालु हठीमलरो कालिजो काढि राणी नयै ले गओ । राणीऐ रांध्यो, पाधो, दीवलै वाल्यो । तदि सुवो वोल्यो—

घ. पातसाहरो कालजो राणी नयै आण्यौ । राणी तीरासु रावायो, दीवामै घाल्यौ । तदी सुवो वोलीयो—

१ ख सुकवाक्यं । २. ३ ४ ख प्रीउ । ५ ख. दीवलाकी । ६. ख में नहीं है । ७. ख आयो । ८ ख सार । ९. यह दूहा ग घ मे नहीं है । १० ख प्रीउ । घ सैण । ११. ग मुष । घ मुवै । १२ ग पीउ । घ सैण । १३ ख पीण । ग पीउ । घ सैण । १४. १५ ग दिवलो । घ दीवलै । १६ ख छीपाय । ग घ जलाय । १७ घ जीवता । १८ ग माणीयो राणी । १९ ख मुआ । ग. घ मुवा । २० ख पछे । ग केडै । २१ ग पीन । घ. में नहीं है । २२ ग. रांणी सुवानै काई कहै । घ. में अप्राप्त है । २३ ख दीधो मे । २४ ख जीमीयो । २५ २६. ख. काइ मृग हंदो । २७ ख. साव । २८. ख. जाणु । २९ ख मे नहीं है । ३०. ख. कटारीया । ३१ ग प्रति में यह दूहा इस प्रकार है—

मै जाण्यो मृग मारीओ वे सुवा, मुझ देपणरी चाह वे ।
जो हठीयो मुओ जाणती, तो करती कटारघा घाव वे ॥ ३२

घ. प्रति मे यह दूहा नहीं है । ३२ ख. ग. घ मे ४३वीं वार्ता के निम्न वाक्य ही प्राप्त हैं—

ख वारता – तरे रसालु जाणीयो–आ अस्त्री मा जोग नही ।

ग वात – तदी रीसालु जांण्यो–आ यसत्री मा जोगी नही ।

घ वारता – रसालु मनमै जाण्यो–असत्री मांह जोगी न्ही ।

सुरण रे हठीया पातसा, ताहरो बल हिव फोर बे।
हठमल धरती लोटातो, चोरी पडी सीर चोर बे।। १६५
हिव रीसालू सीस कू, वाह्या अपणा षग्ग बे।
हठमलका सीस कपीया, ते मारगने वगाव बे।। १६६]

४२ वार्ता—तठे पातसाहनौ कालजो काढ, नै घौडारा तोबरामै घाल, नै माथारो लोही छागलामै लेने सेहरमै कुवरजी आया। आगै कीणही री हाटमें चरी लेइ, ने तेलरा घडा भरीया था सूनी हाट माहै, तिण चरीमे तेल लेने लोही भेला कीया, नै आपरे घोडै असवार हुय, ने नवलषो घोडो हाथे षाचने आपरा मेहलारी वाडीमै बाध दीयौ, नै आपरो घोडो सदाई जागा बावीयो, ने सूवाने कहीयो—पातसाहनै मारीयौ छो। इतरो केहने तोबरो, चरी जे(ले)ने मेहला कुवरजी आया। आयने राणीने कहीयौ—जे आज सीकार आछी कीवी छै। बडा सीरदारारा साथ भेला हुवा छा सो मेह तो आरोगीयासा ने ताहरै वास्तै लाया छा, सो सभाल लीज्यौ। इतरो कहीने हेठा उतरीया ने हीरण कने गया। अबे थै निसक थका तिण बागमैं हगाम करि आवो। इसो केहनें सूवाने कहीयौ—जावौ, थे राणीनै जितावणी कर देवज्यौ। तठै राणी मास तोबरासू लेने राध्यौ ने तेलरो दीवो कीयो छै। हिवै मासने राधने षाधौ। तठै सूवो थाभै वेसने राणोनै सूणावै छै—A

ख हास-वीलास कर पाछो उतरता रसालुए वाट बाधी हती, तीण माहे आय पड्यो। रसालु बोलीयो—हठमल ! तु घणा दीनारो जातो हतो पीण आज हुसीयार हुज्यो, हु मारीया टाल मेलु नही। तव हठमल कहे—हु ताहरो चोर छु; तीण वास्ते पेलो लोह तु कर। तद रसालु कह्यो—पेली लोह तु कर। जदी हठमल कहे—माहरा हाथरी लागा तु कौणने मारसी ? तो ही पीण रसालु पेली लोह न कीधो। तरे हठमल नवहथो जोध-घोडे चढने सवा मणरो भलको साधने रसालुने भलको वाह्यो। तद रसालुए असवार थके टालीयो। अर रसालुए भलको साध हठमलनु वाह्यो। जव माथो आय आगे पडीयो।

ग तीहा जाए भोग-वीलास कीधो। पोहर एक ताई रहे नै पाछो उतरयौ। तवि रीसालु वोल्यो, कह्यो—हठीमल ! घणा दीनरो जातो थो, आज ठीक पडसी, अबं तु समाव। तदी पातस्याह कह्यो—हू तो थाहरो चोर छु, पैहली तो तु वै। तदी रीसालू कह्यो—हू तो पैहली लोह न करू। तदी हठीमल कह्यौ—मेरा हाथकी ध्याकर पीछै कीसकै वंगा ? तदि हठीमल पातसाह नवहथै घोडै चढ्यौ छै। तदि सवा मणकौ भलकौ साध्यो। रीसालु टाल्यो। रीसालु हठीमल सामो भलको संध्यौ, हठीमलरं वीधी। माथो अलगो जाअ पड्यौ।

घ. पातसाह रमे-षेले नै नीचे उतरयौ। तद रसालु कह्यौ—घणा दीनरो जातो थौ पण आज ठीक पडसी। रसालु भलको सार्व नै हठमाल पातसाहरं दीधी। पातसाह हेठौ पड्यौ। मायो वाढीयौ।

A ४२वीं वार्त्ता की वाक्य-रचना ख ग घ प्रतियोंमें निम्न रूप में लिखित है—
ख जद रसालुऐ हठमलरो कालजो काढ लीधो। चरषी को तेल काढीयो। पछे घरे

दूहा[1]– पीउ[2] कचोलै पीउ[3] वाटके, पीउ[4] दीवलैरी[5] धार वे ।
पीउ तो[6] पेटमे संचरचौ, अजे न धापी[7] नार[8] वे ।। १६७[9]
हाथ पीउ[10]मूष[11]परजलै[12], छिन[13]भर[14]रह्यौ[15]छिपाय[16]वे ।
जीवतड़ा[17]जूंग मांणीयो[18], मूवा[19] पीछै[20] राणी[21] पाय वें ।। १६८

राणीवाक्य[22]

थे दीनां मे[23] जीमीया[24] मृगला[25] हंदा[26] साहब[27] वे ।
जो जाणत[28] पीउ मारीयौ, तो[29] करती कटारी[30] घाव वे।। १६९[31]

४३ वार्ता—इसी वात सूवेजी राणीने कही । कुँवरजी छाना थका बाता सूणी । तरै मनमै वीचारीयौ—आ अस्त्ररी मारे कामरी नही ।[32]

आया । कालजो ने तेल राणीनु दीवा । रांणी जाण्यो—मृगरो कालजो दीसे छे। सो कालजो राधी पाधो । सव्याए तेल दीवे सीचीयो । तदी सुबटो राणी प्रते काइ कहे छे—

ग तदि रीसालु हठीमलरो कालिजो काढि राणी नथै ले गओ । राणीऐ रांध्यो, पाघो, दीवलै वाल्यो । तदि सुवो वोल्यो—

घ. पातसाहरो कालजो राणी नषै आण्यौ । राणी तीरासु रांवायो, दीवामै घाल्यौ । तदी सुवो वोलीयो—

१ ख सुकवाक्य । २. ३ ४ ख प्रीउ । ५ ख. दीवलाकी । ६ ख में नहीं है । ७. ख आयो । ८ ख सार । ९. यह दूहा ग घ मे नहीं है । १० ख प्रीउ । घ. सैण । ११. ग मुष । घ मुषै । १२ ग पीउ । घ सैण । १३ ख पीण । ग पीउ । घ सैण । १४. १५ ग दिवलो । घ. दीवलै । १६ ख छीपाय । ग घ जलाय । १७ घ जीवता । १८ ग माणीयो राणी । १९ ख मुआ । ग घ मुवा । २० ख पछे । ग केडै । २१ ग पीन । घ में नहीं है । २२ ग. रांणी सुवानै काई कहै । घ में अप्राप्त है । २३ ख दीधो मे । २४ ख. जीमीयो । २५ २६. ख. काइ मृग हदो । २७ ख. साव । २८. ख. जाणु । २९ ख मे नहीं है । ३०. ख. कटारीया । ३१. ग प्रति में यह दूहा इस प्रकार है—

मै जाण्यो मृग मारीओ वे सुवा, मुझ देषणरी चाह वे ।
जो हठीयो मुओ जाणती, तो फरती कटारघा घाव वे ।। ३२

घ. प्रति मे यह दूहा नहीं है । ३२ ख. ग घ मे ४३वीं वार्ता के निम्न वाक्य ही प्राप्त हैं—

ख वारता – तरे रसालु जाणीयो–आ अस्त्री मां जोग नही ।

ग वात – तदी रीसालु जांण्यो–आ यसत्री मा जोगी नही ।

घ वारता – रसालु मनमै जाण्यौ–असत्री मांह जोगी न्ही ।

दूहा– देषो हुंती दस मासनी, पाली किण विध पोष बे ।
हिव पर घर मडप करी, श्रस्त्रीजातरी श्रोष बे ।। १७०[1]
केहनी श्रस्त्री न जाणज्यौ, कुडो नेह रचत बे ।
पूठ पराई नारीया, न धरे एक ही कंत बे ।। १७१[2]
सासरीया पीहर तणा, फुलनै करती षराब बे ।
परपूरूषां मनडो रजे, सकल गमावे श्राब बे ।। १७२[3]

४४ वार्ता—इण भातसू कुवरजी चितवना करे छे। इतरे रात गई देषनै, सारी जातता करने, राणीने मेहलामै जडनै दूजै मेहलामे सूता। हिरण चरता गयो। सूतो मेणा पास गयो। जतन-जाबता साराहीरी हुई। हिवे परभात हुवो। तठै कोई क जोगी, श्रस्त्रीरो विजोग हूवो, नगर देषने पुकारवा श्रायो। आगे नगर कठेई क सूनो, कठेई क वस्ती देषने कोणही कने पूछीयो—रे भइया! इ नगरका राव कहा हे? तठै श्रादमी बोलीयो—श्रहो जोगीजी माहाराज! म्हे तो राजारा मेहलासू घणा श्रागले रहा छा। ए साहमा सातभोमीया श्रावासा सोनेरा कलस चितकै, तिके रावरी जायगा छे। म्हे तो रावजीने कदेई देषीया न छे। थाहरे काम छै तो थे जावो। तठै अतीत रावजी जायगा श्राय। सारी ही सूनी दीठी।[4]

दूहा– नही घोडा रथ उटीया, हाथी ने सूषपाल बे।
चाकर-बाबर को नही, ए नृप केहा हवाल बे।। १७३[5]
इम चितवता श्रावीयो, रीसालू मेहला हेठ बे।
घोडो देष्यौ हिरणेने, वसती जाणी नेट बे। १७४[6]

४५. वार्ता—तठे मेहला हेठै अतीत उभो रेहनै पूकार कीवी—अरे बावा! मेरा धणी कोउ नाहि हे, तेरे पास श्राया हु, सो मेरी वाहर करीयो माहाराज! मेरी श्रस्त्रीके ताइ गाटी परां एक जोगी लेगया, सो मेरी दिराय देवो। ज्यू मेरा जीव सोरो हुवै, तेरे ताइ वडा पून्य हुवेगा। इसी पूकार कीवी। तठे रीसालू सूणने हेठो उतरीयो, जोगी पासै श्राग हकीकत पूछी। तठै जोगी रोयवा लागो। तरे रीसालू कहै—[7]

---

१ २ ३ तीनो दूहे ख ग घ. प्रतियो मे नही हैं।
४ ४४वी वार्ता का श्रश ख ग घ. मे निम्न वाक्यो में ही लिखित है—
ख इतरे प्रभात हुवो। एक अतीत मेहला नीचे श्राय उभो रह्यो।
ग तदी सवार हुवो। एक अतीत म्हेला नीचे श्राये ऊभो रह्यो।
घ मे यह श्रश बिलकुल ही नही है।
५ ६ दोनो दूहे ख ग घ में नहीं हैं। ७ ४५वीं वार्ता के स्थान मे निम्न वाक्य ही ख. ग प्रतियो मे उपलब्ध हैं—ख. बीलाप करतो रोवे छे। तरे रसालु पुछ्यो—क्यु रोवे

दूहा– जोगीडा रसभोगीया[1], भर भर नयंण[2] मत[3] रोय बे ।
आसी[4] म[5] जाणो[6] आपरी, घर तुंमारा[7] जोय बे ॥ १७५[8]

जोगीवाक्य[9]

राजा मेरी वालही, मो प्यारी मन मांह बे ।
वलै न मूझ एहवो मिलै, सूदर रूप सरांह बे ॥ १७६[10]
मे अस्त्री विन सूनडा, जींवडा जात है दोड बे ।
मांडाइ जोगी ले गयो, माहरां जीवरी मोर बे ॥ १७७[11]
मे मरहुं त्रिस कारणे, करीये माहरी सार बे ।
तेरे आगै पूकारीया, सूणीयै माहरी पूकार बे ॥ १७८[12]

४६ वार्ता– तठै कुवरजी मनमैं वीचारीयौ-जे राणीनै इण जोगीनै परी देउ तो पाप कटै । इसौ मनमे विचार करने जोगिने कहै छै[13]—

दूहा[14]– आय सजोगी ध्यांनमैं, रहोये[15] जटा वनाय[16] बे ।
माहरी परणी प्रेमकी[17], चाढी[18] ताहरै[19] पाय[20] बे ॥ १७९

४७ वार्ता– इसो सूणनै, जोगी राजी हुयनै केह छै–तेरा परमेश्वर भला करीयो, मेरा जीव पूम कीया । तुमारी राणी पाउ जहा मेरे किस वातकी कुमी है । तठै कुवरजो ले नै पाणीरी [झा] रीसू सकलप कीधी, नै राणीनै मैहलासू काढ नै जोगीने परी दीवी ने कहै छै[21]–

छे ? तरे जोगी कहे—माहरी अस्त्री मने मोकसे हुओ जाणी मने छोड ओर जोगी लारे गई । तीण वास्ते रोवु छु । रसालुवाक्य—। ग गोरप जगायो । तदि रीसालू काई कहै— घ प्रति में इस वार्ता का कुछ भी अश लिखित नहीं है । १ ख रसभोगीडा । २ ख नेण । ३ ख म । ४ ५ ६ ख त्रीया न होवे । ७ ख हमारा । ८ ग और घ प्रति मे यह दूहा नहीं है । ९ १० ११ १२ सन्दर्भ एव दूहे ख ग घ में अप्राप्त हैं ।

१३ ४६वीं वार्ताका अश ग घ प्रतियोमें अप्राप्त है तथा ख प्रतिमें इस प्रकार लिखित है—

वारता—रसालु जोगीनु रोवतो देषी मनमा वीचारीयो—आ अस्त्री इण जोगीने द्यु तो भलो । रसालुवाक्य—। १४ ख दुहो । १५ ख रहो २ । ग रहि । १६ ख वनाव । १७ ख माहरी अस्त्री परणी जीके । ग माहरी अस्त्री परणी । १८ ग चोहडी । १९ ख ग तुमारे । २० घ में यह दूहा नहीं है । २१ ४७वीं वार्ता घ प्रतिमें नहीं है किन्तु ख ग प्रतियोमें इसका रूपान्तर इस प्रकार है—

ख वारता—रसालु एसो कहि योगीने अस्त्री-दान दीधो । हाथ पाणी घालीयो, श्रीकृष्णारपुन्य कीधो । जोगी वहुत राजी हुओ ।

ग वारता—तदि रीसालू असत्री दीधी । तदि जोगी हुयो । जोगीरा हाथ मे पाणी मुक्यो, राणीनै परं दीधी ।

दूहा— **जावो रांणी विडांणीया, जोगी लार जूगत बे ।**
थे मदा सीर गयो हिवै, पर वणीया गत चित्त बे ।। १८०[१]

४८ **वार्ता**— इसो कहिनै जोगीने सीष दीवी । अबे मृगला ने सूवा ने मेना न सर्वने साथ लेने कुवरजी असवार हुवा सेहर बारे आया । तठै सूवे विचारीयो— कुवरजी सहतो आज नगर छोडीयौ ने कठेइक आघा जावसी । तठे सूवो केह छै[२]—

दूहा— **अहो रीसालू कुवरजी, क्यूं छोड्या रूडा धाम बे ।**
किण दिस मजल करावस्यौ, किण पूर केहने गाम बै ।। १८१[३]

कुवरजीवाक्य[४]

सूवा किण देशे चला, सूरां किसा विदेस बे ।
जिहा अपणा अन्न-पाणीया, जिहा करस्या पर सेव(वेस)बे ।। १८२[५]

४९ **वार्ता**— तठै सूवेजी बोलीयो—माहाराजा कुवर ! आप घडी एक पग थभजो, सो मेनाने लेने आउ । तठै कुवरजी बोलीया—मेना तो जाती रही थी, सो अबे थे कठासू ल्यावज्यो ? नरे वासली हकीकत सूवै सारी कही । नठै कुवरजी जाणीयो—जे सूवो वडो पर उपगारी छै । राणीने जीवती रापी, नही तो हु आ वात सूणतो तो राणीने मार नाषतो । पिण स्यावास इण पषोरी बूद्धमे ।[६]

दूहा— **उत्तम जीव हुवे जिके, जिण तिणसू उपगार बे ।**
करता न जाणें हाण बे, राषे सूष पर कार बे ।। १८३[७]

५० **वार्ता**— इसो विचारने कुवरजी बोलीया—जे सूवाजी मेनाने किण तरे ल्यावस्यौ, हु साथे हि चालू, पीजरामे लेने आघा चालस्या । इसो कहीने कुवरजीने सूवो माहादेवजीरे देहरे ले गयो । आगे कुवरजी माहादेवजीरो दरसण कीयौ, पूजा कीवी, अरक पूफ घणा चढाया, दुपद कीया, सूत कीवी । पछे मेना ने सूवाने पीजरामे घालने कुवर आघा चालीया ।[८]

---

१ यह दूहा ख ग घ प्रतियोमें नहीं है ।

२ ४८वीं वार्ता के स्थान पर ख ग घ प्रतियोमें निम्न वाक्याश ही उपलब्ध हैं—

ख रसालु घोडे असवार होय आगे चाल्या । मृग, सुवटो साथे छे । राजा मानरी देस साह वडीया ।

ग पछे रीसालु असवार होय नें मृगनें साथं लेईं परो गयो ।

घ सवेरे घोडे परी रसालु परा चाल्या ।

३ ४ ५ ६ ७ ८ गद्य-पद्यात्मक अश ख ग घ में नहीं है ।

[हिवै राणी सामीजी कने ऊभी थकी विचारीयौ-ओ काम पोटो हुवा, सामीरा लारे किसी तरे जाउ, पिण दाणा-पाणीरी वात इसीहीज हुई, हूंणहारने कोई पूग सके नही ।

दूहा– दईवांधीन लिष्या जिके, अकण भिसलें सीस वे ।
जेसा दुप सूष सीरजीया, जेसा लहै नर दीस वे ।। १८४
रामसरीसा भोगव्या, वारै वरस वनवास वे ।
तो हु गीण (ती) केतली, दईव लिप्या ते आस वे ।। १८५]

५१ वार्त्ता– इसो मनमे राणी पीछतावो कीयो ने मनमे वीचारीयो–जे दाणा-पाणी छै तो सारा ही थोक करस्यू । इसो विचारने राणी जोगीनै कहै— सामीजी माहाराज ! अठे तो सून्याड छै ने अठासू सात कोस उपर जलालपूर पाटण छै, तठै हठमल पातसाह जा (राज) करै छै, तठै हालो, जाय वस्या, आपणी गुदराण करस्या । तठै सामीजी राणीनै साथे लेने चालीयो । सेहर वारे जायने जलालपूर पटनरो मारग लेने चालीया । आगै हालता थका मारग माहे पातसाह मूवो पडीयो छै । तठै राणी देष न मनमे विचार छै–देषो, पातसाहसू रग-विलास करता, तिके आज माध्या मिण-मिणाट करै छै ने कागला सीम कुचूरे छै ।*

दूहा– हठीया[1] रावत[2] वाकडा[3], तो विण[4] रेन[5] विहाय[6] वे ।
तेज[7] पराक्रम[8] ताहरो[9], 'सो हिव'[10] कागा[11] पाय[12] वे ।। १८६

[–] कोष्ठगत गद्यपद्यांश ख ग घ प्रतियों में अप्राप्त हैं ।

* ५१वीं वार्ताके चिह्नित अंश का पाठ-भेद ख ग घ ङ, प्रतियों में इस प्रकार है—
ख 'पुठाथी'[१] राणी 'महीलासु'[२] 'नीची उतरी'[३] 'अतीतनु कहे'[४]— 'मो साथे आवो'[५] 'जदी जोगी साथे हुओ'[६] 'राणी चाली चाली'[७] 'हठमल मुओ पड्यो हतो, तठे आई'[८] । 'राणी वाक्य'[९] — ।

'–' १ ग पछे । घ पाछासु । ङ हिवै वासाथी । २ ङ महीला थी । ग में नहीं है । ३ घ में नहीं है ४ घ जोगी तीरै आई । ङ जोगीने कयो । ५ घ में नहीं है । ङ मों साथे हुवो । ६ घ ङ में नहीं है । ७ घ जोगी, राणी । ८ ग हटीमल पातस्याह मुवो पड्यो छै, जठै आवी नें त्रीभाव देप्यी । घ हठमल मुवो पड्यो, जठे आई ऊभी । ङ हठमल पातमा मारीयो हुतो जठे आइ । ९ ग राणीवाक्य झुरणा । घ काई कहै । ङ राणी वायक ।

1 ग घ हठीआ । 2 ख मामत । ग घ सावत । ङ सामी । 3 ख घ ङ वकडा । 4 ग वीण । घ वन । 5 ख रयणी न । ग रयण । घ रह्यो न । ङ रेण । 6 ख वीहाय । घ जाय । 7 ग काले । घ काले । 8 ग मुडके । घ मर्प । ङ प्रताप । 9 ग घ कागले(लै) । 10 ख ङ अब । ग ऊड ऊड । घ उर उर । 11 ख काग ने कुता । ग पडे । घ परे । ङ काग कुत्ता । 12 ग विजाय । घ रोजाए ।

हरिया[१] हुयजो[२] वालमा[३], ज्यू[४] वाडीके[५] सिंग[६] बे।
मो नगुणीकै[७] कारणै, करक[८] वेसाण्या[९] काग बे।। १८७[१०]
[रावत भिडिया वाकडा, ताहरा हाथ सलूर बे।
मो निगुणीकै कारणै, काया कीधी दूर बे।। १८८
हरीया वागारां राजवी, फूलां हदा हार बे।
तोतो छेती बहु पडी, कूडै इण ससार बे।। १८९
बालापणरी प्रीतडी, पूरण कीधी पीर बे।
लागा हाथ छ्यलका, हिव तोसूं हु वो सीर बे।। १९०
कारीगर किरतारका, छ्यल किया तसू हाथे बे।
जीहा पीउ थारी छाहडी, तीहा पीउ माहरो साथ बे।। १९१
मो सरषी निगुणी तणे, कारण काया छोड वे।
हु आभागणी जीवती, रहीय करडका मोर बै।। १९२
फिट फिट कुबधी सज्जना, कीनो नहो मूझ साथ बे।
षबर न का मूझनै पडी, तो मीलती भर बाथ बे।। १९३
रस रमता मैहला विपे(षे) चोपड पासा सार बे।
ते छोडी धर पाथरचा, सीस घड जूवा वारे बे।। १९४
प्रेम गहिली हुं थइ, माहरा पीउरे सग बे।
यू नहीं जाण्यौ हठमला, तो करती रगमे भग बे।। १९५
जाण न पाई हठमला, नवि पूगो मूझ डाव बे।
जे हु मारचो जाणती, तो करती कटारचा घाव बे।। १९६
रूडा राजिद जाणज्यौ, मूझने चूक न कोय बे।
जे हुं जाणती मारीयौ, तौ हु करती दोय बे।। १९७

---

१ ख हठीया। ग हरीग्रा। घ. ङ हरीया। २ ख ङ होज्यो। ग होऐ। घ होयो। ३ ख ग घ ङ वलहा। ४ ख ज्यु। ग घ ङ ज्यु। ५ ख वाडी-केरा। ग घ वाडीको। ङ वाडीकै। ६. ख साग। ग घ सग। ङ वाग। ७ ख ग नीगुणीकै। घ मगणकै। ङ निगुणीके। ८ ख कमे। ग करक। घ कराक। ङ करकै। ९ ख वेसारचा। ग वसाया। घ वैठा। ङ वेसारचौ। १० इस दूहे के पहले एक और निम्न दूहा ख प्रति में मिलता है—

काला मुहके कागले, उड उड परहो जाय वे।
माहरा प्रीउकी पासली, हम देषत मत पायवे।। ४४

[–] कोष्ठान्तर्गत दूहे ख ग घ ङ प्रतियो में अनुपलब्ध है।

व्याप्यारी ज्यूं वटाउडा, वालद ज्यूं विणजार वे ।
लदीयां लोथ पडी रही, कागा कुचरे षार वे ।। १९८
पाना फूलां माहिला, सीस रषूंगा सोड वे ।
के नाराज्यू साजना, लहु मूझ हीयडै जोड वे ।। १९९
अब वेगा मिलज्यौ हठमला, भाज्यू मांहरा देह वे ।
ज्या हठमल ज्या हु षरी, साचो जाणज्यौ नेह वे ।। २००]

५२ वार्ता—इसा विरहरा दूहा कह्या । मनरा मनमे समझ कीया । पिण केहणकी वात नही वणै । इसो विचारने राणो सामीजीने कहा – सामीजी माहाराज ! पर उपगार रो काम छै । हिव हु का धर्म छै – ओ मडो पडीयो छै, तिणनै अगन भेलो करणो जोग छै । तठै सामीजी वात मानी । वात मानणे गेहिमे लकडा भेला कीया । चारे पाई दे नै वहरवी माहे पातमाहरी वूथ मेली । तठै सामीजी कहे – आ तो हीदु तो नहि दीसै छै, ए तो तुरक दिसै छै । तठै राणी दुहो कहै छै ।[1]

दूहा– मांणस देह विडांणीया, क्या हींदु मूशलमान वे ।
आग जलाया कायने, हींदु-धर्म निदान वे।। २०१[2]

[५३ वार्ता—तठे चहमे वूथ मेले ने उपरे चेजो करने कमधमसू आग लगाई । झालो-झाल हुई । तठे सामीजीने राणी कहै – माहाराज ! इण तलावसू पाणीरी तुंबी भर ल्यावो, ज्यू मडाने भीटीया छै, सो छाटो लेवा ने आघा चाल्या । तठै सामीजी तुंबी लेने तलाव कानी गया ने लारे राणी कहै—

---

१ ५२वीं वार्ता निम्न प्रतियो में निम्न रूप में है—

ख वारता—इसो कहे राणी घणी झुरणा कीधा । पछे अतीतनु केहे—वनषड माहेसु लकडा ल्यावो, ज्यु आपे इणनु दागद्या । जदी जोगी वनमे फीरने लकडा ल्यायो ।

ग ऐसो राणी कह्यो । घणा झुरणा कीवा । पछै अतीतनै कह्यो—लाकडा लावो जो आपे अणीनै दागदा । तदि अतीत लाकडा ल्यायो ।

घ में उक्त अंश ही नहीं है । ङ इसो राणी कहै नै झूरणा घणा झूरीया छै । पछै अतीतनै कयो—सूका लाकड़ा वनमाहियी ल्यायो ।

२ ख ग घ ङ प्रतियो में यह दूहा नहीं है ।

[–] ख ग घ ङ प्रतियो में ५३, ५४ तथा ५५वीं वार्ताओं के गद्य-पद्यांशो के स्थान पर केवल यही गद्यांश उपलब्ध है—

ख चेह चुणने राणी माहे वेठी ।

दूहा– हठमल मीलज्यो साहिबा, बहला म रहज्यौ दूर बे ।
आई अगन प्रजालने, लहज्यौ हित भरपूर बे ॥ २०२
अगन सरण ताहरो करू, माहरो पीउ मीलाय बे ।
साहिब साषी माहरो, साथ दीज्यौ सभाय बे ॥ २०३

५४ वार्ता—इसा दुहा कहिने परमेसररो नाम ले ने 'हो हठमल ! थारो माथ बेगा हुयज्यौ, इसो कहीने चहीमे पडी, राम सरण हुई । तठे सामीजी सीनान कर ने तुंबी भरने पाछा आया । तठै राणीनै चेहमे बलती दीठी । तठे सामीजी कहै—

दूहा– रडी राजी ना हुई, कुमर थकी कर कूड बे ।
मे विदनांमी रच गई, नार देई तुझ धूड बे ॥ २०४
सत कीधो ने साह बण, हिंदु-तुरक समान बे ।
जस षाटी जालमतणौ, जलण धरचौ ए प्राण बे ॥ २०५
रडी भूंडी ते करी, माण मूकायो मोह बे
षार दीयौ मूझ छातीयां, भली करी मूझ दोह बे ॥ २०६
तो सरसी नार तणा, षेलतणा मन षेल बे ।
प्राणतणा पासा ढल्या, मे मत कीधा मेल बे ॥ २०७
कामण कारीगरतणी, कामण केथ पडेह बे ।
सात कीयो सासें गई, भलो दिषायो नेह बे ॥ २०८
साली मो मन माहरी, भूंडी राड भडाण बे ।
तो सरसी वाली वरस, देषी लोह थडाह बे ॥ २०९

५५ वार्ता—इसा दुहा सामीजी राणीनै वलतीने सूणाया, पिण ज्या राज्यासू मन वेधाया तेके दूजी तय न जाणै । हिवै राणी हठमल लारे सत की[धो] सो बल भसम हुई । सामीजीने दा वडा साल हुवा । मो घणो वोपास करवा लागा, पिण गरज काई सरे नहि ।

अगन लगाई । राणीइ हठमल पुठे सत कीधो । अतीत रोवतो पाछो गयो—जा रडी, तेरा बुरा हुइगा

ग आग ल्यायो । लाकडा सलगाया नै राणी माहे वेठी । लाकडा लगाया, हठीमल साथै सत कीधो ।

घ तदी राणी छाती-माथा कुट ने हठमल वासै सत कीधो ।

ङ पछै चेहे चुगी नै राणी चेहे माहे वैठो हठमल पातसाह साथै वली, सत कीधो ।

दूहा– एक गई दूजी गई, हिव तीजी की मेल वे ।
नारी नही का आपरी, कुंडी जगमें केल वे ॥ २१०
विधना तुं तो वावली किसका ले किसकु देस(य) वे ।
रोतो सांमी चालीयो, पाटण मारग लेय वे ॥ २११
नारी न जाण्यौ आपरी, जगनें न सूणी कोय वे ।
मूणस मरावे हाथ सू, पाछैतू सती होय वे ॥ २१२]

A५६. वार्त्ता—इसो मामीजी सोच करता पाटण गया । काइ क मढोकी वसती लेने गूज करवा लागा ।

हिवै रीसालू कुवरजी मारग चालीया जाय छै । कठेइ क वस्तीमे रहै छै, कठेइ क रोहीमे रहै छै । साहमीकपणै रेहै छै—

श्लोक—उद्यम साहस धीर्य वल वूधी पराक्रम ।
पडेते जस्य विद्यते तस्य देवोपि सक्ते ॥ २१३

५७ वार्त्ता—तठे कुवरजीने हालतानै मास क हुवो छै । तठे राजा मानरो नगर आणदपूर नामे, तिण नगररे सरोवर आयो । सेहरसू नेडा छै, वडो पिणघट छै । वासली पोहर रातराम् पीणघट मरु हुव छै, सो दोय घडी रात जावै, जठा ताई वाहवो कर छै । इसी पाठ पीणघट री छै । वले सरोवर दोला वाग छै । भली हरीयाल वाडीयारी चारू फेर छै । वडी आडारा कडपा उपर भला नीला रुप-दरपत सोभ छै ।

दूहा– सरवर निरमल नीरडै भरीयो हसा केल वे ।
वागा फूली सूगीधीया, वास वलै वहु मेल वे ॥ २१४
सोभा मानसरोवरा, जिम वण रह्योयो तलाव वे ।
घाडो आवै अटकावीयो, पाणी पीवण आव वे ॥ २१५

५८ वार्त्ता—इण भानसू कुवरजा पाणी पीवै छै । तठै पीणहारिया माये राजा मानरा वेटी सोनारो घडो ने जाडावरा इढाणी लीया थका तिण सरोवर चाली आवै । तठै रीसालूजी आपरा वागारी चाल उपर पेट लागी देपन तिण पाणीमू धोवण लागा छे । इतरे पणिहारी तलावम आई । मारा ही कुवरजी

A–A चिन्हान्तगत ५६ ५७, ५८वीं वार्ताओ के गद्य-पद्यात्मक अश का पाठान्तर ख ग घ ट मे निम्नगद्याश के रूप में प्राप्त है—

ख हीवे रसालु कीतरेके दीने राजा मानरे प्राहूणा गया । तलाव उपर गया । घोडो चपारे गोटे वाधीयो । कपडा धोया । स्नान मपाडा लीया । कुवरजी पाग वाधे छे । इतरे राजा मानरी कुवरी सहेलिया माये पाणी भरवा आई । सो रसालुने देषने पाणीरो घडो नपन् नख्या बेठी, रसालु सामो जोवती रहे, पीण रसालु जोवे नही । तद कुमरीवाक्य ।

दूहा– हठमल मीलज्यो साहिबा, बहला म रहज्यौ दूर बे।
आई अगन प्रजालने, लहज्यौ हित भरपूर बे॥ २०२
अगन सरण ताहरो करू, माहरो पीउ मीलाय बे।
साहिब साषी माहरो, साथ दीज्यौ सभाय बे॥ २०३

५४ वार्ता—इसा दुहा कहिने परमेसररो नाम ले ने 'हो हठमल ! थारो साथ वेगा हुयज्यौ, इसो कहीने चहीमे पडी, राम-सरण हुई। तठे सामीजी सीनान कर ने तुंबी भरने पाछा आया। तठै राणीनै चेहमे बलती दीठी। तठे सामीजी कहै—

दूहा– रडी राजी ना हुई, कुमर थकी कर कूड बे।
मे विदनामी रच गई, नार देई तुझ धूड बे॥ २०४
सत कीधो ने साह बण, हिंदु-तुरक समान बे।
जस षाटी जालमतणौ, जलण धरचौ ए प्राण बे॥ २०५
रडी भूंडी ते करी, माण मूकायो मोह बे
षार दीयौ मूझ छातीया, भली करी मूझ दोह बे॥ २०६
तो सरसी नार तणा, षेलतणा मन षेल बे।
प्राणतणा पासा ढलया, मे मत कीधा मेल बे॥ २०७
कामण कारीगरतणी, कामण केथ पडेह बे।
सात कीयो सासें गई, भलो दिषायो नेंह बे॥ २०८
साली मो मन माहरी, भूंडी राड भडाण बे।
तो सरसी वाली वरस, देषी लोह थडाह बे॥ २०९

५५ वार्ता—इसा दुहा सामीजी राणीनै वलतीने सूणाया, पिण ज्या राज्यासू मन वेधाया तेके दूजी तथ न जाणै। हिवै राणी हठमल लारे सत की[धो] सो बल भस्म हुई। सामीजीने दा वडा साल हुवा। मो घणो वोपास करवा लागा, पिण गरज काई सरे नहि।

अगन लगाई। राणीइ हठमल पुठे सत कीधो। अतीत रोवतो पाछो गयो–जा रडी, तेरा वुरा हुइगा।

ग आग ल्यायो। लाकडा सलगाया नै राणी माहे वेठी। लाकडा लगाया, हठीमल साथै सत कीधो।

घ तदी राणी छाती-माथा कुट नै हठमल पासै सत कीधो।

ड पछै चेहे चुगी न राणी चेहे माहे बैठी हठमल पातसाह साथै बली, सत कीधो।

दूहा– एक गई दूजी गई, हिव तीजी की मेल बे ।
नारी नही का आपरी, कुडी जगमै केल बे ।। २१०
विधना तुं तो बावली किसका ले किसकुं देस(य) बे ।
रोतो सामी चालीयो, पाटण मारग लेय बे ।। २११
नारी न जांण्यौ आपरी, जगनें न सूणी कोय बे ।
मूणस मरावे हाथ सू, पाछैसू सती होय बे ।। २१२]

A५६ वार्त्ता—इसो सामीजी सोच करता पाटण गया । काइ क मढोकी वसती लेने गूज करवा लागा ।

हिवै रीमालू कुवरजी मारग चालीया जाय छै । कठेइ क वस्तीमे रहै छै, कठेइ क रोहीमे रहै छै । साहसीकपणै रेहै छै—

श्लोक—उद्यम साहस धीर्य बल बूधो पराक्रम ।
षडेते जस्य विद्यते तस्य देवोपि सक्ते ।। २१३

५७ वार्त्ता—तठे कुवरजीने हालतानै माम क हुवो छै । तठे राजा मानरो नगर आणदपूर नामे, तिण नगररे सरोवर आयो । सेहरसू नेडा छै, वडो पिणघट छै । वासली पोहर रातरासू पीणघट मरू हुव छै, सो दोय घडी रात जावै, जठा ताई वाहवो कर छै । इसी पेठ पीणघट री छै । वले सरोवर दोला बाग छै । भली हरीयाल वाडीयारी चारू फेर छै । वडी आडारा कडपा उपर भला नीला रुप-दरपल सोभ छै ।

दूहा– सरवर निरमल नीरडै भरीयो हसा केल बे ।
वागा फूली सूगीधीया, वास वलै बहु मेल बे ।। २१४
सोभा मानसरोवरा, जिम वण रह्यो तलाव बे ।
घाडो आवै अटकावीयो, पाणी पीवण आव बे ।। २१५

५८ वार्त्ता—इण भातसू कुवरजो पाणी पीवै छै । तठै पीणहारिया साथे राजा मानरी बेटी सानारो घडो ने जाडावरा इढाणी लीया थका तिण सरोवर चाली आवै । तठै रीमालूजी आपरा बागारी चाल उपर पेहू लागी देपन तिण पाणीसू धोवण लागा छै । इतरे पणिहारी तलावम आई । सारा ही कुवरजी

A–A चिन्हान्तगत ५६ ५७, ५८वीं वार्ताओ के गद्य-पद्यात्मक अश का पाठान्तर ख ग घ ड मे निम्नगद्याश के रूप में प्राप्त है—

ख हीवे रसालु कीतरेके दीने राजा मानरे प्राहुणा गया । तलाव उपर गया । घोडो चपारे गोटे बाधीयो । कपडा धोया । स्नान सपाडा कीया । कुवरजी पाग वाधे छे । इतरे राजा मानरी कुवरी सहेलिया साथे पाणी भरवा आई । सो रसालुन देपने पाणीरो घडो नपन् भरवा बेठी, रसालु सामो जोवती रहे, पीन रसालु जोवे नही । तद कुमरीवाक्य ।

कानी जोवै छे नै राजा मानरी बेटीन जोवै छै। रसदती नारीतणा नैण-षताग वह रहा छै। तठै राजा मानरी बेटी एक आगलो आगूठासू कलस भरेने उचाय ने बाहिर ल्याउ।A

दूहा– सरवर कपड़[1] धोइया[2], सूथरण[3] सल[4] सिर पाव[5] बे।
षेह उतारे षेगको, तो हि न समझै दाव बे॥[6] २१६
नष अगूठे अगूली, भरीयौ कलस अभ्रूग बे।
अजे यस मारू साहिबो, बोलै नही श्रो वूग बे॥२१७[7]

रीसालूवाक्य[8]

देस[9] वीडाणो[10] भूय[11] पारकी[12], तु राजाकी धीय बे।
तुझ[13]कारण हु[14]माररपू[15], कुण[16] छोडावण[17]हार[18] बे॥२१८[19]

ग अवै रीसालु कतरायक दीनांमे राजा मानरै पाहूणा गया। तलावै बैठा, कपडा धोव्या। ईतरै राजा मानरी बेटी छोरचा साथै पाणी आई, पणीहारिया साथै तलाव आई। रसालु कपडा धोआ पाग बाधवा लागा। नर्षेसु घडो भरचौ रसालु सामी देषती जायं, पिण रीसालु देषै नही। तदि रीसालुजीनै रांणी काई कही— ।

घ. तदी रसालु चाल्यौ चाल्यौ राजा मानरै जमाइ आयो। तलावरी पाल कपडा धोया। अतरै राजा मानरी बेटी पाणी भरवा रारू आई नषसु घाडो भरचो। रसालु देषै नही। तवी राणी काई कही — ।

ङ अवै रीसालु कितरेक दिने राजा मानरै पावणा हुवा। तलाव कपडा धोया नै पाग वाधै छै। इतरै राजा मानरी बेटी परणीयारीया साथै सोनारो घडो, जडावरी इढोणी पाणी भरवा वैठी। कुमर रीसालून देष ने सगली जोवा लागी छै, पिण रीसालू सामो जोव नही छै। कुमरिवाष्य -- ।

१ ख ग घ ङ कपडा। २ ख धोवीया। ग धोईया बे। घ धोईया बे कुवरा। ३ ग घ वाधी। ४ ख अगो। ग. घ पाघ। ङ आगो। ५ पाघ। ग घ अजव। ङ पाग। ६ ख ङ नषसु घडलो मे भरचो, अजे अन (ङ अजे न) बोल्यो बग बे। ग घ नषल्यासु घडलो (घ चुकल्यो) भरचो, अजु न चोग्यो बग (घ बुग) बे। ७ यह दूहा ख ग ङ प्रतियों में अप्राप्त है। घ. प्रति में इसका रूपान्तर इस प्रकार मिलता है--

झगो घोयो फेंटो धोयो, धोई सुथण पाग बे।
नषल्यासु चुकल्यो भरचो, तो ही न देख्यो ठग बे॥ २६

८ ध में नहीं है। ९ ग घ भोम। १० ख बीडाणा। ग घ पराई। ११ ख भुइ। ग घ पर। ङ भूइ। १२ ग घ भडली। १३ ग घ तुज। १४ ख मुझ। ग घ मुज। १५ ख ग मारीजे। १६ ख ग तो कुण। घ तो नुमां। १७ ख ग छोडावै। घ न मल। १८ ख ग जीव। घ अग। १९ ङ प्रति में इस पद्य के अंतिम दोनो चरण अप्राप्त है।

कवरीवाक्य[1]

चदन[2] कटाउ [3], चरहमे[4] जालू[5] अग[6] बे।
मो[7] कारण तुमे[8] मारज्यौ[9], तो[10] दोनू[11] वसा स्वर्ग[12] बे॥२१९[13]

५९. वार्त्ता—इसा दुहा माहो केहने सेहरमे गई। तठै कुंवरजी सेहरमे आया। राजारी मालणरो घर पूछ नै मालिणरे घरे आया। पूरजी(जा) मे सू मोहर मे(ए)क मालनने दीधी ने मालनने कहै—जावो, थे राजाजीसू मीलीयावौ नै कहज्यौ—श्रीमाहाराजाधिराज! आपरो जमाई माहरे घरे उतरीयो छै। इसो सूणने मालिण मान राजा कने जाय ने सारी हकीकत कही। तठै राजा मान आपरो कुवरने मेलने रीसालूने मला दाखल कीया। तठे राजा मान कुवरजीसू मीलीयो ने कहै—कुवरजी! एकला क्य पधारीया? तठै मारी देसवटारी वात कही। तठे राजा घणी धीरज दीवी। हिवै कुवरजी महिलामे घणी पूमालीसू बेठा छै। तठै रात्र पूहर एक गई। तठै कुवरी सीणगार करने मेहला आई। आगै कुवरजी महीला किमाडने [जडीने] कपटी निद्रामे सूता छे। हिवै राणा घणा जवाव समस्या कीवी, पिण बोलीया नही।*

---

१ ख ड कुमरी वाक्य। ग घ राजकुवरी वा०। २ ख ग ड चपण। ३ ख कटावु चेह रचु। ग काटसलो रचु। ड कटावु सेहरसू। ४ ख चेहर च। ग सलो रचु। ट चेमै। ५. ख ड जालु। ग. वालु। ६ ग ड आग। ७ ख ग मुझ। ड मुज। ८ ख ग तुझ। ड तु। ९ ख ग ड मारीजे। १० ख घ में नहीं हे। ड तो। ११ ख तुम हम। ग दोनु। १२ ख ड खरग। ग सुरग। १३. घ में दूहा निम्न प्रकार है—

अगर चदणरा ज(ल) कडा, देवाऊ जगी ढोल वे।
कागा रोले कर मरु, तो पथीकी गेल वे॥ २८

* ५९वीं वार्त्ताकी वाक्यावली ख ग घ ड प्रतियोमें इस प्रकार है—

ख इम कही कुमरी घरे गई। रसालु पीण घोडे असवार होय सहीरमे गया। सघले लोके कह्यो—राजा मानरे जमाई आया छै। समस्त राजारो पुत्र रसालु कुमर नाम छे। यु करता रसालु दुरवार गया, साराई सायमु मीलया। रसालु याल आरोगीया। घोडारे दाणारी, सारी बानरी जावता हुई। रात्र घडी २ जाता रसालु महीला दाखल हुआ। रसालु पोढीया छे। कमाड जडया छै, पोहरायत बेठा छे। इतरे पोहर १ रात जाता राणी आइ। ज(क)माड जडया देखने राणी नमस्यावध दुहासु हेला दीये छे।

ग ईतरो कहीने घरा गई। रीसालू आया गाममे तदि नगरमे षबर हुई—राजा मानरे जमाई आव्या। रीसालकुवर राजा समस्तरो बेटो मील्या, जा(रा)झा जुहार माहो-माहे हुवा, डेरा दिवाडचा, सगलो जावतो कीधो। रात घडी रीसालजी महलामे पोढचा छै। पीलसोत बलै छै। राणी आवी। कमाड जडे दीधा छै। तदी राणी हेलो पाडचो। कमाड षोल्या नही। ऐस्यो जीनाव वण रह्यो छै।

कानी जोवै छै नै राजा मानरी बेटीन जोवै छै। रमदती नारीतणा नैण-पताग वह रहा छै। तठै राजा मानरी बेटी एक आगलो अागूठासू कलस भरेने उचाय ने बाहिर ल्याउ।A

दूहा– सरवर कपड़[1] धोइया[2], सूथण[3] सल[6] सिर पाव[5] वे।
षेह उतारे षेगकी, तो हि न समझै दाव वे॥[1] २१६
नष अगूठे अगूलो, भरीयौ कलस अभूग वे।
अजे यस मारू साहिवो, बोलै नही ओ बूग वे॥२१७[7]

रीसालूवाक्य[8]

देस[9] वीडाणो[10] भूय[11] पारकी[12], तु राजाकी धीय वे।
तुझ[13]कारण हु[14]माररपू[15], कुण[16] छोडावण[17]हार[18] वे॥२१८[19]

ग अवै रीसालु कतराएक दीनामें राजा मानरै पाहूणा गया। तलावै बैठा, कपडा धोव्या। ईतरै राजा मानरी बेटी छोरचा सायै पाणी आई, पणीहारिया सायै तलाव आई। रसालु कपडा धोआ पाग वाधवा लागा। नयँसु घडो भरचो, रसालु सामी देषती जायै, पिण रीसालु देषै नही। तदि रीसालुजीनै रांणी काई कहे—।

घ. तदी रसालु चाल्यो चाल्यो राजा मानरै जमाइ आयो। तलावरी पाल कपडा धोया। अतरै राजा मानरी बेटी पाणी भरवा राऊ आई नषसु घाडो भरचो। रसालु देषै नही। तवी राणी काई कहै—।

ङ अवै रीसालु कितरेक दिनै राजा मानरै पावणा हुवा। तलाव कपडा धोया नै पाग वाधै छै। इतरै राजा मानरी बेटी पणीयारीया सायै सोनारो घडो, जडावरी इढोणी पाणी भरवा वैठी। कुमर रीसालून देष ने सगली जोवा लागी छै, पिण रीसालू सामो जोव नही छै। कुमरिवाक्य—।

१ ख ग घ ङ कपडा। २ ख धोवीया। ग धोईया वे। घ धोईया वे कुवरा। ३ ग घ बाधी। ४. ख अगी। ग घ पाघ। ङ आगी। ५ पाघ। ग घ अजव। ङ पाग। ६ ख ङ नषसु घडलो मे भरचो, अजे अन (ङ अजे न) बोल्यो बग वे। ग घ नषल्यासु घडलो (घ चुकल्यो) भरचो, अजु न चोग्यो बग (घ बुग) वे। ७ यह दूहा ख ग ङ प्रतियो में अप्राप्त है। घ प्रति में इसका रूपान्तर इस प्रकार मिलता है—

झगो धोयो फेंटो धोयो, धोई सुयण पाग वे।
नषल्यासु चुकल्यो भरचो, तो ही न देख्यो ठग वे॥ २६

८. ध में नहीं है। ९ ग घ भोम। १० ख षीडाणा। ग घ पराई। ११ ख भुइ। ग घ पर। ङ भूइ। १२ ग घ मडली। १३ ग घ तुज। १४ ख मुझ। ग घ मुज। १५. ख ग मारीजे। १६ ख ग तो कुण। घ तो मुआ। १७ ख ग छोडावै। घ न मलै। १८ ख. ग जीव। घ अग। १९ ङ प्रति में इस पद्य के अतिम दोनो चरण अप्राप्त हैं।

कवरीवाक्य[1]

चदन[2] कटाउ [3], चरहमे[4] जालू[5] अग[6] वे।
मो[7] कारण तुमे[8] मारज्यो[9], तो[10] दोनू[11] वसा स्वर्ग[12] वे॥२१९[13]

५९. वार्त्ता—इमा दुहा माहो केहने सहरमे गई। तठे कुवरजी मेहरमे आया। राजारी मालणरो घर पूछ नै मालिणरे घरे आया। पूरजी(जा) मे सू मोहर मे(ए)क मालनने दोवी ने मालनने कहे—जाओ, थे राजाजीमू मीलोयावो नै कहज्यौ—श्रीमाहाराजाधिराज! आपरो जमाई माहरे घरे उतरीयो छै। इमा सूणने मालिण मान राजा कने जाय ने सारी हकीकत कही। तठे राजा मान आपरो कुवरने मेलने रीसालूने मला दाषल कीया। तठे राजा मान कुवरजीसू मीलीयो ने कहे—कुवरजी! एकला क्यु पधारीया? तठे सारी देसवटारी वात कही। तठे राजा घणी धीरज दीनी। हिवे कुवरजी महिलामे घणी पूमालीसू बेठा छै। तठै रात पूहर एक गई। तठै कुवरी सीणगार करने मेहला आई। आगै कुवरजी महीला किमाडने [जडीने] कपटी निद्राम मूता छे। हिवे राणो घणा जवाव समस्या कीवी, पिण वोलीया नही।*

---

१ ख ड कुमरी वाक्य। ग घ राजकुवरी वा०। २ ख, ग ड चपण। ३ ख कटावु चेह रचु। ग काटसलो रचू। ड कटावु सेहरसू। ४ ख चेहर च। ग सलो रचु। ड चेमे। ५ ख ड जालु। ग वालु। ६ ग ड आग। ७ ख ग मुझ। ड मुज। ८ ख ग तुझ। ड तु। ९ ख ग ड मारीजे। १० ख घ में नहीं है। ड तो। ११ ख तुम हम। ग दोनु। १२ ख ड खरग। ग सुरग। १३ घ में दूहा निम्न प्रकार है—

अगर चदणरा ज(ल) कडा, देवाऊ जगी ढोल वे।
कागा रोले कर मरु, तो पथीकी गैल वे॥ २८

* ५९वीं वार्त्ताकी वाक्यावली ख ग घ ड प्रतियोमें इस प्रकार है—

ख इम कही कुमरी घरे गई। रसालु पीण घोडे असवार होय सहीरमे गया। सघले लोके कह्यो—राजा मानरे जमाई आया छै। समस्त राजारो पुत्र रसालु कुमर नाम छे। यु करता रसालु दुरबार गया, साराई सायसु मील्या। रसालु थाल आरोगीया। घोडारे दाणारी, सारी वातरो जाबता हुई। रात्र घडी २ जाता रसालु महीला दाखल हुआ। रसालु पोढीया छे। कमाड जडया छै, पोहरायत वेठा छे। इतरे पोहर १ रात जाता राणी आइ। ज(क)माड जडया देषने राणी समस्यावध दुहासु हेला दीये छे।

ग ईतरो कहीने घरा गई। रीसालू आया गाममै तदि नगरमै षबर हूई—राजा मानरै जमाई आव्या। रीसालुकुवर राजा समस्तरो बेटो मील्या, जा(रा) झा जुहार माहो-माहे हूवा, डेरा दिवाडया, सगलो जाबतो कीधो। रात पडी रीसालुजी मेहलामै पोढया छै। पीलसोत बलै छै। राणी आवी। कमाड जडे दीधा छै। तदी रांणी हेलो पाडयौ। कमाड षोल्या नही। ऐस्यो त्रीभाव वण रह्यौ छै।

[६०. वार्ता—इमो कुवरजी कहीयो। तरे कुवरी चूप करने महिलरे वारणे बेठी, ने रूपी वडारण छै, तिणनै कने बेसाणने कहे छै—

दूहा— मृगलो सूवो मेनडी, एकण रे वहे (रेहवे) लार वे।
सो तो हस रिसावी सो, सरवर वात सभार वे॥ २२३
भूलै चूके भोलडी, वयण वटाउ जाण वे।
कहिया साहिव किम कीजीयै, रीसवि मती य सूजाण वे॥ २२४
हे वादी या (था) हरा हाथरो, आसरो आज अपार वे।
रातडीयारी वातडी, निसा समे यार वे॥ २२५

६१ वार्ता—इण भातमू वडारणम् दूहा कहीया। तठै रीसालू जोइयो जे रातरी वात मासरीयामे गई, तो इण लूगाईरी तो पारख लेणी, पछै वात करणी। इमो विचारने कपट-निडा(द्रा)मे मूता छै। इतरा माहे वरपाकालरो मास छै। श्रावणरो महिनो छै। तठे उत्तराधरा पमी(गी, गा)रो चाली थकी घटा आई छै। मोर, पपीया, कोइला कहुका कीया छै। डैडरिया डरू डरू कर रह्या छै। धरती हरीयो काचू पहरणरी आम धरी छै।]

राग मल्हार

दूहा— वरषा रीत पावस करे, नदीया प(ष)लके नीर।
तिण विरीया सूकलीणीया, धणीयास्यू धरचौ सीर॥ २२६
परवाई झीणी फूरे, रीछी परवत जाय।
तिण विरीया सूकलीणीया, रहती पीव-गल लाय॥ २२७

[—] कोष्ठगत ६० एव ६१वीं वार्ताओकी वाक्यरचना ख ग घ ड में इस प्रकार है—

ख वारता—इसो कहीयो। तरे राणी इसो साभली पाछी फीरी। तरे रसालु वीचारियो आ अस्त्री पतीव्रता होसी तो राजलोकमे जासी, नही तर और ठीकाणे जासी। इसे समीए योडो जरमर-जरमर मेह वरसे छे।

ग वात—ऐम्यो राणी कही परी गई। तदि रीसालु कह्यौ—आ यसत्री कसी क छे ? पतीव्रता होसी तो रावलामै जासी, नही तर और जायगा जासी। झीरमर-झीरमर मेह वरसै छै। ऐसो त्रीभाव वीण रह्यो छै।

घ प्रतिमें इस प्रकारका कुछ भी अश नहीं है।

ड वारता— राणी इसो कहिनै फेर पाछी गइ। तद रीसालु वीचारीयो—जो आ असतरी प्रतीवरता होसी तो राजलोक माहै जासी, नही तर और ठिकाणे जावसी। तिण समै योडो-योडो मेह वरसे छै।

पालो पाणी पातसाह, चढी उत्तराधि कोर ।
तीण वीरीया धणीयायति, मोरडीया ज्यू झिगोर ।। २२८
आभे अडबर बादलो, वीज चमको होय ।
तिण वीरीया कचू कसे, पीवनै राषे नोय ।। २२९
कोरण उतराधि करण, धोरण ची(चो)ली कुवाल ।
धणीया धण साले धणी, वणीयो इम वरसाल ।। २३०[1]

६२ वार्ता—इण भांतरी वरषा रीत वणी छै। तिण समीये छोटी-छोटी बूद पडे छै। विजलीयारो झबको हुवे छै। तठै कुवरीरो जीव सेणस विलूधो छै ने कुवरजी कपट-नीद्रामै सूसाडा करे छै। तठे राणी वटारणने दूटो वहे छै।[2]

दूहा— आज सलूणी रातडी, मोही अलूणी होय वे ।
एकौ कामण सीझीयो, वादी विधुता जोय वे ।। २३१
रामन रातडीया तणी, पूरी होवै पास वे ।
तु मूझ बालापणा तणो, पूरावै मन आस वे ।। २३२

दासीवाक्य

नीदडीयारो नेहडो, लागो कुवर सूजाण वे ।
अब ठठो (उठो)से चालो भली रे, रेण अधारी आण वे ।। २३३
चालो मीलीय सेणसू, रावत सूता सू छोड वे ।
एक घडीमै आपणो, काज करेस्या कोड वे ।। २३४*

A६३ वार्त्ता—इण विध छानेसे वाता करने उठी, सो मेहीलासू उत्तरो। तठै कुमरजी साहमीक होयने ढाल-तलवारसू कस्या, सो लारे चालीया, लगव्रग हालीया छै।

दूहा सोरठ–ए आजूणी रात, षबर पडैसी मूझ षरी ।
वैरण हुदी वात, षरी मथा ज्यौ षेलणा ।। २३५

---

१. २ २२६ से २३० तकके दूहे तथा ६२वी वार्ताका गद्यांश ख ग घ ड प्रतियोमें अप्राप्त है।

* २३१वें पद्यसे २३४वें तकके पद्य (दूहा) ख ग घ. ड प्रतियोमे अप्राप्त हैं।

A–A चिन्हान्तर्गत ६३, ६४, एव ६५वीं वार्ताओके गद्यपद्यात्मक अशोके वाक्यभेद ख ग घ ड प्रतियोमें इस प्रकार मिलते हैं—

ख राणी सोनाररा घर दीसा चाली। रसालु पिण ढाल-तलवार लेने राणी वांसे चाल्यो। राणी सोनाररे घरे जाय कमाड कुटीयो। राणी सोनार प्रते काइ कहे छै—

६४ वार्ता— इण भातसू कुवरजीरो अस्यो चितननी, आपरो सेण 'जात सूनार रीणधवलनामै' तीत(ण)री हवेली जाय नै मवा लापरो मूदरो हाथरा अगूठामाहिसू काढनै फेंकीयो, सो चोक विचालै जाय पडीयो। तिणरा गुघरा वाज्या। तठै सूनाररो बाप जागीयो। तठै बेटानै जागावा जाय ने दूहा कहै छै—

दूहा– उठीयौ कवर बांवालूवा, भीजै राजकुवार वे।
राजा रूठैगो गाव लै, नही तर घोडी त्यार वे।। २३६

६५ वार्ता– इसी कहना प्राणनाथ सूनाररो वेटो जागीयो ने कीवाड पोलने कुवरीरे लातरी दीवी ने वोलीयो—कुतरी राड! वरपा रीतरी रात माहे मोडी आई, सो वले किमा भाटियाने रीझावणने गई थी। तठे कुवरी हाथ जोडनै बोली—साहिवजादा! इतरो कोप मती करो, काई करू? आज माहरो पावद आयो, तिणसू परवस पडी थी। उण दईमारचा नीद आई देप ने वेगी आई छु। मारो जोर लागो हुतो, वेगी आवती, पिण इण वातसू अटकी रही। तठे सूनार कवरीने माहे लीवी।

दूहा– झिरमीर झिरमीर वरसीयो, मेह भलो तिण रात वे।
भीना कपडा नीचोइ सो, करवा बठा वात वे।। २३७

६६ वार्त्ता– हीवै सूनार ने कुवरी रग विलासमे मगन हुवा छै, न कुवरजी किवाडरी इदलो पाग(प)दैने (सू)नाररा महीलरे पमवासै जाय विराजीया छै, सारा ही चरीत्र देपे छै, मनमै जाणे छै–देपो, लूगाया चरित्र, जीव ठीकानै कदे ही रहै नही।A

राणीवाक्य

दुहो– उठो उठो कुवर सोनारका, काइ भीजे राजकुमार बे।
राजा रुठो तो गाम ल्ये, उठो घोडा च्यार वे।। ५२

वारता—राणी इसो कहीयो। तरे सोनाररे बेटे उठने कमाड षोल्यो। राणी माहे गई। आगे सोनार सुतो हतो। सो उठने राणीरा माथामे पावडीरी दीधी ने फेर कहीयो—इतरी मोडी क्यु आई? तरे सोनारनु कहे—आज आपणा सहीरमे राजारो जमाइ आयो छै, सो तिणनु सुवाड ने आई छु, तीण वास्ते ढील हुइ। रसालु बारे उभो सारी वात सुणी। हीवे रसालु छाने बेठा छे। राणीइ सोनार साथे सुष-वीलास करता रात्र सुषे गुदारी।

ग रीसालु ढाल-तरवार सभाये ने पुठै हुओ। राणी सोनारकै घर गई छै, कमाडकै दिधी। राजकुवरी सुनाररा बेटाने काई कहै—

दुहा– उठो कुवर सुनारका, भीजै राजकुवार बे।
राजा रूसै तो गाम लै, नही तो घोडारो माल बे।। ४१

[दूहा– माटी सूतौ छौडनै, जावे षेलरण नार वे ।
पर-रसभीनी कामणी, ते हूई जगमे षराव वे ।। २३८
मौ सरसौ पीउडौ मीलयौ, छोड नै हेत सू नार वे ।
श्राधीनी सषावस भरै, तो होरण डरपी लीगार वे ।। २३९
नारी नही का श्रापरी, पूठ पराई थाय वे ।
जो हित तन-मन दीजता, पिरण न पतिजै जाय वे ।। २४०
पूरष भला गहिला थई, राषै भरौसौ नार वे ।
कदेही श्रपरणी नही हुई, नारी जग निरधार वे ।। २४१
सो कोसा सजन वसै, दस कौसा हुवै नार वे ।
तो नारी तेहने भूरे, पीउरी न जाणै पूकार वे ।। २४२
श्रासू लूधी सेरणरी, धरणीयण श्रास लिगार वे ।
गौठ पराई राचवै, जीवत छडै लार वे ।। २४३
धणी सासती नारी नही, सेणा सहिल श्रपार वे ।
प्रेम गहैली सेंरणनै, श्रापै तन घ (ध)नसार वे ।। २४४

६७. वार्त्ता—इसा दुहा कुवरजी मनमे कह्या ने चरीत्र जोवै छै। तीतरा माहै सूनार बोलीयौ—श्राज श्रभागने थाहरै धणी कठासू श्रायौ ? श्रापरा सनेहमे श्रतरास घाली। तठै कुवरी बोली—पोउडा, उण वेईमानने याद मत करो न श्रावार रगरी वीरीयामे याद करणौ नही। पिण श्राप जमै पातर रापौ, दाय-उपाय करने श्रापरो मूजरो मोडो-वेगो साभ जासू। तठै कुवरजी सूणनै प्र(घ)णा षूसी हूवा। स्याबास है, इसी श्रस्त्रीया हुवै तद माभ हाथे श्रावै।]

घ तदी राणी सुनारकै घरे गई। पाछासु रसालु गयौ। थोडोसो मेह वरसै छै। राणी सनारनै हेलो पाड्यौ, सुनारकौ कीवाड षोलेयौ। राणी माहे गई। सुनार उठे नै पावडीकी दीधी। राणी कह्यौ—राजारै जमाई श्रायौ थौ, तीणनै सुवाणनै श्राई छु। तद राणी-सुनार माहौ-माहै हसै-रमै छै, ससारसु लाहौनो लीधौ।

ड रीसालु पिण हाथमाहै ढाल-फवाण लैनें राणीरै पूठै चालीया जावै छै। राणी तो सोनारकै घरै गइ, किवाड कुटीयौ। तद सोनार वैटाने काइ कहै छै—

सोनारवाक्य—

दूहा– उठो कुमार सोनारका, भीजै राजकुमार वै ।
राजा रुसै तौ गाव लै, नही तर घोडा च्यार वै। ४७

वारता—तिवारे किवाड षोल्यो। माहे गइ। सोनार सूतौ थो, सो ऊठनै पगरी दीधी नै कयो—इतरी मोडी क्यु श्राइ ? रीसालूरी वात साभली। तद कुमरी कयो—श्राज राजारै जमाइ श्रायो, तिणनै सूवाडा नै श्राइ छु। च्यार पोहर सूती रही, परभात होण लागौ तद रीसालूनै ऊघ श्राई, तिवारे ह श्राइ छु।

[—] कोष्ठगत पाठ ख ग घ ड प्रतियोमे श्रनुपलब्ध है।

[दूहा– एक छोडी दूजी छोडस्या, तीजी करस्या त्यार वे ।
काई क नारी सूगणली, परप लहेस्या सार वे ॥ २४५

६८ वार्ता—इमो मनमोवो कुवरजी कीयो । ने मू नार नै कु वरो वगा रगमै वेठा छे ।

दूहा– पीउ प्यारी पीउ प्यारडी, मच रही माझल रात ।
सेणा सेण चपेलीया, कसवो करीया वात ॥ २४६
कच कस्यौ दिल हथ कीयो, मीलीयो तन सोनार ।
जाणै केलना पान पर, कपूर ढुल्यौ नीरधार ॥ २४७
वका लोइण लोइसा, कटि कवाण कसि षम(ग) ।
सेझ समूद पर नाव ज्यू, तीरता चले तुरग ॥ २४८
आडा कसीया कामनी, नैण-सरासर देत ।
घा(धा)वा मचोया घोलीया, सैण सवादि लेत ॥ २४६
विसरा-वसरी चोसरा, अमला करडी ताण ।
सेझां रग पलाणीया, अमला किया पिछाण ॥ २५०
नारी ना-ना मूप रटै, विमणो वधै सनेह ।
जाणै चदन रू षडै, नाग[ण] लपटी देह ॥ २५१]

A६६. वार्ता—इसा रग-विलास मच रह्या छे । हाको-हाक लाग रही छै । सू रमतो पोहर पक्की हुई । तठै कु कडारा सा(ना)द हूवा ।

दूहा– कूकड कू क् कहुकीया, झल्लरो ठाकुर द्वार वे ।
साद सूण्या चेतन हूई, झागी कुवरी सार बे ॥ २५२
अहौ अहौ रैणी वीगती, पूह पेहली हुई एह वे ।
किण विध जासू मू झ घरे, नवला टुटने नेह वे ॥ २५३A

[—] कोष्ठान्तर्वर्त्ती अश ख. ग. घ ङ प्रतियोमे अप्राप्त है ।

A–A चिन्हगत अश के स्थानमें ख ग घ ङ प्रतियोमें केवल निम्नाश ही प्राप्त है—

ख प्रभातरो समो हुओ । तरे राणी सोनार प्रते काई कहे छे ।
राणीवाक्य दुहो ।

ग सुनारकानै राणी काई कहै । दुहा– ।

घ अतरै प्रभात हूवो । राणी कह्यो—परभात हूवो ।

ङ हम फैर कुमरी काइ कहै छै । कुमरवाक्य । दूहा– ।

दूहा– उठो[1] नीबूध्यका[2] आगरू[3], काई क[4] बूध्य[5] उपाय[6] वे ।
'गलियारा नर कि(फि)र रह्या,'[7] 'हिव किण विध घर'[8] जाय वे ॥२५४

सोनारवाक्य[9]

पेहरज्यो[10] माहरी[11] पावडी[12], षाधै[13] धरो[14] तरवार वे ।
'माथै पाग बाधी करी, कात्रली ओढ(ठ)ण आधार वे'[15] ॥ २५५
लाबी लाबी भीषडी, भर भर मारग चाल वे ।
षषारा षासी करी, चौघैटाकी चाल वे ॥ २५६[16]
कोई न लेषैआ लषै, वले तु अकल आचार वे ।
इण विध कुण तुझ ओलषै, कुण कहै तुझनें नार वे ॥ २५७[17]

७० वार्ता—इसी वात रीसालू सूणनै वेइ दोपला पगने महिलसू हेठो उतरनै मारग वाधी वेठो । इतरे कुवरी मिरपाव करने काधै तरवार तोलती आवै छै । तठै कुनरजी बोलीया—[18]

दूहा– पावरीया[19] पटकालीया[20], कडीया[21] रूलता[22] केस वे ।
हम[23] हदी तु गोरडी, 'किण सिषलाया वेस वे'[24] ॥ २५८

---

१ ङ. उठो । २ ख. ग घ ङ वुधका । ३ ख ग घ ङ आगला । ४ ख ग घ कोईक । ङ काइ क । ५ ख ग घ ङ बुध । ६. ख ङ वताय । ग घ वताव । ७ ख गलीयारे फीर नवी सकु । ग घ गलीआरा मानवी फीरे (घ फरे) । ङ गलियारे नारी नर फीरे । ८ ख हु किसे मीस घर । ग हु कणी मीस घर । घ हू कणीरे मस । ङ किण मिस हु घर । ९ ङ त्रीवाक्य । १० ख पहीर । ग घ पर । ङ पहिरण । ११ ख. ग घ ङ हमारी । १२ ग पावडी वे । घ पावडी वे कुवरी । १३ ख ङ षाधे । १४ ख ग घ धर । ङ धरी । १५ ख लाबी लाबी डाक भर, कुण कहे तोने नार वे । ग घ लाबी लाबी भीष भर, कुण कहैगा नार वे । ङ लाबी चीष भरी कुण, कहै राजकुमार वै । १६ १७ ये दोनो दूहे ख ग घ ङ प्रतियोमे अप्राप्त हैं । १८ ग घ मे वार्ताका अश अप्राप्त है तथा ख ङ में प्राप्त अश इस प्रकार है—

ख वारता—हिवे राणी पावडी पहीर, मरदी सीर-पाव कर ढाल तरवार लीया चाली रसालुरी चोकीमें आय पडी । तव रसालुवाक्य दूहो– ।

ङ वारता—पावडी पैहर नै तरवार लेनै चाली । तरे रीसालूकि चोकी माहै आय पडी । रीसालूवाक्य दूहा– । १९ ख ङ पावडीया । ग घ ङ पावडली । २० ख चट-कालीया । ग चटकावमी(सी) । घ चटकावली । २१ ख कडीये । ग घ कडया । २२ ग रूलाता । घ रलाता । २३ घ कीण । २४ ख तुने कीण सीषाया वेस वे । ग कीण सीषाया भेस वे । घ कुणी कराया भेष वे । ङ तोनै किण सषाय वै ।

राणीवाक्य

'भोलै म भूल रे भाइया'[1], नेणकै[2] उणिहार[3] वे ।
रातै[4] करहा[5] उछरे, 'ताकी हु'[6], चारणहार वे ।। २५६[7]

रीसालूवाक्य

रातै[8] करहा[9] उछरे[10], दीहा[11] उतारा[12] होय वे ।
मारू[13] मूध[14] कटारीया[15] वर क्यू वीरडा[16] होय वे ।। २६०

७१. वार्त्ता—इसो दूहो रीसालू कहने चाटी दीवी, सो एक चनकमें मेहलमें आय सूतो घरराटा करे छै । इतरे पीण कुवरी मनमें सक्ती थकी, डरती थकी रोलवोल मेहलामे गइ । आगै वेस उतार ने आपरो सागी वेस करनै तुरत कुवरजीकने मैहलमैं आई । आगै देषै तो कुवरजी पोढोया छै, कपट नीदडलीमें मगनानीद हुवा छै । तठै कुवरी देषनै मनम वीचारीयो—आे काई जाणीजे, मानै भरम तो कुवरजीरो पडीयो थो ने कुंवरजो तो सूता छै, ने मोनै इमडा जावरो कारणहार कुण छो ? इसी चीतामे हुई थकी वीरीया चसू(चू)कती जाण ने कुंवरजीरी पगातीया वैसने दुडवडी देवा लागी । तठै कुवरजी कपटनिंद्रासू आलस मोडवा लागा, उछासी लेवा लागा । तठै कुवरोजो कहे—[17]

---

१ ख भुलम भुलो रे भाइडा । ग भोलै तो भुलो रे भाईडा । घ भोललो भुलो तु भायला । ङ भोले मा भूले भायडा २ ख नेणाके । ग ङ नैणारे । घ नृणकै । ३ ख ङ अणुहार । ग घ ऊणीहार । ४ ख रात ज । ग रात नै । ५ ग करसा । ६ ख तीहारी । ग. जाकी । ७ इस दूहा के दोनो अन्तिम पाद ङ प्रति में अप्राप्त हैं तथा घ प्रतिमें इस प्रकार मिलते है — मारा बापरा करहला, मेर चरावणहार वे । ८ ख ग घ रसालु वाक्य । ९ ख घ न करहा । ग. ज करसा । ङ करहा ना । १० ख उचरे । ङ ऊछरे । ११ ख दीहे । ङ दिहा । १२ ख घ ङ न तारा । ग ज तारा । १३ ख मारु । १४ ख मुह । ग घ वुद । १५ ग घ कटारडचा । १६ ख वीरा कीम । ग घ ङ क्यु वीरा ।

१७ ७१वीं वार्त्ता का अंश ख ग घ ङ में निम्न प्रकार है—

ख वारता—इसो रसालु कहीयो । तरे राणी वीचारयो—रसालु होसी तो गाढी भुंडी होसी । इसो वीचार करता राणी राजलोकमे गई । रसालु पीण राणी पहीला महीला माहे आइ । कुवरजीनु सुता देषने राणी वीचारयो जे रसालु इसा नही, अजेस भोला छे । रसालु आय सुता, तीणरी राणीनु षवर नही । पछे राणी पग दाबवा लागी ।

ग ऐसा वचन रीसालु माहो-माहे कह्या । तदि राणी सोची—रखे रीसालु न छै । तदि कुवरजी म्हैला गया । रीसालु राणी पैहली जायनै सुता छै । राणी जाण्यो–ओर कोई होसी । देषै तो भर नींदमैं सुता छै । रीसालु ईस्या नीदमें छै । तद पग दाबवा लागी ।

घ वारता—तदी राणी जाण्यो—रसालु कुवरको वचन छे । राणी मनमै डर षाधो । राणी सताव घरे गई । राणी पैहलां रसालु जाय सुतो छै । रांणी जाय पग दाबवा लागी ।

दूहा– उठ विडाणा देसरा, कामण जागो जोर वे ।
रेण गई उगा सूरज, अब तो माने निहो(हा)र वे ।। २६१[1]
साहिब तो सूता भला, करडी वागा ताण वे ।
धण नही लीवी नींदडी, ढीला हुवा सधाण बे ।। २६२[2]
साई साजन प्रेमका, धण दीधा छीटकाय बे ।
वरषा रुतरी रातडी, दुषम दई विताय बे ।। २६३[3]
सोल वरसरी वीजोगणी, निठ मीलयौ भरतार बे ।
हस्या न बोल्या हे सषो, आइयो लेष अपार वे ।। २६४[4]
आज रूपाली रातडी, झिरमिर वरस्या मेह बे ।
पीउ मन षाची पोढीयो, नवली नार नें नेह बे ।। २६५[5]
कोड छुडाया कागला, पीउडा कारण पाय बे ।
विधना हदि बातडी, आजब करी मूझ माय बे ।। २६६[6]
पिण हिव सूता रिसालूवा, पिण पूह फाटी प्रेम बे ।
जागो नही निदालूवा, उठो सूरज षेम बे ।। २६७[7]

[७२ वार्त्ता—इसडा दूहा कुमरजी सूण्या तद मनमे जाण्यौ—देषो, सच-वादी हुवे छै । इसो विचारने कुंवरजी वले आलस मोड नै आष्या मसल ने लाल करने सेझसू उठ्या । जाणै सारी रातरो नीदालूवो उठे, तिसो रोतरो सहिनाण दिपायो । तठे एहवो सरूप देषने राजी हुई ने जाणीयो–जे मोने मारगमे जाब दीयो छो, सू दईमारचौ कोई इसडा कामारो करणहार हुसी, सेहरमे लूंड-भूंड कोई घणा छै तो वें झष मारो, उणा(मुंवा)रो डर नही । कुवरजीरो डर राषी-ती, तीनरो अब भरूसो आयो । इसो चिंत्तवने राणी बोली— ।

ङ वारता—इसो रीसालू कयो । तद राणी वीचारीयौ—रीषे रीसालू हूवै । तिवारे महिला माहै सताव गइ । रीसालू राणी पहिला गयो । राणी आयने देषे तो कुनर सूतो छै । तिवारे पग दाबवा लागी छै ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ये दूहे ख ग घ ङ प्रतियोमें अनुपलब्ध हैं ।

[—] कोष्ठकान्तर्गत गद्यपद्यांश के स्थान पर ख ग घ ङ में केवल निम्न गद्यांश ही प्राप्त हैं—

ख रसालु जाग्या । जदी राजी हुआ । जदी राणी लाष रुपीयारा गहीणारी रीझ हुई । इतरे प्रभात हुओ ।

ग रीसालु जाग्यो, राजी हूवो । घडी दोय दीन चढ्यौ छै ।

घ रसालु जागे नै रजाबध हूवा । सवेर हूवौ ।

ङ तरे रीसालु जाग्यो, राजी हुवो । घडी एक दिन चढीयौ ।

दुहा– आज कुंवरजी रीसालूवा, मूझ पर सारी रेंण वे ।
नींद ण(न) लीधी घण घडी, जागी न जाणी सेंण वे ॥ २६८
सेयण रीसालू हुय रही, धन विलपी सारी रेंण वे ।
चूक किसो सो मूझ कहो, माहरा पीउ सूपदेन वे ॥ २६९

कुवरजीवाक्य

म्हे क्यूं रीसालू थाह थकी, कुण कह्यो एह विचार वे ।
राज सरीषी पदमणी, कदेय न भूलू चितार वे ॥ २७०
परभूमी पडवा थकी, थाका कुवर सू जाण वे ।
जिसू नीदडी घापीया, मत हो नारि अजांण वे ॥ २७१
थाह सरसी माहरे, भाग तणें परमाण वे ।
ते भूले सो ई ढोर वे, लहज्यो साच पिछाण वे ॥ २७२]

७३ वार्त्ता—कुवरजी इसा दूहा कहीया । तठे कुवरीने कुवरजीरो पतीयो । तरे राणी उठने झारी, पालो, दातण लेने कने आई । तठे कुवरजी वोलीया—इतरा वेगा ही करा, सो काइ कारण ? राणी कहे—माहाराजा कूवार ! वासी मूहडै राजसू वात करा, सो जोग नही । तठे कुवरजी दानन-कुरला कीया, आमल-पाणी कीया, याका-वागा, हाका-डाका हूवा । तठे कुवरजी वडारणने कहे—जायै 'रामजोग' रिण ववल सोनारना वेटाने वूलाय ल्यावौ, ज्यू काई क टुम करावा । आगे ही चालपणे टुम हाथे आई थी, तिकी आज ताइ रही, तीणसू नवि घडावस्या । तरे वडारण सूनारने जोयने कहीयो—अहो कारी-गरजी ! थानै कुवरजी वूलावै छै, वेगो आव । तठै सूनार वोलीयो—जवाईजी कठे विराजीया छै ? तठै वडारण कहीयो—जे राजलोकमै छै । तठै सूनार राजी हूवो—जे गेहणो घडावसी । इमो विचारने सूनार मेहला आयौ, कुवरजी-सू मूजरो करने वेठो । तठे कूवरजी आपरी कटारी उपर सोनो चढावणरे वास्तै सोनारने कहै छै । तिण समे राणीरी नीजर सोनार माहे पडि । कुवरजी दोढि लावहु देपने दुहो कहै छै—[1]

---

१ ७३वीं वार्ता का पाठान्तर ख ग घ ङ प्रतियो में इस प्रकार है—

ख तरे कुवरजी दातण कर अमल आरोग्या । तरे राणी कहीयो—माहाराज कुमार ! हेमकुट सोनार आयो छे, सो घाट भला घडे छे । तरे कुवरजी कहीयो—उणने ज तेडावो । तदी सोनारने सहेलीया वोलावण गई । रसालु वेठा स्नान करे छे । राणी सोनारी झारी लीया पाणी नामे छे । इतरे सोनार आयो । तरे राणीरी अर सोनाररी नीजर एक हुई । तदी राणी पाणी नामती हती, सो धार चुक गई, धार धरती जाय पडी । तदी रसालु राणी प्रते काइ कहे छे— ।

रीसालूवाक्य—[1]

दूहा—[2] तास[3] तीषा[4] लोयणा[5], ओस[6] चगी[7] वेणाह[8] वे।
धार[9] विछुटी[10] धर[11] गई[12], नर[13] चढियो[14] नेणाह[15] वे ॥२७३

राणीवाक्य

रहो रहो केथ[16] अणभावना[17], अणहुंतो 'कहि ताहि'[18] वे।
हीवडै[19] हार अलूझियो[20], सो[21] सूलझायो[22] नेणाह[23] वे ॥ २७४

७४ वार्त्ता—इसो कहि तव प्राणनाथ कुवरजी झारी लेने सोनारने कहै—माडि रे! हाथ, मारी अस्त्री तोने दीनी, श्रीकृष्णारपून्य छै। तठै सोनार

ग तब दातण कीधो। अमल-पाणी करेनै रजपुतानै कह्यो—जावो, सोनार गली माहिलानै तेडे ल्यावो। तद रजपुत दोडया गली माहिला सोनारनै तेड ल्याया। सोनार मनमै जाण्यो—जमाई आयो छै, गैणो घडावता होसी। सुनार आव्यो। रीसालु सापडै छै। राणी पाणीरी झारी लेयनै एक धारा कुढै छै। राणीकी सोनारकी नीजर ऐक हूई। तदि रीसालु काई कहै—।

घ अमल-पाणी करे सपाडो करवा लागा, रजपुतानै कह्यो—जायनै बामणारी सेरीयामै सुनार रहै छै, तणीनै बुलाय ल्यावो। सुनार जाण्यो—राजाजीरै जमा[ई] आयो छै, सो गेहणो घडावता होसी, राछ पीछे ले आयो। रसालु बैठो सपाडो करै छै। राणी झारो भरनै कुढै छै। सोनारकी नीजर, राणीकी नीजर, एकठी हुई। धार छूटी धरती पडी। तदी रसालु कहै—।

ङ तद दातण करी अमल आरोगनै दरीबानै आय बैठा। रजपूतानें कयो—जावो, सोनारनै बुलाय लावो। तद रजपूत गलीयामै सोनारको घर हे, तिहा जाय बुलाय लायो। सोनार जाण्यो—जमाई गेणो घडावसी। इसो जाणो सौनार राजी होयनै आयो। तरे राणी सोनारसू लागी नीजरो-नीजर मिली दीठी नै तारो-तार मिली।

१. ख तदि रसालु राणी प्रते काइ कहे छे—रसालुवाक्य। ग तदि रीसालु काई कहै—। घ तदी रसालु कहै—। २ ख दुहा। ३ ख. तारा। ग. तारा। घ तारू। ङ तीषा। ४ ख ग. घ तीषा। ङ. राता। ५ ग लोअयणा। ६ ख. अर। ग उर। ङ. ऊच। ७ ङ. सगो। ८ ख वयणाह। ग नयणाह। घ नैणाह। ङ वैणाह। ९. ग घ धारा। १० ख वीछुटी। ग घ तुटी। ङ विछुधटी। ११ ग. घ धरती। १२ ग घ पडी। १३ ख कोइ नर। ग घ में नहीं हैं। ङ. को नर। १४ ख. देख्यो। ग घ निरख्यो। ङ चढीयो। १५. ख नयणाय। ग वोय नयणाह। घ दोय नैणांह। ङ नैणाह। १६ ख ग घ. ङ कत। १७ ख अभावणा। ग घ अभामणा। ङ आभावणा। १८. ख कही वाय। ग घ कैहणाह। ङ कैहो नाह। १९ ख ग हीयडै। २० ख ङ अलुजीयो। घ उलझीयो। २१ ग घ ङ मे नहीं है। २२. ख ग. सलुझायो। घ सुलजायो। ङ सुलजायो। २३ ख नयणाय। ग नयणाह। घ नैणा। ङ नैणाह।

हाथ माडीयो । कुवरजी राणीने परी दीवी । मोनार ले घरे गयो । तठै राजा ने राणीनै पवर हुई । तरे जवाईने अलाधा बूलायने ओलभो दीयो । तठै रीसालू कहै—[1]

दूहा—[2] रतन कचोलो रूवडो[3], 'सो लगो पाथर फूट वे'[4] ।
'जिण जिण'[5] आगल ढोईयो[6] , केसर वोटी[7] काग वे ।। २७५

सासूवाक्य—[8]

'तलगु दल निलज उपरे'[9], 'नीर निरमल होय वे' ।[10]
'टुक पीव हो रीसालूवा,[11] नीरमल[12] नीर न[13] होय[14] वे ।। २७६

रीमालूवाक्य—[15]

साप[16] छोडी[17] काचली, देवा[18] छोडया[19] देव[20] वे ।
रीसालू[21] छोडी[22] गोरडी[23], मन भावे[24] सो लेव[25] वे ।। २७७

---

१ ७८वीं वार्ताका पाठ ख ग घ ट प्रतियोंमें इस प्रकार है—

ख. वारता—राणीरा इसो वचन सुणीनै रसालु सोनारने कहीयो—हाथ माड, आ अस्त्री तोनु दीवी, मा जोगी नही । तरे सोनार हाथ माडीयो । रसालुए हाथ पाणी घाल्यो, श्रीकृष्णारपुन्य कीधो, अस्त्री सोनारने दीधी । सोनार राजी हूओ अस्त्रीने घरे ले गयो । ती वार पछी राजलोकमे साभल्यो । तदी सासु ने राजलोक, राजमानप्रमुप सर्व जणे ओलभो दीधो । तरे रसालुवाक्य ।

ग वात—तदि सुनारनै रीसालु काई कहै—हाथ माड । सुनार हाथ माड्यो, जदि पाणी कुढ्यो नै असत्री पर्रा दीधी । अम जोगी नही । असत्री सुनारनै दीधी तदी राजा, राणी वात सुणी । तदि रीसालुनै ओलुभो दीधो । तदि रीसालु काई कहे छै— ।

ट वारता—रीसालू सोनरने कयो—जा रै, हाथ माड, तोने आ अस्तरी द्यु । आ अस्तरी मा लायक नही । तरे सोनारनै दीधी राजायै जाण्यो, रीसालुनै ओलभो दिनो । रीमालुवाक्य ।

२ ख दुहा । ३ ख. रुग्रडो । ग रावरो । ङ. रुयडो । ४ ख ग फुटो पथर लाग वे । ट सा लगो पथर फूट वे । ५ ख ग जीण जीण । ६ ग जीण कह्यो । ङ ढाइयो । ७ ख वोट्यो । ८ ख. सासुवाक्य । ग राणी राजानै काई कहे— । ट वारता–तदी राणी रीसालूनै देषने काइ कहै छै—सासुवाक्य । ९ ख तलगुदल जल नील पर । ग तिलगुदल ऊपर उजल । ङ तली गुदल नील उपरै । १० ख ग. नीर उस्या ही होय व । ट. पिण नीरमल नारी ना होय वे । ११ ख ढुक ढुक पीयो रसालुआ । ग टुकरे पीवो रसालुवा । ङ टुक एक पीवे हो रीसालूया । १२ ङ पिण निरमल । १३ ख नार न । ग नारी । ट नारी ना । १४ ख कोय । १५ ख रसालुवाक्य । ग तदि रीसालु काई कहै । १६ ख सापे । ग साप ज । ङ सापा । १७ ग छाडी । १८ ख देवल । ग भीत्या । ङ देहरे । १९ ग छाड्यो । २० ग लेव । २१ ख रमालु । २२ ग छाडी । २३. ग अमत्री । २४ ख ग ङ मानै । २५ ख लेय । ङ लैह ।

सासूवाक्य

रीसालूया[1] 'रीस कसाइया'[2], 'या रीसडी'[3] जल[4] जाव[5] वे।
घरणी[6] अस्त्री[7] 'नें छोडीये'[8], 'लाष लोक'[9] 'कहि जाव[10]' दे[11]।। २७८[12]

रीसालूवाक्य[13]

दूहा– म्हे[14] समसत[15] रायक[16] पूतडा[17], रीसालू[18] मेरा नाम वे।
परणो हीडे पर घडै[19], तो[20] क्यू[21] राषे साम[22] वे।। २७९[23]

[७५. वार्त्ता—इसी वाता करने रीसालू सूसरा कनासू उठ ने नीचै तबैलेमे आय ने घोडे असवार हुय, ने हीरण ने सूवा ने मेण। ने पिंजरो लेने, थारा नगररो मारग पूछने मारगेमे चालीया जाय छै। तठै लारे साहणीया राजा मानने कहियौ—माहाराजा, आपरो जवाइ तो चढ गया छै। तठै राजा दोय-च्यार सिरदार साथे ले ने आप घोडे चढिने कुवरजीने जाय पूहता। तठे राजा कहै—

दूहा– कुवरजी हव इम कित करो, तोडच्यो माहसू प्रीत व।
जगमे भूडा लागसी, थे तो हुवा नचा(ची)त वे।। २८०
म्हारे पुत्री इक बले, छोटी छै परण्यौ ति(ते)ह वे।
राजवी थारा एहवा, छाणा न हुवे ए नेह वे।। २८१

रीसालू वाक्य

श्रीमाहाराजा जाणज्यौ, सूरा एह सताप वे।
सिर उपर रूठा फिरे, त्याने केहा पाप वे।। २८२
आप कहो सो म्हे परणीया, पूठा पधारो राज वे।
वले य न आवै रीसालूवो, कोटि पडैज्यौ काज वे।। २८३

---

१ ख रसालु। २ ख रीस कसायला। ड अस कसाइ साइया। ३ ख थारी रीसडली। ड रीसालूआरी। ४. ड जड। ५. ख ड जाय। ६ ख ड परणी। ७ ख ड असत्री। ८ ख कीम छडीये। ड छोडि ने। ९ ड लोषु लोका। १० ख कहीवाय। ड की जाय। ११ ख ड बे। १२. यह दूहा ग में नहीं है। १३ ख रसालुवाक्य। ग मे नही है। ड रीसालु वाक्य। १४ ख में नहीं हे। ड मैं। १५ ख ड समस्त। १६ ख राजाको। ड. रायका। १७ ख पुगडो। ड पुगरा। १८ ख. रसालु। १९. घरे। २० ख सो। २१ क्यु। २२ ख पास। २३. यह दूहा ग. प्रतिमें अनुपलब्ध है एव इस दूहे के अन्तिम तीन पाद ड प्रति में अप्राप्त हैं।

[—] कोष्ठगत ७५ एव ७६वी वार्त्ता के गद्यपद्यांश का रूपान्तर ख ग ड प्रतियोमें गद्य के रूप मे इस प्रकार है—

७६ वार्त्ता—तठै राजा मान घणाई निवारा किया पिण कुवरजी न मानी। राजा घरे आयो ने रीसालू उज्जेणीने चलीया।]

A तठ देवीर (रे) देहरा माहै जाय उतरीया। ने राजा भोजरो वेटीरे चित्रामरो आवो थो, तिणरै सात कैरीयारी भूवपा नीचै पडीयो दीठो। तठै राणी जाणीयो—'जे म्हा आयासू भूवपो पडसी, सो कुवरजी नही आया ने भूवपो पडीयो तो अवे कुवरजीसू मे कोल कीयो छो—आप नै आया तो हु काठ चडसू, तो आज तो वले वाट जोवनी, तै परभाते काठा चडसू।' इसो विचारता परभात हुवो। तठे आपरा माता-पितासू मील ने सीप माग ने कौलरो जाव कर नै चाहिने नदी उपरे रचाईने ढोलडा घडकीया।

दूहा— ढोल धडकै तन दडै(हे), विरहीणी सतीया होय।
पीउ मीलाओ तो मीलै, तो किम दुषीयो कोय ॥ २८४

७७. वार्त्ता—हिवै कुवरी चह नेडी वासदेव सिलगायो छै, धूवा-धौर लाग ग्ह्या। तठै कुवरजी देहरासू उठैने तिण वला तठे आवता धूवौ देपने कुवरजी कहै—A

ख वारता—इतरो कहे रसालु घोडे असवार हुआ। जद राजा मान कहीयो—दुजी वेटी परणो। तरे रसालु कह्यो—उवा पीण उण सरीषी होसी तीण वास्ते नही परणा। सीष करी तीहायी चाल्या।

ग वात—अतरो कह्यो अर रीसालु असवार होयनै चाल्या। अतरै राजा मान कह्यो—मारी दुजी वेटी परणो। जदी रीसालु कह्यो—उहो ज उसी ज होसी। रीसालु चाल्यो उजेणी नगरी राजा भोजरै चाल्यौ।

ङ रीसालु असवार हुवा चालवा लागा। जद राजाजी कयो—मारी वेटी दुजि परणाउ। तद रीसालु कहै—वा पिण उसी ज हुसी तिण वासतै ना परणा। तिहायी चाल्यो रीसालु उजैणी नगरी आयो, तिहा राजा भोज राज करे छै।

A–A चिन्हगत अंश का पाठ भेद ख ग ङ प्रतियो मे इस प्रकार प्राप्त है—

ख हीवे उजेणी नगरीइ राजा भोजरी वेटी रसालु परण्या छे, तीका कुवरी रसालुजीरी वाट जोवे छे। गामरा आबा साषे हुआ छे। कुंवरी घणी चींता करे कुवरजी गया नही। तरे राणी काठ चडवाने त्यार हुई छे, तलावरी पाल गई छे। चेह चुणीजे छे। लुगाया सतरा गीत गावे छ। तीण समीए काठगे ढोल वाजे छे। इतरे रसालुजी जाय पहुता। हीवे रसालु सहीररा लोकाने काई कहे छे—।

ग आगै राजा भोजरी वेटी काठा चढै छै—रीसालु आयो नही। अतरै रीसालु चाल्या आवै छै। वाटे लोक रीसालुनै मील्या। रसालु लोकानै पुछै काई कहै—।

ङ आगै राजा भोजरी वेटी काठे चढै छै तरे रीसालू लोकाने पूछै—।

दुहा[1]— सेहर[2] उज्जेणीके[3] गोरमे[4], 'वया ए'[5] धूवा-धोर[6] बे ।
कागारोलो[7] 'मच्च रयो'[8], 'ज्यूं वाजेगो'[9] ढोल बे ॥ २८५
वन्नन हुतो सो पूगीयो, तिण कारण चढै काठ बे ।
रीसालू-वचन षोटो थयो, तिण कारण ए घाट बे ॥ २८६[10]

७८ वार्त्ता—इसो सुणत प्राण रीसालू घोडो दपटाय नै तलावरो पाल षधारो कार ने उभो राहयो नें लोकानूं पुका करताने वरजने रीसालू दुहो कहै छै—[11]

---

१ ख ग रसालुवाक्य दुहा । २ ख सहर । ग. सैहर । ३. ख उजेणीरे । ग उजेणीपैं । ङ उजैणीके । ४. ग. गोरमे । ङ. गोरपे । ५ ख. वयु मांडी । ग. वयू मांडयो । ङ वया मडी । ६. ख धुआ-धवरोल । ग ङ धु (ङ धू) आ-धकरोल । ७ ग कागारोल्यो । ङ. कागारोला । ८. ख. मच रह्यो । ग. वयु मच्यो । ङ. मचीया । ९. ख. वाजे वयू जगी । ग वयुं वाजं जगी । ङ वाजे सिगी । १० ख ग. ङ प्रतियोमे यह दुहा इस प्रकार मिलता है—

ख सहीररा लोकवाक्यं

राजारे भोजरी कुवरी, रसालुआ घर नार बे ।
नाया कुयर रसालुआ, काठ चढयेकी त्यार बे ॥ ६६

ग तदि लोक रीसालूने कांई कहै—

दुहा— राजा भोजरी डीकरी, रसालु बंधी नार बे ।
आयो नही कुयर रीसालूवो, काठां बैठ कुमार बे ॥ ५३

ङ. नगरलोकवाक्य

राजा भोजरी डीकरी, रीसालूआ नर नार बै ।
आयो नही रीसालूओ, काठे चढे कुमार बै ॥ ६१

११ ख. ग ङ प्रतियो का पाठ इस प्रकार है—

ख वारता— इसो सांभलने रसालु घोडो दोडायो । तलावरी पाल गयो । देखे तो सर्व लोक-लुगाइ मील्या छे । अबे रसालु जाय रांणी प्रते कांइ कहे छे—।

ग वात— ऐस्यो रीसालु साभल्यो; घोडो दोडायो; तलावरी पाळ आयो । लोक मील्या छे । रीसालु रांणी नषै आव्यो, रांणीको मन जोवा लागो—आ पिण तारासणी छे के नही ? देखां ईयनें कहूं । तदि रीसालु कांई कहै—।

ङ वारता— इसो रीसालू लोका पासै सांभली नै घोडो दोडाय तलावरी पाल आय उभो रयो नै कहै छै—

दूहो[1]- रूपामू[2] धोला[3] करूं, सोनारी[4] चकडोल वे।[5]
रीसालू[6] नामने[7] छोड दे[8], जोरू[9] हमारी होय[10] वे ॥ २८७

कवरीवाक्य[11]

अवर[12] तारा[13] डिग पडै[14], धरण[15] अपूठी[16] होय[17] वे।
साहिब[18] बीसारू[19] आपणो, 'तो कलि उथल'[20] होय वे ॥ २८८

[७६ वार्त्ता—इमो दूहो केहने रीमालू रजावद हूवो। मनमे बीचारीयो—अजे समारमे सत छै, विना थभा आकाम पडो छै। इमो मनमै चितविनै चहथी नेडो गयो, लोकारा विचला भिडावमे उभो रहिनै दूहो कहै छै—

दूहा- सूगणी तु चिर जीवज्यौ, जगमै नाम कढाय वे।
राजा भोजरी डीकरी, वस उजालण भाय वे ॥ २८६

८० वार्त्ता—इमो दुहो कुवरी सणने चहने छोड ने आवारा पेड तले जाय उभी रही, गुघट पाट दीये। तठै सारा हि उम्रावा, प्रधाना आदि वहार देपने जाणीयो—महे, रोमालू कुमरजी आप छै, पिण पूरो पारप लीजै। इमौ मारा उम्रावा चितवने वोलीया—श्रीमाहाराजा कु वार! आप भला पधारया, आप म्हानै मोटा कीया, पिण एक म्हारा मनमाहै छै, तिका कर देपावो तो राज तो पूरो पतिजो आय जावै। तठै कु वरजी कहै—भला उम्रावा, थे के दिपालो, मासू

१ ख रसालुवाक्य। ग रसालुवाक्य दूहा। २. ख रुपासु। ड रूपाकीसु। ३ ख धवली। ड धालि। ४ ख सोनासु करु। ग सोनै कराउ। ड सोनाकी करू। ५ ख वीलोय। ग लोअ। ६ ख रसालु हुदा। ग रीसालु हुदा। ७ ख ग ड नाम। ८ ग ड छोडदे। ६ ड अग जोरु। १० ग होअ। ड होय। ११ ख राणीवाक्य। ग. कुवरीवाक्य दुहा। ड. राणीवाक्य दूहा। १२ ड जो अवर। १३ ख तार। ग तारो। ड ता[रा]। १४ ख ध्रु डीगे। ग धु डगं। १५ ख ग. ड वरणी। १६ ख अपुठी। ग अफुटी। १७ ग होअ। १८ ख साइ न। ग सायव। ड सायत। १९ ख वीमारु। ड विचारू। २०. ख. जो यल उथल। ग ज्यो कुल दुजो। ड जो कली दुजा।

[—] कोष्ठगत ७६, ८०, ८१, ८२, ८३ एव ८४ वीं वार्ताओंकी शब्दावलिया ख ग ड प्रतियों में निम्न रूप में लिखित है—

ख वारता—रसालु राणीरा वचन सुणी पुसी हुआ। आ अस्त्री सुकुलीणी दीसे छे। तदी रसालु कहीयो—हु समस्त राजारो पुत्र छु। माहरो नाम रसालु छे। तों वारे राणी कहे—सात केरीरो जुवको एकण चोटसु लोका देपता पाडो तो रसालु परा, नही तर ये रसालु नही। जदी रसालु सात केरीरो जुवको एक चोटसु उडायो। तदी राणी घु'घट-पट पाचीयो। सव लोक राजी हुआ। राजा भोजने हलकारे जाय कह्यो—वधाइ दीजे, रसालुजो

हुसी तो कर देषामसा । तठै उम्रावा बोलीया—श्रीमाहाराज कुंवार ! अमारी बाई सासरासू पीहर ल्याया छा जठे आपरी साथेलीयासू मोली, तरे राजारी वडीसी फते कीवी छी, तिण आपरी साथेलीयाने माहरी कुंवरी कहौ छौ—म्हारो षावद इसडो तीर वाहवठा(णा)छा सो रूपरा सात-आठ फल एक तीरसू भूबपौ नाष देवै छै, इसौ जाब म्हे पिण साभलीयौ छौ, तिणसू आपनै तसती हुमी, पिण ओ आपरे मूहडा आगै आबारो रूप छै, तिणरै ऐ सात भूबषारी डाली छै, तिका डाली रह जावै नै भूबपो आय पडै । तठै कुंवरजी मनमै विचारीयौ—देषो, दइवा राष्या इणा उम्रावा आव वात कही नै कदाचित सभै नही तौ हेल हुमी ।]

दूहा– **वीरह विडाणा मेहलथी, साथीडां सीरदार बे ।**
दोरो हुवो दुहेलडी, मिलीयौ इण भरतार बे ।। २९०
साई बाजी राष बे, तो सूधौ सहु काज बे ।
पच पतीजौ पामै बै, वलि रहै सगली लाज बे ।। २९१

८१ वार्ता—इसो विचार परमेसरने समरने कबाण चढाय ने तीर भूबषा नै बाह्यौ, सौ सात केरीया जूई-जूई आय पडी । भूबपौ सारा ही उम्रावा पडियौ दिठौ ।

दूहा– **तीर सपल्लल चापीयो, लागा आबा डाल बे ।**
पषारा सूधो निकस, भूबषो पडचौ पराल बे ।। २९२
उम्रावा साषोधरा, दीठा केरी भूब बे ।
जाण्यौ कुवरी छै सही, कूड नही तिल वात बे ।। २९३

८२ वार्ता—हिवै पचा सारा ही साषीधर हूवा । सारा ही षमा-षमा कैह ने कहे—श्रीमाहाराजकुंवार ! आप तसती घणी फूरमाई, गुणौ बगसाविजै, दरबार पधारोजै । इतरौ कहीयौ तठै कुंवरजी उम्रावारे साथे घोडै असवार हूवा ने कुंवरी चकडोलमे वेसने दरबाररे महिला गई । वासैसू वधाईदार राजा भोजने जाय वधाई दिवी ।

पधारचा । इसो सुणी राजा षुसी हुआ, परधानने कह्यो—सामेलारी ताकीदी करो । तदी परधान सारो सहीर, बाजार सीणगारीयो, हाथी, घोडा, कोतल सीणगारचा, नगारा नीसाण फररा सर्व त्यार कीधा । राजा भोज सामेलो करी कलश वदावे कुंवरजीनु माहे लीधा ।

ग वारता—राणी कह्यो । रीसालु कहै—आ असत्री सूकलीणी छै । तदि कह्यौ—हू राजा समस्तरो बेटो छु । तदि [राणी] कह्यौ—सात कैरीकौ भुबको ऐक तीरसू पाडो तो हू जाणू तो थे रीसालु षरा । तदि सारा लोक देषवा लागा । तदी रीसालु कुबाण ले तीर

दूहा– श्री माहाराजा भोजजी, ताहरो जमाई अवार वे ।
आयो जीवतदानमे, दीधो कुवरी उतार वे ।। २६४
राजन रूडा होयज्यो, सीपा सारा काज वे ।
वाजी परमेसर परी, राषि दोन्यारी लाज वे ।। २६५

८३ वार्त्ता—इसा समाचार श्रीमाहाराजा भोजजी साभलने पूसी हूवा, घणी वधाईया वाटी । इतरै उम्रावासू मीलीया थका श्रीमाहाराजारे सभामे आया, मूजरो कीयो । राजा भोज घणी मनवार कुवरजीने दीनी । भली भात सू वाहा पसाव कीया । आछी विछात विराजीया । कुशल-कुशल पूछीया । कुवरजी आपरी वीती वात सारी देमोटा वूरा-वूरा कही । राजा भोज घणी धीरप देवी नै दूहो कहै छै—

दूहा– पूत्र पितारा हुकममे, जे रहे जगमै जोय वे ।
ते सारीसो जग इणै, वले न वीजो कोय वे ।। २६६
पाछो वोलो वोलडा, वादै कर रीसाय वे ।
ते सूता पितुं अलषामणो, होय सदा दुषदाय वे ।। २६७
जेसा पूत्र ज्यू वाल्हा, जेसा अवर न कोय वे ।
पिण जग मावीता तणौ, सूपमे दुष को जोय वे ।। २६८
भली वूरी माइत तनी, नवि कीजै देषै पूत्र वे ।
पूठल मावीतथी, ते सफू जाषै सूत्र वे ।। २६६
पूत्र ईसा जगमे हुवै, माइत तणा मजूर वे ।
रहै सदा मूष आगल, नही अलगा नही दुर वे ।। ३००
प्रेम विडाणा पारषा, जगके मोह अकथ वे ।
कर जोडि पितु आगले, रहैं सदाई साथ वे ।। ३०१
ज्यू पितु जपे तु षरो, कालो गोरो कथ वे ।
तेहवो हुकम चढाईये, सीस सदा समरथ वे ।। ३०२

मेल्यो, सात कैरी को झुवको पाड्यौ । सारा रजावध हूवा राजा भोजरै जमाई रीसालु आव्या ।

ड वारता—रीसाल इसो राणीरा मुषथी साभलीनै घणा रजावध हूवा, आ असत्री सूपलीणी छै, घणु जोग्य छै । तद कुमरी कयो । सात केरीरो झूवको एकण कवाणीयासु पाडो तो परा । तरे सर्व लोक देषता सर नाष्यो । तरे सात केरीरो झूवषो आगणै आय पडी । राजा प्रजा सर्व राजी हुवा । राजा भोज साभल्यो, जमाइ आयो ।

८४. वार्त्ता—इसा दूहा राजा भोजजी कहीया। कुवरजी [रो] घणो मन द्रढ हुवो, पूस्याली हुई। राजा भोज नवा सिरपाव कराया। भलाकडा मोती निजर-निछरावला कीवी।]

दूहा– लोक करत बधामणा, घर घर मगल माल बे।
नगर गली घर नोबती, बाजै ठोर बे बाल बे॥ ३०३[१]
हर्ष तणी गत होय रहि, नगर लोक ले पेस बे।
पूरमे रलीयायत घणी, सकल नमावत सीस बे॥ ३०४[२]
वदी जम छोडावीया, के पषी मृग माल बे।
नर-नारि आसीस दे, जीवो कोडीक काल बे॥ ३०५[३]
भला ई पधारचा कुमरजी, भलो हुवो दिन आज बे।
आस्या बधी कामनी, ताका सूधरचा काज बे॥ ३०६[४]
आज सूरज भल उगीयो, हुवै बूठा मेह बे।
नीजीवत हुवा जीवता, भवला बधीया नेह बे॥ ३०७[५]
भलाई पीयारो नेहडो, नीहचो फलीयो नार बे।
कोड वरस राजस करो, सूष विलस्यौ अण पार बे॥ ३०८[६]

*८५ वार्त्ता—हिवै नगररा लोका आसीसा सूथरो दीवी। साराहीसू कुवरजी मान कर-करनै मील्या। नगरमे पडोहे वाजीयौ। हर्षरा वधावा-गीत

---

१ २ ३ ४ ५ ६ ख ग ड प्रतियोमें इन छहो दूहोके स्थान पर निम्न दूहे ही प्राप्त हैं—

ख　　दुहा– लोक करे वधामणा, घर घर मगलच्यार बे।
नगर सहु को यु कहे, भले आया कुवर रसालु बे॥ ६०
नगर चोहटे नीसरचा, सहु को नमावे सीस बे।
नर नारी आसीस द्ये, जीवो कोर वरीस बे॥ ७०

ग　　　　साहूकारवाक्य

दूहा– लोक करं वधाम[णा], घर घर मगलचार बे।
सहू मील लोक ईयु कहै, आयो कुवर रीसालु बे॥ ५६

सेठवाक्य

दूहा– नगर चोहटै नीसरचौ, सहु नमावै सीस बे।
नर नारी आसीस दै, जीवो कोड वरीस बे॥ ५७

ड　　दूहा– लोक करै वधामणा, घर घर मगलाच्यार बै।
बधी जन छोडि दीया, के पषी मृग माल बै।
नर नारी आसीस वै, जीवो कोडी वरीस बै॥ ६४

-. चिह्नान्तर्वर्ती ८५, ८६, ८७ एव ८८वीं वार्त्ताओंके गद्य-पद्यांशका वाक्यविन्यास ख ग ड प्रतियोमें इस प्रकार मिलता है—

गवीज रह्या छै। इतरै रात्र पू हर सवा गई। तठै कुवरजी मेहला दापल हुवा। इतरै कुवरी सिणगार कीया कुवरजो पासै आई।

दूहा– काली काठल भलकीया, वीजलीया गयणेय वे।
चमकती मन मोहीयो, कचू छाकी देय वे॥ ३०९
पिंडस पतल कटि करल, केल नमावे अग वे।
लोयण तीपा ठग भर, आई मेहल पतग वे॥ ३१०
जाणै मान सरोवरै, मीलप्यो हस विसाल वे।
सेभा आई सूदरी, छुटो गज छछाल वे॥ ३११
पूरो पूनम जेहवो, मूप विच चूपे जडाव वे।
कालो वादल कोर पर, वोज पोवे जिभेकाव वे॥ ३१२

८६ वार्त्ता—इण भात सू कुवरी सीणगार सभर्ने कुवरजी पासै आय ने सन्दो कर ने हाथ जोडने ऊभी रही। तठै राणीरो रूप, मटक-चटक देपने मनमे कुवरजी घणा राजी हुवा।

दूहा– जि नर रूपे रूवडा, ते नर निगुण न हुवत वे।
जी मण भोज कूमारका, मोह्यौ मन तन कत वे॥ ३१३

८७. वार्त्ता—इसो कुवरजी वीचारने राणीने घणी राजी कीवी। घणा कवित्त, दूहा, गाहा करीने माहे-माहि चरचा कीवी। तठे कुवरजी राणीनै कहै—सावास, थाहरो कोल भलो उजलो दिपायो, म्हे तो मारा मनमें जाणता था—लूगायारो ममावाका आलम कहीजै, तिके लूगाया छै।

ख वारता—रसालुजीए इण तरेसु महीला दापल हुआ। सघला सायसु मील्या। नीजर-नीछरावला हुई। इम करता च्यार पोहर दीन वतीत हुओ। सध्याइ रगमहीलमे जाए पोढीया। राणी पीण स्नान, मजन कर भला कपडा पेहरीया। सर्व आभुपण पहीर वाल-वाल मोती सार, घणा अतर-फुलेल ढोलीया। कपडा मघला इकगरकाव (इक रग का) कीया। इण भात घणा उछाहसु सुरापानरी सुराही लीया रात्र घडी दोय गयां, महीला आई। रसालु जीम लीया। घणा उछाह कीया। वात वीगत मन-तनरी कीधी, सुप-वीलास कीया, लयलीन हुआ: तीण समीए रसालुजी राणी प्रते काइ कहे छे—

रसालुवाक्य

दूहा– सर वर पाय पपालता, तेरी पायडली पस जाय वे।
हु यने पुछु गोरडी, यने क्यु कर रयण वीहाय वे॥ ७१

राणीवाक्य

सर वर पाय पपालता, मोरी पायलडी पस जाय वे।
ऊवर तारा गीणता थका, यु मोकु रयण वीहाय वे॥ ७२

दूहा– कूड कपटनी कोथली, रमती पर पूरषाह ।
लजा सकण जा(ता) नही, प्रीतम मन पिछताह ।। ३१४
जगमे नारि रूवडि, वसत करी जगनाथ बे ।
पिण साचे मन चाल वे, तो पिउ थाय सू नाथ बे ।। ३१५
मगल जारी मागरण, चीला छोड कुचीन बे ।
चाले मन पिउ नहि गिरणै, ज्यू मद मानो(तो)फील बे ।। ३१६
पिण तो सरषो बालही, जो नवि मिलती मोह बे ।
तो हु प्रतीत न जाणतो, नारि तणो अदोह बे ।। ३१७

वारता– इसो सुणि रसालुजी राजी हुआ । राणीरे घणा ग्रहणा, वेस-वागा कराया । हीवे रात दीन सुषे भोगवे छे ।

दुहो– मो मन लागो साहीबा, तो मन मो मन लग ।
ज्यु लुण वीलुधो पाणीया, ज्यु पाणी लुण वीलग ।। ७३

वारता– इसी रीतसु सुष-वीलास करता मास पच वतीत हुआ । तदी रसालुइ राजा भोज पासे मीष मागी ।

ग वात– रसालु नै म्हैलामै डेरा दीवाडचा । तदी रीसालु म्हैलामै सुता छै । राणी आई । राणीनै काई कहै—

रीसालुवाक्य

दूहा– सरवर पाव पषालता, तेरी पायल क्यु सही जाय बे ।
हू तोनै पुछु गोरडी, तु क्यु रयण विहाय बे ।। ५८

तदी राणी काई कहै

दूहा– सरवर पाव पषालता, मेरी पायल क्यु कसी जाय बे ।
अबर तारा जोवता, ज्यो मो रैण वीहाय बे ।। ५९

वात– तदी रीसालु राजी हूवो । तदी राणीनै ग्रहणो दीधो । जडावरो सीसफुल, जडावरा आकोटा बीदी सहेत दीधी । सोनारी घड, रतना रो हार, नवसरो वरहार, चद्रसो उजलो चद्रहार, माला सोनारी, दोय हाथरा वाजुबध, हाथरी बीटी, जडावजडी, नगजडचा हीराकणीरी वीटी, जडावरी जेहड, दोई पायल, दोय पग पान मय मेषला, हजार पाचसैरा दीधा । ऐस्यो पच फुल्यो गहणो कुवर रीसालुजीरी राणीनै दीधो । गैहणा-गाठा घडाव्या । राजाजी राजी हूवा, वधाई वाटी । घणा भोग-वीलास दन पनरै रह्या । एक दिनकै सम्यै राजा राणीसू कह्यौ—माने सीष देवाडो ।

ङ वारता– रीसालुनै महीला माहै डेरो दीरायो । रीसालू महिला माहै सुता छै । तद राणी आय रीसालूनै काइ कहै छै—

दूहा– सरब याय पषालता, तेरी षायल षीस जाय वै ।
हु तोने पूछू गोरडी, तौनै क्यु कर रेण विहाव वै ।। ६६

राणीवाक्य

सूकुलीणी नारि तिका, पति सग रहे अछेह वे ।
जीवतडा नहि वीसरे, न वलगाई नेह वे ।। ३१८

८८. वार्त्ता—इण भातसू माहौ-माहि दुहा कहिनै राजि हुवा । नवा नेह लागा, विरह-विछोहा भागा । पेहरी केमरीया वागा, मिट गया दुपना दागा, चोवा-चदन लागा । इण भातसू माहौ-माहे समाररा सूप विलामता घणा मास हुवा । हिवै एक दिनरे समै कुवरजी राजाजी कनै सीप मागी । तठै राजा भोजजी घणा दुपो हुवा ।*

दूहा– राज सरीषा प्राहुणा, वले न आवै कोय वे ।
मिलीया दुप गलीया सहू, जूगत थई सहु जोह वे ।। ३१९[1]
अग उमाहो कुवरजो, कीयौ कोसी वीस आज वे ।
राज सला धारी धरण, सो कहि जवो काज वे ।। ३२०[2]

कुवरजीवाक्य

वारै वरस वनवास रा, भोगवीया माहाराज वे ।
अव घर जइये वचनथी, सोल वरस धर साझ वे ।। ३२१[3]

A८९ वार्त्ता—इसा समाचार सूणने भोजजी टीको ओझणी सारो ही कीयो, दत दायजो घणा दीया, वणा मनवारासू दीया, घणा मनवारासू लीना । हिवै राणी पिण छानो माल आपरो वेटीने दीयो, घणी राजी कीवी ।

दूहा– सहस दाय हैवर दीया, इकवीस गैवर दीध वे ।
सहस धोरी दूणा करला, जगमग झूला लोध वे ।। ३२२
चाकर पचसय चेरीया, वलि हथियार विशारन वे ।
चतुरगणी लछमी दई, टलीया आल पपाल वे ।। ३२३

९०. वार्त्ता—इसा द्रव्य देनै कुवरजीनै सीप दीवी, घणा आसू आया । माता-पिता घणा रुदन कीना ।A

राणीवाक्य

दुहा– सरवर पाय पषालता, मैरी पायलडी षीस जाय वै ।
अवर तारा गिणता थकाय, मौरी रेण विहाय वै ।। ६७

वारता– रीसालु राजी हुवो राणीरे घेहेणौ वडावै । राजा राजी हुवो वधाई वाटी । घणा दिन रया । रीसालु राजा तीरे सीष मागी ।

१ २ ३ ये दूहे ख ग घ. मे नहीं हैं । A–A चिन्हान्तर्गत गद्य-पद्यांश का वाक्यभेद ख ग. ङ. मे गद्यरूपमें इस प्रकार मिलता है—

दूहा– **धन धन मातारो नेहडो, धन धन पालै जेह बे।**
धन धन पीउ धन प्यारीया, धन धन कुवर सनेह बे ॥ ३२४[1]
माय बाप लीया तिहा, विरह घूराया निसाण बे ।
एहवा पाहुणा डा (ई) सदा, भल आज्यौ भगवांन बे ॥ ३२५[2]

९१ **वार्त्ता**—इसा विलास, विरह, मिलाप साराहीसूं करने कुवरजी नगारो देनै चढिया सो धारावती नगरी आया। आयने वरस पान्न ताई रह्या। वलै वसती घणी वसाई। तठै माहादेवजीरी सेवावजीनू कहीयौ—श्रीमाहाराज जोगेसराज ! श्रो रीसालू कुवर आपरी घणी भगत कीवी छै सो इणनै काइ क देवो। तठै श्रीमाहादेवजी बोलीया—रे कुवर ! सतुष्टमान हुवा, मागै सौ हि ज देवा। तठै कुबरजी बोलीयो—श्रीमाहादेवजी माहाराज ! आप तूठा छो तौ आ नगरी सारी ही वस जावै, आगली हुती, तिणसू सवाई हुई जावै नै म्हारै सवा लाष फौजरो वाधैपो हुवै, इतरी वीध मोनै दिरावौ। तठै श्रीमाहादेवजी बोलीया—तु चावै सौ सारी ही विध हुय जासी। इतरो हुकम लैनै कुवरजी घरे आया। हिवै कितरा इक दिननै आतरै राणीरै गर्भ रहो। नव महीना पूरण हूवाथी पूत्र हुवौ। तिणरो नाम रतनसीह दीयौ।[3]

दूहा– **सूरज किरण ज्यू तन झिमै, सूदर फूल गुलाब बे।**
रतनसिह नामै षरौ, दीधौ नाम सूलाब ब ॥ ३२६[4]

ख वारता– तरे भोज राजा आछो मोहरत जोय बेटीनु सीष दीधी। घणो दतू-डायचो, घोडा, हाथीदल, कटक देइ ओभ्रणो पोहचाया।

ग तदि राजा भोज बेटीरो चलाववारो महूरत पुछ्यौ। तदि राजानै पाडता भलो मोहूरथ दीधो। तदि राजारी बेटी चलाई। घोडा, हाथी, रथ, पायक देनै चलाई भली भातसु पोहचाया।

ड तद राजा भोज मौरत पूछौ। बेटी साथै घणा कटकदल देनै डाइचो दे चलाया नै भली तरैसू पोहचाया।

१ २ दोनो दूहे ख ग ड प्रतियो मे नहीं हैं।

३ ९१वीं वार्ताके स्थान पर निम्न गद्याश ही ख ग ड प्रतियो में प्राप्त है—

ख रसालुजी घोडे असवार होय सघलाइसु मील श्रीपुरनगर सारु वीदा हुआ।

ग तदि [रीसालु] चाल्या चाल्या धीरावास नगर आया। उठै जाऐ वरस पाच रह्या। उठै नगर वसायो। उणी राणीरै बेटो हूवो छै। रतनसाह नांम दीधो।

ड चाल्या चाल्या धारावती नगरी गया। उठै वरस पाच रया नै नगर वसायौ। राणीरै वेटौ हुवौ। तिणरो रतनसिंघ नाम दीधौ।

४ यह दूहा ख ग ड मे नहीं है।

९२. वार्त्ता—इण भात रहता थका श्रीमाहादेवजीरा प्रतापसू घणा दास दासी वधीया । चारू ही कानीरा भौमीया, ग्रासीया आणनै चाकर रह्या । नगरी सारी ही आगासू सवाय वसती हुई । घणा विनज-व्यापारसू डाण-जगात घणी आवै छै । तिणसू कुवररे पजानौ क्रौडा रूपीयारौ हुवौ । कुमे किनी वातरी नही ।B

Cतठै इण विध रहता थका वरस पाच वलै हुवा । तठै रातरा पौहरा कुवरजी सूता छै । सूता मनमै वीचारीयौ जे वनवास ही भोगवीयौ, राज ही भोगवीयौ, पिण घरै गया विना विश्रारी पवर किसी पडै, तो अवै माईतासू मीलनौ ने धरतीमें नाम करणौ । इसौ विचारनै आपरा उम्रावानै प्रभातै सभामै बूलाया, मनसोवा कीया । तठै मोटो माहाजन अकलवादर, तीणनै दीवाणपद देईनै द्वा(धा)रावती नगरी सूपी, भला समसेरवादर रजपूत मूहडा आगै रापी घणी जावताई दीधी । हिवै आप नगारो दिरायनै सवा लाप घोडौ साथै लीयो ।

दूहा- दल वादल भेला हुवा, देता नगारां ठोर वे ।
जाणे भाद्रव गाजीयौ, चढीया वहता सजोर वे ।। ३२७

९३ वार्त्ता—इण भातसू वहता थका आपरी नगरीसू कोम एक उपरै आणनै आचाचूकडा डेरा कीया । प्रभातै राजा समस्तजीनै पवर पडी । मनमै भयभ्रात हुवा—जे कीणरी फोज है । तठै नीजरवाजाने मेलीया । तिकै जायनै पवर पाडी—कैठै जावसी, क्यू आई छै ? तिका हकीकत कहौ । तठै कोई क उम्रावा वोलीयौ—अरे राईका ! थाहारा राजानै केहनै इण नगरीरी जावतानै आई छै । फोज उमीर-सीरदारारी छै । इसा राइके समाचार सूणनै राजाजीनूं

B यह अंश ख ग ड. में नहीं है ।

C–C चिन्हान्तर्गत गद्य-पद्यांश के स्थान पर ख ग ड प्रतियोमें निम्न गद्यांश ही प्राप्त है—

ख कित्तरेके दीने चाल्या थका श्रीपुरनगर नेडा गया । राजा समस्त जाण्यो—कोइ वेरीदल धरती लेवा आयो दीसे छे । इसो वीचार राजाए उवरावानु साहमा मेल्या—आ कीणरी फोज छे, कठे जासी ? इतरामे हलकारा आया राजा समस्तने अरज कीधी—माहाराज ! रसालु कुमर परणेने आवे छे । इसो सुणीने राजा समस्त राजी हुआ । हीवे राजा समस्त सामेलारी सभ्र कराय रसालु कुवर सामा आया । मोती थाल भर वधायो । नर-नारी मील मगल गाया । घणा उछव महोछव हुआ । सर्व लोकांने मन भाया । यु करता रसालु राजलोकमे आया । माता सु मील्या पछे महीला दाषल हुआ । हीवे रसालु सुषे रहे छे । तठा पछी पाच राणी फेर परणीया । राणीया सघाते मनवछीत सुष भोगवे छे । इम करता एकदा राजा समस्त देवलोके पहुता । तरे रसालु घणो धर्म पुन्य करी चदण अग

कहीयौ—श्रीमाहाराजा ! फोजरी तो चौकस कोई नही, पीण बूरै मतै छै, आप जाबताई करीजै । तठै राजाजो घणी जावता करवा लागा, घणा नाल-गोला बूरजा उपर कसीया । रावत, सूरवीर घणा दल भेला हुवा । पिण रीसालूंरी फोज चूप-चापसू बेठी रहै छै । किणहीरो तिणामात्र उजाडै न छै ।

यूं करता छ महीना हुवा । तठै राजा समसतजी आपरा प्रधानने कहीयौ—थै फौजरा नायकसू मीलौ, देषा, काई रग-ढग छै ? षबर जीसी हुवै तीसी ल्यावज्यौ । तठै प्रधान असवारी करने हजार पाच असवारासू फोजा सामो नीसरचौ । आगाउ साढोयो मेलीयौ । प्रधान मीलवान आवै छै, इसौ कहाय दीयो । तठै साढि(ठि) यै हकीकन कही । तठै सारा ही सावधान हुवा छै । प्रधानजी आवै छै ।

दूहा- **दल दिषणादी देषीया, झाझा फरहर झग बे ।**
बाजै नोबत बबली, रीसालू फौजा रग ब ।। ३२८

९४. वार्त्ता—इसा दल देपतो प्रधान रीसालूरी फोजमै आयौ । आयनै माहौ-माहै मीलीया, बाह पसाव कीया । प्रधान कुवरजीनै घणा वरससू उलष्या नही । कुशल-कुशल पूछीया, विछायत बेठा, अमल-पाणी कीया । तरै कुवरजी पूछीयौ-जै प्रधानजी साहिबा ! आप क्यू पधारीया छो ? तठै प्रधान कहै—श्रीमाहाराजाजी मेलीया छै आप कनै । सौ आप कीण काम पधारीया छो । आप कजीयो पिण म करौ, आघा पिण न जावौ, तिणरौ काई विचार छै ? आपरा मनमै हुवै सू कुवरजी साहैब ! आप कहौ, आपरा मनमै हुवै सू मने कहौ, ज्यू माहाराजसू मालिम करू ।

काठसु दाग देरायो । बारे दीवसे प्रेतकार्य कीधो । पछे आछे मोहर्त्ते शुभलग्ने शुभवेलाए रसालु पाठ बेठा । प्रोहीत तीलक कीधो । सघले सीरदारे, समुधीए आय मुजरो कीधो । भोमीया, काठलीया सर्व आय पाय नमण हुआ । रसालुए अदल राज पाल्यो । घणा दीन सुष भोगव्यो ।

ग उठासु चाल्यो आपकै श्रीपुर नगरै आव्या । राजा समस्तै जाण्यो—ओ दल-बादल कीणीरो छे । अतरायकमै राजा समस्तजी हूकम कीधो—स[र]दारने उरो बोलावो । चाकरै कह्यौ—प्रमाण । चाकरा जायनै प्रधाननै उरो तेडयो । आप हजुर आयो । तदि आप हुकम कीधो—ओ कटक कीणीरो छै ? तु जाअ षबर ल्याव । ओ घोडो चढे सामो गयो । जायनै पुछ्यौ—ओ कटक कणी राजारो छे ? माने कहौ । माहरे राजाजी पुछायो छै । अतरायकमै माहाराज कुवरजीसु आपरे फोजदार जाए मालक कीधी—माहाराज ! अणी सेहररो राजा, तणीरो फौजदार षवर करवाने आव्यो छै । तदी आप हूकम कीधो—उरो बुलावो । तदि हजुर आयो । मुजरो कीधो । आप कह्यो—आघो आवो । आप पुछ्यौ—क्यु आया छो ? जदी उणी ही हाथ जोडने कह्यौ—माहाराजा आपरी षबर करवाने मोकल्या छै ।

तठै रीसालू जी वोलीया—म्है थाहरा राजानो कागल वीड देवा छा सौ हाथौ-हाथ देज्यौ। थाहरौ राजा वाचनै मानै सीप देसी तौ परा जावस्या, कजीयौ करसी तौ कजीयौ करस्या, श्रो जाव छै। तठै प्रधान वोलीयौ—हुरस फूरमाई, आप कागल लीप दीरावौ। तठै रीसालूं कागल लिपै छै—

दूहा— सीध श्री सकल गुणनिधांण, तपतेज प्रमाण, प्रवल राजपरताप, तपतेज कायम, जगत दुप चूरण, गरीवके सरण, छोरूकै पाल, माहारसाल, परम सूषकारी, राजकृपाथी सूत सूष भारी श्री श्री श्री १०८ श्री १०००००० श्री श्री माहाराजाधीराज माहाराजाजी श्री श्री श्री समस्तजी चरण कुमलायनू—

दूहा— श्री सिध श्री श्रीहजूरनै, लिषत सूत कल्यांण।
तन मन जीवन सूप करन, पूरण परम निधान ।। ३२९
सकल ओपमा जोग्य है, पितु-माता मनू रग।
सूतको मूजरौ मानज्यौ, दिन दिन अधिको रग ।। ३३०
सूप वहु तुम परसादथी, तन धन श्री माहाराज।
सदा रावलो जाणज्यौ, चाकर साधत काज । ३३१
तुम फूरमायो जा परो, सो काहा जावै भांम।
पूत्र तुमारो रीसालूवो, आयो मीलवा काज वे ।। ३३२
जो मिलवो मूष देषवौ, जो कौई मृहुरत हौय।
प्रोहितजीनै पूछ कर, आछौ दिन ल्यौ जोय ।। ३३३
पिता हूकम वनवासकौ, सौ लह्यौ सीस जढाय।
वरस बहुत वारे भम्यौ, अब आयौ तुम पास ।। ३३४
श्रीमाहाराजा हूकम द्यौ, तो हु आउ राज।
चरण तुमारा भेटवूं, ज्यू मूज सूधरे काज ।। ३३५
सल्ला होय सौ कीजीयौ, पूठौ दीज्यौ जाव।
जै कहौस्यौ सौ मानस्यूं, करस्यू काम सताव ।। ३३६
गुनेहगार हुं रावलो, साहिब चरणां दास।
छोरू कुछोरू हुवै, पिण तात न छोरत आस ।। ३३७

तदि आप हूकम कीवो—मे थारा राजाजीरा वेटा छ्या, वरस बारमै आया छा, सगलै साथ राजाजीरै कुसल-षेम छै ? माहरी आजीरो डील आछो छै ? मे तो वरस घणासु आया छा, सो ठीक नहीं। जदी उणी कह्यो—माहाराज ! घणो सुष छै, चैन छै, वले आप पधारचाथी वसेष चैन छै। जदि कुवरजी कह्यो—थे जावो, राजाजीसु मालम करो। उणी कह्यो—प्रमाण। उ घणा उछाहसु दरवार आव्यो, राजाजीसु कह्यो—माहाराज ! कुवर

छोरू आस करै घणो, पिउंसू मीलवा कोड ।
साचौ जाब दिरावज्यौ, ज्यू पूगै मूझ होड ।। ३३८
कागद वाचनै भेजीयौ, आप तणो कोई दास ।
मूकैज्यौ ज्यू आवस्यू, तात चरणकै पास ।। ३३९

रीसालुजी आव्या छै। जदि आप घणा कुस्याल हूवा। रावलामै राणीसू कवाओ। राजाजि हुंकम कीधो—कोटवालनै तेडाव्यो। कोटवाल हजुर आव्यो। हूकम कीधो—तु सारो चोक, गली भटकावो, धुलो सगलो बाहीर नषावो।

कोटवालवाक्य

दूहा— सैहर सगलो भटकावीयो, चोहटा कीधा स्याफ बे।
अब क्या आग्या देत हो, पुरो मनांकी आस बे।। ६०

राजावाक्य

दूहा— कुवर भलै घर आवियौ, हूई बहूत जगीस बे।
रीध बहूली ल्याईयो, ल्यायो कुवर एह बे।। ६१

अथ वात— राजाजी सामेलोती आ'र कराव्यो। हाथी, घोडा, रथ, पायक, ढोल, नगारा, ताल, मृदग, पषावज, मजीरा, फररा पाच सबद बाजा लेनै राजाजी सामा चाल्या। रीसालुजी राजाजीनै देषी नीचा उतरचा, सात सलाम करेनै आय पगे लागा। राजाजि सुषपालथी नीचा उतरचा, बेटानै उरगथी गाढो भीरचौ, कुसल षेम बुझचौ। तवि रीसालु हाथ जोडेनै कह्यौ—श्रीजीरै पगे लागता गाढो चैन हूवो। पाछा असवार होयनै सैहर दिसा चाल्या।

साहूकारवाक्य

दूहा— धन रे नाम रीसालुवा, धन अस नगरीका भाग बे।
बहू रीध ले आवीयो, अब क्या पुछौ तोही बे।। ६२

वात— चोहटामै असवारी नीकलै छै। माणक चोकमै आवीआ। तिहा नगर सेठारा घर छै। सेठरी बेटी गोषै बैठी छै। अतरायकमै कुवरजीनै दिठा।

कुवरजीवाक्य

दूहा— देषो सहेली आयकै, एह राजाकौ रूप बे।
ईस धरणी औ राजवी, उपम धु न आब क्याह छै (बे) ।। ६३

वात— अबै चाल्या चाल्या दरबार आव्या। दोढचाथी नीचा उतरचा, लछमी नाराअणजीरै पगे लागा। राजलोक सगला गोषै बैठा देषै छै। तठै रीसालुजीरी वैन देषै छै। वैन भाईनै दीठा काई कहै।

राजारी कवरीवाक्य

दूहा— वधव भलै घर आवीयो, दुधै वुठा मेह वे।
मोतीडै ववावस्या, मिलस्या बाह पसाव वे।। ६४

वात— आप रावलारै मुढै जाय उभा रह्या । उमरावानै सीप दीधी—आप डेरा करो, कमर पोलो, उतारो करो । उमराव मुजरो करेनै आप-आपणै ठीकाणै गया । रसालुजी मैहला माहे गया, माताजीरै पगै लागा । आप वैनसु मीलया । वेहनै उवारणा लीवा । माउ कैहवा लागा—बेटा ! अतरा दीना माहे कोई कागद-समाचार अतरा वरसामै कोई मेल्या नही ।

माउवाक्य

दूहा– बेटा तु सुलपणो, ज्या सरवर तु देप वे ।
तुम विना हू हरी ववबा, जल विना ज्यु मछी वे ।। ६५

बेटावाक्य

दूहा– मातामै मीलवा तणो, घणो ज कीधो चत वे ।
अब तुम चरणे लागस्या, सफल फल्या वछत वे ।। ६६

वैनीवाक्य

दूहा– वीरा तु सुलपणो, गयो कुण प्रत देस वे ।
ल्याया सो कहो मुने, मे छा ताहरी वैन वे ।। ६७

कुवरजीवाक्य

दूहा– सुण बाई वीरो कहै, मै गआ समुद्र पार वे ।
घणा तमासा देषीया, देख्या त्रीआ चीरत वे ।। ६८

वैनवाक

दूहा– सुण वीरा वैनी कहै, कुलवती ते होय वे ।
त्रीया चीरत्र जाणै नही, जो आवै सूर ईंद्र वे ।। ६९

वारता—माउ, वैन कैवा लागी—वीरा ! थे कीणी कीणी देस गया, (कुण कुण देस गया) कुण कुण तमासा देख्या, कतुहल देख्या, देख्या होवै सो मा आगै सगला कहो ।

जदि रीसालु कैहवा लागा—बाई ! मे समुद्र परै राजा अगजीत छै, तीणरी बेटी परण्यो, सौ मेलनै उरा आव्या । पछै राजा भोजरी बेटी परण्या । पछै राजा मानरी बेटी परण्या, ते मेले आया । आ कन्या परणे ल्याया सो पतीव्रता छै । उणीरा तो लपण पातला, मा जुगती नहीं, तणीथी परी मेली । तद बाई कैहण लागी—वीरा ! उणीमै काई अवगुण दीठो । तदि आप कहै—हू परणेनै पाछो फीरचौ जदि ऐक सैहरमै उजड दीठो । तिणीमै मे मेलि थी, जणीमै मे रह्या । सवेरै हू सीकार जातो । तदि हठीमल पातसाह मृगरै वासै ऊ आव्यो । राणी म्हेलामै थी, देख्यो । तदी मै जाण्यौ । उणनै मे परो मारचौ । ईतरै ऐक सीन्यासी मारा मेहला नीचै गोरप जगायो । जदि मे उणीनै पाणो दीधो । हू गोषमै वैठो थो । जत्रै जोगीऐ माथामैथी मादलीयो काढ्यौ । तणीमैथी लुगाई काढी । तणीनै पाणो दीधो । दोई जणा रमे, पेले नै जोगी सुता, लुगाई वैठी थी । तणी सायलम्हैथी बतीस वरस-को जुवान काढचो तणीनै पांणो दीधो । तणीसु भोग-वीलास गाढो किधो । करे नै पाछो सायलमै मेल्यो । जदि जोगी जाण्यो (ग्यो) । अतरो तमासो रीसालु जी दीठो । वेषनै आय नीचो

उतरचौ । देषै तो आप जोगी सूतो छे । तदी रीसालुजी कह्यो—बाबाजी ! नमो नारायण । कह्यो—बाबाजी आधो आव ।

रीसालु वाक्य

दूहा– रे बाबा तु जोगीआ, दीसो बोहोत सूग्यान बे ।
तुम ही कीधा ष्याल दो (हो) सो दिषाडो मुझ बे ॥ ७०

जोगीवाक्य

दूहा– थे छो राजा बहुगुणा, क्या ल्यो मेरा अत बे ।
देसा देसा भमता फीरो, कीधा ऐता सरब बे ॥ ७१

बात— तदि कुवरजी कह्यो—थे तमासो कीधो सो मोनैं दीषावो । तदी जोगी जाण्यो—ओ राजा चकोर छै, कला माहरी दीठी छै । जदी जोगीऐ मादल्यो मायामाथी काढचौ, माहथी लोगाई काढी । तदी लोगाईनैं राजा कहै—तु जणीथी राजी होवै तीणनै काढ, में तोनै उपगार करस्या । तदी लुगाई साथल माहेथी जुवानने काढचो । जदी रीसालु कह्यो—अणथी राजी है । जदी उण कह्यो—आप कहो जिम । जदी जोगीनैं रीसालु कह्यौ—आ असत्री था जोगी नही । जदी कह्यो—माहाराज । जदी लुगाई नवानैं दीधी । जोगीनैं आपरी असत्री दीधी । हाथै पाणी कुढचौं । वले घणा त्रीआ-चरीत्र दीठा ।

हजार सातरो माल पगे मेल्यो । मातानैं गैहणो जडावरो दीधो । बैननैं सरपाव ईकतीस दीधा । सगलानैं सतोष्या, पोष्या, राजी कीधा । मैहलामैं जायनैं पोढचा । असत्री सघातै काम, भोग, सजोग घणा कीधा । सवेरैं नणद भोजाई मील्या । नणद भोजाईनैं नीद आवती देषनै कह्यौ—

नणदवाक्य

दूहा– नयण थारा भुभला, दीसैं छै बहू नीद बे ।
रजनी सहू वह गईं, तो ही न धाप्या तेह बे ॥ ७२

भोजाईवाक्य

दूहा– थारो वीरो बहुबली, तीम अरूजण बाण बे ।
रयणी वात बहू गई, ईण वीध राता नैण बे ॥ ७३

वारता– तदी नणद कैहवा लागी—पुरषरो ऐहवो जोवन होवै छै, थे आजी ज जांणो छो । पिण एक दीन दादोजी सकार गया था । सो मृग उछेरचो । ईतरै समदै घोडै चढचा था । सो घोडो पाछै दीधो तीतरै मृग अलोप हूवो । अतरायकमै पटा झरतो, मद छकतो, मेहनी परैं गाजतो, घटानी परैं कालो, ईस्यो हाथी भाई सामो आयो । तदी भाई मनमैं वीचारचौ—पाछो फरू तो अमरावामैं हासी होसी । तदि हसतीरैं दतुसलैं जायनैं हाथ घाल्यो । दतुसल काढेनै उरा लीधा । माथा माहे झाटकी । हाथी मुवो । उमराम वषाण कीधो—माहाराज ! भाईरो वल ईसो छै ।

अतरैं वसत रीत आइ । वनासपती, सगली फलवानै लागी । वड, पीपल, आवा, आवली, दाडाम, सहतुत, बोलसरी, आसापाल्व, केवडा, केतकी, पाडल, चपो, मोगरो, जाय सदा

भेटे चरण सूपी थवू, करूं वधावा कोड ।
[चरणाम] ? करू वधामणा, एक हुं वेकर जोड ।। ३४०

९५ वार्त्ता—इसी चोठी लीपनै प्रधानरै हाथे दीधी । प्रधान चोठी लैनै माहाराजने दीवी, मारी हकीकत कही । तठै राजाजी चीठी विड पोलनै वाची । साराहीनै अचभो नै पूस्याली हुई । हिवै राजा समस्तजी सहर सीणगारीयो । कुवररै वास्तै ववामणा कीया । घणा पूमी थका राजाजीसू पूत्र मील्या । घणा वधायनै माहै लीया । माता-पितासू मील्या । मारा ही महरमै हर्प, मगलाचार हुवा । मातारो वोलीयो कुवर कायम कीयो ।C

Dदूहा– राज पाट सहु विलसतौ, लिषमीकै भडार वै ।
राणी पाच भली परणीयौ, रभारे अवतार वे ।। ३४१

वसत, वदाम, वीजोरा असी भातरा अनेक भातरा रूप पालव्या छै । तणी समै राजाजी नर्पसु सीप मागें नै नवलपा वागमै सवला राजलोकमै पधारया । रिसालुजी तठै तवु पडा कीवा । रावल्या तवु पडा कीधा । वसत रीत आवी ।

कुवरजीवाक्य

दूहा– अव वसन्त ही आवही, फल्या आव अनार वे ।
तस्कै कारण कुवरजी, चाल्या सहैरकै वार वे ।। ७४
दूहा– ज्याह नवलपा या (वा) ग है, भात भातका रूप वे ।
तीहा है वगला नवनवा, चोवाराकी मोज वे ।। ७५
दूहा– तीहा छै वचा अती भला, नल छुटै भरपुर वे ।
केसरकी चोकी कीयां, रमै तीयाकै सग वे ।। ७६
दूहा– राणी सहू साथै लीया, पेलै आप वसत वे ।
मुठी हाथ गुलावकी, नापै माहोमाह वे ।। ७७
दूहा– रात दीवस तीहा (ही) रहे, नही जाणै ससी-सुर वे ।
सुरगलोक अ्रतलोगमें, जाणै सही ज मुज (सुर) वे ।। ७८

वात— वागमै रमे, पेले नै घणा दीन ताई रहेनै पाछा सैहरमै आया । कुवरजीरै दोय वेटा हूवा । घणा दीन ताई कुवर पदवी भोगवी । पछै पाटै वैठा । सगलै देसै आण-दाण चलाई । दुसमण सघला आय मील्या । कवर पधारया । अमरावानै वणा वधारया, उणानै मोटा कीधा । तीणानै सीरपाव दीधा, घोडा हाथीनी पट दीवा, उमराव कीवा । प्रतापीक राजा हूवो, साहसीक हूवो परनारी सहोदर, प्रदूपरो कातरो ।

दूहा– भागवान अरु साहसी, रावा हदा राव वे ।
मन वाछ[त] सहू फल्या, फल्या मन जगीस वे ।। ७९

वारता—सुपै राज पाले छै । देवतानी परै सुप भोगवै छै । ईद्रनी परै रीध दीसै छै । न्यायवत राजा वीक्रमादीतनी परै माहान्याअवत हूवो । अकल, रूपना घणी । असी तरै राजा न्याअवत राज पालै छै । सहू लोक धन धन करै छै । घणा पटदरसणरो प्रतीपाल हूवो ।

गुणवती नारि तणा, विलसै भोग-विलास बे ।
जाचक जय जय नित कहै, पूरै पूरजन ग्रास बे ।। ३४२
रीसालू हदी वातडी, कूडी कथी नही कोय बे ।
गावै चारण नरबदो, हस्ती ग्रापौ मोज बे ।। ३४३
वात रीसालू रायकी, हु ती ग्रागै जेह बे ।
माहै कवि भेल्या ग्रछै, दूहा वात सनेह बे ।। ३४४
छोटीनै मोटी करी, कविता मन कर हु स बे ।
ग्रानद मगल होयज्यौ, जय जय करज्यौ वेश बे ।। ३४५
कविया मन जय पामवा, हुयसी वाचणहार बे ।
चतुर भवर सू गणी नरा, चा(वा)चौ कर मनवार बे ।। ३४६

९६. **वार्त्ता**—इतरी वात रीसालूरी कही । सारि विध पून्यरी छै । वातरो वणाव षूब कीयौ छै । चतुर पूरषानै रीझरै वास्तै, मीठी लागनरे वास्तै कीवी छै । मूरष पूरषानै दातकथा ज्यू छै । ग्यानी पूरषानै सील, गुण, ग्यान छै ।

दूहा– **मनरजण ग्रतिसूषकरण, राग रग रस रीत ।**
वात रीसालू रायकी, वाचै ते पालै प्रीत ।। ३४७D

रीसालूरी वात सपूर्ण . सबत १८७८ रा वृषै मिति माहा वद ७ गुरवासरे लिषत षूवरा नागोर नगरमध्ये ।।श्री ।।[1]

ङ उठासु चाल्या श्रीपुर नगरे ग्राया । तरे राजा ग्रोठीनै साहमौ मेल्यौ ने कहवाडीयौ– ये कठाथी ग्राया, ने कठै जास्यौ ? तिवारे रीसालू सघली वात ग्रायारी कही । तरे मा-बाप राजी हुवा । उछरग करी सामा ग्राया । मोतीया थाल भरै वधाया । नर-नारी मील मगल गाया । हाट, वजार सब उछव छाया । सरब लोक मन भाया । राणी पच मिली परणीया । ढोल, दधामा, नोपत बजाया । घणा उछवसू पधारीया । राणी बहु सुष पाया ।

D–D चिन्हगत ग्रश के स्थान पर ख ङ प्रतियो में निम्न एक दूहा ही प्राप्त है—

ख दुहा– राजा रसालुरी वातडी, भली कथी कर बोज बे ।
गावे चारण नरवदो, हस्ती पावे मोझ बे ।। ७४

ङ दूहा– राजा रीसालू हदी वातडी, कूडी कथा न कोय बै ।
गावै चारण नरबदा, हसती पायो मोज बै ।। ६८

ग प्रति में उक्त ग्रश के स्थान पर कुछ भी लिखित नहीं है ।

१ ख इती श्रीरसालुकुमररी वात सपूर्ण लीο । पο ग्रनोपवीजय ग । सवत १८७५ रा ग्रासाढ सुद ३ दने ।

ग ईती श्रीरसालुकुवररी वारता सपूर्ण समापता सुभ भवतु । समत् १८१० वर्षे मती वैसाष वदि ५ दिने वार ग्रादित्यदीने लिο क्रीο रामचद ग्राम कागणीमध्ये ।। श्री ।।

ङ श्री इति श्रीरीसालू कुमररी वात दूहा ढाल वध सपूर्ण सο १८९२ रा मिती चेत सुद ७ ग्रर्कवासरे ।। मेडतानगरै ।। श्री

वात नागजी-नागवन्तीरी

अथ श्रीनागजी नै नागवन्तीरी वात लिख्यते

१ चवदै चाल कछरो धणी जाखडो अहीर तिणरी नगरी मे दुकाळ पडीयौ। तरै जाखडै अहीर कामदारानु[1] कहीयौ–साभळो छो, चवदै चाळ कछरो लोक[2] माळवै जाण पावै नही। आपणै कोठारसु सब लोकानै[3] चाहीजै सु[4] धान रुपीया वैगेरा[5] देवो। तरै[6] कामदारा कह्यौ–साहबजी, दुरस्त[7] छै। तारै सारा उमरावानै, लोकानै धान कोठारसु दीयो। सारै ही लोक मुखसु रह्यौ[8] ने बारा मासा काळ काढीयो, ऊपरै आऊगाळ[9] आयो। तरै रईत लोक ओर ही सब लोक हरखवान हुवा[10]। अवै तो जमानो हुसी[11]। पिण दूजै बरस वळै काळ पडीयो।

दुहा– **मन चिंतै बहुतेरीयां, किरता करै सु होय।**
उलटी करणी देवरी[12], मतो[13] पतीजो कोय॥ १

२. **वात**[14]—तरे[15] कामदारा अरज कीवी–महाराजा! एक तो काळ काढीयो नै वळै ओ दूसरो काळ पडीयो। अवै आपरो हुकम हुवै सु करा। तारे जाखडैजी कह्यौ–सुणो छो, जठा ताई आपणै कोठार माहे अन धन छै[16] तठा ताईं सब लोकानै देवो। किण ही नै वीपरण देवो मत। आपणो सुख-दुख रईत[17] भेळो काढणो छै। जे रईत सुख पावसी[18] तो वळै कोठार, भडार घणाई भरस्या। तिणसु जठा ताईं कोठारमैं छै तठा ताई किणहीनै ना कहो मती नै कोठार पूटीयां[19] पछै जिकु होवणहार छै तिकु हुसी।

दुहा– **लाख सयाणप कोड़ बुध, कर देषो सब[20] कोय।**
अणहु णी हु णी नहीं, होणी हुवै सु होय॥ २

---

१ ख कामदारानै। २. ख धणी लोक। ३ ख सर्वलोकनै। ४ ख दिरावो। ५ ख वगरै। ६. ख तरा। ७ ख दुरस। ८ ख सुखसु खुसीसु रह्यौ। ९ ख आऊकाळ। १० ख लोक वडो राजी हुवो उ घणो हर्ष हुउ। ११ ख. अवै तो परमेस्वर जमानो करसी। १२ ख देवकी। १३. ख मता। १४ ख वार्ता। १५ ख यतरै। १६ ख. आपणै कोठार भाडार छै। १७ ख सर्व। १८. ख पासी। १९ ख निठीयां। २० ख सहु।

३. बात[1]—तारै कामदारा नगरमैं, मुलकमैं, पटैमैं, सारै[2] कहाडोयो-बाबा, थारै जोईजै सु कोठारसु लेवो। अबै जिणरै धान न हुवै तिको कोठारसु धान लेवै। खरची न हुवे तिणनै रोकड देवै[3]। यू दैतो-दैता दूजो काळ वळे काढीयो, पिण करमरै[4] जोगसु वळे तीजो काळ पडीयौ नै कोठार भडार पिण खाली हुवा। तारा कामदारा राजासू[5] कह्यौ—महाराज! सिलामत, खजानो श्रीदरबाररो माहे थो सु तौ सब षायौ[6], रईतरै काम आयौ[7], हमै तो लोक निभै कोई नही। तिणसु अबै तो बिषौ कीजै तो भलो छै[8]। तरै जाखडै कही—च्यारे ही तरफ साढीया मेलो, सु जठै घास पाणी मोकळा देखो[9] तठै चालो। तरै ओढी[10] मेलीया सु तीन ओढी[11] तो पाछा आया नै एक ओढी[12] बागडरै मुलक धोळबाळो राज करै छै, तठै गयौ। सु उठै घास-पाणी मोकळा दीठा। तरै जायनै धोलबाळानु कह्यौ—जाखडै अहीर राम-राम कहयी[13] छै। कह्यौ छै—माहरै मुळकमैं तीन काळ पडीया सु[14] कहो तो थाहरै देस आवा नै मेह हुवा परा जावसा[15]। तरै धोलबाळै कह्यौ[16]—भलाई पधारो, ओ मुळक थाहरो हीज छै। तरै ओढी पाछो चाल्यौ[17]। सु जाय नै जाखडानू कहीयो--हूँ जायगा देस आयो छु। सारा समाचार कह्या। तरै जाखडो चवदै चाल कछनु लेनै बागडरै मुलक आयो। तरै धोळबाळो सामो जायनै ल्यायो नै कामदारानु कह्यौ[18]—गामरै माहे लोक-रैतनु[19] वसाय देवो नै राजलोक छै, सु तलहटीरै महला राखो, कामदारानै साथै[20] ले जावो। तरै सारानु ठिकाणै-ठिकाणै[21] उतारा दीया। हमै धोळबाळैरै बेटो नागजी नामे छै अनै जाखडैरै बेटी नागवती[22] नामे छै। सु रहता घणा दिन हुवा।

एक दिन बागडरै मुळक भटी दोडीया। तरै लोका आयनै कह्यौ[23]—दोय-दोय राजा बैठा छै नै भाटी मुळक विगाडै छै। तरै धोलबाळै दरबार करनै बीडो फेरीयो। सो बीडो किण ही झालीयो[24] नही। तरै[25] नागजी राजलोक

---

१ ख वार्ता। २ ख गावरा लोकानै। ३ ख दरावै। ४ ख करमै। ५ ख राजानै। ६ ख सर्व परो दीयो। ७ ख प्रति में नहीं है। ८. ख तिणसु कठैई जाई तो भला छे। ९ ख घणो हुवै। १० ख उठी। ११ ख उठी। १२ ख उठी। १३ ख कहीयो। १४ ख तीणसु। १५ ख जास्या। १६ ख कहीयो। १७ ख. हालीयो। १८. ख कहीयो कामदारानै थे साहमा जायनै ल्यावो। तरै सामा जायनै घणै हरगमसु लाया तरै कामदारानु कह्यो। १९ ख लोकडानु। २० ख थे। २१ ख ठिकाणा माफक सगळाइ नै। २२ ख नागवती। २३ ख आण कहीयो। २४ ख फाळियो। २५ ख तिसै।

माहिसु आयनै सिलाम करी बीडो उठाय लीयो। तरै रजपूत सव बोलीया–कुवरजी साहिव ! बीडो खावणरो न छै, मरणरो छै[1], तरै नागजी कह्यौ–हू भाटीया ऊपर[2] जासु। तरै राजाजी कहियौ–तू टावर छै, कदे ही राड देखी न छै। पिण नागजी कह्यौ मानै नही[3]। तरै लोका कह्यौ–महाराजा ! रजपूतारा वेटारो काहू[4] छोटो, सिंघरो बचो नानो हीज थको हाथीयारी गजघटा[5] भाजै छै।

दूहा– छोटी केहर बोहत्त गुण, मिलै गयदां मांण।
लोहड़ बडाइ ना करै, नरां नखत्त प्रमांण॥ ३[6]

४. तिणसु आप कोई फिकर करो मति नै कुवरजीनै मेलो। ताहरे राजा कह्यौ–भला, जावो। तरै नागजी आपरा दाईंदार हजार पाच असवार लेनै चढीयो, नै भला घोडा लीया, नै पोसाख तथा डेरा तथा घोडारी सभ्भाई इकरग केसरीया करनै चढीया, सु जायनै भटीयासु कजीयो कीयो। भटी भाज गया। जिकै थम्या[7] तिणानै मार लीया। फतैनावा करनै पाछो वलीयो। सु सैहरसु कोस एक ऊपर मानसरोवर तळाव छै, तेथ[8] आय डेरा किया। आसोजरो महीनो थो। सु तळावरै कनै जाखडारी घर-घराउ खेती थी। सु रखवाळो[9] न थो। खेतरो रखवालो कोई हूतो नही। नै नागजीरै एक वडी भोजाई परमलदे इसै नामे छै। सु नागजीनु जीमायनै जीमै। सु महीना दोय एक तो हवा देख तळाव उपरै हीज रह्या[10]। सु भोजाई जायनै जीमाय आवै[11]। पछै एक दिन कह्यो–नागजी माहाराजकुवार ! थे गढ दाखल हुय जो, मोनै फोडा पडै छै। तरै नागजी कह्यौ–भाभीजी ! ओ तळाव ऊपर खेत किणरो छै? अठै खेतरो रुखवाळो कोई नही, तिणसु म्हे खेतरी रुखवाळी करा छा, इसो कह्यौ। तरै परमलदे पाछी आई। आपरै[12] धोलवाळानु कह्यौ–तळाव ऊपर खेती किणरी छै[13], सु रखवालो कोई नही[14]? जो कोई रखवालो म्हेलो तो नागजी गढ पधारै। तरै धोलवाळै चाकरानु पूछीयो। तरै चाकरा कह्यौ–खेती तो जाखडाजीरै हुयी छै। तरै धोलवाळै जाखडानु कह्यौ–तळाव ऊपर खेती राजरै बुई छै तो रखवाळो मेलो, ज्यु नागजी घरै आवै, टावर छै, सु वाद चढौ छै। तरै जाखडो तलहटी गयो। जायनै लुगायानु

---

१ ख उ बीडो मरणरो छै। २ ख उपरा। ३ ख न छै। ४. ख काइ। ५ ख गजघटा। ६ ख प्रतिमे यह दूहा नहीं है। ७ ख सभ्या। ८. ख तठै। ९ ख खेतरै रखवाळो। १० ख प्रतिमें नहीं है। ११ ख आई। १२ ख तरै। १३ ख. हुई छै। १४ ख प्रतिमें नहीं है।

कह्यौ। तद[1] कह्यौ–चाकर तो बीजा[2] खेत रुखवाळ छै, अठै किणनै मेला ? तरै लुगाया कह्यौ–जे परमलदेजी नागजीनै जीमावण नित जावै छै[3] अोर ऊ खेत ही उठै हीज छै[4] तो च्यार दिन नागवतीनै परमलदेजी सागै[5] मेलसा। सु दिन दिन तो खेत मे रहसी नै रात पडीया घरै उरी आवसी। नागजी जाणसी–खेतरो रुखवाळो आयो तरै नागजी उरा पधारसी। तरै धोळबाळ कह्यौ–ठीक छै। तरै परमलदेजीनै कहायो–सुवारे नागजीनू जीमावण जावो तरै तळहटीरै महलासु नागवतीनै साथे लीया जाज्यो। तरै परमलदेजी कह्यौ–भली बात छै। तरै परभाते परमलदेजी जाती थकी नागवतीनै पिण पालखीमैं बैसाण[6] लीनी। सु मारगमैं जाता परमलदेजी नागवतीनै कहै छै–नागवतीजी ! माहरै नागजीरै हालतारै कुकुरा पग मडै[7] छै। तरै नागवन्ती बोली–परमलदेजी ! इसो भूठ क्यु बोलो छौ, मिनखारै[8] कदे कुकुरा पग मडै छै[9] ? तरै परमलदेजी होड मारी, कह्यौ–जे नागजीरै कुकुरा पग पडै तो थाने नागजीनू[10] परणाय देवा, जे नागजीरै पग न पडै तो थे थारी दाय आवै, तिणनु मोनै परणाय दीज्यो। इसो कवल[11] करनै खेत गई। तरै परमलदेजी तो नागजी कनै गई। अर नागवन्ती जठै खेतमे मालो छै, तठै गई। अबै परमलदेजी नागजीनै पूछै छै–

सोरठा– **सपाडै[12] बैठाह, साहला नै[13], सरबतड़ी[14] ।**
जे दहेल मुकाक, कागद मडा[15] नागजी ॥ ४

नागजीवाक्य

भावज सपाडै बैठाह[16], साह हला नै[17] सरवतड़ी ।
चढ चोकी ऊभाह, जद[18] साखी च्यार[19] सिंदूरका ॥ ५

५ **वार्ता**—तरै परमलदेजी बोली–नागजी ! जाखडा अहीररी बेटी नागवती, तिणसु मैं होड मारी छै। नागजी रै कुकुमरा पग पडै[20] छै। तरै नागवती म्हारी कही वात मानी नही। तरै म्हे कह्यौ–जे नागजीरै कुकुरा पग पडै तो म्हे थानै नागजीनै परणाय देस्या[21] अर जे न पडै तो थे मोनै परणाय देज्यौ[22], इसी होड मारी छै। तरै नागजी कह्यौ–भाभीजी ! जाखडो नै

---

१ ख तरै लुगाया। २ ख सगळा। ३. ख परमलदेजी खेत जावै छै। ४ ख. प्रतिमें नहीं है। ५ साथै। ६ ख. बेठाण। ७ ख उपडै। ८ ख. मनुष्यारै। ९ ख उपडचा या। १० ख नागजीसू। ११ ख कोल। १२ ख सापडै। १३ ख साळानै। १४ ख सरवनडी। १५ ख मझा। १६ ख सापडै वैठा साह। १६ ख सालानै सरवनडी। १७ ख जद ऊभै। १८ ख सापारचा। १९ ख उपडै। २१ ख देवा। २२ ख परा दीज्यो।

धोळवाळो माहोमाहि पाघडीवदल भाई छै। सु नागवती म्हारै कासु लागै। तारै परमलदेजी काई वात मानै नही नै दूजै दिन नागवतीनै सार्थ लेनै नागजी कनै ग्राई नै चौपडरो खेल माडीयौ। सु नागजी नै नागवती एकै भीर हुवा ग्रर परमलदेजी नै वडारण एकै भीर हुवा। सु रमता नागवनीरो पलो उघड गयो, सु पसवाडो, पेट, छाती उघाडा हो गया[1]। तरै नागजी देखत समा[2] मुरछागत होय पडीया[3]। सु कितीक वारनै[4] वले सावचेत हुवा। तरै भोजाईनै कह्यौ–माहनू नागवनी परणावो। तरै भोजाई वोली-कुवरजी! यु तो विवाह हुवै कोई नही, नै छानै वीवाह हुसी। सो रजपूतारा वेटानै सीख देवो। तरै नागजी दरवार माड नै[5] सारा रजपूतायनै सिरपाव वगसीम करनै[6] सीख दीवी नै कह्यौ–होळी ऊपर वेगा ग्रावजो। सु सारा सिरदार[7] विदा हुवा। पछै भूजाईनै कह्यौ–तयारी करो[8]। तरै परमलदेजी नागवतीनु पूछीयो--काई खवर छै ? वोल पाऊ। तरै नागवती कह्यो--दुरस छै। खेतमे जवार मोटी थी मु डोका ल्यायनै पाणीरी मटकीया थी, सु मगायनै वेह रची[9] वीवाहरी तैयारी कीवी। तरै नागवन्ती कह्यौ–परमलदेजी! छानै वीवाह करज्यो। ग्रागै म्हारी सगाई हाकडा पढीयारसु कीवी छै। तरै नागवन्तीनु परमलदेजी कह्यौ–भली वात। हमै व्राह्मण[10] वीना तो वीवाह हुवै नही। तिणसु एक व्राह्मण वाहरला गावारो सहरमैं कण-विरत करणनै ग्रायो[11] थो, वसती माहे जातो थो। तिणनु परमलदेजी वोलायनै कह्यौ[12]– तू वीवाह कराय जाणै छै ? तरै विरामण कह्यौ–हू सब जाणू छू। ताहरै परमलदेजी दूहो कहै छै--

दूहा– हू जाणू तू जाण, निर[13] तीजो जांणै नही।
नागजी तणो पुरांण, तोनु लिखु देवजी[14]॥ ६

६ **बात**—इसो व्राह्मणनै कह्यौ[15]। नागजी नागवतीनू परणीया। पछै दूजै दिन ग्रावता नागवती नै परमलदेजी दोनु[16] तवोळीरै पान लैवण गया, तवोलीनै हेलो दीयो। तरै तवोली वाहर ग्रायौ[17]। इणारै मुख सामो देख मसत हुवो[18], देखतो हीज रह्यो[19]। तद दूहो कहै छै--

---

१. ख. होय गया। २. ख उघाडा देखनै। ३ ख गया। ४ ख खिणेकनै। ५ ख करनै। ६ ख प्रतिमें नहीं है। ७ ख प्रतिमें नहीं है। ८. ख मांहरै विवाहरी त्यारी करो। ६ ख प्रतिमें नहीं है। १० ख विरामण। ११ ख. जातो। १२ ख कहीयो। १३ ख नर। १४. ख तोनै लेखु देवता। १५. ख प्रतिमें नहीं है। १६ ख वोन्यु। १७ ख ग्रायनै। १८. ख. इणारै मुहडा साहमो जोवण लागो। १९ ख प्रतिमें नहीं है।

कह्यौ। तद[1] कह्यौ–चाकर तो बीजा[2] खेत रुखवाळै छै, अठै किणनै मेला ? तरै लुगाया कह्यौ–जे परमलदेजी नागजीनै जीमावण नित जावै छै[3] ओर ऊ खेत ही उठै हीज छै[4] तो च्यार दिन नागवतीनै परमलदेजी सागै[5] मेलसा। सु दिन दिन तो खेत मे रहसी नै रात पडीया घरै उरी आवसी। नागजी जाणसी–खेतरो रुखवाळो आयो तरै नागजी उरा पधारसी। तरै धोळबाळै कह्यौ–ठीक छै। तरै परमलदेजीनै कहायो–सुवारे नागजीनू जीमावण जावो तरै तळहटीरै महलासु नागवतीनै साथे लीया जाज्यो। तरै परमलदेजी कह्यौ–भली बात छै। तरै परभाते परमलदेजी जाती थकी नागवतीनै पिण पालखीमैं बैसाण[6] लीनी। सु मारगमै जाता परमलदेजी नागवतीनै कहै छै–नागवतीजी ! माहरै नागजीरै हालतारै कुकुरा पग मडै[7] छै। तरै नागवन्ती बोली–परमलदेजी ! इसो झूठ क्यु बोलो छौ, मिनखारै[8] कदे कुकुरा पग मडै छै[9] ? तरै परमलदेजी होड मारी, कह्यौ–जे नागजीरै कुकुरा पग पडै तो थाने नागजीनू[10] परणाय देवा, जे नागजीरै पग न पडै तो थे थारी दाय आवै, तिणनु मोनै परणाय दीज्यो। इसो कवल[11] करनै खेत गई। तरै परमलदेजी तो नागजी कनै गई। अर नागवन्ती जठै खेतमे मालो छै, तठै गई। अबै परमलदेजी नागजीनै पूछै छै–

> सोरठा– **सपाडै[12] बैठाह, साहला नै[13], सरबतड़ी[14]।**
> **जे दहेल मुकाक, कागद मडा[15] नागजी ॥ ४**

नागजीवाक्य

> **भावज सपाडै बैठाह[16], साह हला नै[17] सरवतडी।**
> **चढ चोकी ऊभाह, जद[18] साखी च्यार[19] सिदूरका ॥ ५**

५ **वार्ता**—तरै परमलदेजी बोली–नागजी ! जाखडा अहीररी बेटी नागवती, तिणसु मैं होड मारी छै। नागजी रै कुकुमरा पग पडै[20] छै। तरै नागवती म्हारी कही वात मानी नही। तरै म्हे कह्यौ–जे नागजीरै कुकुरा पग पडै तो म्हे थानै नागजीनै परणाय देस्या[21] अर जे न पडै तो थे मोनै परणाय देज्यौ[22], इसी होड मारी छै। तरै नागजी कह्यौ–भाभीजी ! जाखडौ नै

---

१ ख तरै लुगाया। २ ख सगळा। ३. ख परमलदेजी खेत जावै छै। ४ ख. प्रतिमें नहीं है। ५ साथै। ६ ख. बेठाण। ७ ख उपडै। ८ ख. मनुष्यारै। ९ ख उपडया था। १० ख नागजीसू। ११ ख कोल। १२ ख सांपड़ै। १३ ख साळानै। १४ ख सरवनडी। १५ ख मझा। १६ ख सापडै बैठा साह। १६ ख सालानै सरबनडी। १७ ख जद ऊभै। १८ ख सापारचा। १९ ख उपडै। २१ ख देवा। २२. ख परा दीज्यो।

दूहा सोरठा– तम्बोली आपो पान, दोय बीड़ा बाँधे करी।
गई तमोणी स्यान, काईंरे मुख साहमो भणै ॥ ७

तम्बोळो कहै—

सोरठा– आंख्या आकस बाण, लाख करे नै ताणीया।
न डरे तेण दीवाण, सो माढु नैणा ही भाणीया ॥ ८

७ वारता—तबोळीरैसु[1] पान ले तलाव गया। सु हमें रात दिन नागवती नै नागजी खेतमैं ऊचो मालो छै जठे बैठा रहै छे, रगरळीरी वाता करबो करै छै। यु करता माहरो महीनो आयो। सु खेतरो धान तो धणी ले गया। तरै परमलदेजी कह्यौ– नागजी महाराजकवार! हमें गढ दाखल हुयजो नही तो लोक भरम धरसी नै आ वात छानी न रहसी। आ वात छानैरी छै, गुपत राखणनु ज्यु छै[2]। तरै नागजी कह्यो--सु हारे गढ जावसी[3]। हमें नागजी गढ चढै छे नै नागवती कमर बधावै छै नै दुहो कहे छै—

दूहा– कमर बधावत कु वरकुं, विरह उलट गयो मोहि।
सजन बीछडण कब मिलण, काहा जाणों कब होय ॥ ९
हे विधना तोसु कहू, एक अरज सुण लेत[4]।
वीछड़ण अकं'ज मेट कर, मिलबैको लिख देत[5] ॥ १०

नागजीवाक्य—

दूहा– गोरो हीयो हेठ कर,[6] कर मन धीर करार।
साई हाथ सदेसडो, तो मिलसा सो सो वार ॥ ११

८ वारता--नागजी कमर बाध हालीयो। तरे नागवती गळैमैं बाह घाल नै नागजीनु छातीसु भीडनै गल-गली होवण लागी। तरै परमलदेजी कह्यो[7]—

दूहा– गोरी बाह छातीया, नागकुंवर न भुराय[8]।
जाणै चदन रूखड़ै, बेल कलुवी[9] खाय ॥ १२
गोरी दागल हाथड़ा, नाग कु वर कर सेल।
जाणै चदन रूंखड़ै, अधर विलवी वेल ॥ १३

९ वारता—परमलदेजी कहे छै–नागवती अबै तु हसनै सीख दे ज्यु नागजी गढ पधारै। तारै नागवती कहे छै—

---

१ ख. हिवै। २ ख प्रतिमें नहीं है। ३ ख जावसां। ४. ख. लेह। ५ ख. वेह ६ ख हथ फरि। ७ ख कहे छै। ८ ख नठाय। ९ ख कलुवा।

दूहा– जावो जीमां(भा)[1] ना कहू, वधो सवाई वट ।
ऊगडसी[2] था आवीयाँ[3], हता रथा को हट[4] ।। १४
सिधावो नै सिध करो, पूरो मनरी[5] आस ।
तुम जीवकी[6] जांणुं नही, मो जीव छै तुम पास ।। १५

१०. वारता—परमलदेजी कहै[7] (इसो कहे)–वेदल थकी सीख दीवी । नागजी आवा हेठै घोडो बाधो थो[8], सु घोडै असवार हुवो । तारै नागवती दूहो कहै छै—

दूहा– सजन दुरजन हुय चले, सयणा सोख करेह ।
धण विलपती[9] यु कहै, आवा साख भरेह ।। १६

११. वारता—नागजी नागवतीनै कहै छै–तू वारोवार[10] वेदल हुय मती । जे परमेसरजी कीयो तो वेगाही मिलसा । यु नागवतीनै धीरज[11] देनै नागजी तो गढ दाखल हुवा नै नागवती तलहटी दाखल हुई । हमै नागजीरी चेमटा धोलवाळ दीठी । तरै मनमै जाणी[12] अवै कूवर निरालो नही । तरै नागजीनु एक खिण[13] वारणै नीकळण न देवे[14] राजा आपरै कनै राखै, नै[15] नागवतीरै विरह कर दिन-दिन गळतो जावै छै, नै नागवती नागजीरै विरह कर गळती जाय छै । सु नागवती आपरा महला[16] चढै नै झरोखामै आयनै झाखै नै दूहो कहै—

सोरठा– नागजी नगर गयांह, मन-मेल मिलीया[17] नही ।
मिलीया अवर घणांह, ज्यासु[18] मन मिलीया[19] नहीं ।। १७

१२. वारता—इण तरै सदा[20] झरोखै आवै तरै ओ दूहो कहै । हिवै नागजी दिन-दिन डीलमै गळतो जावै । सु सारा मुलकारा वैद बुलाया, पिण नागजी चाक न हुवै । तरै राजा सहरमै पाडो[21] फेरचो–नागजीनै ताजो करै, तिणनै लाखपसाव देवा । सु वैदानै तो वेदन लाधी नही ।

दूहा– राजा वेद[22] बुलायकै, कुवर देखाई बांह ।
वैदां वेदन काल ही, करक कलेजां माहि ।। १८

---

१ ख जीभ्या । २ ख ऊघरसी । ३. ख आयाह । ४ हे तीरथारा हट । ५ ख मनारी । ६ ख जीयकी । ७ ख प्रतिमें नहीं है । ८ ख बँधायो । ९ ख विणपंती । १० ख वारवार । ११. ख धीरप । १२ ख घोलवालै मनमें जाणीयो । १३ ख खिण मात्र पिण । १४ ख देवै नहीं । १५ नागजी तो । १६ ख महिला उपर । १७. ख. मिलीयो । १८ ख. त्यांसु । १९. ख मिलियो । २०. ख सदाई । २१ ख पाड्हो । २२ ख वैद्य ।

करक कलेजा माहि, उकसै पिण निकसै नही ।
गल गया हाड'र मा न, नेह नवलै नागजी ।। १९[1]

१३ वारता—इण तरह सदा झरोखै आवै तरै ओ दूहौ कहै। तिसे एक मुसाफर वैद आय नीकल्यो । सुं नागवतीरै मोहल नीचै[2] झरोखैरी छाया ऊभौ छै । तिकै[3] नागवती झरोखे आय दूहो कह्यो सु इण वेद साभळीयो । तरै वैद विचारीयो जे दीसै छै–इणरै नै कुवररै प्रीत छै पिण मिलाप[4] न छै[5] । [तरै वैद विचारयो जे दीसै छै—इणरै नेहसु नागजी][6] गळतो जावै छै तो अबै जायनै हू इलाज करू । इसो विचारनै नागवतीरै महल नीचै डेरो कीयो नै ते [ने] जा रोपीयो । दोढी जाय[7] मालम कराई[8]–नागजीनु हू चाक करसु[9] । तरै राजा वैदनै माहै बुलायो, नागजीनु देखायौ[10] । वैद नागजीनु देख दूहो कह्यौ[11]—

दूहा– **सिसक-सिसक मर-मर जीवै, ऊठत कराह-कराह ।**
नयण-बाण घायल कीया, ओषद[12] मूल न थाय[13] ।। २०

वले कहै छै[14]—

प्रीत लगी प्यारी हुती, बाला थई विछेह ।
नोज किणहीनै लागज्यो, कामण हदो नेह ।। २१
चख सिर खत अदभुत जतन, बधक वैद निज हत्थ ।
उर उरोज भुज अधर रस, सेक पिंड पद पत्थ[15] ।। २२

१४ वारता –'इसो वैद विचारयौ'[16] । तरै नागजी वैदनै[17] कह्यौ–आ वात उतावली कहो मती। नै सवा किरोडरी मुदडी हाथमैं थी सू वैदनै दीवी। तरै वैद राजानु कह्यौ–कुवरजीरो माचो अलायदो एकात घालौ[18]। तरै माचो अलायदो घाल नै वैद पाछो आयनै वले तेजारो काढै छै। इतरै नागवती झरोखै आयनै दुहो कहै छै—

सोरठा– **नागजी ! तुमीणा नेह, रात-दिवस सालै हीये ।**
किणनै कहीयै तेह, नित-नित सालै नागजी ।। २३
नागजी समो न कोय, नगर सारो ही निरखीयो ।
नयण गुमाया रोय, नेह तुमीणै नागजी ! ।। २४

---

१ यह सोरठा 'ख' प्रतिमें नहीं है। २ ख प्रतिमें नहीं है। ३. ख जितरै। ४ ख. मिलापण। ५ ख न हुवो छै। ६ [—] ख प्रतिमें नहीं है। ७ ख जायनै। ८. ख करायो। ९. ख करस्यू। १० ख दिखायो। ११ ख कहै छै। १२ ख नैणा। १३ ख ओषध। १४. ख थाह। १५ ख प्रतिमे नहीं है। १६ ख प्रतिमें यह दूहा नहीं है। १७ '—' ख प्रतिमें नही है। १८ ख वैदनूं।

सोरठा– **नागजी तणै सरीर, क्या जाणु वेदन किसी ।**
इसो न कोई वीर, जिणनै पूछु नागजी ॥ २५

तरै वैद दूहा कह्या, सुणनै कहै छै—

दूहा– **कुच कर ओखद भुजपटी, अहैरपती दे ताव ।**
उन नयनके घावकू, ओखद[1] एह लगाव ॥ २६

१५. **वारता**– वैद वोलीयो—हे नागवती ! आज ढोलीयो हू एकायत अलायदो[2] घलाय आयो छु, सु थे नागजी कनै जाज्यो, [थाहरो मनोरथ सरसी][3] ।

तद नागवतीरै गलै माहे सवा कोडरो हार थौ, सु काढनै ऊपरासु नाखीयो । सु वैदरा खोला माहे आय पडीयो । सु वैद तो चढनै वहीर हूवो । हमै होळीयारा दिन था । सु गढमैं गेहर वाजै छै, 'गेहरीया रमै छै[4]' । सु उठासु नागजी हाथमैं सेल लेनै ओ ताक आय ऊभा छै । तिसै नागवन्ती आपरी मानै कह्यौ—थे कहो तो गढमैं गेहर वाजै छै, सु जायनै देख आऊ । तरै माता कह्यो—जावो । तरै नागवन्ती सातवीसी सहेल्यासु गढमे आई । आगै धोलवाळो नै जाखडो दरवार माडीया[5] वैठा छै । वडा वडा उमराव मुसदी[6] वैठा छै, मोटीयार डाडीया[7] रमै छै[8] , गेहर अवल वाजै छै । सु नागवन्ती तो नागजी रै वासतै आई, सु सारी गेहरमैं फिरी । पिण नागजीनै दीठा नही । तरै दुहो कहै छै—

दुहा– **ढोल दड़ूकै[9] तन दहै, गेहरीया नाचत ।**
चालो सखी सहेलड़ा[10], कठै न दीसै कत ॥ २७

१६. **वार्ता**– तरै एक वडारण जाणीयो—आ[11] नागजीरै वास्ते आई छै । ईसो जाणनै वडारण फिरती फिरती नागजीनै देख आई नै नागवतीनै दूहो कहै छै—

दूहा– **सेल भळूका[12] कर रह्यो, माठू(ढू)डा घूमत ।**
आवो सखी सहेलड़ा, आज मिलाऊ कत ॥ २८

१७ **वारता**– तरै वडारणरै माथैमै नागवन्ती देनै[13] छानैसै पचास रुपीया दीया, तिवारे वडारण कह्यौ—एक वले ही देवो पिण हालो । तरै नागवन्ती

---

१. ख ओषध । २ ख इलायधो । ३ [–] ख प्रतिमें नहीं है । ४ '–' ख प्रतिमें नहीं है । ५ ख कीया । ६ ख मुतसदी । ७ ख गेर । ८. ख रम रह्या छै । ९ ख धड़ूकै । १० ख सहेलडी । ११ ख प्रति में नहीं । १२ ख. भलूक्का । १३ ख. दीनी ।

चाली सु नागजी कनै गई, जायनै मुजरो करनै दूहो कहै छै—

सोरठा— **साजनीयासूं प्यार, कठै वसो दीसौ नही ।**
मिलता सो सो वार, नैणा ही सासो पड़्यौ[1] ॥ २९

वले कहे छै—

सांमा मिलीया सैण, सेरीमैं सामा भला ।
उवे तुमीणा वैण, नहचै निरवाया नहीं ॥ ३०

नागजीवाक्यम्—

अमीणो तुम पास, तुमहीणो[2] जाणुं नही ।
विवरो होसी वास, वास[3] न विवरो साजना ॥ ३१

१८ **वारता**— नागजी नै नागवती दोनु भेळा मिल महले आयनै सेभ ऊपर भेळा सोह्य[4] रह्या, नीद आय गई। ईतरा माहे जाखडे धोलवाळैनु कह्यौ—हालो तो नागजीरी खबर ल्यावा, काई ठीक छै ? तद दोनु सिरदार[5] नागजीरै महल आया सो धोलबाळै दोनु[6] जणानै सूता दीठा। तरै तरवार काढ वाहण लागो। तरै जाखडे पकडलीयो नै दुहो कह्यौ—

सोरठा— **धवला बाल न वाढ, नागरवेल न चढीयै[7] ।**
'चपै वली चाढ[8]', फूल विलब्यो भवरलो ॥ ३२

१९ **वारता**— अबै धोळबाळौ नै जाखडो पाछा आया। जितरै नागवती जागी। नागजीसु सीख कर तलहटी आई नै नागजी सूता छै। अबै परभाते[9] नागजी जागीयो। सु नागवतीरै विजोगसु वेचाक थो। सु नागवतीरो तो मिलाप हुवो तद चाक हुवो। अबै नागजी उठ दरबार आयो। आगै धोलबाळो नै जाखडो बैठा छै, तठै आय मुजरो कीयो। सु इणरो तो नीचो हुवण हुवो नै धोलवाळै कनै सेल[10] थो, सु नागजी ऊपर वाह्यौ। सु नागजीरै ऊपर कर नीकळ गयो 'सु सेल धरती पड्यौ[11]।' तरै नागजी विचार्यौ—करू काई, बाप छै, नहीतर तो मार नाखु। तरै कामदारानु धोलबाळै कह्यौ—नागजीनु देसोटो देवो। अनै जाखडानु कह्यौ—म्हे नागजीनु देसोटो देवा छा। थे आछो दिन लगन साहो देखनै नागवतीनु परणाय देवो। तरै जाखडै कह्यौ—हाकडै पढीयारसु सगाई कीवी छै। तारै ब्राह्मणनु[12] बोलायनै साढीयो मेल्यौ नै

१ ख सासा पडचा। २ ख तुमीणो। ३ ख सास। ४ ख सोय। ५. ख प्रति में नहीं। ६ ख दोऊ। ७ ख वढीयै। ८ '–' ख वेली न चाढ। ९ ख. प्रभातै। १० ख सेलडो। ११ '–' ख प्रति में नहीं है। १२. 'बिरामण कनै साहो सुझायो सु दिन तीन रो साहो ठहरायो' इतना पाठ 'ख' में अधिक है।

लिखीयो—जे दिन तीन माहे आया तो वीहा[1] थाहरो छै। अनै अठै नागजी नै देसोटो देवै छै। नै नागवतीरो वीहा मडीयो छै। अबै नागजी जातो थको भोजाईरे महला नीचै कर नीकळै छै। नीकळतो दूहो कहै छै—

सोरठा- भावज भणु जुहार, सयणांनु सदेमडा।
वे तुमीणा वोहार, जीव्या जितैही माणीया॥ ३३

तरै भोजाई दूहो कहै छै—

सोरठा- कुकु वरणी देह, टीको[2] काजलोयां थई।
एह तुमीणा[3] नेह, 'सू नित मेलो[4]' नागजी॥ ३६

२०. वारता- भोजाई कह्यौ—देवरजी! दिन तीन तो[5] वागमें रहज्यो, नागवतीनै हू थास्यु मिलावस्यु। तरै नागजी कह्यो—दिन तीन तो थाहरै कहे वाट जोऊ छु, पछै परो हालस्यु। इसो कहनै नागजी वागनु चालीयो[6]। तिसै नागवतीनै खवर हुई-अम[7] नागजीनु रातरी देसोटो हुवो, सु परभातै चढ गयौ। तरै नागवती दूहो कहै छै[8]।

सोरठा- नागा खायजो नाग, काळा करडै[9] माहलो।
मूंवो न मिलज्यो आग, जावतड़ै जगाई नहीं॥ ३५

२१ वारता- अबै नागवतीरै वीहारी[10] तयारी छै। तिणसु नागवन्ती चिन्ता करै छै। 'मनमे कहे छ[11]' हू तो एक वार परण चुकी, वले[12] परणावै छै। इतरै ताई जाय हाकडानै खवर दीवी। परभातरो वखत थो। जागनै महलसु उतरतो थो। तिसै राईकै जाय खवर दीवी। कागळ[13] वाचनै तुरत घोडै चढ चालीयो नै उमरावानै चाकरानै कह्यौ-माहरी जान वणायनै वागडरै देस[14] आय मोसु मिलज्यो[15]। यु कहनै चढीयो सु आयो सु आगै वीहारी तयारी करै छै। तरै नागवती आपरी मानै कह्यौ-मैं परमलदेजीनै कह्यौ थो जे माहरो वीहा हूसी तारै थानै नैतीहार[16] वोलायसा[17], तिणसु परमलदेजीनै वुलावो। तरै माता वडारणनै कह्यौ[18]-तू[19] जायने कहे-थानु वोलावै [छै तरै वडारण जाय परमलदेजी नु कह्यौ][20] तरै परमलदेजी कह्यौ—सपाड कर[21] आवस्या। एम[22] कहनै मनमें विचारीयो-जे नागजीनु लीया जाऊ

---

१ ख वीवाह। २. ख कीकी (?) ३ ख तमींणो। ४. '–' ख नित नित नवेलो। ५ ख ताई। ६ ख चालीया। ७ ख जे। ८ ख नागवतीवाक्यम्। ९ ख किरडचा। १० ख विवाहरी। ११ ख '–' प्रति में नहीं है। १२ ख नै वलै दुसरी वेला। १३ ख कागद। १४ ख मुलक। १५ ख सामल होज्यो। १६. ख न्यूतार। १७ ख वुलावस्या। १८ ख मेली। १९ ख सु। २० ख [–] प्रति में नहीं है। २१ ख करनै। २२ ख इम।

तो भली वात[1] छै। तिसै नागजीरो खवास उभो थो, तिणनु परमलदेजी कह्यौ-तू वागमैं जायनै नागजीनु बोलाय ल्याव[2]। तरै खवास जाय[3] बोलाय[4] ल्यायो। तरै नागजीनै अ्रसत्रीरो रूप[5] करायनै साथे लीयो।

तिसे धोळवाळै जाखडानु कह्यौ—जिणरो नाव नागजी छै, सु विना अ्रायो[6] रहसी नही, अ्रनै मेह अ्रधारी रात छै। तिणसु सहर बाहरली चौकी हू देऊ छु नै सहर माहली चौकी थे देज्यो[7] नै सात पोळ छै, जठै[8] चौकी राखज्यो[9] नै माहली पोळ एक अ्राधो पोलीयो छै तिणनै बैसाल्यो[10]। उणरो हीयो देखतासु सवाय छै। इण तरै सरब जाबतो करनै धोलवालो तो चोकी देवण सारू चढीयो नै परमलदेजी सातवीसी सहेल्यानै लेनै चाली। नै मोहरा पचास कनै राखी सु सहरनै जातो[11] जाखडो मिलीयो। तरै जाखडै पूछीयो—थे कुण छो नै कठै जावो छो ? तरै सहेली[12] कह्यौ—परमलदेजी नागवतीरै वीहा[13] जाय छै। तरै जाखडै कह्यौ—दुरस छै पिण जावतो राखज्यो, नागजी अ्रावण पावै नही। अ्रबै इसी तरै छव प्रोल[14] तो गया नै सातडी[15] प्रोल गया तरै अ्राधे कह्यौ—बाया ! था माहे मरदरो पग वाजै छै, हू जावण देसु नही। तरै बडारण बोली—अ्रठै मरद कठै छै। तरै प्रोलीयै कह्यौ—भला, माहरै हाथ ऊपर हाथ दे जावो। तरै [वडारण दूहो कहै छै][16] —

दूहा- **पापी बैठो प्रोलीयौ[17], कूडा इलम[18] लगाय[19]।**
निलाडारी फुट गई, पिण हिवडारी वी जाय॥ ३६

२२ **वारता**—तरै प्रोलीयै कह्यौ—हरगज जावण देऊ नही, हाथा मैं ताळी देनै जावो। जद सगळीया हाथ दीयो नै नागजी हाथ ताळी दीवी। जठै[20] हाथ पकडीयो[21]। तरै परमलदेजी पाछी फिरनै कह्यौ—स्याबास छै तोनै पोळीया। इसो कहनै मोहर पचास पकडाय दीवी। तरै प्रोलीयै कह्यौ—पाच वले ही ले जावो। अ्रबै परमलदेजी माहे गया। अ्रागै देखे तो नागवती चवरी माहे हथलेवो जोडीया बैठा छै। तिसे परमलदेजीरै मुहडा सामो देखै नै कहै छै—

---

१ ख भला। २ ख लाव। ३ ख प्रति में नहीं। ४ ख बुलाय। ५ ख वेस। ६ ख अ्राया। ७ ख देवो। ८ ख. तठै। ९. ख. राखो। १० ख बैसाणो। ११ ख जाता। १२ ख. सहेलीया। १३ ख विवाह। १४ ख. पोळ। १५ ख सातमी। १६. ख परमलदेजीवाक्यम्। १७ ख. पोळिया। १८ ख कलक। १९ ख म लाय। २० ख तठै। २१ ख पकडलीयो।

सोरठो– नागडा निरखु देस, एरड थाणो थपीयो ।
हसा गया विदेस, वुगलहोसु वोलणो ॥ ३७

परमलदेजीवाक्यम्[1]—

भामरा भूल न[2] बोल, भवरो केतकीयां रमैं[3] ।
जाण मजीठा[4] चोल, रग न छोड़े राजीयो ॥ ३८

२३ वारता– अवै परमलदेजी कहै छै—नागजी ! थे मोह[5] कनै उभा रह्यौ[6] नै जे नागवती कनै जावो तो या[7] डावडी लूण उतारै छै, तठै जायनै थे थाळी उरी लेनै लूण उतारण लागज्यो[8] । तरै नागजी जायनै थाळ उरो लीयो नै नागवती ऊपर लूण उतारण लागो । नै आख्या आसुवे भराणी ने आसु पडीयो सु नागवती रै खवै लागो । तरै नागवती ऊचो जोयो, सु देखे तो नागजी छै । तरै नागवती कह्यौ—राज ! वागमैं रहज्यौ, हू हथळेवो छुडायनै तुरत आवु छु ।

नागवतीवाक्य[9]

सोरठा– टिपां टिप[10] टपीयांह, विण वादल वुछुटीया[11] ।
आंख्यां आभ थयाह, नेह तुमीणै नागजी ! ॥ ३९

तरै सहेल्या कह्यौ[12]—

सोरठा– वण्यो त्रिया को[13] वेस, आवत दीठो कुवरजी ।
जातो दुनीया देख, नाटक कर गयो नागजी ॥ ४०

२४ वारता– हमैं नागजी तो वाग माहे[14] गयो । उठै हीज खेत मैं वाग छै, तिणमैं मालो थो, तिण ऊपर नागजी जाय वैठो नै लारै नागवती चवरी माहे[15] सु ऊठी नै मानै कह्यौ—माहरो तो माथो दूखै छै सु हू तो रगसालमैं[16] जाय सोऊ छु मोनै कोई वतलाज्यो मती । इसो कहनै[17] पोसाक पैहरिया थका ईज वागनु चाली सु आधी रातरै समैं एकली[18] जावै छै । सु एक [गुणवत वुधवत[19]] माहातमारी पोसाल छै, तिणरै आगै हुय नीकळी । [तारै चेलौ गुरुजी नुं कहै छै][20]—

---

१ ख प्रति में नहीं । २ ख. म । ३ ख भमैं । ४ ख मजीठो । ५ ख मो । ६ ख रहो । ७ ख उ वा । ८ ख लाग जाज्यो । ९ ख. प्रतिमे नहीं । १० ख टप । ११ ख विछुटीया । १२. ख इतरी वात करनै नागजी वाग जावण लागो तरै वलै सहेली कहयौ । १३. ख कै । १४. ख मे । १५ ख. वैठी थी । १६ ख रग महल । १७ ख कहीनै । १८ ख इकेली चाली । १९ [–] ख प्रतिमें नहीं है । २० [–] ख प्रतिमें नहीं है ।

तो भली वात[1] छै। तिसै नागजीरो खवास उभो थो, तिणनु परमलदेजी कह्यौ-तू वागमें जायनै नागजीनु बोलाय ल्याव[2] । तरै खवास जाय[3] बोलाय[4] ल्यायो। तरै नागजीनै असत्रीरो रूप[5] करायनै साथे लीयो।

तिसे धोळवाळै जाखडानु कह्यौ—जिणरो नाव नागजी छै, सु विना आयो[6] रहसी नही, अनै मेह अधारी रात छै। तिणसु सहर बाहरली चौकी हू देऊ छु नै सहर माहली चौकी थे देज्यो[7] नै सात पोळ छै, जठै[8] चौकी राखज्यो[9] नै माहली पोळ एक आधो पोलीयो छै तिणनै बैसाल्यो[10]। उणरो हीयो देखतासु सवाय छै। इण तरै सरब जाबतो करनै धोलवालो तो चोकी देवण सारू चढीयो नै परमलदेजी सातवीसी सहेल्यानै लेनै चाली। नै मोहरा पचास कनै राखी सु सहरनै जातो[11] जाखडो मिलीयो। तरै जाखडै पूछीयो—थे कुण छो नै कठै जावो छो ? तरै सहेली[12] कह्यौ—परमलदेजी नागवतीरै वीहा[13] जाय छै। तरै जाखडै कह्यौ—दुरस छै पिण जावतो राखज्यो, नागजी आवण पावै नही। अबै इसी तरै छव प्रोल[14] तो गया नै सातडी[15] प्रोल गया तरै आधे कह्यौ—बाया ! था माहे मरदरो पग वाजै छै, हू जावण देसु नही। तरै बडारण बोली—अठै मरद कठै छै। तरै प्रोलीयै कह्यौ—भला, माहरै हाथ ऊपर हाथ दे जावो। तरै [वडारण दूहो कहै छै][16] —

दूहा- **पापी बैठो प्रोलीयौ[17], कूडा इलम[18] लगाय[19] ।**
निलाडारी फुट गई, पिण हिवड़ांरी वी जाय ।। ३६

२२ वारता—तरै प्रोलीयै कह्यौ—हरगज जावण देऊ नही, हाथा मैं ताळी देनै जावो। जद सगळीया हाथ दीयो नै नागजी हाथ ताळी दीवी। जठै[20] हाथ पकडीयो[21] । तरै परमलदेजी पाछी फिरनै कह्यौ—स्याबास छै तोनै पोळीया। इसो कहनै मोहर पचास पकडाय दीवी। तरै प्रोलीयै कह्यौ—पाच वले ही ले जावो। अबै परमलदेजी माहे गया। आगै देखे तो नागवती चवरी माहे हथलेवो जोडीया बैठा छै। तिसे परमलदेजीरै मुहडा सामो देखै नै कहै छै—

---

१ ख भला। २ ख लाव। ३ ख प्रति में नहीं। ४. ख बुलाय। ५. ख वेस। ६ ख आया। ७ ख देवो। ८ ख तठै। ६. ख. राखो। १० ख बैसाणो। ११ ख जाता। १२ ख. सहेलीया। १३ ख विवाह। १४ ख. पोळ। १५ ख सातमी। १६. ख परमलदेजीवाक्यम्। १७ ख पोळिया। १८ ख कलक। १६ ख म लाय। २० ख तठै। २१ ख पकडलीयो।

सोरठो– **नागडा निरखु देस, एरड थाणो थपीयो ।**
हसा गया विदेस, बुगलहिंसु बोलणो ।। ३७

परमलदेजीवाक्यम्[1]—

भांमरा भूल न[2] बोल, भवरो केतकीया रमै[3] ।
जाण मजीठा[4] चोल, रग न छोड़े राजीयो ।। ३८

२३ **वारता**– अवै परमलदेजी कहै छै—नागजी ! थे मोह[5] कनै उभा रह्यौ[6] नै जे नागवती कनै जावो तो या[7] डावडी लूण उतारै छै, तठै जायनै थे थाळी उरी लेनै लूण उतारण लागज्यो[8] । तरै नागजी जायनै थाळ उरो लीयो नै नागवती ऊपर लूण उतारण लागो । नै आख्या आसुवे भराणी नें आसु पडीयो सु नागवती रै खवै लागो । तरै नागवती ऊचो जोयो, सु देखे तो नागजी छै । तरै नागवती कह्यौ—राज ! वागमें रहज्यौ, हू हथळेवो छुडायनै तुरत आवु छु ।

नागवतीवाक्य[9]

सोरठा– **टिपा टिप[10] टपीयाह, विण वादल वुछ्टीया[11] ।**
आंख्यां आभ थयाह, नेह तुमीणै नागजी ! ।। ३९

तरै सहेल्या कह्यौ[12]—

सोरठा– **वण्यो त्रिया को[13] वेस, आवत दीठो कुवरजी ।**
जातो दुनीया देख, नाटक कर गयो नागजी ।। ४०

२४ **वारता**– हमै नागजी तो वाग माहे[14] गयो । उठै हीज खेत मैं वाग छै, तिणमैं मालो थो, तिण ऊपर नागजी जाय वैठो नै लारै नागवती चवरी माहे[15] सु ऊठी नै मानै कह्यौ—माहरो तो माथो दूखै छै सु हू तो रगसालमैं[16] जाय सोऊ छु मोनै कोई वतलाज्यो मती । इसो कहनै[17] पोसाक पैहरिया थका ईज वागनु चाली सु आधी रातरै समैं एकली[18] जावै छै । सु एक [गुणवत वुधवत[19]] माहातमारी पोसाल छै, तिणरै आगै हुय नीकळी । [तारै चेलौ गुरुजी नुं कहै छै][20]—

---

१ ख प्रति में नहीं । २ ख. म । ३ ख भमै । ४ ख मजीठो । ५. ख मो । ६ ख रहो । ७ ख उ वा । ८ ख लाग जाज्यो । ९ ख प्रतिमे नहीं । १० ख टप । ११. ख विछुटीया । १२. ख इतरी वात करनै नागजी वाग जावण लागो तरै वलै सहेली कहयौ । १३ ख कै । १४. ख मे । १५ ख. वैठी थी । १६ ख. रग महल । १[7] कहीनै । १८ ख इकेली चाली । १९ [–] ख प्रतिमें नहीं है । २० [–] ख. प्रतिमें

दूहा– रिम झिम[1] पायल[2] घूघरा, मोती मांग[3] सवार[4] ।
आधै समैइयै रैणकै, गुरजी कहा चली उवा[5] नार ॥ ४१

तरै गुरुजी दूहो कहै छै[6]—

दूहा– कान घडया वले सोवना[7], नक सोनारी नाथ[8] ।
प्यारी प्रीतमपै चली, रमण सेझ रग रात[9] ॥ ४२
बेलडी, तिलडी, पचलड़ी, ज्या सिर वेणी म्हेल[10] ।
चेलै दीठी गोरडी, सु दीधा पुसकत[11] मेल ॥ ४३

गुरुजी कहै—

दूहा– चेला पुसतक झल करी[12], कहा पूछत है वात ।
इण नगरीकी डगरमै, एक[13] आवत एक जात ॥ ४४

चेलो दूहो कहै छै—

रहो रहो गुरजी मूढ[14] कर, कहा सिखावत मोय ।
सत[15] सूते इण नगर के, जागत विरला कोय ॥ ४५

२५ वारता– नागवती सहर[16] सु बारै नीकळी[17] मेह अधारी रात छै सु हाथ नै हाथ सूझै न छै[18] । तिण समै नगर बारै डूमारो घर थो, तठै आई तरै दूहो कहै छै—

सोरठा– साली सूनो ढोर[19] बाली मैं वरजु घणी ।
अठै अमीणो चोर, जुगमे जाणी तल थयो ॥ ४६

२६ वारता– उठासु आघी हाली । सू एक बिरामणरो घर थो जठै आय नीकळी । बिरामण जाणो—डाकण छै, कै देवी छै, सु उठ नै भागो । तरै नागवती कहै छै—

सोरठा– ना भरडो ना भूत, म्हे दुखी माणस हुय आवीया ।
अठै असाणो कत[20], नारी-कु जर नागजी ॥ ४७
डाकण नही गिवार, सिहारी हु ती नही ।
गलती माझल रात, खरी सिहारी हुय रही ॥ ४८

---

१ ख रिमझिमीया २ ख पाय । ३ ख मागमें । ४ ख सार । ५ ख प्रतिमें नही है । ६ ख प्रतिमें नहीं है । ७ ख सोवन्या । ८. ख नथ । ९ ख रत । १०. ख वणी हमेल । ११ ख पुसतक । १२ ख. मेल कर । १३ ख इक । १४ ख मुठ । १५ ख सब । १६ ख सेर । १७ ख निसरी । १८ ख कोई नहीं । १९ ख वेस । २० ख सूत ।

तरै विरामण दूहो कहै छै[1] —

सोरठा– सूतो सुख भर नीद, सूतैनै[2] सुपनो थयो ।
ऐ रख नागो वीद, सुखरो मल थो खेत मै[3] ।। ४९

२७. वारता– हमै उठासु आघी हाली, सू रात इसी मिली सु लिगार मात्र सूझै कोई नही । तरै वीजळीरे झावकासू[4] आघी जाय छै । तिसै मेह गाजीयो ।

[तरै दूहो कहै छै][5]

दूहा– ऊडो गाजै ऊतरा[6], ऊची[7] वीज खिवेह ।
ज्यु ज्यु सरवणे[8] संभलु, त्यु त्यु कपै देह ।। ५०

२८. वारता–उठासु आघी हाली स तलाव आई । तलावरो पाणी हिलोळा खाय रह्यौ छै । पीपळरा पान वाजै छै । तरै नागवती कहै छै—

दूहा– पीपल पांन'ज रणझणै, नीर हिलोला लेह ।
ज्यु ज्यु श्रवणे सभलु, त्यु त्यु कपै देह ।। ५१

२९. वारता– [उठासु आघी हाली । सु तळाव आइ आगै जाय][9] इसो कहनै हेला मारीया[10]—हो नागजी महाराजकुवार ! कठेई नैडा हुवै तो वोलज्यो, हमै हू डरू छु । इसो कहि आघी हाली सु आवा नीचै आई ।

[तरै दूहो कहै छै][11]

दूहा– सजन आंवा मोरीया, आई आस करेह ।
ज्यु ज्यु श्रवणे सभलु, त्यु त्यु कपै देह ।। ५२

सु देख वागमै आई । तरै दूहो कहै छै—

दूहा– आंवो, मरवो, केवडो, केतकीयां अर[12] जाय ।
सदा सुरगो चपलो, आज विरगो काय ।। ५३

[वलै कहे छै][13] —

सजन चदन वांवनै, ऐ रू कूका रेह ।
ज्यु ज्यु श्रवणे सभलू, त्यु त्यु कपै देह ।। ५४

३० वारता– इसो कहिनै वले हेलो मारीयो । हो नागजी ! हमै तो वोलो । हू घणी[14] डरू छु ।

---

१ ख प्रतिमें नहीं है । २ ख सूतानै । ३ ख नै । ४ ख झवतकार । ५ [–] ख में नहीं है । ६ ख उतराध । ७ ख ऊची ऊची । ८ ख. श्रवणे । ९ [–] ख प्रतिमें नहीं है । १० ख. हेलो दीयो । ११ [–] ख प्रतिमें नहीं है । १२ ख अरु । १३ –] ख प्रतिमें नहीं है । १४ ख प्रतिमें नहीं है ।

सोरठा– **सेवा सेहतडाह[1], मांनव काय मानै नहीं ।**
पाथर पूजतडांह, निरफल थई हो नागजी ।। ५५
सूतौ सवड घरेह, विव[2] पिछोडे पिंडरा ।
सादो साद न देह, 'आवि वले ओ'[3] नागजी । ।। ५६

३१. **वारता**– अबै नागवती घणा खाला-वाहला उलाघती जावै छै। पाहडामै सीह गाज रह्या छै,[4] बादळा झुक रह्या छै, बीजा झबक रह्या छै, मोर कुहका करै छै, रात महाभयकर वण रही छै, मेह छोटी बूदा पड रह्यो छै, पवन पिण बाजै छै, तिण समै नागवती सनेहरी बाधी थकी घणा दुखासू माला ताई आय पोहती नै आगै नागजी मालै जाय बैठो थो सु नागवतीरी घणी बाट जोई, पिण आई नही तरै विरहरै मारीयै कलेजारी कटारी मार सुय रह्यो। तिसै नागवती आई। मालै चढी देखै तो नागजी सूतो छै, तरै कनै जाय बैठी नै दूहो कहै छै—

दूहा– **नागड़ा नीद निवार, हू आई हेजालुई ।**
ऊठो राजकवार, नीद निवारो नागजी ।। ५७
नागडा सूतो खूटी ताण, बतलाया बोलै नहीं ।
कदेक पड़सी काम, नोहरा करस्यो नागजी ।। ५८[5]

३२ **वारता**– इसो कहिनै पछेवडो उपरासू परो कीयो, देखै तो कटारी कालिजै थिरक रही छै सु देखनै नागवती कहै छै—

सोरठा– **कटारी कुनार, लोहाली लाजी नही ।**
आजूणी अधरात, नागण गिल[6] बैठी नागजी ।। ५९[7]

दूहा– **जा जोबन अर जीव जा, जा पाणेचा नैण ।**
नागो सयण गमाय कर, रही किसा सुख लैण ।। ६०

---

१ ख. सेवतडाह। २ ख पीव। ३ '–' ख आज निहेजो। ४ ख प्रतिमें इतना विशेष है।—'पाणीरा खडताल पड रह्या छै, निस अधारी रात छै, दादुर सोर कर रह्या छै बीजळियारा झबतकार होय रह्या छै, मोर झिंगोर कर रह्या छै।' ५ ख यह सोरठा 'ख' प्रतिमें नहीं है। ६ ख हू निगलज। ७ ख प्रतिमें निम्न सोरठा विशेष है—

'कटारी कुनारि, लोहारी लाजी नहीं।
नागतणै घट माहि, वाढा नींवू ही भली ।।
वाला विलविलताह, ऊतर को आयो नहीं।
कदे काम पडीयाह, निहुरा करस्यो नागजी ।।

दूहा– कुच जा भुज जा अहर जा, तन धन जोवन जाह ।
नागो सयण गमाइयो, अव[1] रहि'र करसी काह ।। ६१

सोरठा– जाय'जसी जुग छेह, पाछा[2] आय जासी नहीं ।
नालां[3] विच वैसेह[4], वले न वातां कीजसी ।। ६२

दूहा– जान[5] मांगी रतडी, ते न लाई[6] वार ।
अमां विछोहो तै कीयो, तो करज्यो भरतार[7] ।। ६३

सोरठा– नागड़ा नवलो नेह, जिण तिणसु कीजै नही ।
लीजै परायो[8] छेह, आपणो[9] दीजै नहीं ।। ६४
नागड़ा नवलो नेह, नोज किणहीसु लागजो ।
जलै सुरगी देह, धुखै न धुवो नीसरै ।। ६५
नागा नागरवेल, गूढ स गूढी उपणी ।
क्युंहीक मोनु राख, वरतण जोगी वाल्हा ।। ६६
डूगर केरा वादळा,[10] ओछा तणे सनेह ।
वहता वहै उतावला, झटक देखावै छेह ।। ६७

सोरठा– तूं ही रावल हीर, मोट सूता मिलसी घणा ।
तू पाटण पट चीर, नारी कुजर नागजी ।। ६८
इम कहीया वहु वेण, नैण झरै आसु घणा ।
तो सिरखा[11] मो सैण, वले न मिलसी नागजी ।। ६९

३३. वार्ता– इसी तरै वैठी विलाप करै छै। तिसै थोळवाळो चोकी फिरतो आय नीकळचो । नागवतीरो वोल साभलीयो तरै नैडो आयो, मालै ऊपर चढीयो । देखै तो नागजी मूवो पडीयो छै नै नागवती कनै वैठी विलापात करै छै । तरै थोलवालै कह्यौ–नागवन्ती नीचै ऊतरो ।

[तरै नागवती कहै छै][12]

सोरठा– चढती चड वड तार[13], उतरंतां आंटा पड़ै ।
[आ जूणी अध रात][14], हू निगल वैठी नागजी ।। ७०
सुसराजी सो वार, सयण घणाई सपजै ।
पिण न मिलै दूजी वार, नाग सरीखो नाहलो ।। ७१

---

१ ख हिव । २ ख इठै । ३ ख वाला । ४ ख दिव । ५ ख जानीं । ६ ख. लगाई । ७ ख किरतार । ८ ख परनों । ९. ख. आपणपो । १० ख वाहला । ११ ख सरीखा । १२ ख प्रतिमें नहीं है । १३. ख वार । १४ ख वहै तमीणो वाल ।

३४ **वारता**– इसौ कह्यौ तरै धोळबाळो लजखाणो पडीयो नै नीचो उतरीयो। मनमैं विचारीयो जे रात तो थोडी श्राय रही छै नै श्रा ऊतरै नही। परभात होय जासी तो वात श्राछी लागसी नही। तरै सहरमैं श्रोठी मेलनै जाखडानु बुलायो। नै सारी हकीकत कही। तरै जाखडै कह्यौ—नीची उतर। तरै नीची ऊतरी। तरै दूहौ कहै छै—

सोरठा– **श्राईयो श्राढा लाह, गाज्यो न धड ुक्यो नहीं।**
वूढो वाढा लाह, निगुणी भुय पर नागजी ॥ ७२[1]

३५ **वारता**– जितरै नागवन्ती घरानै चाली। श्रठै नागजीरै चलावारी तयारी करै छै। काठ भेळो करै छै। नै धोलवालो दुहो कहै छै—

सोरठा– **नागड़ा नव खडेह, सगपण घणाई तेडीयै**[2]**।**
भुय[3] **ऊपर भुवताह**[4]**, मिलता ही मरजै नही ॥ ७३**

३६ **वारता**– नागवती पीहरसु हाली, सु नागजीरी श्रारोगी कनै श्राय नीसरी। सु धोळबाळो दूहो कहै छै—

सोरठा– **ऊडै पड़वै पैस, पिवसु पैजा मारती।**
सु माणसीया एह, घूघै लागा धोलउत ॥ ७४

नागवती सुण नै कहै छै—

सोरठा– **ऊपरवाड़ै श्रहीर, रह रह चावा**[5] **डांभतो।**
सालै मॉय सरीर, सु नित नवेला नागजी ॥ ७५
चुड़लो चोरां एह, मोल मुहगै श्राणीयो।
नांखूनी झाडेह, भव पैलासु पाइयौ[6] **॥ ७६**
कलमैंको कुभार, माटीरो मेलो करै।[7]
चाक चढावणहार, कोई नवो निपावै नागजी ॥ ७७
'कुलमै दोय कुभार'[8]**, वासोलो नै वींझणी।**
जे हु हुती सुथार, नवो 'घड लेवत'[9] **नागजी ॥ ७८**

---

१ ख प्रतिमें—'श्रईयो श्रासाढाह, गाजीनै घडूकियौ।
बूढो वाढालाह, निगुणी भूई सिर नागजी ॥

२ ख घणा हा तोडिये। ३ ख भव। ४ ख भमताह। ५ ख चम्बा। ६ ख. पाछव्या। ७ ख प्रतिमें एक सोरठा विशेष है—

'कळमै को कुभार, माटीरो मेळो करै।
जे हूं हुती कुमार, तो चाक उतारू नागजी ॥

७ '–' ख कळमें दोय श्राधार। ८ '–' ख घडेलू।

३७. वारता– नागजीरी आरोगी चिणे छै, लापो देवणरी तयारी छै। जितरै [नागवतीरो रथ बरावर कनै आरोगीरै आय][1] नीसरीयो[2] । तरै देखनै रथरै खडैती[3]नै पूछीयो, जुहारीरा नाळेर कितरायक आया छै ? तरै खडेती[4] नारेल देखाया तिण माहेसु नालेर एक ले नै रथसु नीची ऊतरनै आरोगी कनै आई। नागजीनु खोळमैं ले बैठी। तरै सारा देखता रह्या नै कह्यौ, नागवती ओ काई। तरै नागवती कह्यौ, म्हारै ठेठरो ओ भरतार छै। तरै लोका घणी ही समझाई। पिण आ मान नही। तरै जान तो परी गई। अनै जाखडो अहीर घोलवाळौ मारो साथ लेनै सहरमे गया। नागवती आपरी रथीरै आग[5] लगाय माहे जाय बैठी। जितरै श्रीमहादेवजी नै पारवतीजी आय नीसरचा। तारै पारवती कह्यौ, महाराज ओ कासू बलै छै। तरै महादेवजी कह्यौ–आ नागवती नागजीरै लारै बळै छै। तरै पारवती कह्यौ— महाराज नागवती तो आपारी घणी चाकरी[6] सेवा करी छै, सो[7] इणरो सुहाग अखी राखो। तरै महादेवजी ततकाल अगन 'बुझाय दीवी'[8] नै नागवन्तीनु कह्यौ—तू बळ मती, इणनै म्हे जीवतो करम्या। इसो कहनै अमीरो छाटो घालीयो। तरै नागजी उठ बैठा हुवा। नागवन्ती, नागजी महादेवजीरै पाए[9] लागा। पारवती आसीस दीवी—थाहरो सुहाग अखी रहो। अबै नागवती नै नागजी सहरमैं आया।

दूहा– मूवा मुसांण गयाह, नागवती नै नागजी।
कलमैं अखी कयाह, महादेव अर पारवती॥ ७६
प्रीत निवाहण अवतरचा, कलमे अखी थयाह।
सिव उमया प्रसाद कर, चिरंजीव रहियाह॥ ८०[10]
जो याकौं गावै सुणे, विरहै टळै ततकाल।
नितप्रतरो आंनद रहै, कदे न होत जजाल॥ ८१[11]

इति श्रीनागजी-नागवतीरी वात सम्पूर्ण[12]।

---

१ [–] ख. प्रतिमें नहीं है। २ ख नीसरी। ३ ख सामडदी। ४ ख सागदडी। ५ ख अगन। ६ ख सेवा। ७ ख तिणसु। ८ ख. बुझाई। ९ ख पगे। १०-११ ख प्रतिमे ये दोनो दूहे अप्राप्त हैं।

१२ ख इति श्रीनागवती नै नागजीरी वात सम्पूर्णम्।
सवत् १८५२ वर्षे मिति आसाढ वदि ७ भोमवारे लपिकृत प० केसरविजेन विकपुर-मध्ये कोचर मुनि छुमणजी पठनार्थे॥ श्रीरस्तु कल्याणमस्तु॥१॥

॥ श्री. ॥

बात दरजी मयारामकी

[अथ श्रीमयाराम दरजीरी वात लिख्यते]

बरवै– बदू नंद गवरिया, गुनपत देव।
दीजै भेद अछरिया, करहू सेव॥ १

दोहा– आसै डाबीरी अगै, वारठ आसै बात।
जग जाणी जोडी जकां, पढै अजे लग पात॥ २
कवीयण नै सिधांणनै, जोडै कहै परत।
अमर करै औ आषरा, कवि कथ अमर करत॥ ३

नीसाणी– ऊकता ड(ऊ)डी ऊमदा जुगता हु जांणां।
उकता जुगता आणीयां, विरला सम जाणा॥
आषर सूधा ऊमदा ग्रहणा सोनांणा।
कठ कथीरा काठका दन थोडा जाणा॥
पहसर आषर पाधरा वापार पडाणा।
पाधरसला दुहडा के दीहर हाणा॥
बैठा कीकर सो बुधा कव उदम कराणा।
मांणीगर म्यारांमकी धर वात धराणां॥
मालम होसी मेदनी राणां सुरताणां।
आडा पडसी दीहडा जद केहा जाणा॥ ४

दोहा– आबूगिर अछ(च)लेसरी, सिध दोय करता सेव।
चेला नांमै चतुर रिष, गुरकौ नाम गगेव॥ ५
सत त्रेता द्वापुर समै, कीधी तपस्या कोड।
इद्रायण नै अपच[स]रां, जितै रही कर जोड॥ ६

१ वारता– आबू माथै दोय रषेस्वर तपस्या करै। सो गुरको तौ नाम गगेव रिष, चेलाकौ नाम चतुर रिष। सतजुग, द्वापरजुग नै त्रेताजुग, तीन ही जुग रषेसर तपस्या करवौ कीवा। जतै एक तौ इद्रायणी नै आठ अपच(छ)रा

वैकुठसू आय नै रपानै जीमाड नै ग्यानचरचा मुणनै दहु वपन वैकुठ जाती । हमै कलजग आयौ नै कलजुगरी पवन लागेवा ढूकी । जद रपा ईंद्राणीनै अर आठ ही अपछरानै कह्यौ–हमै मे देहा दूजी धारसा, कलजुगमैं अण देहा नही रहसा । सो इद्रायण ! थै नै आठ ही अपचरा मारी विदगी वणी कीवी, सो थे वर मागौ सौ थानै मे वर दे नै गुर-चेलौ अलोप होमा ।

रिपा वायक—

दुहौ– कलजुगरो मांनै कहर, विजनस लागै वाव ।
रिपां कह्यौ अण देहरौ, परत करा पलटाव ॥ ७
नर-पुरमै रहसां नहीं, वससां सुर-पुरवास ।
मांग इद्रायण ! वर मुपां, अव तौ पूरां आस ॥ ८
इंद्रायण मुप आपीयौ, औ वर मांगा आज ।
नर-पुर मांहे नेहसू, मो परणौ माहाराज ! ॥ ९
आया वचनांमै अवै, चेलौ गुर कर चाव ।
पालण वचन पधारसी, वले करेवा व्याव ॥ १०
एक इद्रायण रिप उभै, आठू अपछरां आंण ।
मांणण सुख मृतलोकमै, जनम लिया घण जाण ॥ ११
चेलो हुऔ ज सूवटौ, गुर दरजी म्यारांम ।
चेलो काम सुवारणौ, रामवगस उण नाम ॥ १२
भाडचावस जाहर भुवण, गहर रसीलौ गांम ।
दुलहै घर अण देसरै, जनम लियौ म्यारांम ॥ १३
अलवल(र) माहे ऊपनी, जसां इद्रायण जाय ।
ज्यू लीधौ म्यारै जनम, मुरधररी घर माय ॥ १४
आठू अपछर आगलै, भेली रहती भव ।
जसीयारै हाजर जकै, आठू दासी अव ॥ १५
कसतूरी चपककली, लवगां नै लालो ह ।
चंदू चमनू चोपली, मझनायक माली ह ॥ १६
कोडसी(धी)स सवलालकै, वजा फरुकै धाम ।
जणकै घर जाइ जसां, नव-पड रापण नाम ॥ १७
म्यारोजी मोटा हुआ, दुलूहौ मुरधर देस ।
पनरां वरसां पदमणी, वनो वनी यकवेस ॥ १८

२ वारता– वरसा पनरामै जमा हुइ, सिवलाल का(य)थकै घरै । जदी रामवगस सूवौ कीरा पकडनै सिवलालनै दीवौ । मौ चार ही वेद वकै(भपै ?)

जद सौ मोहरा दे नै सिवलाल रामबगसनै लीधो। सो जसा कनै रहै, जसानै पढावै। जद जसा वर-प्रापतीक हुई। सवलाल जसाकौ रूप देषनै मनमै उदास हुऔ—जसारी जोडरौ आदमी हीदुसथानमैं एक ही नजर न आवै। सिवलालकै दलीकी उकीलायत, त(अ)ने बावन कलारौ काम, कोड रुपियाकी ध(घ)रे नगद मालीत। जणरै पुत्री एक जसा। जदपी रामबगस सूवै कह्यौ—कायथजी! आप सोच मत करौ। आ तो जसा इद्रायणी छै, आपकौ घर प्रवीत करणनै जनम लीयौ छै। ज्यू हेमाछ(च)लकै घर पारबती, ज्यू जनकराजाके सीता, भीपमकै घरे रुषमणी जनम लीधो, ज्यू आपके घरे जसा जनमी छै। आ एकली नही आई छै। म्रत-लोकमै यणरी जोडीरौ पुरस हु हेरनै परणाय देसू। आप सोच मत करो। जद सवलाल रामबगसनै कह्यौ—रामबगस! थू तो त्रकाळ-दरसी छै नै थू मारै तौ वडो पुत्र छै। थू भी रामबगस अवतार छै, सो थासू तो काइ बात छानी नही छै। आ लाष रुपीयाकी मालीत छै, सो यण पुत्रीकै नमत छै। आछो जसारी जोडीरौ वर, घर [स]भाल नै व्याव कर देजे। हु तो रावजीकै किलकता-दसाको काम छै, सो चढू छू।

सवलालवायक—

जोवन-मद आई जसा, व्याव करीजै वेग।
लाग्यौ औ सवलालकै, दिलमैं वडो उदेग॥ १९

३ **वारता**— सवलाल तो कलकताने चढीयौ नै लारसू जसा रामवगसकै गलै छी(ची)ठी वाधनै समाचार लषीयो—'सिध श्री भाडीयावास वाली वाट मुहगी दसै, आतमका आधार मयारामजी वसै, अलवल(र)थी लपावतु जसाकौ मुझरौ अवधारसी। रामबगस राज नपै आयो छै, जीकौ कुरब वधारसी। अठा लायक काम विंदगी लषावमी। अठी दसाकी आप गाढी पुसीया रषावसी। पान-पानकौ, पडाकौ जावतौ रपावसी। जावतो तो बलदेवजी करसी पण तावादार तो लपावसी। भरोसादार भला मनप जीव-जोग साथे लीजो। इद्र राजाकी तरैका वीद राजा[हो]वीजो। आपकी वाट भाला छा। औ दवस कदीया ऊगै, जसीको भाग जागै, अलवल(र) आप आय पूगै।

दुहौ— **अलवल(र)हुता ऊडीयौ, चेलौ कर मन चाव।**
गुर-कदमा भेटण गहर, वह आयौ भाड्याव॥ २०
कागद माहे कामणी, जसीयल लषीया जाव।
म्याराजी! दरसण मनै, आतुर दीजो आव॥ २१

४ **वारता**— रामवगस भाडीयावास आयौ। गुर-चेलौ मिलीया। वारै वरमासू भेला हुआ। रामवगमकै गलै कागद पाचा(छी) मयाराम लपीयौ।

दुहा– म्यारै कागद मेलीयौ, जसीयलनै जग जीत ।
भूलं नह तो भामणी, छन-छन आवै चीत ॥ २२

५. वात– मयारामका हाथको कागद नै हाथकी मूंदडी लेनै रामवगस जसा नपै आयौ । जमा कागद वाचीया, घणी पुसी वरती । हमैं मयाराम जानरी ताकीद लगाई ।

दुहा– पूठै सहसा पाचरै, हैवर पाच हजार ।
म्यारै मोल मगाडीया, वगैसू उण वार ॥ २३
हेमो लाधो नैहरो, गिर गामौ सधराज ।
महि जतर्नां मयाराम्ररा, साथे यता स काज ॥ २४

घोडारा वपाण—

दुहा– राना पर तांना करै, विध विध नाचै वाज ।
नाच करता निरषनै, अछरां लाजै आज ॥ २५
रेवत समजै रांनमैं, किसू वागरौ कांम ।
कर पलवी आसक करै, वध जण समजै वाम ॥ २६
रेवत समजै रांनमै, किसौ वागरौ कांम ।
वलै पवन जण दस वलै, जेम धजा अठ जाम ॥ २७
विडगांरा वाषाण, दोडतणां की दाषजे ।
वेडा तारा बांण, जाण न पावै जे लीयां ॥ २८

६. द्रावैत– पवनका परवाह, गुलावकी मूठ, सधराजकौ गोटकौ, तारेकी तूट । आतसकौ भभकौ, चक्रीकी चाल, चपलाको चमकौ, चातीका ढाल । सीचाणैकी झडप, हीडैंकी लूव, पगराजका वचा, पेतुमैं पूव । ऐहडा-ऐहडा पाच हजार घोडा सोनैरी साकता सज कीधा ।

दुहा– जाषौडा कसीया जरी, तूणां करी तैयार ।
मुरधर हुता म्यारजी, चढीया राजकुमार ॥ २९
अतलस थरमा ऊमदा, तास वादळा त्यार ।
जसडा कसीया जांनीया, कसीयौ राजकुमार ॥ ३०
मोती हीरा मूगीया, पना पीरोजा पूर ।
बाजूवध वाधाविनै, नवल वनै वह नूर ॥ ३१
कडां, जनेऊ, कठीया, वीटा, पुणच्या, वेस ।
ग्रहणामं मढीयौ गजत्र, प्रीत चढावण पेस ॥ ३२

मिजला-मिजला म्यारजी, अलवल पुहचा आय ।
समाचार वरतै सरब, जसां कनै नत जाय ।। ३३
दौय अगाऊ दोडीया, दियण वधाइदार ।
जसा वाट जोती जकौ, सज आयौ सिरदार ।। ३४

७. **वारता**– वधाइदारनै पाचसै मोहरा वधाईमें दीधी नै मालकीनै कह्यौ–थू सामी जाय । भादरवाकी घटा पण आयनै लूबी छै । मुधरी-मुधरी बूदा पडै छै । राव वषतावरसीग असवारी कीधी छै । सो पैतीस हजार नरुपोता सोनैरी साकता गज गाहामैं गरक कीया थका बाजारमैं घोडा उछकावै छै । महोला-महौला हजारा सहेलीया ऊभी गावै छै । जकण वषतमै जानरौ कैतूल कीधा सरीषा घोडा, सिरदार लीधा, मयारामजी पण आया छै । रग-राग उमेदवाराम(मै) छाया छै । सो जसा कहै–मालकी ! थू सामी जा ।

जद मालकी कहै–आ तो मेह अधारी रात छै नै जणमै रावरी असवारीरौ लोक गलीयामै नही छै । मयारामजीकी कसी षबर पडै ? जद जसा कहै–सूरज बादलामै ढकीयौ कदी रहै ? अण ऐहलाणा मयारामजीनै औलष लीजे ।

दोहा– **तुररै छौगै चांकीया, झलब रहै अठ जाम ।**
भीनै रग अलीयौ भमर, माणोगर म्याराम ।। ३५
फब सेली किलगी फबी, दुपटै पेचा दूण ।
प्यारै(म्यारै) जणनै ईषनै, लषा सहेली लूण ।। ३६
अलगो वे(व्हे) जोहे अलो, जोवण दीजो जान ।
माणीगर म्यारामकौ, वेषण दीजौ वान ।। ३७

८. **वारता**– अणतरैका मयाराम छै । थू ओळष लीजे । जद मालकी सारा सरदार नजरा वार वती थकी मयारामनै ओलप नै मुजरौ कर नै मयारामका हाथकी मूदडी रामवगस लायो, सो निजर की ।

दुहा– **मालू मेलै माझली, तारव छैल तमाम ।**
जसा कैहती जैहडौ, मिलीयो यक म्याराम ।। ३८
मुजरौ करनै मालकी, आगै ऊभी आय ।
म्यारै कररी मूदडी, दीधी तुरत देषाय ।। ३९

९ **वात**– जद मयारामनै मालकी तोरण लावे छै । सात ही वडारणा दुजोडी साथे छै । पाचसै भगतणा, पातरा, ढोलणारा गरट माहे वीद राजा घोडा पडे छे । इंद्रकी असवारी ओला-भोला पडै छै । मयारामजी वैहता महेलीया सामौ भालै छै, कामदेवरा वाणासू जालै छै । जद मालकी मयारामनै कह छै–राज ! सूधो नजरा कु न वहै छै ?

मालकीवायक

दुहा- जसा सरीषी जगतमै, महिल नही म्यारास ! ।
पंचौलण है पदमणी, हालो पूरण हांम ।। ४०
जसकी हदी जोडरा, यसको म्यार ! अमीर ।
घालो बथ जणरै गलै, हालो हेल हमीर ।। ४१
आगलीया जणरी यसो, मूग तणी फलीयांह ।
म्यारा जसकीसूं मिले, कीजो रगरलीयाह ।। ४२
म्यारामजी ! थे माणजौ, जसीयाहुत जरूर ।
पषौ अहै पवनरौ, पूगू विदगी पूर ।। ४३
प्रीत पहेला पेरनै, करौ जहेला काज ।
हमै वहेला हालजै, राज गहेला राज ! ।। ४४
छिन-छिनमै पग चांपसू, छिन-छिन करसू चाव ।
पातर सो तो ही परा, राजद ! वैडा राव ।। ४५

मयारामवायक

मुषसु दाषै म्यारजी, हसनै असन हवेह ।
मे तौ तोनै मालकी, भूला नहीं भवेह ।। ४६

मालकीवायक

दुहौ[1]–ऊणा[2] सहेल्यां आगला, म्यारा ! हु[3] तिल-मात ।
महिल ऊणीमै मूंभसी, सहेल्या रहिसी सात ।। ४७

१० वारता–[4] यु मयारामनै माल तोरणरै मुहडै लाई । सात-वीस सहेलीया नरेपणनै आई । पडदारी जालीयामै[5] मयारामनै[6] देपै छै । सारी सहेल्या हुइ[7] चप एकैठै भाल-भालनै थूथका नापै छै । मयाराम पर[8] मोती पापै[9] छै । दनाका नादान, कामकी मूरत, जसडाही ग्रैहणा नै जसडी-ही सूरत । श्रीभगवान आपरा[10] हाथासू वणायौ[11], इसडौ[12] मयाराम[13] तोरणरै मुहडै आयौ । जानरौ, घोडारौ, ग्रहणारौ वरणाव, गीत सुपपरौ पावरौ भाव ।

गीत[14]

ओपै लपेटो अगार सोस वागौ घो[धो]रादार[15] अगा ।
कुलै ताज पेठा जोत[16] नगारीं[17] करूर ।

१ ख में नहीं है। २ ख ऊणा। ३ ख हु। ४ ख वारता। ५ ख जालियामै ६ ख मायारामनै। ७ ख दइ। ८ ख पै। ९ ख खावै। १० ख आपारा। ११ ख वणायौ। १२ इसडो। १३ ख मायाराम। १४ ख गीत सुपखरौ। १५ ख घोरदार। १६ ख जाते। १७ ख नगारी।

आवला दलामै[1] म्यारा[2] प्रकासीयौ रीत एही,
सावला[3] वादला माहे नकासीयौ[4] सूर ।। १
चोगा तोडा पवन्ना[5] किलगी सेली पाग छाई,
बाजूबधा चोकी जोत जगाइ वसेक ।
मोतीया[6] मूदडा कडा जनेऊ जडाव माला,
ओपै बीद[7] राजा यसी पोसाका अनेक ।। २
साथीया[8] सजोडा घोडा जाषौडा साकता साजी,
लडालू बहुआ देषे राजी लाषा लोक ।
वधाई बधाई वाजी जसा ऊभी माल वाटै,
अमीराइ[9] भाइ भाइ गाइ[10] ओका-ओक ।। ३
झलबा झलूस साज सहेल्यारौ साथ जोवै,
बादी बीजी हुइ रूप देषे हाक - बाक ।
कुरबा[11] वधारे लाडी जसानै सुनाथ कीजै,
चैल[12] (छैल) बना लीजै दोय दुबारै की चाक ।। ४

दोहा– देषै ऊभी दासीया[13], सरब जसारौ साथ ।
मुजरौ करनै मालकी, प्यालौ लीधौ हाथ ।। ४८

११ वारता–[14] अण तरैका बीद राजा मयाराम[15] आला-नीला बास रोपनै परणीया[16] नै पाचसै पाचस मोहरा व्रामणानै[17] भुरसीरी दीधी । दुजै दन जसा मयारामरै तवूआनै हाली ।

नीसाणी–लावक झूबक लाडली, अग टेर अपारा[18] ।
जण[19] पुलभै हालो जसा, सजीया[20] सिणगारा ।।
सीस जकणरौ सोभीयौ, नालेर नैहारा ।
अलका सिरसू ऊतरी, टक एडी तारा ।।
जाणे[21] नागण हीडलै, षभा सोनारा ।
ओपन[22] लाडो ऊमदा, तपताण[23] तैयारा ।।

---

१ ख दलामैं । २ ख मयाराम । ३ ख सावला । ४ ख नकासियौ । ५ ख पवन्ना । ६ ख मोतिया । ७ ख वदि । ८ ख साथिया । ९ ख अभीराई । १० ख गाह । ११ ख कुरबा । १२ ख छैल । १३ ख दासिया । १४ ख वारता । १५ ख मायाराम । १६ ख परणिया । १७ ख वाभणानै । १८. ख आपारा । १९ ख जण । २० ख सजिया । २१ ख जाणो । २२ ख ओपै न । २३ ख तपताणा ।

भ्रूआवल वेहु भडी, भमरांण[1] गुंजारां।
भोयण[2] (लोयण ?) कीजै भामणै, कोयण कुरगारा[3] ॥
वदना नाक विराजीयौ, च(छ)व कीर-चचारां।
अहरा दीजै ओपमा, परवाल प्रकारां ॥
दांत वतीसू[4] दीपीया[5], दाडम-वीजारां।
कठां जाणे[6] कोयली, बोली तण वारां ॥
गरदन जसकी गांगडी, तक कुरज तरारा[7]।
नसमै[8] वाघा तेवटा, झल मोती ऊ प(ा)रा[9] ॥
हार टकावल हीडलै, ऊणमोल अपारां।
होया[10] सनेहा हेतका, अमीयाण[11] ठैयारा[12] ॥
उर - थल थोडा ऊफीया, नींवूण चैयारा।
पीपल पना पेटका, ग्रभ केल चीरारां[13] ॥
कडीयां लघा केहरी, गजराज चलारां।
नितवां दीजे ओपमा, वीणार[14] वैहारां[15] ॥
एडी पेडी ऊमदा, तक एण[16] तरारा।
जाणै[17] करती झूवकौ, तग मगीयौ तारा ॥
जांणे[18] हस मलपीयौ, सर मांन मझारा।
हाथा जाण कहालीयौ, मद पीध वजारां ॥
पदमण जांणे[19] पोषता, ऐहडां[20] आचारां।
इद्रायण कै ऊतरी, मृतलोक मझारां ॥
जसकै पलटण जावतै, हल वीस हजारा।
ढाला वडफर[21] ढावीया[22], वांकी तरवारा ॥
होदा नागल हाथीया, जाषोड जैयारा।
सोनै साकत साकुरा, झलको 'तल तारा'[23] ॥
नरषै ऊभी नारीयां, अण पार अटारां।
गावै मीठा गीतडा, थह मोर थटारा[24] ॥

---

१ ख भमराणा। २ ख. लोयण। ३ ख कुरगारा। ४. ख वतीसू। ५ ख दीपिया। ६ ख जाणो। ७ ख ताराग। ८ ख तस। ९ ख झपरा। १० ख हिया। ११ ख अमीयाणा। १२ ख. ठैआरा। १३ ख चरिरा। १४ ख वीणार। १५. ख वैहारा। १६ ख एणा। १७ १८ १९ ख जाणो। २० ख अहैडा। २१ ख वड कर। २२ ख ढाविया। २३ ख तलवारा। २४ ख ठारा। २५ ख ठारा।

तीनु पुरवाली त्रीया, दल माणद टारा।
आया जोवण आदमी, दरीयाव तटारा ॥
ज्या सामौ जोवै जसां कर घाव कटारा।
मुरचा(छा) गत वे मानवी, पड जाय पटारा ॥
जसीयल जो ऊचौ जीऐ[1], असमान फटारा।
जतीया सतीया जोगीया, बक फाड ब(बै)ठारा ॥
चलीया चीत रषेसरा, मुन जोग मटारां।
अमरा चीत अलूझीया, जोवण कज जारारा[2] ॥
इद्र इद्रासण ऊतरे, ताकी धण[3] तारां[4]।
रषीयो इदर राणीए[5], पकड नठारा[6] ॥
झगमगीया मन देवता, सरगापुर सारां।
लाष पचासा लूझीया[7], हल दो वडहारा ॥
झली मुसाला जोतसू, अधरात दोफारा[8]।
भगतण पातर कचणी, ढोलण ढुलारा ॥
गावै वहतो गायणी, मह राग मलारा।
दाम हजारा दीजीयै, मोहताद मझारा ॥
बध जलेबा बेवडो, लूझी लष लारा।
बाजै जेहड वाजणी, घूघर घमकारा ॥
मुहडै आगै मालकी, कहती षमकारा।
घण वण आवै ढोलीयै[9], लग थगथी लारा ॥
मद-चकीया[10] म्यारामजी, तुम होय तैयारा[11] ॥ ४९

१२. बात (द्वावैत)-यण तरै जमा मयारामरै[12] डेरै आई। जाजम, गदरा वचा(छा)यता कराई। सहेलीया आय गदरा विराजी। म्यारामजीरी विंदगी माजी। दुहा, गाहा पहेलीया कही जतरै रात आधी गइ र आधी रही।

मालू कहै—

दुहौ- राता हव थोडी रही, वाता वह विसतार।
साता ऊठ सहेलीया, लुकौ कनाता लार ॥ ५०

---

१ प जोग्रो। २ प कज जारा। ३ ख. घणा। ४ ख नारा। ५ ख राणीये। ६ प निठारा। ७ ख लूडीया। ८ प दोकारा। ९. ख ढलियो १० प ऊकीया। ११ ख तयाग। १२ प मायारामरै।

दुहौ– सारी ऊठ सहेलिया, गई आपरी धांम ।
धणनै[1] लीधी ढोलीयै, माणीगर म्यारांम ।। ५१

१३. वारता (द्वावैत)– म्यारामका र जसाका मेला[2] हुआ, चकवी र चकवौ भेला हुआ । घणा दिनाको विरह भागौ, घणा आणदको धौरौ लागौ ।

दुहा– हीडै लागी हीडवा, कामण जाणे[3] काय ।
जसीयां हीडै जोमसू, म्यारारै अग माय ।। ५२
वादल कालै वीजली, पवै मली कर पांत[4] ।
म्याराजीरै अग मिली, झलक[5] जसा अण भांत[6] ।। ५३
लपटीजै 'तरसू लता'[7], सावण मास सवाय ।
जण वध लपटांणी जसां, मांणीगर अग माय ।। ५४

जसानै रोनी मु णनै मालकी कहै

क्मितूरी अरजी करं, राज ! म कीजो रीस ।
माचै थांरै म्यारजी, आचै(छै) वाजै ईस ।। ५५

मयारामवायक—

पागै चोटौ पाक छै, लागै ठेह लगीस ।
माछै[8] जणसूं मालकी, आचै[9] वाजै ईस ।। ६६

मालूवायक—

अलल वचेरा ऊपरै, भूल न चढीया म्यार ! ।
थैटु रहीया थाहरै, टैगण घोडा तरार ।। ५७ *

मयारामवायक

मे तो टैगण मालकी, जसीयलनै जाणाह ।
अलल वचेरा[10] ऊवटा[11], 'त्यार हुआ ताणाह'[12]।। ५८
अलल वचेरा ऊमदा, फेरवीया अणफेर ।
मत दुप मानै मालकी, दोरम अणचत देर ।। ५९

१४. वात– हमै मयाराम न जमा रग-राग माणै छै । जकानै इद्र भी वपाणै छै । रग-रागरो घोरौ लागो छै । विरह भौलौ भागौ छै ।

---

१ ख घणानै । २ ख मेल । ३ ख जाणो । ४ ख मालिक र खात । ५ ख झलक । ६ ख मात । ७ ख '–' ख तर झूलता । ८ ख माचै । ९ ख आछै । * ५७, ५८ तथा ५९वें दूहोंके विषयमें पुस्तकमें निम्न लेख उद्धृत है—'तै दूहा सरव गूढा छै । पण दुहा दुहामें वात वगरी छै । 'टैगण' कैहता हसतणी असत्री जाणणो । 'अलल' घोडा कैहता पदमणी, चत्रणी असत्री जाणणो । १० ख वछेरा । ११ ख ऊमदा । १२ '–' ख प्रतिमें यह अश नहीं है ।

दुहौ– के भगतण के कचणी, पातर ढौलण पूर ।
गावै नटवा गायणी, हुसी[1] म्यार हजूर ।। ६०

१५. वात (द्वावैत)– किसतूरी, चपकली, लवगा, लाली, चदू, चमनू, चोकली, मालू ऐ आठ ही अपच(छ)रा गावै बजावै छै, म्यारामजीनै रीझावै छै। महीना वारै होय गया छै, म्यारामजी मैलामै रत होय रहा छै। पाचौ(छौ) आसाढ मास आयौ छै, आभौ वादला चा(छा)यौ छै जद ब्रामण लावै दुहौ लप मेलीयौ छै, म्यारामजी हाथ झेलीयौ छै ।

दुहौ– जल वूठा[2] थल रेलीया, वसधा नीलै वेस ।
मागौ सीषा म्यारजी, देषा मुरधर देस ।। ६१

१६. वारता– म्यारामजी मारवाड आवणरौ मतौ कीधौ, तबू गुडदावणरौ हुकम दीधौ । भार वरदारी[3] आगै चलाइ छै, घोडा पर साकता झलाई छै । वेलीये कमरा बाधी छै, पाचा(छा) पधारणकी सुरत[4] साधी छै । म्याराम ऊठणकी धारी सै[5], जसाकै मरणकी त्यारी छै । कुवरजी राषीया नही रहै[6] छै, जद मालूडी दोय दुहा कहै छै—

दुहा– म्याराजी ! थे मुरधरा, वालम जाय वसाह ।
आप वहोणी एक दन, जीवै नही जसाह ।। ६२

जसावायक—

दासी कुण जीवै दिवस, घडी न जीवू एक ।
पल-पल जीवा म्यारजी, दिल सुध थानै देक ।। ६३

मालूवायक—

म्यारा ! पासी मोहकी, आची[7] नाषी आय ।
पहला हु हीज[8] पातरी, लाई महल वुलाय ।। ६४
म्यारा ! जासो मुरधरा, चो(छो)ड र जसानै चै(छै)ल ।
लाडा था वण लागसी, मानै षारा मेल ।। ६५
अलवल(र) रहणौ आप, थेटु वचना थापीयौ ।
मुरधर जाणो माप, मन सुध करजै म्यारजी ! ।। ६६

मयारामवायक—

मुरधर जोवण मालकी,आ(आ)सा चो(छो)णी जासाह ।
आवण[9] तीजा ऊपरै, आमा तो आसाह ।। ६७

---

१ ग हुसी । २ ग वूठा । ३ ग तरदारी । ४ ग सूरत । ५ ख छै ।
६ ग रही । ७ ग आछी । ८ ग हुहीज । ९ ग आवण ।

दूहा– मालू आपै म्यारनै, गल-गल अरजी गैर[1]।
आप परीदो ऊठ चौ[2] (छौ), जसा परीदै जैर ॥ ६८

जमावायक

मै तो वरजी मालकी[1], सरजी प्रीत[3] समात।
अरजी नह[4] मांनै अवै, ज्यारी दरजी जात ॥ ६९

मयाराम[5] वायक—

सुंण मालू ! थांरी जसा, वोलै वोल कुवोल।
अण वौलारै[6] ऊपरै, जासां अलवल थौल ॥ ७०

मालूवायक—

म्याराजी लीही मूआ, जीभांरा घण[7] जाण।
जण कारण[8] थानै जसा, वोलै वाण कुवांण ॥ ७१
घना घना समजावीया, चना चना कर चाव।
वना न मानौ वीनती, आप-मना ऊमराव ॥ ७२

जसावायक—

म्याराजी ! विरचौं[9] मती, प्याराजी[10] कर प्रीत।
न्यारा जी रहता नमंष, मो वैराजी चीत ॥ ७३
म्याराजी थे[11] सुरधरा, पातरीयाकी[12] पोत्र।
चालौ ये आ चो (छो) डनै, जसीया जीवन जीव ॥ ७४
अरज करां अलवेलीया[13], पला झेलीया पाण।
म्याराजी मत मेलीया (या), पमगां सीस पलाण ॥ ७५

१७ वात (द्वावैत)– गावणी-वजावणी वध हुई, म्याराम रीमसै अव-कथ हुई। जरा मालकी वोली, हीयैरी वात पोली। आप सारू दारूकी भटी कढाइ छै, लाप रुपीयाकी टीप चडाइ छै, लाप लापका लागा छै मुमाला, जीका तो अरोगै[14] दोय प्याला। आप सारू भटी कढाइ छै, आपकै तो मार-वाडकी चढाइ छ। जण दारूका दोय पयाला लीजै, जसानै मुनाथन[15] कीजै।

दुहौ– ऐक भटीरै ऊपरै, लागै रुपीया लाप।
जकण भटीरो म्यारजी[1], छैल दुवारौ चाप ॥ ७६

---

१ ख गैल। २ ख ऊठवौ। ३ ख प्रति। ४ ख. नहीं। ५ ख मायाराम। ६ ख अणवैणौ। ७ ख घणा। ८ ख करण। ९ ख विरचौ। १०. ख थारा जो। ११ ख प्रतिमें नहीं है। १२ ख. पातरियाको। १३ ख अलवेलिया। १४ ख आरोगै। १५ ख सुनाथ।

मयारामवायक—

मो लकानै मूदडी, अबल वतावै आण।
ऐक भटीरै ऊपरै, कोड करु कुरबाण ॥ ७७

१८. **वारता (द्वावैत)**– जिण दारूको मालू प्यालो भालीयौ, ऐवौ ऐराक चाक[1] प्यालामे घालीयौ[2]। प्यालौ भर म्यारामजी नपै आई, मुजराकी सडासड लगाई।

दुहौ– ऐक पयालौ ऊमदा, अत चौषौ ऐराक[3]।
मालूरी मनुआररी, छैल अरोगै छाक ॥ ७८

१९. **वात**– एक मनुहार मालू कीधी, अब सीसो दारूकी जसा हाथ लीधी।

दुहौ– जोडै कर आषे जसा, प्रलब[4] सजे पोसाक।
म्याराजी! मनुहारकी, छैल अरोगै[5] छाक ॥ ७९

२०. **वात (द्वावैत)**– अब सातु ही सहेलीया[6] ऊठी, रग-राग रूपकी वूटी[7]। मा'सू मालकी काइ[8] सवाई, मे वी आप आगै गाई वजाई। सातु ही सहेलीया[9] सात प्याला भरीया, जीसू म्यारामजी होय गया हरीया।

दुहौ– सातु मिल[10] सहेलीया, माडा कर मनुहार।
मद पायौ म्यारामनै, ऊगायौ अणपार ॥ ८०

२१ **वात**– वेलीया कमर वाधी छै, भार वरदार लादी छै। घोडा, ऊठ भीजै छै, मदवो जी मेलामे रीजै[11] छै।

दुहौ– कैफ मही चकीयो[12] कुवर, माणीगर म्याराम।
वेली भीजै वाहिरा, भीजे साज तमाम ॥ ८१
सेठौ कीधो साथ धण[13], म्यारौ मैहला[14] माय।
लछ(ज)काणौ पडीयो लथौ, कारी लगी न काय ॥ ८२
म्याराजी! थे मुरधरा, जाता किसै जरूर।
लुचो नगावै[15] लाधीयो, दोढी कर दो दूर ॥ ८३

२२ **वात**– मालू दोडी आयनै कह्यौ—म्यारामजी फुरमावै छै-हता ज्या डेरा कर दो, घोडा, ऊठ पाचा(छा) ठाणारा ठाणा वाध दो।

---

१ प्र दारु। २ प्र ढालियो। ३ प्र ऐयरु। ४ प्र पलव। ५ प्र आरोगै। ६ प्र सहेल्या। ७ प्र वूठी। ८ प्र कोई। ९ प्र सहेल्या। १० प्र मिली। ११ प्र रीझै। १२ प्र छकियो। १३ प्र धण। १४ प्र मैना। १५ प्र नगावै।

गीत

जेले तुरगा रेसमी डोरां वनातां जडाव झीण[1],
फवे[2] फीण हातु माग सांकरे फेराव[3]।
पना मारू गाहांणी - जलाला[4] स्यारो चले ओढा[5],
राग रहे घोलो दोढा घडो मारू राव ।। १
जोवे जुल सहेली हवेली सीस चढे जोषी,
तारीफे अनेकां गोषा वेठी रूप ताम।
देषे साथ जसांरो ज(झ)रोषै माली जा(झा)लो[6] दीयै,
मारे[7] डेरे हालो वींद रसीला म्याराम ।। २
आसा जडी(झडी)लगासा डुवारै सूध भीन आसां,
राजलोका रमासां हुलासा सुने राट[8]।
मीठा वोलां देती थगा साग्ग भेला भारी,
वींद राजा हालोनी ओ जोएे थारी वाट ।। ३
करे कोडजाडा (दा) दोढी[9] षचाणा कनाटा कार,
रमासा हुलासा माडा भारी रेण[10] राज।
मारू गाढा ही चो[11] लुलुहीयारो हार जेम,
मारू जस-म्यारा अवार थीग देसा पधारो लाडा आज ।।४

२३. वात (द्वावैत)–जद वेली डेरानै वलीया[12], जसाका मनोरथ फलीया हेमराजकौ घोडौ कूदै छै, दुसमण आपीया मूदै छै। पाच पाच वरछी ठेकै[13] छै, अलवल(र)की सहेलीया[14] देषै छै।

दुहा– केइ नरषै[15] कामणी, आडै गुघट आय।
हैवर कूदै हेमरौ, पायक नट ज्यू पाय ।। ८४
डेरा दिस वलिया दुझल, अलवलीया[16] असवार।
हेम कूदावै हैवरौ[17], अलवल(र)रै[18] वाजार ।। ८५

२४. वात(द्वावैत)–पाचा(छा) डेरा हता ज्या हुआ छै, पकवानाका थाल डेरानै वूआ[19] छै। पाचा[20] रग-राग वरताणा, मालूका हुआ मनका[21] जाणा।

---

१ ख जीण। २ ख फले। ३ ख फरोव। ४ ख जाला। ५ ख वोढा। ६ ख जाली। ७ ख मोरे। ८ ख राह। ९ ख दोडी। १० ख रेया। ११ ख छो। १२. ख वलीया। १३ ख टेकै। १४ ख सहेल्या। १५ ख नरेखे। १६ ख अलवलिया। १७ ख हैवरो। १८ ख अलवलरै। १९ ख हुआ। २० ख पाछा। २१ ख मन।

दारूको भड लगायो छै, जसा भी पीधो छै, म्याराने पीयो छै। दारूका प्याला लेवै छै, मालकी ग्रोलभा देवै छै। ग्रो वरसात ग्रायो छै, चै(छै)ला मनचायी[1] छै। ग्रा रात नही छै जावण की, ग्रा रात छै घरा ग्रावण की। ग्रो वैरी वरसालौ ग्रायौ, ग्राप जावणको फुरमायो।

जसावायक—

दुहा– वरसालो वैरी वू(हू)ग्रो, वैरण दूजी वोज।
माथै ग्राई म्यारजो, तीजी वैरण तीज ॥ ८६
वैरी चोथा वादला, घण[2] पाचमो घुरात[3]।
थटी ग्रधारी थाग विण, छटी वैरण रात ॥ ८७
सारग वैरी सातमा, भीठा गावै मोर।
ऊवा[4] वरसै वादली, लूवा-भूवा लार ॥ ८८
नवमी ग्रा वैरण नदी, जदी जला ऊभेल।
दसमौ वैरी दीवलो, तण सीचोजै[5] तेल ॥ ८९
मद वैरी ग्रगीयारमो, जण वण केम जीऊ।
वोलै वैरी वारमा, पपीया पीऊ[पीऊ] ॥ ९०
तेहडो वैरी तेरमो, जोवन चढोयो जोर।
चदो वैरी चवदमो, कामणीया चहु कोर ॥ ९१
पाका वैरी पनरमा, वलीया फूला वाग।
साचौ वैरी सोलमौ, रस बरसावै राग ॥ ९२
वरसालोमै मत वूभौ, वादल वादल वोज।
मानै था विण म्यारजी, कुण खेलासी तीज ॥ ९३
हीडै सहीया हीडसी, वादलहीमै वीज।
मभ दोऊ हीडा म्यारजी, तुरी खेलाजो तीज ॥ ९४
पोसाका कीजो प्रबल, लीजो दारू लार।
मुहगो(डो)कीजो म्यारजी, तीज तणौ तहवार ॥ ९५
साथै लीजो साथीया, प्याला भर पाजो'ह।
महिल जसानै म्यारजी, हीडा हीडाजो ह ॥ ९६
दूजी मारी देषसी, सारी साथणीया ह।
म्याराजी मछकावता, हीडारी लणीयां ह ॥ ९७
दूजी मारी देषसी, साथणीयारो साथ।
प्याला थानै पावसा, घाल गलामै बाथ ॥ ९८

---

१ ख. छायौ। २ ख घणा। ३ ख. घुरत। ४ ख ऊबा। ५ ख सी छीजै।

दूजी मारी देपसी, साथणीयांरो संग।
हीडां थे मे हीडसां, अगा भीजे अग ॥ ९९

कूजां[1] दारू ले'र कर, सहीया घेर सुजांण।
फेर पयाला पावसां, दे'र गलारी आण ॥ १००

हीडारी लीजो हलक, राजद कीजो रीज।
देपीजो ऊभा दुला, तीजणीया नै[2] तीज ॥ १०१

हीडा रेसम हेमरा, लटकै हीरा लूव।
तीजडीयां हीडै तठै, जण लूवां विच झूव ॥ १०२

तरह-तरहरा तायफा, सजे कहरवा साग[3]।
ऐ'वे हीडा आवसी, मोजां लेसी माग ॥ १०३

कल-हल[4] करसी केकीया, वल-वल षवसी वीज।
म्यारा अलवल[6] माझली, तण पुल रमसा तीज ॥ १०४

वादल गल-गल वरससी, थल-थल नीर थटाव।
तिण पुल जोजौ तीजरौ, अलवल(र) रो औचा(छा)व[7] ॥ १०५

पांणी षल-हल[8] परवता, तल-गल सभर तलाव।
काली मिल-मल कांठला, अलवल झुकसी आव ॥ १०६

साकल षल-हलसी घरा[9], वल-वल हल-वल वाज।
भल-हल सावल भलकतां, रमजौ अलवल(र) राज ॥ १०७

हीडा जासा हींडवा, पैगा पेलासांह।
वाजा तासा वाजतां, आवासां[10] आसाह ॥ १०८

हीडां जासा हींडवा, आसा पूरासाह।
आसा दारू ऊमदा, पीसा अर पासाह ॥ १०९

मारी थारी म्यारजी, जोवणजोगी जोड।
अलवल(र) जसीया ऐकली, चं(छं)लम जावौ चौ(छौ)ड ॥११०

मारू मा मनुआरकौ[11] पीवो दारू पूर।
माफ कराडौ(औ) म्यारजी, मुरधररौ मछकूर ॥ १११

वजसी थाढौ वायरौ, गजसी मधुरौ गाज।
वण जद तजसी ढोलीयौ, सजसी जोग समाज ॥ ११२

---

१ ख कूजा। २ ख प्रतिमें नहीं है। ३ ख. सग। ४. ख जे। ५. ख कलहक ६ ख अलवल ७ ख औ चाव। ८ ख जळ-व्वळ। ९ ख वरा। १० ख आवसा। ११ ख मनुहारकों।

चहु दिस उमघीयो[1] झड-चवण, मचीयौ घण चत्रमास[2] ।
कीवें कसीयो ढोलीयो, पीय[3] रसीयौ नह[4] पास ॥ ११३
सगरा[5] भीजै साथीया, अगरा कपडा ईज ।
माणो रगरा मालीया, तरा अगरा तीज ॥ ११४
श्रामण मास सुहामणो, घणौ मेह घण गाज ।
तण रतमै जावण तणो, मुणौ मतो माहराज ॥ ११५
नदीया नाला नोझरण, पाणी वाला पूर ।
बरसालारा बादला, काला वरै[6] करूर ॥ ११६
लष ग्रहणा वप लपटजो, राज अपटजो रीज ।
दारू आसौ दपटजौ, तुरा झपटजौ तीज ॥ ११७
भमरा थानै भालसा, चमरा ढुलता चै(छै)ल ।
आजौ डमरा 'अत रररा[7]', गुमरा घरीया[8] गैल ॥ ११८
काली वरसै काठला[9], सैहरा वा(पा)ली सोभ ।
मतवाली रत नर-मना, लै हरीयाली लोभ ॥ ११९
साथे लाज्यो सूषडा, रैण दिराज्यो रीज ।
आज्यौ साजा ऊमदा, तरण रमाज्यौ तीज ॥ १२०
महि चा(छा)इ मामोलीया, बादल चा(छा)यौ वोम ।
वेला चढ चाया[10] व्रचा[11], जसीयल चा(छा)ई जोम ॥ १२१
वरचा(छा)[12] चढसी वेलडी, नदीया चढसी नीर ।
नजरा चढजौ माणजौ, साहिब जसा सरीर ॥ १२२
बादल जम कूजा बहै, काठल जेम[13] कुराज ।
मदरौ झड म्यारामरै, ईन्द्र झडरूपी आज ॥ १२३

२५. वारता (द्वावैत)– म्यारामजीनै दारू पायो छै, अफरौ उगायो छै । म्यारामजी आषा मीचै छै, कामका थाणा सीचै छै । जसानै भी दारू आयो छै, कामको मुसालो षायौ छै । जसा मालूनै जगावै छै, मागै ज्यो[14] मगावै छै । म्यारामजी कैफमै घोराणा, मालूनै ग्रहणा[15] थोराणा । म्यारामजीनै जगावै मालू, तो थाकौ जनमकौ दालद पालू ।

---

१ ख उमधीयो । २. ख. चतमास । ३. ख पिय । ४ ख न । ५ ख सगरां । ६ ख. वेर । ७ ख. अतणा । ८ ख धरीया । ९ ख काठला । १० ख छाया । ११ ख अछा । १२ ए बरछा । १३ ख केम । १४ ख ज्या । १५ ख ग्रहण ।

मालूवायक—

अण दारूरै ऊपरै, वैरण पडजो वीज।
जसडी थू दीसै[1] जसा, आज रहेली ईज ॥ १२४
कैंफमही च(छ)कीयौ कवर, नैणी फरगी नींद।
जागै नह[2] मासू जसां, वैरण थारो वींद ॥ १२५

जसावायक—

अण दारूस् हे अली[1], मारू भी[3] दुष पात।
सो दारू किण विध सहै, ज्यारी कारू जात ॥ १२६

मयारामवायक—

लाली यक कावल लुली, साली मौ उर सूल।
अण काली धणनै अवै, माली[1] कर माकूल ॥ १२७

मालूवायक—

कुण थांनै कारू कहै, मांकै थे मारू।
दारूकी पी धल[5] [धण] दषै, छैकी अण सारू ॥ १२८
जसीया मद पीवौ जदचा, राजद मतरी वौह।
औ दीवौ घर आपरै, जिण दीठा जीवौह ॥ १२९
अतरौ अवगुण आपमैं, मोटो यक म्याराम।
आष न जागै आपरी, कामण जागी काम ॥ १३०
जसा अपछर जनमकी, जसा आभ की झाल।
जसा हुस थाकै जसी, भोगौ नी भूपाल ॥ १३१
घम-घम वाजै घूघरा, वाजै चम-चम वीच(छ)।
तम-तम यम मालू तवै, म्यार(म)चसम म मीच ॥ १३२
पैहला दारू पायनै, काढै वचन अकाज।
म्यारी आष मालकी, अलवल रहा न आज ॥ १३३

२६ वात (द्वावैत)- अलवल(र)ऊभा रहा नही, थाका वायक सहा नही। मे आया वचनाका वाधा, जसाका माजना लाधा। पूरवली प्रीत पालता ता(था), अतरा दन रीम टालता ता(था)। द्व ढाडमैं नीपजै सो ढाढी, मे तो जमा आजमू चा(छा)डी। थाकी जसा सरीपी उगै(ठै) लापा परणा, माकी सोभा मे काई वरणा, मानै तो अनेका न्यौरा करै छै, मारै यण विना काई नही सरै छै ?

---

१ ख दीजे। २ ख न। ३ ख जी। ४ ख मालो। ५ ख घल।

मायूराम

दुहौ– जसां सरीखी जगतमें, महल नहीं म्याराम।
पण कह्यौ म ऊथपो, करो कहे सो काम॥ १३४

२७. वारता (हावंत)– जसीया करीयक छे, पापनै भी उधारे जसीयक छे। पतीसासोको भमर, गमारी सिमर। भूमलीया नैणाकी, रागरतसा वेणाकी। मेहको ममोली, पावसाको बीज, होतीको[1] झाल, सावणकी तीज। केलकी गरभ, सोनैरो षभ, सीलकी सती, रूपकी रभ। ताठी मरग, मगराकी मोर, पाबासरको हस, मनकी मोत, मनकी चोर। जोबनको जडी, होयाको हार, परमीको ठाडो, रूपको पवतार। काजालीको साठी, गूजाली को भलको, गैलाकी कल्याण, हीडाको[2] हलको। मुगलरो मीमचो[3], वषागतरो भावो, सघरो गोटको[4] प्रेमरौ[5] प्यालौ। सोलमो सोनो, राजहसरो वचौ, बावनो चदण, रेसमरौ गचौ। कसतीयारी भूबकौ, मोतीयारी लू ब, हीरोरो[6] लसो, सरगरी[7] भूब। सनेहरो पालषो, हेतरी थाणो, मनारी नरपणो, पेमरो कमठाणो। सरदरो पुलगरो पद, पासाडरो भाण, जसीयाकी तारीफ, कुपंका वाषाण। मदवीको मतवौलो, हाथकी हार, तीजणीयाको तुररो, रूपकी गुसार। काषको लाडू, मोतीयाको गजरो, जलातीयाको धको, जसीयाको गुजरो। 'कलपचच(स)री डाल'[8], पारसरी टोल[9], मेहरी महर[10], दरीयावरी छौल[11]। तावडैरी छाहि[12], पाथारेरो[13] दोयो, सीयारारो ताप, जका जसा घणा जुग जीवौ। हरषरौ हीडो, उदेगरी भेट, जीवरो जतन, इन्दरी भेट। किस्तूरीरो माफो, केसररी क्यारी, रूपरी रूषडो[14], रच(स)ना होमारी। भमरारो भणणाट, डीलारो[15] दोली[16], दीपमालारा दीर, भाषररी होरी। गुलाल सहो गढी[17], पाषारौ पाणी: हीरारो हार[18]। मढुणाको भलभाटो तेजको पबार, जसोयाको जोवणो वा ससारको सार। 'पातारो पाणी'[19], कडीयारो केहरी, हालरो हस, भू पारी भमर, कुरजरी नस। झलकारी नागण, पलकारी कुरग, कठारी[20] कोयल, सोनेरी पाग। पणीयाला नैणामे काजलको रेषा, पगरतरा ठासा चदामे पेषौ[21]। सीदुरकी

---

१ त होतीको। २ त होडाको। ३ त. मसिचौ। ४ त. गेढको। ५ त. पेमको। ६ त हीरोरो। ७. त. सणरी। ८ त –' त पतिमे दरीयावरी छौलके बाद यह मलोत है। ९ त. डोट। १०. त मेहर। ११. त. दरीयावरी छैत। १२. त छोहि। १३ त. सथारोरो। १४ त रखडा। १५ त. डीलारो। १६. त डोली। १७ त गूडौ। १८. त हारौ, पोतारौ पाणी। १९. त '–' त पतिमें नहीं है। २०. त कंठरी। २१ त. पेखा।

वीदो भालूमै भलक, कालीसी काठलमै चदोकन चलकै। असोभता ऊतारे, सोभता धारे। वाल वाल मोताहल पोया, जाणे नवलाप नपत्र एकठा होया। वाजणा जाभर पैरीया, घूघराका सुर गैरीया। अण भातकी जसीया, जकाकू चो(छो)डो चौ[1](छौ) रसीया। माणोनी म्यारामजी, थानै दीनी छै रामजी। लो नीं लाडीका लावा, पीचै(छै) करसौ[2] पच(छ)तावा। जावणकी वाता जाणा छा, मतवाली कू नही माणा छा। वरमालाका वादल ज्यू, ढालका जल ज्यू, भापरका पाणी ज्यू, वाटका दाणी ज्यू, चे[3](छे)ह मती चा(छा)डौ, थोडौ सो मन करो गाडौ। भाली वागा पडौ, थोडा रहौ भलीया। पिण थामै किसो दोस, था कै सगी पलीया।

दुहौ– पलीवालरी पोत ज्यू, ऊठौ भाटक अग।
माणौ रग म्यारांमजी !, आणौ अग उमग॥ १३५

२८. वारता (द्वावैत)–वरसायत आवणकी धारी छै, आपकै जावणको त्यारा छै। जमी नीला सिणगार धारसी, जसा सिणगार उतारसी। मोरीया महकसी, डेडरा डहकसी, भिलींगन भणकसी, भमरा भणकसी। सीतल पवन वाजसी[4], मुधरौ मेह गाजसी। भापरैरी छीया लागसी, 'ग्रीपम रित भागसी। वीजलीया भलकसी'[5], भापरासू वाला पलकसी, पावसकी पोटा पडसी, इद्रकी असवारी चडसी। हरीयालीया चूटसी[6], नदीयाका वध फूटसी, जण रतमै आप कमरा वाधा (धौ) छौ, आपकै कोइ[7] मासू पला भवकौ वाधौ छौ। वरसायतकी आ रीत सुणौ—

चो(छो)टौ साणौर[8] गीत

रहीया ढक गिरदरी छीया रसीया, वसीया बुगला पावस वास।
जण पुल माय तजे धण जसीया, वालम[9] क्यू कसीया वर हास[10]॥ १
गीत– दादुर मोर पपीया नस-दन, सोर[11] करै घण[12] घोर सन्ताप।
बादल लोर षवै बह वीजा, मेहा घोर करै अणमाप॥ २
वरसै सघण षलल वजवाला, वसधा जल थल एक वूग्रा।
अलवलहू तज कण पुल अलीया, हलवल कर क्यू त्यार हुग्रा॥ ३

---

१ ख छोडं छे। २ ख करस्यौ। ३ ख वे। ४ ख वागसी। ५ ख '–' यह पदावली ख प्रतिमें अप्राप्त है। ६ ख छटसी। ७ ख कोइ। ८. ख शाणोर। ९ ख वालक। १०. ख सात। ११ ख सारे। १२ ख घणा।

सरवर कह रस भर जल सिलता, तरवर षपसर ऊत रलतत्थार ।
मुरधर कमर[1] कस म्यारा, हर घर मत कर कत हमार ।। ४
पग-पग कीछ[2] अथग लग पाणी, मग-मग डग-डग पथग झरै ।
जगभग नगा सुरग अग जसीया, धरा लग पग अग करग धरै ।। ५
चरजी रहौ रहौ चा[3] (छौ) नौजी, वरजी करजी जोडे वाम ।
भौगी दरजी दिन भानौजी, मानौजी अरजी म्याराम ।। ६

दुहा– म्यारा ! थारा मुलकमै, वगी कासू चीज ।
वार वार मुरधर वहो, राज किसै गुण रीज ।। १३६
मालू ! मारा मुलकमै, चगी वसता च्यार ।
नर नारी औ ठान षग, तीषा वै तोषार ।। १३७
मालू ! थारा मुलकमै, कासू भला कहौ ।
नर नागा नारी नलजा, रीजे केम रहौं ।। १३८
म्यारा ! मारा मुलकरा, वागारा वाषाण ।
आलीजा सुणजो अबै, श्रवणा कथन सुजाण ।। १३९

वागारा वापाण-छन्द पधरी

वन सघन लसत मनु घन वसाल, सचरै नाहि रवि-रसमरास ।
जग-ताप हरत अतिसुषद छाहि, लष लिलत छटा मुनगन लुभाय ।।
केली कदब करुना असोक, सहकार बकुल लष मिटत सोक ।
जातीफल जाबू नालकेर, वट पीपर महि व्है[4] हरत हेर ।।
पाडर पुन रायन तरु तमार, तहा सरु बकायन सरस तार ।
चदन अगर तोया[5] कुन्द चारु, सीताफल चपक अरु अनारु ।।
कचनार नागलितका लवग, थल कोल मल्लिका मिलत सग ।
केतकी जुही केतक रु जाय, चबेल माधवी वेलराय ।
केसर मनौग क्यारी जु कीन, रितराज वसै नित चिब[6] नवीन ।।
प्रफूलत हिम गुलम ज नव प्रकार, थल सकल हरित सुष करत सार ।
मकरदमजुरी स्ववत[7] पुज, अलिमाला झूमत गुज-गुज ।।
डहडहत कुसम पूरत पराग, पल्लव दल[8] मिल जोव जाग ।
रवमुषी दावदी पुन पलास, नाफुरमा परगस आस पास ।।
सोभत मन्द[9] सीतल समीर, कोकला कुहक क्रत सोर कीर ।
वानी अनेक कुजत वैहग, नाचत मयूर आनद अग ।।

---

१ ख कवर । २ ख कीच । ३ ख चो । ४ ख महि है । ५ ख निया ।
६ ख छिव । ७ ख स्वतत । ८ फल । ९ ख मत ।

गव धनुष ससक चित्रिग वराह, म्रग महष सुरभ आवरत चाह ।
आनद मइ[1] जहि अवन आज, राजत है मानहु रामराज ।। १४०
नभ चुवत सृंग गिर कलस ऊध[2], उपमा जहि[3] सोधृत सुकव बुध ।

२६ बात (द्रावैत)–यसा तो माका बाग छै, इसोई संजीवन राग छै। मारवाडकी भूपौ, देस जठै अनको न रत्तौ लेस । जकरा मुलकका जाया, मानै पजावण आया ।

दुहा– कोड गुना कामण कीया, माफ कीया महाराज ।
म्याराजी चोडौ[4] मती, बाहि-ग्रहां की लाज ।। १४१
मे तो अणसू मालकी !, पाली आची[5] प्रीत ।
अतरा दन रहीया अठै, बाहि-ग्रहांकी रीत ।। १४२
जहर-जसा मांनै जसा, वकीया षारा वैण ।
जकण जसांसू मालकी ! नमष मिलै नह नैण ।। १४३

जसावायक

रीसां बलती राजनै, वकीया षारा वैण ।
मारा थानै म्यारजी !, नरष न धापै नैण ।। १४४

मयारामवायक

पग पग ऊपर पदमरणी, कीना नोहरा कोड ।
कामण जसीया कारणै, चलीया ज्यानै चोड[6] ।। १४५

मालकीवायक

अण सूरत अण अकलनै, करै न नोहरा कोय ।
मोलौ लोहो[7] मालकी, ज्यो गर चाढ मरोय ।। १४६

जसावायक

अगलै भव वाली अबै, पालू माली प्रीत ।
मन भावै ज्यू म्यारजी !, चाडौ[8] 'रीस नचीत'[9] ।। १४७
नयण लगाडे[10] नेहरा, वयण दिराडे[11] वल ।
माडी अब क्यु[12] म्यारजी!, चालणकी[13] हलचल ।। १४८

वात दरजी मयारामरी समाप्त ।

+++++ ++++++++++

१. ख मई । २ ख अध । ३ ख जाहि । ४. ख. छोडौ । ५ ख आछी । ६ ख छोड । ७ ख लोहा । ८ ख छाडौ । ९ '–' ख री मन चीत । १० ख लगाहे । ११ ख. दिराहे । १२ ख क्यू । १३ ख चलणकी ।

राजा चंद-प्रेमलालछीरी वात[१]

॥६०[२]॥ कथा ॥

आभा[३] नगरी चदो राजा, गिर नगरी, प्रेमलालछी ।
सौ[४] जौगे[५] विवाह हुसी; अबै मलणौ[६] देवरे[७] हाथ ॥ १

वारत्ता—राजपुर गाव, तठै रजपुत एक घरगे धणी वसै । तिणरी नाम रुद्रदेव । तिण दवरे सजोगै दोय[८] अस्ती[९] परणीयो, सुषमै रहै । पिण सोकारो[१०] वेध[११] निणसु राति[दि]नि[१२] वढती[१३] रहै । कदे क मेलि[१४] पीण होय[१५] जाय । तरै[१६] रुद्रदेव आपरा सुष होणनै दोनु[१७] ही बैराने घर जुदा जुदा वणाय दीधा । वडी बहुरै बैटो[१८] हूवै[१९] न छै । सो कामधेन ले दीधी । तीका दूझै[२०] । पिण लुगाई[२१] बेहु[२२] जणी विद्या सोषी थी । तिका बालकपणै अतीत मीलियो[२३] थो, तिणसु वीद्या[२४] पाई[२५] । पीण[२६] भरतार जाणै[२७] नही । दोहु[२८] जणी रैह[२९] छै ।

एक दीन बैऊ जणी पाणी भरणने चाली । तरै धणीनै[३०] कह्यो । लहुडी कह्यो—म्हारो डावडी पालणे[३१] माहे सुतो[३२] छै, देषज्यो, जागे तो[३३] रोवण मत देज्यो । वडी वहु[३४] कह्यो—चोपा[३५] आवणरी[३६] वेला हूई छै । गाइ आवै तो टोघडानै[३७] चुघण मत देज्यो[३८] । ईसि भात भला इ बेहु जणी पाणीनै गई । तिसै डावडी जागीयो ने रोयो[३९] । तरै[४०] रुद्रदेव बालकनै पालणा माहेसु[४१] उरो[४२] लिनो । तिसै गाइ पीण आई ।[४३] तरै[४४] टोघडो[४५] चुघण लागो । तरै वालकनै[४६] पालणा माहे सुवाण्यो । आप टोघडानै[४७] जुदो[४८] बांधीयो । गायनै[४९] बाधे तोसै[५०] दोनु जणी जल ले आई[५१] ।

---

१ २ ख मे नही है । ३ ख अभो । ४ ख सो । ५ ख जोगे । ६ ख मेलो । ७ ख देवरै । ८ ख वोय । ९ ख अस्त्री । १०. ख. सोकारो । ११. ख रहो । १२ ख रात दीन । १३ ख विढती । १४ ख मैलि । १५ ख होय । १६. ख. तरे । १७ ख वोनु । १८ ख. बेटो । १९ ख हुयै । २० ख. वुझै । २१. ख लुगाया । २२ ख बेहू । २३ ख मोलीयो । २४ ख विद्या । २५ ख पाइ । २६ ख पिण । २७ ख जाणे । २८ ख वोहु । २९ ख वेह । ३०. ख. तरे धणीने । ३१ ख पालणा ३२. ख सुतो । ३३ ख तो । ३४ ख वहू । ३५ ख चोपा । ३६ ख आवणरी । ३७ ख टोघडानै । ३८ ख देज्यो मती । ३९ ख रोयो । ४० ख तरे । ४१ ख माहिसु । ४२ ख उरो । ४३ ख आइ । ४४ ख तरे । ४५ ख टोघडो । ४६. ख तरे बालकने । ४७ ख टोघडाने । ४८ ख जुवो । ४९ ख गायने । ५० ख वाधे तोसै तितरे । ५१ ख आइ ।

इतरै[1] लीडो वहू देपै[2]—गायनै[3] वाधे[4] छै नै[5] वालक तो रोवै छै। तरै[6] लहूडी जाणीयौ—धणी म्हारी[7] नही, वडारी गायरौ[8] जावतो कीयौ दुधरौ[9], नै[10] वेटा[11] जिसी[12] मोरात, तिणरो जावतो नही कीधो[13] तो[14] इणनै[15] परी[16] मारणी[17]। भलो नही आपनै[18], तिको[19] दीजै काला सापनै[20]। औ उठासु औपाणो[21] चाल्यौ छै। तरै लहूडीरै माथै[22] ईढोणी[23] थी, तिणरौ[24] मत्रसु साप कालदार कीयौ नै[25] रजपुत साम्हो पाणनै[26] दीडचौ[27]। तिसै[28] वडी दीठो—इण म्हारी[29] मछर करि धणीनै[30] मारणी[31] माडचौ। तरै[32] वडीरा हाथ महै[33] लोटी[34] थी, तिणरी नोलीयौ बणायौ मत्रसु। तिको नोलीयो मापसु विढवा लागौ। तिण सापने न्योल्यै[35] मारीयौ।

रजपुत दोन्यारा चरित्र देपने धूज्यौ ने मन माहे विचारीयौ—इसी वैरा आगे कदे'क 'ऐली साट मरीजमी'[36] तो ईयाने छोडीजै तो भलौ, पिण इयारी सीप विना परदेमनै चालू तो ऐ पोचनै मोनै मारै, तिणसु ईणारा मुढासु हसने सोप दैवै तो दस कोस अदीठ[37] हुइजै नै उठै पइसो कमाय, काई'क सुखी रजपुताणी आणनै घर माडू। इसौ विचार कह्यौ(रच्यौ)। दिन दस आडा देनै दोन्यु भेली वैठो छै, तरै रुद्रदेव वोल्यौ— ऐम साप तो पतली हुई नै घर माहे ऊडौ[38] तेह नही नै पावौ-पहिरचौ जोईजै, जो थै हसने सीप द्यौ तो च्यार मास कठै एक जाय नै, किण हेकरी-चाकरी करिनै च्यार टका ल्यावु। तरे वैरा कह्यौ—घरै वैठा जाडो जीमता, पतली जीमस्या, चोपडी जीमता, लूपी जीमस्या, परदेम कुण जायै। परदेसरो मामलो छै, कि जाणी, जे कदेई मिलणो हुवै ? करम माहै लिपीयो छै, तिको अठे हीज मिलमी। तरै रुद्रदेव अवोल्यो रह्यो।

मास १ वीता वलै रजपूत परदेम दिसावले कह्यौ। तरै दोन्यु[39] मोका वात कीवी—आपा साप-नोल कीवौ तिणही'ज रातिसू इणरो मन घरसु लागै नही छै तो को इयु[40] रहे नही। इणनै गधेडो करा तो दीहा दीहा फुस, कचरौ, फुहडो ल्यावै नै रात पडीया आपणी दाय आवसी त्यु करिस्या। इसो सोच विचारनै दोनु जण्या मतो कीधो। रावतजी! थे परदेस कमावणनै पधारो नै

१. ख इतरे। २ ख देपे। ३ ख गायने। ४ ख वावै। ५ ख ने। ६ ख तरे। ७. ख म्हारो। ८ ख गायरी। ९ ख दुधरो। १० ख ने। ११ ख वेटा। १२ ख. सरीसी। १३ ख कीधो। १४. ख तो। १५ ख इणने। १६ ख परो। १७ ख मारणो। १८ ख आपने। १९ ख तिको। २० ख सापने। २१ ख औपा। २२ ख माथे। २३ ख इढोणी। २४ ख तिणरो। २५ ख. ने। २६ ख. पाणने। २७. ख दोडचो। २८ ख तिसे। २९ ख म्हारो। ३० ख धणीने। ३१ ख मारणो ३२ ख तरे। ३३. ख. हाथ माहे। ३४ ख लोटी। ३५ ख. ल्योल्ये। ३६ ख '–' ख ऐळी साजसी। ३७ ख अठी-उठी अदीस। ३८. ख हउडो। ३९ ख. दोनु ही। ४० ख कोइ।

वेगा आवणरी मनसा करज्यौ । म्हानै था विना घडी १ आवडे नही छै। तरे रजपूत राजी हूवौ । तरै जाण्यौ—भली बात, म्हारौ दिन पाधरौ दीसै छै। इरण मौनै सीष दीधी । इरण रजपुताणीयासु घणो हेत-प्यार दीधौ । तरै दौनु जिण्या भाता सारू चूरमौ कीधौ ने लाडू ४ बाधीया । तिके मत्रनै कौथली माहे घाति बाध मेल्या । जिको ऐ लाडू षायै तिकौ गधेडो हुवै ने भूकतौ भूकतौ पाधरौ घरै आवै । इसो भातो कर राषीयौ । राते रजपूत सूतौ, पिरण नीद आवै नही । मन माहे जारणै इण वावर माहिसु वेगो नीसरू । इयु जाण आधी रातिरौ जाग्यौ नै कह्यौ—हिवै तौ पाछीली राति छै। तरे ऊठि कमर बाधी, हथीयार बाधि[1] सीप करै । तरै दौनु ही बैरै[2] लाडू भाता सारू कौथळी हाथ माहे दीधो ।

रजपूत लाडू लेनै ऊतावलो चाल्यौ । तिकौ रातोराति माहे कोस १२[3] ऊपरा श्रीसूर्यजी दरसरण दीधौ । दिन घडी १ चढता चालता-चालता आगै १ जलसू भरीयौ तलाव आयौ । तरे रुद्रदेव जाणीयौ—अठै भातौ पायनै कोस २० सुधौ आज गयौ रहू । यु जारिण, जलरी तीर हथीयार छोडि सारा-फेरा गयो । दातण करि हाथ पग ऊजला कीधा, अमल कीधा नै आप[4] श्रीपरमेश्वरजीरा नाम लैणनै बैठौ । नाम ल्यै छै तिसडै १ ढोली आय नीसरीयौ । तिरण रुद्रदेवनै ऊजलायत मोटौ आदमी देषनै सुभराज दीधौ नै कह्यौ—मा-बाप ! अमलदार छु, अमल षाई गावसु च्याल्यौ थौ । तिको कालजै अमल लागौ छै, कु[5] साथे सीरावरणी[6] हुइ[7] तो[8] रावला जाचकने पसाव करा[9] । इसो सुरण रुद्रदेव जाण्यौ— धरम आडो आवसी नै एक लाडू इणनै द्यु, वासै तीन रहसी घणा ही छै। यु जाण एक लाडू ढोलीनै दीयो । ढोली चूरमौ-चूटीयो[10] देषि, जलरी तीर जाइ[11], उतावलो उतावलो उतावलो[12] लाडू पाधौ । तिसै ढोली गधेडो हूवो, रबाब गला माहे लीया भुकतो जीण दीसी षोज रजपूतरा था, तिण पोजा दोडौ, घडी एक माहे घरा गयो । रजपूताणीया-जाण्यौ पधारीया तो परा, रबाब कीणरो लाधा । इसो तमासो [देखनै] आषा मत्र बाटिया, तिसै गधारो ढोली हुवौ ने कह्यो--कुल-गोत सुहासणीरो भलो करो, चूडो अवचल रहो। आज म्हारा[13] अभागनै रजपूत एक मिल्यौ, तिण लाड़ षाणने दिधौ । तिण पात समाण[14] ऐ फोडा पडीया । तरै दोनु ही जाण्यौ—लाडू तौ तिण न पाधा हुसी । ढोलीरो

---

१ ख बाध। २ ख वेरा। ३, ख १०ऽ१२। ४ ख प्रतिमें नहीं है। ५ ख काइ। ६ ख सीरामणी। ७ ख हुवं। ८ ख इ तो। ९ ख बगसावो। १० ख उठी पो। ११ ख जाइ। १२ ख प्रतिमे द्विरुक्त शब्द नहीं है। १३. ख म्हारा। १४ ख पांत समान।

तमासो दीठो तो आपा री दाढा माहसु [1] जासी तो पाछो नही आवसी, इण ढोलीनै क्यु दै वेगी वाहर करो। यु जाण ५ अथा ७ थान घालि ढोलीनै सीप दीवी। ऐ दौनु जणी घोडीरो रूप कीयो, लारे दौडी।

तिसे रजपूत ढोलीरो चिरत[2] देप चमक्यौ। तरै लाडू तो पाणी माहे नाष दीधा। उतावलौ, डरती हाथमे जुती लै नाठौ, पाछो जोवतो-जोवतो जायै। आगै कोस एक ऊपरा देवगढ आयौ। तिणरै फीलसै सास भरीयौ पैपै[3]। जिसै रजपुताण्या घोडीरे रूप-पासरणै कीधा, पूछ माथै लीधा आवती दीठी। तरै रुद्रदेव एक अहीरणी घर 'फीलसारै माथै छै, तिणमै पैठो। अहीरणी जवान छै,' अकेली चीक माहे[4] ऊभी छै। तिण कह्यौ—देपे छै, तु माहरा घरमै च्याल्यो आवै छै। आपा फुटी छै ? तु निसर जा। तरै रजपूत कह्यौ—हू मारीजतो[6] थारै सरणे आयो छु। उण कह्यो—कुण मारै ? तरै रजपूत उतावली वात सगली कही। अहीरणी वात सुणि बोली—जो तु म्हारो धणी होइनै रहै तौ वाहर पालु। रुद्रदेव प्रमाण की। जैरै अहीरणी[7] मत्रारै पाण नाहरी हुई नै घोडा[8] सामी दोडी। तरै उवै दौनु जणी पाछी डरती नाठी। तरै कोस ५ ऽ ७ सुधी न्हसाई[9] पाछी आई। रजपूत दीठौ—कीसि बलाइ लागी ? घरसु तो इण मत्रारा भौसु न्हाठौ थो नै अठै तौ आ उठासु इधकी ! पिण रात रह्यौ। जरै अहीरणीनै रति-श्रान्त हूई निद्रा व्यापी, आधी रातिरो रजपूत छोडि निसरीयौ। तिको अभो[10] नगरी जठै चद[11] राजा राज करै छै, तठै आयौ।

आगै राजारै कवरी वड कवार छै। तिणरा सवारै-सवरा मडप मडचो छै। देस-देसरा राजा आया छै। त्या[12] माहे रुद्रदेव पिण तमासो देपणनै गयो छै, ऊभो छै। तिसे कवरी 'माला फूलरी'[13] हाथमें छै, लीया घणी दासी सहेल्यारै झूलरै आई। तिको पेलतररै लैप, वडा वडा गढपति छोडिनै[14] रुद्रदेवरै गला माहै वरमाला घाली। जरै सगला कह्यौ—कवरी चुकी-चुकी। जरै वलै बीजि वेला फिर वर मात्यो। जरै चादौ राजा कह्यो—इणरा करम माहै[15] लिपीयो थौ, तिको मिलीयौ। जरै रुद्रदेवनै जात-पात पुछि कवरी परणाई। गाव दीया, महिल[16] दीयौ। गेहणो, पोमाप, माल, दासी सरव दीयौ[17]। सुपमै रहै पिण पाछलो डर भागो नही।

---

१ ख माहिसु। २ ख तमासौ। ३ ख पछै। ४ ख. '–' ख प्रतिमें चिह्नित अश नहीं है। ५ ख मे। ६ ख म्हारीजतौ। ७ ख अहेरणी। ८ ख. घोडया। ९ ख नाहरी दोड। १० ख अभौ। ११ ख चदो। १२ ख त्याहा। १३ '–' ख फुलरी माल। १४ ख छोड। १५ ख मै। १६ ख महेल। १७ ख. दीया।

तिसै पाछली रजपूताणी सावली दोइ हुइनै उडती[1]। तिके अभो नगरीमै सुष विलसतो रुद्रदेवनै दीठौ। तरै दोना ही विचारीयौ—ईणरी आष्याकाढि लै जावा तौ आधो तिको जीवतो ही मु वा बरोबर छै, यु जाणि। रुद्रदेव झरोषे बैठो नगररो ष्याल-तमासो देषे छै। तिसे आकास उपर सावलि दोइ भमै छै। तरै जाणीयौ—सही, बेहु रजपूताणीया छे। ऊ[2] देषे इतरै उचो सामो देपै, तिसै आष्या लेणनै[3] तूटी। रुद्रदेव झरोषासू महिल माहै पीण ढौल्यौ पडचौ छै, जीकण उपर ढह पडचौ। कवरी षमा-षमा कर पुछीयौ—आज झरोषासु क्यु महलमै पडचा? तरै रुद्रदेवकू अधालि[4] आई। तरै कवरी हठ घणौ करि पूछियौ तरै रुद्रदेव वाछली वात धुरा-मुलसु कही। जरै कवरी आपरा पगरा नेवर उतार मन्त्रिया। 'तिके सीकरो होइ उभो रह्यौ'[5]। सीकरो तुटो तिको सावलि दोन्युनै मार पाछौ आयो। तरै कवरी नेवररा[6] नेवर कीया।

रुद्रदेव देप सोच्यौ जठै[7] जाउ जठे एक-एकणसु 'चढति चढति मिल'[8] तरै आधि रातरो इणनै ही छोड नाठो। तिसै पाछली रातरी कवरी जागि देपै तो सेज षाली। जरै सहैल्यानै कह्यौ—अठी-उठी, माहे-बारै सगलै गोध कीनी पिण बारणारा[9] पोलिरा किवाड[10] उघाडा लाधा। जरै जाण्यौ—रावतजी तो पर-देस विगर सीष च्याल्या। तरै कवरीरे[11] चदो राजा पिता छै, तिणनै कह्यौ—थाहरो जमाई आज आधि रातरौ निसर गयौ, पबर करावौ। ईसो साभल[12] राजा मारग चारै दिसा असवार दोडाया। जठै लाभै तठासु लाज्यौ[13]ने थाहरो[14] बुलायो[15] नावै तो मानै षबर देज्यौ, म्है आइनै मनाय लासा[16]। यु समझाय असवार दोडचा। एक मारग रुद्रदेवजी मीलिया। कह्यौ—अपुठा पधारो। रुद्रदेव नावै जदि ऐक असवार पाछो मेलियौ। जायनै कह्यौ—मारो[17] तो बुलायो आयौ नही। जरै राजा गयौ। जायने मिलीया। वात पुछि—थे माहसु विना सीप रीसाय क्यु निसरीया, तिका किसो तकसीर दिठी? पाछा पधारो। जरै[18] रुद्रदेव झूठी-साची ऐक-दोइ[19] वात कही। तरै राजा कह्यौ—साच दापवौ जद मन मानै। जरै रुद्रदेव धरा-मुलसु वात माडनै कहि—जठै इसी मन्त्रवादण असत्रि छै, जठै जिवणकी आस कीसी? काएक सुधी, भोलि लुगाईसु घर माडीया चैन होइ[20]। जरै राजा[21] हसि कह्यौ—रावतजी !

---

१ ख उठती। २ ख में नहीं है। ३ ख नेण। ४ ख अघालो। ५ ख '–' तिको सीकरो होय उभी रही। ६ ख में नहीं है। ७ ख जठै जठै। ८ ख चढति सं। ९ ख वारेणारा। १० ख कीवाड। ११ ख कवरी। १२ ख साभले। १३ ख लावज्यौ। १४ ख थाहरा। १५ ख बुलाया। १६ ख लासु। १७ ख मारा। १८ ख मे नहीं है। १९ ख दोयइ। २० ख होय। २१ ख में नहीं है।

म्हारो वात साभलो आरवल जितरै काई पीपा नही, तिको आपरो दिन पाधरो जोइजै । तरै चदो राजा आप वीती वात कहै छै—

इण अभो नगरी माहै राज करू । तिको माहरी मावु छै । मारी पटराणी परभावती तिका माहरै जीवरी जडी, पिण स्त्रीजाति तरैदार छै । गिरनगरीरो राजा, तिणसु दइवरै जोग म्हारी माता नै परभावती राणी, ऐ दोन्यु रो जीव लागो । तिको सातवीसी कासरो आतरो छै । तठै 'नितरा नितरा'[1] जावै । राति पडीया दोन्यु जायँ । मोनै सूता ऊपर आषा मत्रनै छाटै, तिको अघोर निद्रा आवै । दोन्यु जणी पुठी आवै तिको आपा छाटै तरै जागु । यु मास दो[2] विता । ऐके दिन मै मनमै सोचीयो— कदे ही रातिरो सुप जाणु नही तिको कासु छै ? यु जाणि पोढिणनै सुतो नही । तरै ढोलीया उपर घासरो पूलो मेलियो, ऊपरा सोड ओढाय दीनी नै हु अधारी जाइगा माहै बठो । तिसै पटराणि आइ आषा मत्र, सेज ऊपरा छाटचा नै पाछी फिरी[3] । तरै मै दीठो—देषां, आ अबै कासु करसी ? तरे दोन्यु सासु-वहू पोसाष करि गढ बारै नीकली[4] । हू पीण लारै नीसरीयो । तिसै बैहु जणी सहर बारै एक वड थो, तिण उपरा जाइ[5] बैठी । हु पिण वडरी षोपाल[6] थो, तिणमै जाय बैठो चिरत देपणनै । तिसै दोना ही मत्र जप्यो तरे वड चाल्यो । तिको घडी दो माहै गिर नगरी बैहू[7] जणी नगर बारै वड ऊभो रह्यो, जरै दोन्यु ही उतरी नगरमै चालि[8] । रात पोहर दोढ वीती छै । जरै हु पिण अलगो थको लारै च्याल्यो । हु पिण वाता सुणु छु ।

राजा कह्यो—आजि मोडा क्यु आया ? राण्या कह्यो—चद राजा मोडो सुतो । जरै राजा कह्यो—एक वात सुणो—मारै प्रेमलालछि(छी) पुत्री छै तिणरो व्याह आजसु इकवीसमै दीन अमको तिथ गुरवाररा फेरा छै, तिण ऊपरा रात पोहर जाता पहिली दोन्यु पधारिज्यो । जरै दोन्यु हो प्रमाण कीयो । उठी रही, हसी-रमी । अबै पाछिली[9] राति थोडी रही, जरै सीष मागी तिके चाली । हु पिण ऊणारै लारै चाल्यो । बारै आय वड ऊ[प]रै बैठी । हु म्हारी जायगा जाय बैठो । सवद जप्यो तरै वड चाल्यो ठिकाणै आयो । राण्या ऊत्तरि नगरमै चाली नै हु तिणा पहिली ऊपरिवाडै होयनै सेझ ऊपरा आय पोढयो । तिसै राणी आय आपा छाटीया तरै राजा जागीयो । तरै मै दिन ऊगा कागद माहे मीति तिथ लिष रापी । ऊण दिन तो हु जास्यु, देषा, इणारो किसो एक आदर छै ? नै व्याहरो ष्याल-तमासो पिण देपस्यु । यु करता ओ दिन आयो । जरै मैं जाणते ही दिन आथमतै समैं मातासु कह्यो—आज म्हारा नेत्र घुलै छै,

---

१ '–' ख नितरा । २ ख, २८३ । ३ ख घिरी । ४ ख नीसरी । ५. ख. जा । ६ ख. षाषल । ७ ख वेहू । ८ ख चाली । ९ ख. पाछि ।

नींद धकावै छै। माता कह्यौ—जा[१], ऊ मालीयै पधारिनै सुष करौ। तरै हु मालीयै आय ढोलीया ऊपरि घासरो पुलो मेल नै ऊपरा सोड ऊढायनै छिप बैठौ। उवा दोन्या ही रा चीतीया[२] हुवा। राति घडी ३५४ जाता माहै राणी ऊपरि आई, ढोलीयानै आषा छाटीया नै नीची ऊतरी। तरै हू पिण उणारै लारै ऊत्तरीयौ। ऊवे वड माहे बैठी। हू पिण छानौ जाय छिपनै बैठौ। सासू-बहू सिणगार[३] करि अरगजा पहिरसुधा लगाय नै फूलारी माला पहिरनै गिर नगरीनै नीसरी नै वड चलायौ[४] तके घडी २(दो) माहै पोती। तिकै तौ ऊतरी गढ माहै गई। मै सोचीयौ—य्या दोन्यारो आदर-व्यवहार कुकरि देषणौ होसी ? जरै मैं जाण्यौ—जान आई छै, तिण साथे गया कोई सुल वणै। जरै मै पोसाष करि आभ्रण[५] पहिर जान कनै[६] परदेसी थकौ ऊभौ रह्यौ। तठै जान माहे वीद राटो[७]-टूटौ, काणौ, कालौ, रूपहीण छै। तठै बीदरा बाप प्रमुष जान्यानै सोच ऊपनौ—राजारी बेटी तौ रंभा पदमणीरौ अवतार बतावै छै नै आपणै तो वीद इसौ छै, इण वीदनै देपै तौ राजा परणावै नही नै कवारी जान पाछ[८] जाय[९] तौ भलौ दीसै नही तो काई अकल करि कोईक फूटरौ वीद हेरा, फेरा लिरायनै विदणी कवरनै सुप देस्या, पछै भप मारिनै आदरसी। यु सोचता माहे मोनै दीठौ। हू वणीयौ-वणायौ 'वीद दीसु'[१०]। जरै मो कनै आय पुछीयौ—थाहरी पाघ, वोली अठारी [दीसै नही, थारो वास कठै छै ? जरै म्है कह्यौ—म्हे तो व्यापारी छा][११], आभो[१२] नगरी रहा छा। अबार थारी जान आई तरै दैपणनै आया छा। जरै वीदरै बाप कह्यौ—एक वात ऊपगाररी छै। था जिसा पुरष ऊपगारनै देह धारी छै। तरै राजा कह्यौ—तिका कीसी वात ? तरै राजा विवरा सुधी सर्व वात कही। तरै म्हे दीठो—फेरा लेसी तिणरी बैर[१३] होसी नै त्यारो पिण तमासौ देषणी आवसी। जरै हुकारो भण्यौ। जद सरब पुस्याल होइ 'वीदरी पोसाप कराइ'[१४]काकण-डोर, काजल, महिंदी दीधी। आभरण पहीर[१५], हाथी चढाय[१६], 'मोडि बाधाय'[१७] चवर ढलता मुसालारै चादणै यु करता तोरण वाद्यो। सासु आरती, तिलक कीयौ। राजा देप राजी हूवौ। जिसी कवरी बेटो छै तिसोहीज वीद आयौ[१८]। घोडासु उतर[१९] माहे दोढी गया तरै दासी, सहेल्या दिठौ। तिसै चवरीमै जाय हथलेवो दीयो। जरै राणी प्रभावती

---

१ ख मा। २ ख मनरा चोतीया। ३ ख सणगार। ४ ख चालीयो। ५ ख आभरण। ६ ख करेने। ७ ख. रावो। ८ ख. में नहीं है। ९ ख. जायं। १० ख '—' वींदसु। ११ ख [—] ख प्रतिमें चिह्नित अंश अप्राप्त है। १२. ख अभो। १३, ख वेर। १४ '—' ख वींदरो सरपाव करायो। १५, ख पहराया। १६ ख. चढाया। १७ '—' ख मोड बाध। १८. ख छै। १९ ख ऊतरो।

दीठो । लुगाया दोइ सौ[1] माहे उभी सो हूला-वधावा गावै छै । त्यामै[2] उवा[3] जाण्यौ—चद राजा जिसो दीसै । लच्यण, रग, चहिन, निलाड, आष्या, सरिसो विभनो पडीयो । चद राजा पिण वडो वहूनै देपै छै । तिसै राणी सासुनै कह्यौ ! जो' सासुजी, वीद तौ थाहरौ वैटो दोसै छै । सासु कह्यौ—अवोली रहै, सरीसा देस भरीयो छै । आगलीसु ना कहै । तिको हू देपु छु । तिसै फेरा लेता पहिली मै जाण्यौ—इणनै तौ दगौ हुसी, माहरी पवर किसी पडसी ? चुनडी ऊपर तवोलसु कोर ऊपरा दोहो[4] लिष्यौ—

अभौ नगरी चद[6] राजा, गिर नगरी प्रेमलालछी ।
'सजोगै-सजोग'[7] परणीया, मेलो दईवरै हाथ ॥ १

पछे फेरा लेनै जानीवासै मझन्यौ 'गावता आया'[8] । कवरी पाछी गई । तिसै चाचलै तेडण आदमी आयो । तरै मै कह्यौ—जानीयानै कहो, माको साथ चाल जासी, मोनै सीप द्यो । तरै जानीया [राजी हूवा । जरै पारणेतरो सिरपाव वणाव कीया][9] वड जाय वैठौ । तिसै सासु-वहु उतावली सासै भरी वड ऊपरा आइ वैठी नै सवदासु वड चलायो । अभो नगरी आय थभ्यौ । सासु-वहू ऊना-वलि नगरनै चाली । हुं त्या पहिली उपरवाडै होइ सेज जु रो ज्यु आइ पौढचौ । तिसै राणी आगै आइ देपै तो राजा सुतो छै, पिण वोद वणीयो दिसै ज्यु रो ज्यु छै । तरै राणि दौडि सासुनै कह्यौ—वहुजी ! थे न मानै था, पिण थाहरो वेटो वीद थो त्यु रो त्यू वैम[10], काकण-डोरडा[11], मेवी छै । अवै आपानै दोहगी छै ।

तरै माता ऊठी मो कनै आई । तरै मोसु लाल-पाल कर कठी आधणनै हाथ घालै । तिसै हु अजाण्या गलै डोरो वाध्यौ[12] । जरै हु सुवौ होइ गयो तरै मोनै पीजरामै घालि आला माहै[13] राष्यौ । आडो तालो दीधो । कुची बहूरै हाथ दीनो । राति पडिया राजा करै, दीहा सुवो करि राषै । अवै वासिली वात सुणो—

जानि मिल विदनै केसरीयो वागो, पाघ, गेहणो पहरीया[14], मोड वाध्यौ । साथे रजपूत दे पोढणनै चाचलै गयौ । तरै पोजा सहेल्या वरज्यौ पिण मोड सुधो ऊचो मालीयै गयौ । आगै कवरी देपि पूछ्यौ—तु प्रेतरूप कुण ? विद

---

१ ख सो-दोइसो । २ ख त्या माहे । ३ ख उणा । ४ ख जी । ५ ख दूहो । ६ ख चदो । ७ ख देव सजोग । ८ '–' ख गवावता आयौ । ९ ख [–] ख प्रतिमें कोष्ठगत अश नहीं है । १० ख वेस । ११ ख डोरा । १२ ख वाधीयो । १३. ख मे । १४ ख पहैरिया ।

कह्यौ—हु थारो वर छु । कवरी कह्यौ—मोनै परण्यौ तिकौ कठै ? इण कहीयो—मजूर, चाकर राजा आगै काम सदा करै[1], राजारै हुकमसु तौ कु वस्तुरो[2] धणी हुइ जायै ? तरै कवरी राता नैण् करि सहेल्या कनासु चादणीमै पोटली ज्यु बधायनै पगथीयासु गुडाय दीधो । तिको गुडतो-गुडतो हेठो आय पडोयो । रजपुत ऊभा त्या जाण्यौ—क्यु माल री गाठ आई । जोवे तो वीद राजा छै । तरै रजपूता पूछीयौ वीद हुई ज्यु कही । तरे अबोल्या छाना जीव ले म्हाठा । तिके जानमै आया नै[3] सारी विगतवार[4] बात कही । तरै [नगारो दीया विना डरता जान चढी आपरै][5] नगर गई । कवरी वात राजा-राणीसु कही । इचरज हूवौ । अबै प्रेमलाल कवरी सचीती सुपना वाली वात जाणै । वरस १ वीतो, तठै तीज आई । तरै सहेल्या कह्यौ—बाईजी ! आज तो आप पोसाप वणावो, षुस्याली रापौ । श्री परमैसरजी सहु भला[6] करसी । तरै पार-णैतरौ सिरपाव मगायौ जब दानी पोली । आगै कोर'ज ऊपरा तबोलरा आषर छै, तिकै कवरी वाच्या—

अभो नगरी चद राजा, गिर नगरी प्रेमलालछि ।
सजोगे-सजोग व्याह हूवौ, पिण मेलो दईवरै हाथ ।।

ओ दूहो वचायौ, हरप पायौ । जाण्यो—म्हारो परण्यो चद राजा छै । तरै राजा सु बुलाइ[7] कह्यौ, दूहो वचायो । तरै राजा कह्यौ—पुत्री ! इणरो इलाज कासु करा ? कवरी कह्यौ—हजार १० ऽथ १५ असवार साथे द्यो, परची दीरावौ । हु तीरथरो नाम ले, अभो नगरी जाइ चद राजासु मिलु । पिण पवर ही नही छै, जीवै छै कै नही ?

यु कहे राजा हजार पाच-सात सेन्या दीधी । अठासु चाली तिका केईक दीना अभो नगरी मुकाम कीयो नै कह्यौ—बाई प्रेमलालछि भरतार-विहूणी वैरागणि छै । तिका के दिना अभो नगरी तिरथा करणनै जायै छै । अभो नगरीमै सासू, वहू राणी छै । त्यानै दास्या मेलि आसीस कहाई । तरै दास्या गई थी । घणो मनुहार कीधी नै जीमणरो कहीयौ[8] जरै पाछी कहीयौ—चालस्या जद थाहरै रोटी जामस्या, जरै दिन दस अठै रहिस्या, सामोसुत करणौ छै । इयु कहि दासीयानै गढ माहे जावती 'आ वातो'[9] कीधी । गावरा लोकानै राजाजीरा सर्व समाचार पुछीया । 'जरै लोका'[10] कह्यौ—वरस १ (एक) हुवौ,

---

१ ख करि । २ ख वस्तरो । ३ ख आयनै । ५ ख विगत वात । ६ ख कोष्ठगत पाठ ख प्रतिमे अप्राप्त है । ६ ख भलो । ७ ख बुलाय । ८ ख कहायो । ६– ख '–' ख में नहीं है । १० ख मे अप्राप्त है ।

चद राजारौ[1] दरसण कीधानै। सासू, वहू राज चलावै छै नै कहै छै—श्रीमहाराजाजी तौ गौसलपानै विराजीया छ। इसी वात सुणनै ऊमराव वेदल थका रहै छै।

अबै दासी दोय निजरवाज चतुर थी, त्यानै कह्यौ—राज जीवता-मुवारी पवर रापौ। इसो भाति कहिनै पबर करावै[2]। तठै १ महिल राजाजीरो पोढणरौ, तिणरै तालौ जडीयौ रहै[3] छै। साझ पड्या राणी जायनै तालौ पोलै छै। एक दिन कवरीरी दासोया सहेल्यारै झूलरा साथे गई महिल माहै। और दासीया तौ ऊरी आई। ऐ दौय जणी अलादो छीपनै रही। राणी माहे गई। आलौ षोल, नै पीजरो काढि नै राजानै सुवौ कीनौ छै, तिको डोरो पोलनै राजा प्रगट कीनौ। दासोया किवाड माहे सारा ही चिरत दीठा। तरै राजी हुई—राजा जीवतो तौ दीठौ छै। तिसै रात पाछिली घडी २ रही तरै राणी पाछी सुवौ करि, पीजरा माहै घालि, पाछौ आला माहै घालि, तालौ देनै नीचो ऊतरी। तरै तिण पहिली दामीया उतर[4] नै 'आगणै आ'यनै कह्यौ—म्हे सुवारै कुच करस्या, तिणसु थे रीसावस्यो सो आज रोटी म्हे थारै जीमस्या। इतरौ सुणनै[5] सासू, वहू राजी हुई नै तयारी रसोई री करणी माडी।

दासीया 'हसतो हसती'[6] कवरीनै आयनै कह्यौ—दीठी हकीकत सगली मालुम कोन्ही नै म्है जीमण ठहिरायनै आई छा, आज श्री परमेसरजो मनौरथ सफलौ करसी। तिसै सुवो १ पीजरा माहे घालि, डोरो गलै बाधि सहेली कनै छानौ रापीयौ। तिसै जीमणनै दास्या तेडा आई। तरै कवरी दासी पचास अथवा साठ साथे ले, सुषपाल[7] बैसि गढमै आई, मिली। भोजन अरौगी जरै दासी कह्यौ—वाईजी साहिब! वार-वार अभो नगरी आपरो पधारणो न होइ नै महिल दीठा नहि, तिणमु महिल देपीजै। जीमणसु देपणो भलो छै। कवरी कह्यौ—कासु महिल देपस्या? जरै राणी कह्यौ—दासी साच कहै छै, महिल दैप्या चाहीजै। तरै राणी साथै होय कवरीनै महिल दिपावै छै। पहिली चतुराईसु पीजरामै सुवौ दासी कनै रापीयो छै। महिल देपता-देपता दासी बोली—महाराणो! रावलो[8] सुहणैर वाईजीनै दिपावो। देपा, किसी एक जलूस छै। तरै कवरी दासीनै रीस कीना—सुहणैररौ कासु देपसी? ऐ महिल दैपै न छै। तरै राणी भोली होइ महिलारौ तालौ पोल्यौ, माहे गया। देपै तो महल मोटो छै। जालि, गोप घणा छै। राणी, कवरी तो आलासु निजर टाल, महल

---

१ ख राजा चदरो। २ ख करावो। ३ ख में नहीं है। ४ ख. उतरी। ५. '–' ख में नहीं है। ६ '–' ख हसी-हसी। ७ ग स्यावपाल। ८ ख रावालो।

पग ठाभ-ठाभ, वात पुछि-पुछि देपै छै। तितरै दासी आलारो तालो पोल पीजरो उरो लीधो, ओर पीजरो घालि दीधो, तालो दीधो। दासी पीजरो ले डेरे गई। लारली दासी बोली—बाईजो ! कूचरी ताकीद छै। अठै घणी वार लागी नै आप फुरमायौ थो, तिको कामरी षुसाली[1] आइ छै। कवरी कह्यौ—बापजीरी ताकीदसु कासीद आयो दीसै छै।

कवरी डेरे आई, पोसाप करि पीजरा माहिसु सुवो काढ्यौ, डोरो षोल्यौ। चद राजा हूवो। कवरी उठ मुजरो कीयो। चद राजा बोल्यौ—थे कुण ? इण कह्यौ—हु गिर नगरीमै प्रेमलालछी परणी, तिका छु। थानै पीजरामै सुवा कर राष्या था, मै अकल कर काढ्या।

वासै त्या रात पडी राणी पीजरो काढि डोरो षोलै तो सुवा तो[2] सुवो छै। राणी डरती कालजै ऊकनी सासुनै जाय कह्यौ—वहूजी ! प्रेमलालछी राजानै ले गई, आपारो मरण आयौ, वेगी वाहर करो। जरै दिन घडी दोय चढत समो दोन्यु सावली होय डेरा ऊपर राजारी आष्या फोडणनै आई। तरै[4] दोन्युही नै राजा तीरसु मारी। सुष हुवो। प्रेमलालछी मुदायत राणी हूई।

राजा चद रुद्रदेव जमाईनै कहै छै—तिण प्रेमलालछीरी[5] पुत्री थानै परणाई छै। स्त्रीरा चीरतरो पार नही। नेट भरतारो बुरो चाहे नही, बुरो चाहे तो भलो हूवै नही। मरजासी (णाथी) थे डरो मती, चैनमै रहो। समझाय राजी कर पाछा ल्याया नै राष्या।

इति श्री राजा चदरी प्रमलालछि-रुद्रदेवरी वार्ता सपूर्ण[6]।

+·+++++

१ स पुस्याली। २. स रो। ३. ख ऊकलती। ४ ख तरे त्या। ५ ख प्रेमलालछी।

६ ग इति श्री राजा चदरी प्रेमलालछी-रुद्रदेवरी वात सपूर्ण। सवत् १८३६ रा मती चेत वदि १८ चद्रवासरे ॥ पडीतचक्रचुडामणी वा० ॥ श्री श्री श्री ७ श्री कुशलरत्नजी तन् शिष्य प० श्री श्री मनोपरत्नजी तत् शिष्य मुनि पुस्यालचद लिपीकृत ॥ श्री गदवच नगरमध्ये ॥ सेवग गिरधरीरो पोथी माहेनु लषी ॥

॥ श्री ॥

परिशिष्ट १ (क)

॥६०॥ अथ रीसालू कुमारनी वार्त्ता लिप्यते ॥

चोपै– प्रथमें प्रणमू श्रीगणेश, विद्यातणो आपै उपदेश ।
सालिवाहनपुत्र रीसालू होय, सत-तपते ग्रहीया सोय ॥१

दूहा– वेटा जाया सालिवाहन, धरिया रीसालू नांम ।
वांभट भट्टनें पूछिया, नवषड राषे नांम ॥ २
दोनू राजा जुगतिका, दोनू राजा सोज ।
हरषें दोय सगा हूआ, सालिवाहन नें भोज ॥ ३
छाजें वेठी मावडी, आसूडां मत षेर ।
पुत्र हुआ सो चलि गया, ऊभी मदिर घेर ॥ ४
हसानें सरवर घणा, पुहप घणा भमरेह ।
सुमांणसनें मित्र घणा, आप-तणे गुणेह ॥ ५
कस्तूरीरा गुण केता, केता कागदमे चित्र ।
नदियांरा वलण केता, केता सुगुणारा मित्र ॥ ६

राजाना लोक कहे छै—

हरि हरणां थल करहलां, नउ मया तो नरां ।
वीझ विस मोहा थीया, ए वीसर से मूआं ॥ ७
दुरवलके वल रांम हे, वाड षेतकूं षाय ।
जननी सुतकू विष दीए, तो सरण कुणपें जाय ॥ ८

अत्र महादेव मिल्या परिष्या करे छै ।

दया रषो धरमकू पालो, जगसू रहो उदासी ।
अपना तन ओरका जांणे, तो मिले अविनासी ॥ ९
एक ज घडी आधी घडी, भी आवो को अद्ध ।
हर-जन सग मेला वडो, सुकृत होय तो लद्ध ॥ १०

महादेव यो रूपेसू छै—

चातुरकू चातुर मिले, ललि ललि लागो पाय ।
अलवें थकी ओच्चरे, तो माणिक मेलो जाय ॥ ११

इहा भोज राजानो बेटी सामलदे परणी नें मेली, चाली नीकल्यो। पछे आगे आगे धारा नगरे मान कछवाहानी दीकरो धारा परणी, मेली ने चाली नीकल्यो।

कुण राजारो लाडलो, कें मनरी वात।
कें घररो वैरागीयो, कें दूहव्यो तात ।। १२
नही घररो वेरागीओ, नहीं दूहव्यो तात।
पेंडो पूछा मुगतिरो, जपा दीनें रात ।। १३
एक नर दो नारसू, कब ही न चूके काम।
सतके पेंडे चालीयें, ए ही मुगतिका ठाम ।। १४
एक नारी ब्रह्मचारी, एक आहारो सदा पुआरी।
एक छोड दूसरे जाय, ते नर निश्चें दुषीया थाय । १५
डाकिण-मत्र अफीण-रस, तसकर नें जूआ।
काछ उद्राही कामनी, जाए पच मूआ ।। १६
जान बिराजी गोहरें, डेला दीया असमांन।
रीसालू सामल वरे, मोटा दीजें दान ।। १७

वार्ता– तिहाथी रीसालू चाली वैराट नगरे आव्यो। तिहा जूवटे रमवा बेठा। रीसालू जीत्यो। वैराटनो राजा हारचो।

दूहा– हारचो सघलो गामडो, हारचो घर घर वाद।
हारचो माथो रावलो, कीयो रीसालू वाद ।। १८

वार्ता– इहा रीसालू वराट राजाने जूवटे जीती ने छ महीनानी 'राजानी बेटी परणी, ते लेइने चाल्यो।

दूहा– छोडचो सगलो गामडो, भलो फूलवती वेस।
बार वरसरे साहिबे, छोडचो सघलो देस ।। १६

वार्ता– तिहाथी चाली सीधडीइ आव्या। सीवडो वसे, पण वसतो नहो। एक दाडमनामा दैत्ये मारा राजा-प्रजा पाला। एक डोकरी रापी। ते राक्षस परदेसी माणस त्यावे। ते डोकरी तेलमे तली ने माणसने आपे, त्यारे ते राक्षस पाय। रीसालू चाली डोकरी पासे आव्यो। रीसालूई डोकरीने पूछ्यु—ए सेहर ऊजड केम छे? त्यारे डोकरी कहे—ताहरु पण माथू फिरचू, जे तू इहा आव्यो, हवे राक्षस तुने पाइ जास्ये। त्यार रीसालूइ कह्यु—डोकरी! ज्यारे माणस नही मिले त्यारे तुने नही पाइ। डोकरा कहे—वीरा! मुने पास्ये तो स्यू कल? रीसालू कहे—तू कहे तो मारू। त्यार डोकरीने छल-भेद करीने राक्षसने मारचो।

दूहा– **राक्षस रूडा मारीयो, दुष देतो दुनीयाय।**
सीधडीइ सालिवाहननो, रह्यो रीसालूराय ॥ २०

वार्त्ता– हवे रीसालूइ छ महीनानी फूलवती उछेरवाने वास्ते अनेक वन वाळ्या। राजा मनवेगे घोडे चडी ने जगलमाहेथी रोभडीनू दूध लावी ने पावे। इम करता बार वरसनी थई। तिण समे हठीयो वणभारो जातिनो रजपूत, वणभारो कमव करता भाइइ वारचो—तू क्षित्रीवट करे तो इहा रहे अने व्यापार करे तो इहाथी नीकलि। त्यारे हठीयो नीकलो ने सोरठ नवलपू गाम वासो नें तिहा रह्यो।

दूहा– **सहस आबा सहस आंबली, केइ डोलरीयो जाय।**
हठीये सेहर वासीयो, नीकी जिहां वनराय ॥ २१

वार्ता– तिण समे एक दिन रीसालूइ मनमाहिथी नाहनू मृगनू बचू फूलवतीनें आणी दीधू। राणी साथकी गुदराण करो। त्यारे मृगसू राणोने गुदराण करता मृग मोटो थयो। त्यारें तिहाथी नीकलीने मृगलो हठीयानो वाडोना फूल, फल पाइ जाए छे पिण पकडातो नथी।

दूहा– **माली रावें सचरचो, साभल हठीया वात।**
कोइ गाटेरो मृग्गलो, वाडी चरि चरि जात ॥ २२
काला मृग ऊजाडका, फिर फिर पवन भषेय।
वाडी हमारी भेलतो, भलकडीयूं भालेय ॥ २३

वार्ता– मृगलो हठीयाने कहे छे—मुने स्याने अर्थे घाव करे छे।

दूहा– **ओ दीसे आबा आवली, ओ दीसे दाडिम जाय।**
बापें जायो बेटडो, जो माणी घर जाय ॥ २४

वार्ता– ति वारे हठीओ घोडे चडी तिहा आव्यो। देपे तो वन विचे मेडोये फूलवतो एकलो बेठी छे। त्यारे हठीयो बोल्यो।

दोहा– के तू देवल पूतली, के तू घडी सुनार।
किण राजारी कूअरी, किण राजारी नार ॥ २५

फूलवतीवाक्य

केड कटारा वकडा, अवोडे नव नाग।
तिण पुरषारी गोरडी, पथीडा मारग लाग ॥ २६

हठीयावाक्य

लागणहारा लागस्ये, दीठडली म दीठ।
हइडे टेकण होइ रही, ज्यू कापड चोल मजीठ ॥ २७

फूलवतीवाक्य

हइडू न हलावीइ, नयणां भरी म जोय ।
इण नयणें जे मूआ, फिरी न आवे कोय ॥ २८

हठीयावाक्य

सज्जण दुज्जण सुध करण, प्रथम लगाडी प्रीत ।
सुप देयग ससारमे, ए नयनू की रीत ॥ २९

फूलवतीवाक्य

नेंनू की आरत बुरी, पर-सुष लग्ग न जाय ।
आग लेवे ओरको, अपनो अग जलाय ॥ ३०

हठीयावाक्य

जीव हमारा तें लीया, पजर भी तू लेय ।
तो पर तन्न उवारकें, षेर फकीरा देय ॥ ३१

फूलवतीवाक्य

मारेगो रे बप्पडा, मृगा हृदे घाव ।
सैज हमारी आस करे, तो सिर बाहिर धराव ॥ ३२

हठीयावाक्य

मेरा नाम हे हट्ठीया, मेरे हट्ठ सुहाय ।
तुझस्यू आल करतडा, सिर जाय तो मर जाय ॥ ३३

फूलवतीवाक्य

सिर जाता जीव जायसे, मुझमा किस्यो लुभाय ।
हो परदेशी पथीया, घर कुशलें क्यु न जाय ॥ ३४

हठीयावाक्य

ए ज्यु रीसालु रीसालूओ, हु हठीओ लाल चउहाण ।
रावित वेला जे चरे, मुडसा एह प्रमाण ॥ ३५

फूलवतीवाक्य

नेंन में नान न करी, हाथ बिछाई सेज ।
हू रागी तू रागवी, दोनू रापें रेज ॥ ३६

हठी हठीला हठ्ठीया, कडि बांधी तरवार ।
पक्का ग्रांवा वीणये, काचा तें हि निवार ।। ३७

वार्ता– हठियो भोग भोगवीने कहे छे—जो ग्रमने सीप द्यो तो ठिकाणे जावा । त्यारें फूलवती कहे छे—

दूहा– जावत जीभें क्युं कहां, रहो तो सांई बाट ।
ग्रावे तू ही उघडस्ये, ग्राहे ता रथरा हाट ।। ३८

हठीयावाक्य

जाकी जासूं लागन हे, ता ताके मन रांम ।
रोम-रोमसें रचि रहे, नहीं काहुसें काम ।। ३६

फूलवतीवाक्य

सेज ऊजरी फूलू जई, इसी ऊजरी रात ।
एक ऊजरे पीउ विण, सबी जरी होय जात ।। ४०

हठीयो गयो, नि वारे पूठे रीसालू ग्राव्यो ।

दूहा– पग दीठा पवगरा, रीसालू दरबार ।
कोइ वटाऊ वहि गयो, कोइ रीसायो घर नार ।। ४१

वार्ता– इम कही ग्राघो रीसालू गयो । त्यारे पालेल पषी हू ता, ते बोल्या—

दूहा– ग्राठ पषेरू छ वग, नव तीतर दस मोर ।
रीसालूरा राजमा, चोरी कर गयो चोर ।। ४२

वार्ता– त्यारे राणी ग्रावी ऊभी रही । राणी देषीने रीसालू बोल्यो—

दूहा– किणें ग्रांवा झझेडीया, किणें छांटया पूपार ।
किणें कचुग्रा माणीया, किणें सेज दीनां भार ।। ४३
पलिगपट्ठी ढालीग्रां, किण ही दीनां भार ।
रीसालूरा वागमां, कोण फिरया ग्रसवार ।। ४४

फूलवतीवाक्य

मे मेरा कचुग्रा माणीया, मे सेजें दीन्हा भार ।
मे ग्रांवा झाडीया, मे थूक्या पूपार ।। ४५

वार्ता– त्यारें रीसालू फूलवतीनें कहे छे—हवे ए पान चावीनें नाषो । त्यारे पाटलाना पाइया ग्रागे वल्पो पडचो । त्यारे फूलवती वोली—

दूहा– **रीसालू रीसालुआ, रीसडीया मर जाय।**
आबा पक्का रस चुए, कोइ षुणसें न षाय।। ४६

रीसालूवाक्य

रीस अमारा माइ बाप, रीस अमारा नाउ।
सषर पक्का अबला, रजक होय तो षाउ।। ४७

वार्ता– त्यारे फूलवती कह—रूठा केम बेठा छो। रीसालू कहे छे—

दूहा– **अमृतवेलो वावीओ, मृगो चरि चरि जाय।**
ओ मृगो मारि सोला करू, दिलरी दाझ मिटाय।। ४८

वार्ता– त्यारे रीसालू हठीयानो पग लेई पछवाडे चाली नीकल्यो। ति वारें हठीयो सामो चाल्यो आवे छे। रीसालू पूछे—तू कुण छे रे ? त्यारे हठीयो कहे—तू कुण छे ? ओ कहे—हू रीसालू। ओ कहे—हू हठीओ छू। रीसालू कहे—क्या जावे छे ? हठीओ कहे—ताहरे घरे जावू छू। रीसालू कहे—भूडा, इम नथी जाणतो—जे कोई धणी आवस्ये ? त्यारे हठीयो कहे—

दूहा– **रेढा सरवर किम रहे, रेढा रहे न राज।**
रेढा त्रीया किम रहे, रेढा विणसे काज।। ४९

वार्ता– रोसालू कहे—तू छे कोण ? हठीयो कहे—हूं गढ गागलनो रजपूत छू।

रीसालूवाक्य

दूहा– **गढ गागलरा राजीया, क्यु चल्यो नही राय।**
रीसालूरी गोरीयां, क्यु माणी घर जाय।। ५०

रीसालू कहे—माटी थाजे।

दूहा– **रीसालू बाण सनाहीयो, करे रीस करार।**
छेकें मडी छडीया, निकस्या आरो-पार।। ५१

वार्ता– हठीयाने मारी मासनो पावरो भरी घरे ल्याव्यो, राणी करो स्याक—मृग मारी लाव्यो छू। त्यारे ओ मास राधी, ऊपरथी घी काढी दोवो कीधो, स्याक कीधो। राणी कहे—राजा, जिमो। राजा कहे—राणी पहिला तुमे जिमो। त्यारे राणी पहिला षावा बेठी। षाता राजा कहे छे—

दूहा– **हाथ पीउ मुषमे पीऊ, दीवडा बले पीयाय।**
जीवतडा रस माणीओ, मूआ न लोधो साय।। ५२

फूलवतीवाक्य

तें आंण्यो मे भषीयो, मृगां हदा माय ।
क्रपी मोरो पिउ मारीओ, मरू कटारी षाय ॥ ५३

वार्ता– त्यारे रीसालू वेठी मेलीने चाली नीसरयो । त्यारे फूलवती कहे—मुझने मारीने जाय ।

दूहा– **साद करी करी हूं थकी, चल चल थक्का पाव ।**
रीसालू ऊभो न रहे, वेरी वाल्यो दाव ॥ ५४

वार्ता– रीसालू तो चाली नीसरयो । फूलवती आवी ठिकाणे वेठी । हवे रीसालूओ आगे चाल्यो जाए छे । एतले एक जोगी आगे मिल्यो । जोगीने देषी रीसालू झाड ऊपरे चडी वेठो—देषू, जोगी क्या जावे छे ? त्यारे योगीइ तलाव ऊपरे नाही साथलमेथी एक जोगणी काढी । ते देषी रीसालू अपना मनमे कहे ।

दूहा– **योगी योगी योगीया, आयसडा सधीर ।**
ऊची योगण पातली, काढी साथल चीर ॥ ५५

वार्ता– एहवू रीसालूइ अपना मनमे जाणी तमासो देषे छे । ओ जोगणीइ जोगीना कह्याथी पावू कीधू । पावू जमी जोगी सूतो । त्यारे जोगणीइ आपणी झाघ माहेथी एक जोगी वालक जगनाथ नामे काढयो । पछें भोग भोगवी ओ पुरुपनें पाछो साथलमे घाली ने अपना मोटा जोगीने जगाडयो । ऊठो स्वामी ! हवे सारी पठे जमो । जोगी कहे—जोगणी ! तो सरषी कोइ सती नही । वाजो सकेली हाली नीसरयो । त्यारे रीसालू जइ आडो फिरयो । चालो सामीजी ! आज वावानो भडारो छे । योगीने तेडी फूलवतीने पासे लाव्यो । रीसालू फूलवतीनें कहे—लाड्आ करो । मामीने जमाडीइ फूलवतीइ लाडूआ करया । थाल भरी सामी पासे लाडू लाव्यो । सामी कहे—वावा ! एता लाडू क्या करू । मे तो अकेला छू, मे पण लाडू पाऊ, तमे पण लाडू पाओ । रीमालू कहे—तमे पाओ अने तमारा वे जीव भूषे मरे, ते पण अमने धरम नही । योगी कहे—मे तो एकला हू । रीसालू कहे—जोगणी काढो, नही तर माथू वाढसू । त्यारे मरण-भये जोगणी काढी । वली जोगणीपासे भये करी वीजा वालो जोगी कढाव्यो । योगी वीजा जोगीनें देषी तमामो पाम्यो । वेइ जोगी माहो-माहे लडया । ओ कहे, जोगण माहरी, ओ कहे माहरी । त्यारे रीसालू कहे—लडो मा । रीसालू जोगणीने कहे—तुने कुण प्यारो छे ? जोगणी कहे—नाहनो जोगी प्यारो । तेहने जोगणी देइ सीष दीधी । वूढो जोगी कहेवा लागो—तें तो भूडो काम करयो, हवे

माहरी चाकरी कुण करस्ये ? त्यारे रीसालूई फूलवतीने जोगीने दीधी । फूलवती कहे—हठीगाने सेवीनें हवे जोगी कोइ सेवूं नहीं । त्यारें फूलवती मोल भरी पडी, आपघात करी मुई । त्यारे जोगी महादेव थइ ऊभो रह्यो । जोगी कहे—रीसालू, तू क्या जाणता है ? जोगी कहे—हमारे घरमे पण ए खेल है तो आदमीका क्या आसरा ? जोगी कहे छे—

दुहा— पांणी जग सघलो पीए, किहां एक निरमल नीर ।
सर देखी सारस भमे, तूं कां झांणे अधीर ॥ ५६

वार्ता— त्यारे रीसालू जोगीनें कहे— मे नाहना थका पाळी हती-रोवा लागो । रोई ने रीसालू कहे छे—

दुहा— सज्जन गया गुण रह्या, गुण बी चल्लणहार ।
सूकण लग्गी बेलडी, गया ते सींचणहार ॥ ५७
बीजलीयां चमकीयां, जावलीयां घनघोर ।
हठोञो परदेसी उठि चले, ज्यूं चटाऊ ढो(ठो)र ॥ ५८

वार्ता— जोगी कहे—तू कहे तो जीवती करूं । रीसालू कहे—हवे न खपे । त्यारे जोगी कहे- हवे इहांथी जा, बीजी स्त्रीनी खबर कर । त्यारें रीसालू बीजी स्त्रीनो खबर लेवाने चाल्यो । च्यां गयो—जिहां धारानगर छे, तिहां सरोवरे ऊभो रह्यो ।

धारावाक्य

दुहा— सरोवर धोयां धोतीयां, झाडण सूषण पग्ग ।
नरा घर भरञो घडूलीयो, तो हि न बोल्यो ठग्ग ॥ ५९

ते नगरने विषे रीसालूनी स्त्री छे । ते पांणी भरवा आवी छे । रीसालूने रूपवंत देखी, देखवा मोही । धारा नामें स्त्री रीसालूइ ओलखी—ए माहरी स्त्री, पण माराइ ओलख्यो नही । त्यारे ए दुहो कह्यो । मोरे जम्यो ते दुहो सांभली रीसालू बोल्यो—

दुहा— पाल पीयारी जल नवो, हीडो ज झीलेवा ।
पण तां मन तणो पांणीआं, बी आंसु बुझ्झेवा ॥ ६०

धारावाक्य

आछो कापड चोल रंग, मांहिसु चगो चीर ।
विण चूके चीषे नहीं, तूं झलाहलयोलो झीर ॥ ६१

रीसालूवाक्य

भूमि पीयारी भोगणो, तूं को राजाहदी धीव ।
तुझ कारण मुझ मारस्ये, कुण छोडावे जीव ॥ ६२

देसडला परदेसडा, नही झीलणरो जोख ।
तुझ कारण मुझ मारस्ये, तो मूआं न पामूं मोष ॥ ६३

धारावाक्य

अगर चदन करी एकठा, चोहटे षडकावूं चे(वे) ।
मुझ कारण तुझ मारस्ये, वलसू आपण वे ॥ ६४

वार्ता– रीमालू कहे—तू कोण छे ? कन्या कहे—हूं राजा मान कच्छवाहानी दीकरी छू । रीसालू कहे—तू किहा परणी छे ? कन्या कहे—सालिवाहननो दीकरो रीमालू छै, तेहनें परणावी छे । रीसालू कहे—ताहरो धणी मुझ सरिपो छे ? त्यारे कन्या कहे—रीसालू तो गहिलो सरिपो छे, बाहिर फिरतो फिरे छे, तमे तो महारूपवत छो, लक्षणवत छो । त्यारे रीसालू कहे—

दूहा– अवगुणगारी गोरडी, तिको अवगुण भापत ।
आप पुरु[ष] नद्या करे, पर पुरुषां वादत ॥ ६५

वार्ता– रीसालू कहे—तुमे जाओ, माहमी वाडीमे जई वेसो, अमे तिहा आवीइ छइ । ते धारा कन्या तो वाडीइ जइ वेठी अने रीसालू तिहाथी राजाने जइ मित्यो । राजा पुस्याल थयो । दरवारमे पवर पडी—जमाइ आव्या । हवे धाग कन्यानें ढूढवा माडी । कन्या किहाइ दीसे नही । रीमालू कहे—स्यू जोओ छो ? चाकर कहे—कन्या जोईइ छीइ । त्यारे रीसालू कहे—मे वाडीमे दीठी छे । तिहाथी सपी तेडी आवी । राति पडी त्यारें सिणगार सजावी, सपी लेई रीमालूना मोहलमे गई । तिहा कन्याने मेली सपी जाती रही । रीसालूइ जोयू—ए स्त्री केहवीक छे ? त्यारे ओरडानी साकल देई माहे सूतो । स्त्री वाहिर ऊभी रही । त्यारे धारा बोली—

दूहा– कें मूओ कें मारीओ, कें झडीयो ए मार ।
हजा हदी गोरडी, ऊभी अगण वार ॥ ६६

रीसालूवाक्य

नवि मूओ नवि मारीओ, नवी झडीओ एँ मार ।
हजा हदी गोरडी, गई वग्गा घरि वार ॥ ६७

धारावाक्य

रेढा सरवर न छोडीइं, रेढां जावे राज ।
रेढी त्रिया किम रहे, रेढां विणसे काज ॥ ६८

हज सरोवर हज पीए, बगा छीलर पीयत ।
बग्गा केतो आसरो, हजा सरता कत ॥ ६९

वार्ता– रीसालू बोल्यो नही । त्यारे धारा स्त्री तिहाथी चाली । मेडी थकी ऊतरता झाझर वाग्गे । त्यारे रीसालूइ जाण्यू—देषू किहा जाए छे ? कन्या चाली थकी कुमतीया सोनारने घरे गई । कुमतीयो सोनार घरमे सूतो छे । तिहा सोनारनो बाप सुतो छे । तिहा जई धारा स्यू कहे छे—

दूहा– **तू बी चूइ टबूकडे, भीजे नवसर हार ।**
चीर पटो(ढो)ला ढह पडे, मूरषरे दरबार ॥ ७०

सोनीनो बाप कहे छे—

दूहा– **राजा रूठो स्यू करे, लीये लाष बे चार ।**
ऊठो पुत्र सुलष्षणा, माणिक भींजे बार ॥ ७१

वार्त्ता– इम कही स्त्रीने माहि लीधी । भोगवता निद्रामे प्रभात होइ गयो ।

दूहा– **प्रह फूटो प्रगडो भयो, ध्रूत्रो धलो रें ।**
ऊठ कुमतीया अनुमति, द्यो जिम जावू घरें ॥ ७२

सोनार कहे छे—

पाय पहिरी चाषडी, ले षेंडो तरवार ।
हो राजारो ओलगू, चली जा दरदार ॥ ७३

वार्त्ता– वेस करी चाली त्यारें रीसालु बोल्यो—

दूहा– **पावडीया चटकालीयां, कडें रलक्या केस ।**
रीसालूरी गोरीया, किणें फिराव्या वेस ॥ ७४

कन्यावाक्य

वीरा कांइ वरासीयो, साव सारी पांमू आं ।
उट विछूटा रावला, अमे नासेटु हूआ ॥ ७५

रीसालूवाक्य

रातें करहा न छूटीइ, दीहे तारा न होय ।
फिट गमार तु गोरडी, वर किम वीरा होय ॥ ७६

कन्यावाक्य

काठो तोडातां जणे, झोरा च्यारे दत ।
हू राजारो ओलगू, तू किणारो कत ॥ ७७

रीसालूवाक्य

नासा सोहे मोतीयां, भाल्यां कांन भवकत ।
नहीं राजारो ओलगू, तू मोरी अरधग ॥ ७८

वार्ता– त्यारे रीसालूइ माथानी पाघडी ऊतारी । त्यारे राड चावी थई । रीसालू कहे—साचू बोल, राते किहा हती ? कन्या कहे—

दूहा– **पाघडीया पचा सकल, कटारें वहु चित्र ।**
जे तू राजा षांतस्यो, देष हमारो मित्र ॥ ७९

वार्ता– पछे रीसालूइ मेली दीधी, तिहाथी ऊठी चाल्यो ।

दूहा– **रीसालू रीसावीओ, चडी चलीओ राव ।**
राजा आडो आवीयो, षून ज पलें लाव ॥ ८०

वार्ता– त्यारे रीसालूनो सुसरो कहे—स्या माटे जाओ छो ? रीसालू कहे—स्त्री धीज दीए तो रहा । त्यारे सुसरो कहे—तुमे कहो ते धीज दीया । रीसालू कहे—बे घडी ध्याने बेसू अने स्त्री माथाथी पाणी नामे, नाके सुद्ध रेलो ऊतरे हू वर अने ए स्त्री । त्यारे सुसरे वात मानी धीज करवा बेठा ।

दूहा– **आसण वाली बेठो रहू, पांणी नेंणा धार ।**
इस्त्रीनां एतो गुनो, बीजें पुन अपार ॥ ८१

कन्या आवी—

सोवन भारी हाथ करि, धाराइ करी धार ।
ता सोनारो आवीयो, षूनी कीयो षूंषार ॥ ८२
नेंण चूकी निजर फेरवी, पांणी पूठां धार ।
रीसालू वांणें दई, सिर काटचो सोनार ॥ ८३
ऊठी नें ऊभो थयो, मांनें केहो दोस ।
पापी पापें जायसे, माया लीजें षोस ॥ ८४
मोटाथी मोटा थीइ, मोटा षोटा न होय ।
नाढा मोटानें अडे, हाल तिणारा होय ॥ ८५
धारवती ढली करी, चचल चडीयो राय ।
सामलदेरो साहिवो, उमगीयो घरि जाय ॥ ८६

वार्ता– तिहाथी चाली भोज राजारे गाम आव्यो । तलाव ऊपरे देषे तो सामलदे पोतानी स्त्री नाहे छे । तिहा पाच सात सषी आडी थई ऊभी छे । तिहा

रीसालू पूछे–जे ए कुण छे ? दासी कहे—राजा भोजनी बेटी छे। त्यारे रीसालूइ पावरा माहिथी चारो तरफ सोना मोहरू नापी। दासीउ लेवा गइ। रीसालू घोडो लेइ जइ सामलदेने माथे राष्यो। सामलदे लाजनी मारी पाणी माहे बेसी रही। दासी रीसालूने कहे—रे भाइ ! दूरो रहे, ए राजानी बेटी छे, राजा जाणस्ये तो तुने मारस्ये।

दूहा– **बाहडीयें जल सजल, कलियल केस वलाय।**
दुवल थास्यो गोरडी, ऊची करता बाय॥ ८७

वार्त्ता– ति वारे सामलदेइ हाथ ऊचो कीधो त्यारे रीसालू मूर्छाई पाणीमा पड्यो। त्यारे सामलदे बाहिर आवी, लूगडा पेहरी अने दासीने कहे--दासी, यू पुरुपने बाहिर काढो, मरी जास्ये। त्यारे दासीइ काढ्यो। राजा सचेत थयो। त्यारे परिक्षा हेते राणीने कहे—

दुहा– **सरवर पाव पषालती, पावलीया घस जाम।**
जिण राजारे द(न)ही गोरडी, तिणनें रेंण किम विहाय॥ ८८

कन्यावाक्य

पाणी पी में वाटथी, तु मुकइ सम तुल्य।
जिण राजारी गोरडी, तिणरी पेंनी केरो मूल॥ ८९

वार्ता– त्यारे रीसालू कहे– एक बार मुझस्यू सुष भोगवो। त्यारे कन्या कहे— मारयो जाइस। रीसालू कहे—माहरू माथू फिरे छे, मुने तो काइ दीसतू नथी। त्यारे कन्या कहे—

दूहा– **माथू फिरचू तो मारग थी ओ, नही ऊभेरो जोग।**
जिण पुरुषनें मे वरी, तिणनें भरस्या भोग॥ ९०

रीसालूवाक्य

ओ दीसे आबा आबली, ओ दीसे दाडिम द्राष।
ए सूडातणा सट्ट[क]डा, एकेला विचें वाट॥ ९१

सामलदेवाक्य

ए नहीं आंबा आबली, नही दाडिम नहि द्राष।
नहीं सूडातणा सट्टकडा, तारा माथा विचें वाट॥ ९२

रीसालूवाक्य

ऊभा थाए तो अमी झरे, घरती न झल्ले भार।

सामलदेवाक्य

तुमें परदेसी पथीया, मरतां न लागे वार ॥ ६३

रीसालूवाक्यं

साप ज षाधे सहु मरे, वीछी चटपट होय।
स्त्री दीठे पुरुष ज मरे, तो कुलमां न जीवे कोय ॥ ६४

वार्ता- त्यारे कन्या मार्ग लेइ सर्पी साथे चाली ने घरे आवी। त्यारे रीसालूइ कन्याने दृढ जाणी, राजा पासे आव्यो। राजाइ जमाइ आव्यो जाण मेडीइ ऊतार्‍यो। सामलदे धणी पासे गई। रीसालू कमाड देइ बेठो। कंन्या कहे—ए स्यू छे? रीसालू कहे—तुमे एहवा रूपाला एतला दिन किम रह्या हस्यो? तिण वास्ते काचू माटीनू कोडीयू पाणी माहे चारे तरफ वाट करी, पोतानी मेले दीवो थाए तो तू सती। त्यारे सामलदे कहे—हूं पूणे धीज नही करू, राजाननी सभा माहे धीज करसू। त्यारे प्रभाते राजाननी सभामा आवी तिम ज कीधू। सामलदे कहे—माहरे ए धणी होय तो दीवो थाजो। त्यारे दीपक थयो। हवे राणी कहे—तू समपा, तू साचो तो आपणे प्रीत, नही तो आज थी [टू]को छे। त्यारे राजा [नी, ती] पेलाइ तो दीवो न थयो। त्यारे सभा हसीजे रीसालू पोटो छे। रीसालू कहे छे—हूं किहाइ चूको तो नथी पण एतलो थयो छे—

दूहा- **रीसालू पोटो थयो, दीवे ज्योति न होय।**
रांणी रूप नीहालीयो, कलक ज लगो मोय ॥ ६५

वार्ता- इम कहता दीवो थयो। सत्यवादी पणाथी वली रीसालू कहे छे—

दूहा- **फूलवती हठीयो ग्रह्यो, धारा ग्रह्यो सोनार।**
सोल सामलदे पालीयो, राजा भोज जुहार ॥ ६६

वार्ता- ति वारे राते सजाई भेला थया।

दूहा- **पावल ऊपल घूघरा, हीयडा ऊपर हार।**
गोरी ऊपर साहिवो, दो कलियनको भार ॥ ६७

वार्ता- तिहा रीसालू छ महिना रही पछे आपणे सेहर आवे छे। सेहर जेतले कोस दस रह्यो तेतले राते तिहा रह्या। राते वारा फिरता, चोकीइ चोकी करता राणीने साप डस्यो। राणी मूई। सवारे पाणीनी भारी भरी रीसालू राणीने जगावे तो राणी मूई दीठी। त्यारे रीसालूइ पेट नापवा माडी। हवे महादेवने पार्वती कहे छे—

रीसालू पूछे–जे ए कुण छे ? दासी कहे—राजा भोजनी बेटी छे। त्यारे रीसा-लूइ पावरा माहिथी चारो तरफ सोना मोहरू नापी। दासीउ लेवा गइ। रीसालू घोडो लेइ जइ सामलदेने माथे राष्यो। सामलदे लाजनी मारी पाणी माहे बेसी रही। दासी रीसालूने कहे—रे भाइ! दूरो रहे, ए राजानी बेटी छे, राजा जाणस्ये तो तुने मारस्ये।

दूहा– **बाहडीयें जल सजल, कलियल केस वलाय।**
दुवल थास्यो गोरडी, ऊची करता लाय॥ ८७

वार्त्ता– ति वारे सामलदेइ हाथ ऊचो कीधो त्यारे रीसालू मूर्छाई पाणीमा पड्यो। त्यारे सामलदे बाहिर आवी, लूगडा पेहरी अने दासीने कहे--दासी, यू पुरुषने बाहिर काढो, मरी जास्ये। त्यारे दासीइ काढ्यो। राजा सचेत थयो। त्यारे परिक्षा हेते राणीने कहे—

दूहा– **सरवर पाव पषालती, पावलीया घस जाम।**
जिण राजारे द(न)ही गोरडी, तिणनें रेंण किम विहाय॥ ८८

कन्यावाक्य

पाणी पी में वाटथी, तु मुकइ सम तुल्य।
जिण राजारी गोरडी, तिणरी पेंनी केरो मूल॥ ८९

वार्ता– त्यारे रीसालू कहे--एक वार मुझस्यू सुष भोगवो। त्यारे कन्या कहे— मारचो जाइस। रीसालू कहे—माहरू माथू फिरे छे, मुने तो काइ दीसतू नथी। त्यारे कन्या कहे—

दूहा– **माथू फिरथू तो मारग थी ओ, नहीं ऊभेरो जोग।**
जिण पुरुषनें मे वरी, तिणनें भरस्या भोग॥ ९०

रीसालूवाक्य

ओ दीसे आंबा आबली, ओ दीसे दाडिम द्राष।
ए सूडातणा सटू[क]डा, एकेला विचें वाट॥ ९१

सामलदेवाक्य

ए नहीं आबा आंबली, नहीं दाडिम नहि द्राष।
नहीं सूडातणा सटूकडा, तारा माथा विचें वाट॥ ९२

रीसालूवाक्य

ऊभा थाए तो अमी झरे, धरती न झल्ले भार।

सामलदेवाक्य

तुमें परदेसी पथीया, मरता न लागे वार ।। ६३

रीसालूवाक्य

साप ज बाधे सहु मरे, वीछी चटपट होय ।
स्त्री दीठे पुरुष ज मरे, तो कुलमा न जीवे कोय ।। ६४

वार्ता- त्यारे कन्या मार्ग लेइ सखी साथे चाली ने घरे आवी । त्यारे रीसालूइ कन्याने दृढ जाणी, राजा पासे आव्यो । राजाइ जमाइ आव्यो जाण मेडीइ ऊतारचो । सामलदे धणी पासे गई । रीसालू कमाड देइ बेठो । कंन्या कहे—ए स्यू छे ? रीसालू कहे—तुमे एहवा रूपाला एतला दिन किम रह्या हस्यो ? तिण वास्ते काचू माटीनू कोडीयू पाणी माहे चारे तरफ वाट करी, पोतानी मेले दीवो थाए तो तू सती । त्यारे सामलदे कहे—हूं पूणे धीज नही करू, राजाननी सभा माहे धीज करसू । त्यारे प्रभाते राजाननी सभामा आवी तिम ज कीधू । सामलदे कहे—माहरे ए धणी होय तो दीवो थाजो । त्यारे दीपक थयो । हवे राणी कहे—तू समपा, तू साचो तो आपणे प्रीत, नही तो आज थी [टू]को छे । त्यारे राजा [नी, ती] पेलाइ तो दीवो न थयो । त्यारे सभा हसी-जे रीसालू पोटो छे । रीसालू कहे छे—हूं किहाइ चूको तो नथी पण एतलो थयो छे—

दूहा- **रीसालू षोटो थयो, दीवे ज्योति न होय ।**
रांणी रूप नीहालीयो, कलक ज लगो मोय ।। ६५

वार्ता- इम कहता दीवो थयो । सत्यवादी पणाथी वली रीसालू कहे छे—

दूहा- **फूलवती हठीयो ग्रह्यो, धारा ग्रह्यो सोनार ।**
सोल सांमलदे पालीयो, राजा भोज जुहार ।। ६६

वार्ता- ति वारे राते सजाई भेला थया ।

दूहा- **पावल ऊपल घूघरा, हीयडा ऊपर हार ।**
गोरी ऊपर साहिबो, दो कलियनको भार ।। ६७

वार्ता- तिहा रीसालू छ महिना रही पछे आपणे सेहर आवे छे । सेहर जेतले कोस दस रह्यो तेतले राते तिहा रह्या । राते वारा फिरता, चोकीइ चोकी करता राणीनें साप डस्यो । राणी मूई । सवारे पाणीनी झारी भरी रीसालू राणीनें जगावे तो राणी मूई दीठी । त्यारे रीसालूइ पेट नाषवा मांडी । हवे महादेवनें पार्वती कहे छे—

दूहा— **रीसालू रुदन करे, आंसूहारो धार।**
वेगो जाइ महेस तू मरस्ये राय - कुमार ॥ ९८

वार्ता—तिहा महादेव आव्या।

दूहा— **अमी छुडक्का नाष कर, कब झडक्का लाय।**
सांमलदे सजीव कर, रीसालु घरि जाय॥ ९९

वार्ता— हवे तिहाथी चाली ने आपणे नगरे आव्यो। बापने वधाई देई। सालिवाहन बेटाने दुषे रोइ आधलो थयो हतो, ते हरषी ने ऊठचो, बार साथे माथू फूटू, लोही नीकल्यू। सालिवाहन देषतो थयो।

दूहा— **माथो लागो बार सांषस्यू, चष बिहू हुआ सुचग।**
रीसालू सालिवाहन मिल्यो, दीओग्घाओ दङग ॥१००

इति श्रीरीसालूकुमरनो वार्त्ता सपूर्णं॥ सवत १८९० ना कात्तिक विद ८ बुद्धे सपूर्णं॥ लिखित मुनी गुलालकुसल॥ श्रीमानकूए॥

++++++++++++++++++

परिशिष्ट १ (ख)

॥ अथ रीसालूरा दूहा लिषते ॥



सालवाहन नलवाहणरा, श्रीपुर नगररा राव बे।
पुता काज ज सेवीया, साधां हृदा पाव बे॥ १
पीडत पुछणह चली, थाल भरे नल चावलां।
लीयो कटोरो घीव बे, मारै पुत्रकै धिय बे॥ २
केसर कहै कस्तुरीया, सुती कै जागत बे।
सोनां हांदी थालीया, भीत्र वजी कै बाहिर बे॥ ३
हड हड दे मुडी हसी, नाई मेरे दाइ बे।
एक रीसालु आवीयौ, जासी सीस कटाय बे॥ ४
हड हड दे मुडी हसी, नाई मेरे दाई बे।
एक रीसालु आवीयौ, जासी सउ जलाय बे॥ ५
काला हरण उजाडरा, सरवर पान झडत बे।
... .. , .. . ॥ ६
हठीया पतसा हठ म कर, हठ हठ रमो सिकार।
. .. , ॥ ७
जे देषै तुं रू ंषडा, तास तणा फल जाय बे।
बापे ज . , . . बे॥ ८
फेरा फीरे फीरंदडां, साह फिरै कै चोर बे।
फै तुं .. , ... ॥ ९
है मैहल [ल]छवती गोरीयां, तम कीस हांदी नार।
... . पाव बे॥ १०
है म्हैं लछवती गोरीयां, तेरा कु ...... ।
... ., एक प्रेम चषाय बे॥ ११
है म्है लछव .. .., ... ।
... . सीर, भुलां मारग बताय बे॥ १२
. . .. .., ...।
. . विच कर डडडी, पथी एथ बैसंत बे॥ १३

... ., ...।
... ., ··ल साव बे ।। १४
मारचौ मारचौ रे बा ', ... ।
.. . ', ···सुपने आव बे ।। १५
मे हठुवा मे ··, . . ।
... .. ···सार जायै तौ जाय वे ।। १६
किण ऐ ·····, .. . ।
राजा हदी गौरीयां, किस ह ।। १७
... ..., वा घर जाइ बै ।
तोसुँ केल करांतडा, सिर जाय तो जाय बे ।। १८
.. .., मे ई सींच्या अजीर रूष बे ।
रीसालू हादी गौरडी, रीसालुरा दर [बार] बे ।। १९
मेरा मला भागीया, कीण भगीया ए बार बे ।
रीसालुरा वागमै, रीसालु असवार बे ।। २०
मै तेरा माला भगीया, मैं बुदीया ए बार बे ।
रीसालुरा वागमै, रीसालु असवार बे ।। २१
सड सड सुडचा चषिया, मारचा मोर चकोर बे ।
रीसालु हदे गौषडै, चोरी करी गया चोर बे ।। २२
दस सुवा दस सुवटा, नव तीतर दोइ मोर बे ।
रीसालु हदे गौषडै, चोर करी गया चोर बे ।। २३
कीण मेरा माला भगीया, कीण घुदीया नबार बे ।
रीसालुरा मैहलमै, कीण छाटीया षषार बे ।। २४
हाथ प्रीउ मुष प्रीउ, प्रिउ दीवलै जलाई बे ;
जीवतडा जुग माणीयौ, ·· न लाभै साव बे ।। २५
थे दीधौ म्हे भष्यौ, हरणो केरौं साव बे ।
जाणुं हठुवा मारीया, मरू कटारचां घाव बे ।। २६
हरीयो होजे वालमा, होज्यौ दाडम दाष बें ।
मो नीगुणीरे कारणे, (थारे) डक बसाया काग बे ।। २७
काला मुहरा कागला, उठ परे रोजाई बे ।
मेरा प्रीउरी पासली, (मेरा) मुह आगै म षाइ बे ।।२८
·जोगी जोगीणा, आव षडो वड तीर ।
डीघी जोगण दतली, (तै) काढी साथल चीर बे ।। २९

जोगीया पर-भोगीया, ध्रिग जमारौ तोय वे ।
ऍठा परवत सेझमै, मे दीठा सामोई वे ।। ३०
रीसालु रीसालुवा, रीसडीयां मर जाय वे ।
मै ई पडु इस गौपसु, मेरी देह जलाइ वे ।। ३१
पंथी ए सुघड घोइया, भगो पछेवड पग वे ।
नपस्यु घुडल्यौ मै भरचौ, प्रेम न वोल्या वुग वे ।। ३२
भुम पराई भोगणै, (तु) राजा हादी धीय वे ।
तो कारण मो मारजं, कुण उगारे जीय वे ।। ३३
भुम पराई नै परमडली, नही वोलणका सग वे ।
तो कारण मो मारिजै, मुयां न पाऊ आग वे ।। ३४
चदण-काटे चह रचु, करू ज अमर नाव वे ।
मो कारण तो मारिजै, (तो) वलु पथी गल लग वे ।। ३५
कड कड वाहु काकरा, लागई लाल किवाड वे ।
कै मुया कै मारीया, कै चपीया आहार वे ।। ३६
रीसालु हदी गोरडी, उभी भीजु वार वे ।
न मुया न मारीया, न चपीया आहार वे ।। ३७
तु राजा हदी गौरडी, (क्युं उभी) वागा हदै वार वे ।
(न मुया न मारीया, न चपीया आहार वे)
लवा पतला कुंण सा, (तेरै) गया गिलोला मार वे ।। ३८
पटुवा महता गांवरा, न कर हमारी तात वे ।
ले जाउली राउलै, पुटसो मारै हाथ वे ।। ३९
रूपा सोनानी रूप रज, मोती अधिक वणाव ।
उठो सोनी पातला, उपर मेरो मेह ।। ४०
एक दीयां तौ दोय दीया, दोय देस्यां तो च्यार वे ।। ४१
पोह फाटो पगडो हुवौ, धुवो धवलहराह ।
उठ कमतीया मत दै, (अव) क्यु क जांह घराह ।। ४२
पेहर हमारा लुघडा, पाचै डाव अ हथियार ।
चोहटे नीसर मचकती, कूण कहेसी घर नारी ।। ४३
चाबडीया चटका घणा, कडचां रूलाता केस ।
मा मरदारी गोरडी, (थनै) किणै कराय वेस ।। ४४
भोलै भुलौ रे वालभा, नैण तणै उणीहार ।
रात ज करहा [उछरे], ज्यारा म्हे ऐ वालभ ।। ४५

रात ज करहा न उछरे, दीहा न तारा होई।
... .. . , वर क्यु वीरा होई ।। ४६
सोनी हदा दीकरा, अवसर न षेलो ... ।
उपर चरु चढावीयो, धड दाबीयो पयाल ।। ४७
सीर अमारे अमी भरै, पगमे ..... पयाल।
सोनो लेसु लोडीयो, अब कहा करेलो राव ।। ४८
नारू तीषा लोयणां, उर चगी नैणांह ।
धरा तुट धरती गई, कोइ नर चढीया नैणाह ।। ४९
रीसालु रीसालुवा, ... मरीया बहु चित ।
तु राजारो षुटीयो, जोइ हम [क]रो मीत ।। ५०
सरवर पाय पषा[लता] पाइल कीस भाई।
जीण पुरषरी गोरडी, जीण क्यु रैण विहाय ।। ५१
... . , मो तो किसो ज तोल ।
हु जिण पुरषरी गोरडो, .. राषी पाइ मुल बे ।। ५२
पाइ मुका . , ... ।
जीणरा मुहडा आगै, तो सरी... ... ।। ५३
. --, -- . तो आतम लोई।
मो सरीषा दोय .. ... ।। ५४
सराहीयै टुक दती, षड' ... . ई ।। ५५
काई योवन मैमतीया, काई जोव ... ।
.. .., .. चड़कातां बाइ ।। ५६
ना जोवन मैमतीया, ... ।
. ..., ... , करता बाह ।। ५७
अवे आबा उवे आ , .. नव मोर।
उहां वीच कर डडडो, पथी उवे ही चोर ।। ५८
जल ही उढ .. हरण, जल सोहै बीर बे।
जो तु हुवै रीसालुवा, पथी आंब पधार बे ।। ५९
फुलमती हठीयै घरी, धारू घरी सोनार।
सबलदे सत राषीयो, राजा भोज विचार ।।
मेगलसी मुहता आव घरे, देउ गला रो हार ।।६०

।। ईति श्रीचदकुवर रीसालुरा_दूहा सपूर्ण ।।

परिशिष्ट २ (क)

"वात वगसीरांमजी प्रोहित हीरांकी"

पद्यानुक्रमणिका

दोहा–अनुक्रम

छप्पय अनुक्रम

कुण्डलिया अनुक्रम

छन्द झमाल-अनुक्रम

गाथा चोसर-अनुक्रम

चद्रायणो-अनुक्रम

त्रोटक-अनुक्रम

छन्द उधोर-अनुक्रम

गीत-अनुक्रम

परिशिष्ट २ (ख)

वात रीसालूरी

दूहा-अनुक्रम

परिशिष्ट २ (ग)

नागजी ने नागवतीरो वात



दूहा—अनुक्रम

सोरठा-अनुक्रम

परिशिष्ट २ (घ)

वात – दरजी मयारामरी

दूहा - अनुक्रम



अ

इ

उ

ए

क

घ

च

छ

गीतादि—अनुक्रम

परिशिष्ट ३

वार्त्तागत सूक्तियाँ



अ

अवर तारा डिग पडै, धरण अपूठी होय।
साहिब वीसारू आपणो, तो कलि उथल होय ॥ —१२९-२८८
अइयो आसाढाह, गाजी नै धडकीयो।
वूठो वाढालाह, निगुणी भूई सिर नागजी ॥ —१६२-७२, टि०
अण कह्यो म ऊथपो। —१८२-१३४
अण काली घणनै अवै, माली कर माकूल। —१८१-१२७
अत चोषो ऐराक —१७६-७८
अपछर में और न यसी, रभा छवि सारीष।
षट रुत में नही पेषजे, रति वसत सारीष ॥ —४२-२६५
अमर करै ओ आषरा, कवि कथ अमर करत। —१६४-३
अमीणो तुम पास, तुमहीणो जाणु नहीं।
विवरो होसी वास, वास न विवरो साजनां ॥ —१५४-३१
अरज करा अलवेलीया, पला झेलीया पाण।
म्याराजी मत मेलीया पमगा सीस पलाण ॥ —१७५-७५

आ

आइयो लेष आलाहाका, दूष-सूष का विरतत वै।
आवेगी थारो मोतडी, पर वधी कुलवंत वै ॥ —१००-१५८
आगलीया जणरी यसी, मूग तणी फलीयांह। —१६९-४२
आख्या अंकिस वाण, ताख करे नै ताणीया।
न डरै तेण दीवाण, सो माढु नैणा ही माणीया ॥ —१५०-८
आज रूपाली रातडी, झिरमिर वरस्या मेह।
पीउ मन षाची पोढीयो, नवली नारने नेह ॥ —१२२-२६५
आज सलूणी रातडी, मोही अलूणी होय।
एको कांमण सीझीयो, वादी विजुता जोय ॥ —११६-२३१
आजूनो दिन अति भलो, जीवत रहीया म्हेह वे।
हिव सारा ही योकड़ा, करस्या सारा जेह वे॥ —९५-१४०

आजो उमरा पतरग्गा —१८०-११८

आडा फलीया कामनी, नैण-सरावर वेत ।
पाया मधीया धो(डो)लीया, सैण सयाडी लेत ॥ —११९-२४९

आडा पडसो डीहडा, जब केहा जाणा । —१६४-४

आंबो मरयो केवडो, केतकीयां घर जाय ।
तवा गुरणो घरलो, आज विरणो काय ॥ —१५९-५३

आभे घडवर बादलो, बीज चमको होय ।
तिल पीरोया कनू रसं, पीयनं रावे नोय ॥ —११६-२२९

आपला वतामें म्यारा, प्रकासीयो रीत एही ।
सावठा पावसा माहु, नकासीयो सूर ॥ —१७०-१

आसू तूपो सेणरी, पणीयण आस लिगार वे ।
गोठ पराई राचवे, जीवत छडै लार वे । —११८-२४३

उ

उठियो कुवर बीयालूजा, भीजें राजकुवार ।
राजा रूठेंगो गाव लें, नही तर घोडी त्यार ॥ —११७-२३६

उत्तम जननो प्रीतडी, कीणहीक वेला होय वे ।
ते छोडी ने वीसरे, ते जग मूरख होय वे ॥ —८३-८५

उत्तम जीव हुवे जिके, जिण तिण सू उपगार ।
करतां न जाणें हाण वे, राखे सूप परकार वे ॥ —१०-१८३

उतावल कीया अलूझीये, सनें सनें सहु होय वे ।
माली सींचे सो घडा, रीत आया फल होय वे ॥ —९६-१४१

उमरावा बरज्या घणा, राज न मान्यो कोय वे ।
बीधना लेख हुवें तिकें, उ टलें टलीया टलाय वे ॥ —६८-५१

उर-थल थोडा ऊकीया नींबूण चेयारा । —१७१ नी०

ऊ

ऊडे पडवै पैस, पिवसु पंजा मारती ।
सुमाणसीया एह, घूघे लागा घोलउत ॥ —१६२-७४

ऊँडो गाजै ऊतरा, ऊची बीज खिवेह ।
ज्यु ज्यु सरवणे सभलु, त्यु त्यु कपें वेह ॥ —१५९-५०

ऊणां सहेल्या आगला, म्यारा हु तिल मात ॥ —१६९-४७

ऊषा बरसें बावली, लूबा-झूबा लोर ॥ —१७८-८८

ए

ए आजूणी रात, खबर पडेंसी मूझ घरी ।
वेरण हुवी वात, घरी म याज्यो वेलणा ॥ —११६-२३५

एक गई दूजी गई, हिव तीजी की मेल।
नारी नही का आपरी, कुडी अगमं केल ॥ —१११-२१०

ओ

ओ जोऐ थारी वाट। —१७७-३. गी०
ओ दीवो घर आपरै, जिण दीठा जीवोह। —१८१-१२९

क

कचू कस्यौ दिल हथ कीयो, मीलीयो तन सोनार।
जाणै केलना पान पर, कपूर ढुल्यौ नीरधार ॥ —११९-२४७
कठ कथीरा काठका, दन थोडा जांणा। १६४-४
कटारी कुनार, लोहालो लाजी नहीं।
आजूणी अध रात, नागण गिल बैठी नागजी ॥ —१६०-५९
कटारी कुनारि, लोहारी लाजी नहीं।
नाग तणै घट माहि, बाढा नींवू ही भली ॥ —१६०, टि०
कनक थाल मे छेद करि, मारी लोहा मेख। —४-३०
कमर बँधावत कुवरकु, विरह उलट गयो मोहि।
सजन बीछुडण कब मिलण, काहा जाणें कब होय ॥ —१५०-९
कर ढीला घट सागुडा, नीर ढुली ढुल जाय वे।
पथीडो तिरस्यो नही, नेयणां रहीयो लूभाय वे। ९१-१२५
कलमैं को कुभार, माटी रो भेलो करै।
चाक चढावणहार, कोई नवो निपावे नागजी ॥ —१६२ ७७
कलमैं को कुभार, माटी रो भेलो करै।
जे हू हुतो कुभार, तो चाक उतारू नागजी ॥ —१६२- टि०
कला प्रकासत दीपकी, दूणा भासत दीप।
रभा दिषा छबि रूपकी, स्यामा षडी समीप॥ —४९-३८२
कामण कारीगर तणी, कांमण केथ पडेह।
सात कीयो सांसे गई, भलो दिखायो नेह ॥ २१०-२०८
काम विचारी ने कहो, रहसी तिणरी लाज वे।
ऊठ कहो ऊतावला, तो विणसाडे काज वे ॥ ९६-१४२
कामण हीयडा कोरणी, जीवत रही तु आज वे।
हिव सारी सिध होयसी, देह विलूधी नाज वे ॥ —९४-१३४
कामातुर हीरा कहै, रवि राह विहरत।
चाहत चातुर अधिक चित, आतुर होत अनत ॥ —६-४१
काची कली मत लूवीयै, पाका लागेगा हाथ वै।
जीवत जावंगा मानवी, नही को वीजा साथ वै ॥ —८९-१११

आजो उमरा अतररा —१८०-११८
आडा कसीया कांमनी, नैण-सरासर वेत।
घावा मचीया धो(ढो)लीया, सैण सवादी लेत॥ —११९-२४९
आडा पडसी वीहुडा, जव केहा जांणां। —१६४-४
आंबो मरवो केवडो, केतकीयां अर जाय।
सवा सुरगो चपलो, आज विरगो काय॥ —१५९-५३
आभे अडवर बावली, बीज चमको होय।
तिण वीरीया कचू कसै, पीघनै राषे नोय॥ —११६-२२९
आवलां वलामें म्यारा, प्रकासीयो रीत एही।
सावळा घावला माहे, नकासीयो सूर॥ —१७०-१
आसू लूधी सेणरी, घणीयण आस लिगार वे।
गोठ पराई राचवै, जीवत छडै लार वे। —११८-२४३

उ

उठियो कुवर चीवालूवा, भीजे राजकुवार।
राजा रूठंगो गांव लै, नही तर घोडी त्यार॥ —११७-२३६
उत्तम जननी प्रीतडी, कीणहीक वेला होय वे।
ते छोडी नै वीसरै, ते जग मूरष होय वे॥ —८३-८५
उत्तम जीव हुवे जिके, जिण तिण सू उपगार।
करता न जाणे हाण वे, राषे सूष परकार वे॥ —१०-१८३
उतावल कीया अलूझीयै, सनै सनै सहु होय वे।
माली सींचे सो घडा, रीत आया फल होय वे॥ —९६-१४१
उमरावा बरज्या घणा, राज न मान्यो कोय वे।
बोधना लेख हुवै तिकै, उ टले टलीया टलाय वे॥ —६८-५१
उर-थल थोडा ऊकीया नींबूण चेयारा। —१७१ नो०

ऊ

ऊडै पडवै पैस, पिवसु पंजा मारती।
सुमाणसीया एह, घूंघे लागा घोलउत॥ —१६२-७४
ऊंडो गाजे ऊतरा, ऊची बीज खिवेह।
ज्यु ज्यु सरवणे सभलु, त्यु त्यु कपै वेह॥ —१५९-५०
ऊणां सहेल्या आगला, म्यारा हु तिल-मात॥ —१६९-४७
ऊवां बरसै बावली, लूबा-भूबा लोर॥ —१७८-८८

ए

ए आजूणी रात, षबर पडेसी मूझ षरी।
वैरण हवी वात, षरी म थाज्यो षेलणा॥ —११६-२३५

एक गई दूजो गई, हिव तीजी की मेल।
नारी नही का आपरी, कुडी जगमें केल ॥ —१११-२१०

ओ

ओ जोऐ थारी वाट। —१७७-३. गी०
ओ दीवो घर आपरै, जिण दीठा जीवोह। —१८१-१२९

क

कचू कस्यो दिल हथ कीयो, मीलीयो तन सोनार।
जाणे केलना पान पर, कपूर ढुल्यों नीरधार ॥ —११९-२४७
कठ कथीरा काठका, दन थोडा जांणा। १६४-४
कटारी कुनार, लोहाली लाजी नहीं।
आजूणी अध रात, नागण गिल बैठी नागजी ॥ —१६०-५९
कटारी कुनारि, लोहारी लाजी नहीं।
नाग तणै घट माहि, वाढा नींवू ही भली ॥ —१६०, टि०
कनक थाल में छेद करि, मारी लोहा मेष। —४-३०
कमर बंधावत कुवरकु, विरह उलट गयो मोहि।
सजन वीछुडण कव मिलण, काहा जाणें कब होय ॥ —१५०-९
कर ढीला घट साघुडा, नीर ढुली ढुल जाय वे।
पथीडो तिरस्यो नही, नेयणां रहीयो लूभाय वे। ९१-१२५
कलमें को कुभार, माटी रो भेलो करै।
चाक चढावणहार, कोई नवो निपावे नागजी ॥ —१६२-७७
कलमें को कुभार, माटी रो भेलो करै।
जे हू हुतो कुभार, तो चाक उतारू नागजी ॥ —१६२- टि०
कला प्रकासत दीपकी, दूणा भासत दीप।
रभा दिषा छैवि रूपकी, स्यामा पडी समीप ॥ —४९-३८२
कामण कारीगर तणी, कांमण केथ पडेह।
सात कीयो सांसे गई, भलो दिखायो नेह ॥ २१०-२०८
काम विचारी ने कहो, रहसी तिणरी लाज वे।
ऊठ कहो ऊतावला, तो विणसाडे काज वे ॥ ९६-१४२
कामण हीयडा कोरणी, जीवत रही तु आज वे।
हिव सारी सिध होयसी, देह विलूधो नाज वे ॥ —९४-१३४
कामातुर हीरां कहै, रवि राह विहरत।
चाहत चातुर अधिक चित, आतुर होत अनत ॥ —६-४१
काची कली मत लूबीयै, पाका लागेगा हाथ वै।
जीवत जावेगा मानवो, नही को बीजा साथ वै ॥ —८९-१११

कारीगर किरतार का, छयल किया तसू हाथ।
जीहा पीउ थारी छांहडी, तीहा पीउ माहरो साथ॥ —१०८-१६१

काल हुतै काची कली, भई सुपारी आज। —३-१७

काली काठल भलकीया, बीजलीया गयणेय।
चमकती मन मोहीयो, कचू छाकी देय॥ —१३३-३०६

कुकुवरणी देह, टीकी काजलीया थई।
एह तुमोणा नेह, सू नित मेलो नागजी॥ —१५५-३४

कुच कर ओखद भुज पटो, अहैर पती दे ताव।
उन नयननके घाव कू, ओखद एह लगाव॥ १५३-२६

कुच जा भुज जा अहर जा, तन धन जोबन जाह।
नागो सयण गमाइयो, अब रहि'र करसी काह॥ —१६१-६१

कूड कपटनी कोयली, रमती पर पुरषाह।
लजां सकण जान ही, प्रीतम मन पिछताह॥ —१३४-३१४

कुल मैं दोय कुभार, वासोलो नै वींझली।
जे हु हुती सुथार, नवो घड लेवत नागजी॥ —१६२-७२

कुलवटनी कामणि तणी, सासरीयौ सीरदार।
इश्वर गत जाणै खरी, आदर पु(कु)जी नार॥ —६४-४१

केइ नरषै कामणी, आडै गुघट आय। —१७७-८४

केहनी अस्त्री न जांणज्यो, कुड़ो नेह रचत बे।
पूठ पराई नारीया, न घरे एक ही कत बे॥ —१०४-१७१

कोड छुडाया कागला, पीउडा कारण पाय।
विधना हदी वातडी, अजब करी सूझ माय॥ —१२२-२६६

कोरण उतराधिकरण, घोरण ची(चो)ली कुवाल।
घणीया घण सालै घणी, वणीयो इम वरसाल॥ —११६-२३०

ग

गरदन जसकी गागडी, तक कुरज तरारां। —१७१-नीं०

गुनेहगार हु रावलो, साहिब चरणा दास।
छोरू कुछोरू हुवै, तात न छोडत आस॥ —१३६-३३७

गोरीदा गळ-हायडा, नागकुवर कर सेल।
जाणै चदन रूखडै, अधर विलवी वेल॥ —१५०-१३

गोरी वाह छातीयां, नागकुवर न झुराय।
जाणै चदन रूखडै, वेल कलुत्री खाय॥ —१५०-१२

गोरी हीयो हेठ कर, कर मन धीर करार।
साई हाथ सदेसडो, तो मिलसा सो-सो वार॥ —१५०-११

घ

घणा दीनारी प्रीतडी, कीम मुझ छाडी जाय वे।
रूडा राजिंद परपज्यो, जीवू ज्या लग काय वे ॥—८३-८७
घणी सासनी नारी नहीं, सेणा सहिल अपार।
प्रेम गहेली सेंणनै, आपै तन घन सार ॥ —११८-२४४

च

चकोर चाहे चदकूं, मोर चहै घण मड। —२३-१९२
चल सिर खत अदभुत जतन, वघक वेद निज हृत्य।
उर उरोज भुज अधर रस, सेक पिंड पव पत्य ॥ —१५२-२२
चसम म मीच —१८१-१३२
चाल[क] हीरा चदसी, फेत राहा सो कथ। —४-३१
चाल विलूवी इघक चित, वेल तरोवत चाण।
लपटावो गल लाडली, रसिया प्रोहित राण ॥ —४८-३७१
चुडलो चोरा(चौंरा) एह, मोल मुहगै आणीयो।
नाखूनीं झाडेह, भव पैला सु पाइयो ॥ —१६२-७६
चेला पुसतक झलकरी, कहा पूछत है वात।
इण नगरी की डगर में, एक आवत एक जात ॥ —१५८-४४

छ

छटी (ठी) वैरण रात —१७८-८७
छोटी केहर वोहत्त गुण, मिलै गयदा माण।
लोहड वडाइ ना करै, नरा नखत्त प्रमांण ॥ —१४७-३

ज

जगमें नारी रूवडि, वमत करी जगनाथ।
पिण साचे मन चालवे, तो पिउ थाय सू नाथ ॥—१३४-३१५
जतीया सतीया जोगीया, वक-फाड व(वै)ठारा। —१७२—नीं०
जलज्यो पासा पेलणा, जलज्यो पेलणहार।
दस मासरी डीकरी, ले गयो कुवर रसार(ल) ॥—७८-७२
जल वूठा थल रेलीया, वसघा नीलै वेस। १७४-६१
जागै नह मासू जसा, वैरण थारो वींद। १८१-१२५
जाचक जै जै वोलीया, मेह आगम जिम मोर वे।
वानें करि राजी किया, तोरण वाघ्या तोर वे ॥ —६१-२४
जा जोवन भर जोवजा, जा पाणेचा नेण।
नागो सयण गमाय कर, रही किसा सुख लेण। —१६०-६०

जांण न पाई हुठमला, नवि पूगो मूझ डाव।
जे हु मारचो जाणतो, तो करती कटार्‌या घाव। —१०८-१६६
जांणे नागण हीडले, षभा सोनारा।—१७०–नीं०
जाणे मांन सरोवरे, मीलप्यो हुस विसाल।
सेझा आई सूंदरी, छुटो गज छछाल॥ —१३३-३११
जाणे हस मलपीयो, सर मान मझारा। —१७१ नी०
जान मांणी रतडी, ते न लाई वार।
अमा विछोहो तें कीयो, तो करज्यो भरतार॥ —१६१-६३
जाय जसी पुग छेह, पाछा आय जासी नहीं।
नालां विच बेंसेह, वले न वाता कीजसी॥ —१६१-६२
जावो जीभा ना कहू, ववो सवाई घट।
ऊगडसी था आवीया हुता रथा को हुट॥ —१५१-१४
जे नर रूपे रूषडा, ते नर निगुण न हुवत।
जीमण भोजकूमार का, मोह्यो मन तन कत॥ —१३३-३१३
जे पर पूरषा कामनी, हीलमील षेलणहार।
ते पति नै काकर समो, गिणै नित की नार॥ —६३-१३१
जेसा सूत्र ज्यूं वाल्हा (लहा), जेसा अवर न कोय।
पिण जग मावीता तणो, सूखमें दुष को जोय॥ —१३२-२६८
जोगीडा रसभोगीया, भर-भर नयण मत रोय बे।
आसी(अस्त्री)मजाणो आपरी, घर तुमारा जोय बे॥ —१०५-१७५
जोवण जोगी जोड। —१७६-११०
जोवन चढीयो जोर। —१७८-६१
जो सूरज आथूण मैं, उगै दिन मैं हजार बे।
आग न जो सीतलपण करे, तो पिणहु नहीं वार बे॥ —८३–८४
ज्यू पितु जपे तुं षरो, कालो गोरो कथ।
तेहवो हुकम चढाईये, सीस सवा समरथ॥ —१३१-३०२

झ

झड पडत घावरत कीच भीन।
मनु तुच्छ नीर तडफडत मीन॥ —३८-२६८

ट

टिपांटिप टपीयाह, विण वादल बुछुटीया।
आख्यां आभ थयाह, नेह तुमीणै नागजी॥ —१५७-३६

ड

डाकण नहीं गिवार, सिहारी हुती नहीं।
गलती माझल रात, खरी सिहारी हुय रही॥ —१५८-४८

डूगर केरा वावला, ओछा तणे सनेह ।
वहता वहै उंतावला, झटक देखावै छेह ॥ —१६१-६७

ढ

ढोल दडूकै तन दहै, गेहरीया नाचत ।
चालो सखी सहेलडां, कठै न दीसै कत ॥ —१५३-२७
ढोल धडकै तन दहै, विरहीणी सतीया होय ।
पीउ मीलाओ तो मीलै, तो किम दुधीयो कोय ॥ —१२७-२८४

त

तण पुल रमसां तीज, १७९-१०४
तल गुदल निलज उपरे, नीर निरमल होय ।
टुक पीवहो रीसालूवा, नीरमल नीर न होय ॥ —१२५-२७६
तास तीवां लोयणा, ओस(अर) चगी वेणाह (नैणांह) ।
धार विछुटी धर गई, नर चढियो नैणांह ॥ —१२४-२७३
तीजी वैरण तीज, १७८-८६
तुररै छोगै चांकीया, झलव रहै अठ जांम ।
भीनं रग अलीयो भमर, माणीगर म्यारांम ॥ —१६८-३५
तू हीरावल हीर, मोट सूता मिलसी घणा ।
तू पाटण पटचीर, नारी - कुजर नागजी ॥ —१६१-६८
ते नारी गढ - सूरडी, होवै जगमै हरांम वे ।
त्यू ए रीसालूरी गोरडी, हठमलसूं हित काम वे । —९२-१३०
तेहडो वैरी तेरमो, जोवन चढीयो जोर ॥ —१७८-९१
तो सरसी नारी तणा, पेल तणा मन पेल ।
प्राण तणा पासा ढल्या, मैंमत कीवा मेल ॥ —११०-२०७

थ

थारो वीरो वहुवली, तीम अरजण-वाण ।
रयणी वात वहू गई, ईण वीघ राता रैण ॥ —१४२-७३
दईवाघीन लिख्या जके, अकण भिसले सीस वे ।
जेसा दुप-सूप सीरजीया, जेसा-जेसा लहै नर दीस वे ॥ —१०७-१८४
दल वादल भेला हुवा, देता नगारां ठोर ।
जाणै भाद्रव गाजीयो, चढीया वहतां सजोर ॥ —१३७-३२७
दसमो वैरी दीवलो, १७८-८९
दारूकी पी धल (धण)दपै, छेकी अण साह । —१८१-१२८
दुलही वनडो देपता, ऊलही उर विच आग ।
सगम देपो साहिवो, कीनों हंस'र काग ॥ —४-२९

देषत घुंघट ओट दे, वकी व्रगनि बिसाल ।
लीन बसत गुलालमें, लसत अग छवि लाल ।। —४४-३१५
देषो हुती दस मासनी, पाली किण विध पोष दे ।
हिव परघर मडप करी, अस्त्री जातरी ओष दे ।। १०४-१७०
वोढी कर दो दूर, १७६-८३

घ

घण वण आवँ ढोलीयँ लगथगथी लारा ।। —१७२-४६ नों०
घवळा बाल न चाढ, नागरवेल न चढीयँ ।
चपँ चली चाढ, फूल विलव्यो भवरलो ।। —१५४-३२

न

नष अगूठे अगूली, भरीयो कलस अभ्रग ।
अजेयस मारू साहिबो, बोले नहीं ओ वूग ।। —११२-२१७
नर-नारी ओठा नषग, तीषा वे तोषार । —१८४-१३७
नवमी आ वैरण नदी, १७८-८६
नवल सनेह पीहर तणों, पीण सासरीयों परधान वे ।
सासरीयो जुग-जुग तणो, सूष पीहर उनमान वें ।। —६४-४०
नही घोडा रथ उटीया, हाथी ने सूषपाल ।
चाकर-बाबर को नहीं, ए नृप केहा हवाल ।। १०४-१७३
नागजो नगर गयाह, मन-मेळू मिलीया नहीं ।
मिलीया अवर घणाह, ज्यासु मन मिलीया नहीं ।। —१५१-५७
नागडा नवखडेह, सगपण घणाई तेडीयँ ।
भुय ऊपर भुवताह, मिलता ही मरजै नहीं ।। १६२-७३
नागडा नवलो नेह, नोज किण ही सु लागजो ।
जलै सुरगी देह, घुखै न घुवो नीसरे ।। —१६१-६५
नागड़ा नवलो नेह, जिण-तिणसू कीजै नहीं ।
लीजै परायो छेह, आपणो दीजै नहीं ।। --१६१ ६४
नागडा निरखु देस, एरंड थाणो थपीयो ।
हुसा गया विदेस, बुगला हीसु बोलणो ।। —१५७-३१७
नागा खायजो नाग, काला करडँ मांहलो ।
मूवो न मिलज्यो आग, जावतडँ जगाई नहीं ।। —१५५-३५
नार पराई विलसता, काटा धूर तुटाय वे ।
सीस साई जघ वीजियँ, मीच पडँ सूचि काय बे ।। —१०१-१६४
नारी न जाण्यों आपरी, जगमें न सूणी कोय ।
मूणस मरावँ हाथसू, पाछैसूं सती होय ।। —१११-२१२
नारी नही का आपरी, पूठ पराई थाय ।
जो हित तन-मन वीजता, पिण न पतिजै जाय ।। ११८-२४०

नारी ना-ना मूष रटै, विमणो वधे सनेह ।
जाणे चदन रूपडै, नागण लपटी देह ।। —११६-२५१
नितवा दीजे ओपमा थीणा रवै हारा ।। —१७१- नॉ०

प

पर घर करा न प्रीतडी, प्रोहित वचन प्रकास ।
वाघा म्है छा काच दिढ, रमा न थिय रत-रास ।। २०—१६०
परवाई झीणी फूरे, रीछी परवत जाय ।
तिण विरीया सू कलीणीया, रहती पीव गल लाय ।। ११५—२२७
पलीवालरी पोत ज्यू, ऊठ्यो झाटक अग ।। —१८३-१३५
पाका वैरी पनरमा, वलीया फूला वाग ।। —१६८-६२
पाछे वोलो वोलड़ा, वादै कर रीसाय ।
ते सूता पितु अलपामणो, होय सदा दुपदाय ।। —१३१-२६७
पापी वैठो प्रोलीयो, कूडा इलम लगाय ।
निलाडारी फुट गई, पिण हिवड़ारी वी जाय ।। —१५६-३६
पालो पाणी पातसाह, चढी उत्तराधि कोर ।
तीण वीरीया घणियायति, मोरडींया ज्यू झिगोर ।। —११६-२८८
पाना फूला माहिला. सीस रहूगी सोड ।
के नाराज्यू साजना, लहु मूझ हीयडे जोड ।। —१०६-१६६
पिंडस पतल कटि करल, केल नमावे अग ।
लोयण तीया डग भर, आई मेहल पतग ।। —१३३-३१०
पीतमकै उर सेझ पर, चदमुपी चिपटत ।
मानु भादवे मासकी, लता व्रछ लपटत ।। —४६-३८७
पीपलपना पेटका प्रभ केल चीरारा । १७१ नॉ०
पीपल पान'ज रुणझणै, नीर हिलोला लेह ।
ज्यु ज्यु श्रवणे सभलु, त्यु त्यु कपे देह ।। —१५६-५१
पुरुष प्रीत हीरा तलफै, दुपद हीयो दाहत ।
ऐसैं वुद आकासमैं, चात्रग मुप चाहत ।। —६-४४
पूत्र ईसा जगमें हुवे, माइत तणा मजूर ।
रहै सदा मूप आगल, नही अलगा नही दूर ।। —१३१-३००
पूत्र पितारा हुकममें, जे रहे जगमें जोय ।
ते सारीसो जग इणै, वले न वीजो कोय ।। —१३१-२६५
पूरष भला गहिला थई, रापै भरोसो नार ।
कदे ही आपणो नही हुई, नारी जग निरधार ।। —११८-२४१
पूरो पूनम जेहवो, मूप विच चूपे जडाव ।
कालो वादल कोर पर, वीज पीवे जिझेंकाव ।। १३३-३१२

प्यारा पलका ऊपरै, राषाला चित रीत।
रातै घणी छै राजवी, प्रीतम अधिकी प्रीत ॥ —२५-२१६
प्यारी पीव प्रजक पर, ऊलही उर अवलूब।
मानु चवन वृच्छ मिल, भुकी 'क नागणि भूब ॥ —२५-२१४
!!त लगी प्यारी हुती, बाला थई बिछेह।
नोज किणही नै लागज्यो, कामण हुदो नेह ॥ —१५२-२१
प्रेम गहिली हु थइ, माहरा पीउरे सग।
यू नहीं जाण्यो हठमला, तो करती रगमें भग ॥—१०८-१९५
प्रेम विडाणा पारषा, जगके मोह अकथ।
कर जोडि पितु आगले, रहै सदाई साथ ॥ —१३१-३०१
प्रोहित हीरां पेषीयो, तीष नोष छिव तोर।
वूषी तिषातुर देषिया, मानु घणहर मोर ॥—३५-२६०

फ

फिट-फिट कुबधी सज्जना, कीनो नहीं मूझ साथ।
षबर न का सूझनै पडी, तो मीलती भर बाथ ॥ —१०८-१९३
फीकै मन फेरा लीया, अतर भई उदास।
आंष मीच रोगी अवस, पीवत नीम प्रकास ॥ —५-३२
फेर पयाला पावसां, दे'र गलारी आंण ॥ —१७९-१००

ब

बाटी तोनै जीभडी, कुटल बचन कहाय।
रीस निवारो राजवी, मो पर करो मयाह ॥ —४७-३६१
बालापणरी प्रीतडी, पूरण कीधो पीर।
लागा हाथ छयलका, हिव तोसू हुवो सीर ॥ —१०८-१९०
बाला बिल-बिलतांह, ऊतर को आयो नहीं।
कदे कांम पडीयांह, निहुरा करस्यो नागजी ॥ —१६० टि०
बावी बीजी हुइ रूप वेषे हाक-बाक ॥ —१७०-४
बांहि ग्रहां की लाज। —१८५-१४१
बोलै वैरी बारमा, पपीया पीऊ-पीऊ। —१७८-९०

भ

भला तुम्हे सुषीया हुवो, म्हे दुषीयारो देह।
साहिब करसी सो भला, पषी पषी सालेह ॥ —९५-१३९
भला पधारया कुमरजी, भलो हुवो दिन आज।
आस्यां-बधी कांमनी, ताका सुधरया काज ॥ —१३२-३०६
भली बूरी माइत तनी, नवि कीजै वेषै पूत्र।
पूठत मावीतथी, ते सफू जावै सूत्र ॥ —१३१-२९९
भावज भणु जुहार, सयणांनुं सवेसबा।

वै तुमीणा वोहार, जीव्या जितेहो मांणीया ॥ —१५५-३३
भामण प्यारो अरू पर, पीतम परस प्रजक।
वक सरीर विलांसमैं, लसत कवूतर लक ॥ —४६-३८६
भांमण भूल न वोल, भवरो केतकीया रमै।
जांण मजीठां चोल, रग न छोडे राजीयो ॥ —१५७-३८

म

मद वेरी अगीयारमो। —१७८-६०
मन चितै वहुतेरीयां, किरता करे सु होय।
उलटी करणी देवरी, मती पतीजो कोय ॥ —१४५-१
मगल जारी मागरण, चीला छोड कुचीन।
चाले मन पिउ नहि गिणै, ज्यू मदमातो फील ॥ —१३४-३१६
माणस ते नही ढोरडा, पर-त्रीय राखे नेह वे।
नारी पत छोडो तुरत, पर-पूरषांसू नेह वै ॥ —६२-१२६
माय वीडांणी पिता पारकां, हम ही विडाणां जाय वे।
पेवटीयाकी नाव ज्यु, कोइक सजोग मीलाय वे ॥ —७०-८
मालू ! थारां मुलकमै, कासु भला कहों।
नर नागा नारी नलज, रीजे केम रहों ॥ —१८४-१३८
मांटी सूतो छोडनै, जावे पेलण नार।
पर रस भीनो कांमणी, ते हूई जगमे पराव ॥ —११८-२३८
मांणस देह विडांणीया, क्या हींदु मूशलमांन।
आग जलाया कायने, हींदु धर्म निदांन ॥ —१०६-२०१
मेहा घोर करै अणमाप। — १८३-२ गीत
मो मन मलियो वालमा, कहुक प्यारा कत।
वीसत यक-सम दूधमैं, मानु नीर मिलत ॥ —२६-२२४
मो मन लागो साहीवा, तो मन मो मन लग।
ज्यु लुण वीलुधो पाणीयां, ज्यु पांणी लुण वीलग ॥ —१३४-७३
मोनों लोहो —१८५-१४६
मो लकानै मू दडी, अवल वतावै आण। —१७६-७७
मो सरखी निगुणी तणे, कारण काया छोड।
हु अभागणी जीवती, रहीय करडका मोड ॥ —१०८-१६२
म्यारा ! मारा मुलकरा, घागारा वापाण।
आलीजा सुणजो अवे, अवणा कथन सुजाण ॥ —१८४-१३६

य

यण प्रकार सोहत महल, दमकत छवि उद्योत।
वीपग लग प्रतिविव दुत, हिलमिल जगमग होत ॥ —१२१-१७२

प्यारा पलका ऊपरै, राषाला चित रीत।
रातै घणी छै राजवी, प्रीतम अधिकी प्रीत ॥ —२५-२१६
प्यारी पीव प्रजक पर, ऊलही उर अवलूब।
मानु चदन वृच्छ मिल, झुकी 'क नागणि झूब ॥ —२५-२१४
प्रीत लगी प्यारी हुती, बाला थई बिछेह।
नोज किणही नै लागज्यो, कामण हवो नेह ॥ —१५२-२१
प्रेम गहिली हु थइ, माहरा पीउरे सग।
यू नहीं जाण्यो हठमला, तो करती रगमें भग ॥—१०८-१६५
प्रेम विडाणा पारषा, जगके मोह अकथ।
कर जोडि पितु आगलें, रहै सदाई साथ ॥ —१३१-३०१
प्रोहित हीरा पेषीयो, तीष नोष छिव तोर।
वूषी तिषातुर देषिया, मांनु घणहर मोर ॥—३५-२६०

फ

फिट-फिट कुबधी सज्जना, कीनो नहीं मूझ साथ।
षबर न का मूझनै पडी, तो मोलती भर बाथ ॥ —१०८-१६३
फीकै मन फेरा लीया, अतर भई उदास।
आंष मीच रोगी अवस, पीवत नीम प्रकास ॥ —५-३२
फेर पयाला पावसां, दे'र गलारी आंण ॥ —१७६-१००

ब

बाटी तोनै जीभडी, कुटल बचन कहाय।
रीस निवारो राजवी, मो पर करो मयाह ॥ —४७-३६१
बालापणरी प्रीतडी, पूरण कीधी पीर।
लागा हाथ छयलका, हिव तोसू हुवो सीर ॥ —१०८-१६०
बाला बिल-बिलतांह, ऊतर को आयो नहीं।
कवे कांम पडीयांह, निहुरा करस्यो नागजी ॥ —१६० टि०
बादी बीजी हुइ रूप देषे हाक-बाक ॥ —१७०-४
बांहि ग्रहां की लाज। —१८५-१४१
बोलै वैरी बारमा, पपीया पीऊ-पीऊ। —१७८-६०

भ

भला तुम्हे सुषीया हुवो, म्हे दुषीयारो देह।
साहिब करसी सो भला, पषी पषी सालेह ॥ —६५-१३६
भला पधारचा कुमरजी, भलो हुवो दिन आज।
आस्या-बधी कांमनी, ताका सुधरचा काज ॥ —१३२-३०६
भली बूरी माइत तनी, नवि कीजै देषै पुत्र।
पूठत मावीतथी, ते सफू जाषै सुत्र ॥ —१३१-२६६
भावज भणु जुहार, सयणानुं सदेसडा।

वे तुमीणा वोहार, जीव्या जितंही मांणीया ॥ —१५५-३३
भामण प्यारी श्रक पर, पीतम परस प्रजक ।
वक सरीर बिलासमैं, लसत कबूतर लक ॥ —४९-३८६
भांमण भूल न वोल, भवरो केतकीया रमैं ।
जांण मजीठां चोल, रग न छोडे राजीयो ॥ —१५७-३८

म

मद वेरी अगीयारमो । —१७८-९०
मन चितै वहुतेरीयां, किरता करे सु होय ।
उलटी करणी देवरी, मती पतीजो कोय ॥ —१४५-१
मगल जारी मागरण, चोला छोड कुचील ।
चाले मन पिउ नहि गिणं, ज्यू मदमातो फील ॥ —१३४-३१६
माणस ते नही ढोरडा, पर-त्रीय राखे नेह वे ।
नारी पत छोडो तुरत, पर-पूरुषांसू नेह वे ॥ —९२-१२९
माय वीडांणी पिता पारकां, हम ही विडाणां जाय वे ।
खेवटीयाकी नाव ज्यु, कोइक सजोग मीलाय वे ॥ —७०-८
मालू ! थारां मुलकमें, कासू भला कहो ।
नर नागा नारी नलज, रीजे केम रहों ॥ —१८४-१३८
मांटी सूतो छोडने, जावे खेलण नार ।
पर रस भीनो कांमणी, ते हुई जगमे खराब ॥ —११८-२३८
मांणस देह विडांणीया, क्या हींदु मूशलमांन ।
आग जलाया कायने, हींदु धर्म निदान ॥ —१०९-२०१
मेहा घोर करै अणमाप । — १८३-२ गीत
मो मन मलियो वालमा, कहुक प्यारा कत ।
वीसत यक-सम वूधमें, मानु नीर मिलत ॥ —२६-२२४
मो मन लागो साहीबा, तो मन मो मन लग ।
ज्यु लुण वीलुधो पाणीया, ज्यु पांणी लुण वीलग ॥ —१३४-७३
मोलों लोहो —१८५-१४६
मो लकानै मू वडी, अवल बतावै आण । —१७६-७७
मो सखी निगुणी तणे, कारण काया छोड ।
हु अभागणी जीवती, रहीय करडका मोड ॥ —१०८-१९२
म्यारा ! मारा मुलकरा, वागारा वाखाण ।
आलीजा सुणजो अवै, अवणा कथन सुजाण ॥ —१८४-१३९

य

यण प्रकार सोहत महल, दमकत छवि उद्योत ।
दीपग लग प्रतिबिंब दुत, हिलमिल जगमग होत ॥ —१२१-१७२

र

रतन कचोलो रूवडो, सो लागो पाथर फूट बे ।
जिण जिण आगल ढोईयो, केसर बोटी काग बे ॥ —१२५-२७५
रतनावत दिल रोसमें, प्रोहित चले प्रयाण ।
बचन बचन बाधो बिया, जग्यो अग्नि प्रत जाण ॥ —३१-२३९
रयणी वुषकी राश भी, भरसी गुण सताप ।
ढोली सहु ढीली पडी, जावो कलेजा काप ॥ —१०१-१६१
रषीयो इवर राणीए पकड नठारा । —१७२-नो०
रस रमता मैंहला विषे, चोपड पासा सार ।
ते छोडी घर पाथरयां, सीस घड जूवा वार ॥ —१०८-१६४
रहो रहो केथ अणभावना, अणहुती कहिताह ।
हीवडै हार अलूझियो, सो सूलझायो नेणाह ॥ —१२४-२७४
रहो रहो गुरजी मूढ कर, कहा सिखावत मोय ।
सत(व) सूते इण नगरमें, जागत विरला कोय ॥ —१५८-४५
राषीजै षावद सरस, नाजक धण रा नेम ।
प्राण दुषी प्यारी तणो, कीजै अति हठ केम ॥ —४८-३७०
राज कीयो छै रुसणो, ऊर मो वहत कदोत ।
आप न मानो मो अरज, मरू कटारी मोत ॥ —४८-३६८
राज सरीषा प्राहुणा, वले न आवे कोय ।
मिलीया दुष गलीया सहु, जूगत थई सहु जोह ॥ —१३५-३१६
राजा वैद बुलायकै, कुवर देषाई बाह ।
वैदा वेदन का लही, करक कलेजा माहि ॥ —१५१-१८
राते करहा उछरे, दीहा उतारा होय ।
मारू मूध कटारीया, वर क्यू वीरडा होय ॥—१२१-२६०
रावत भिडिया वाकडा, ताहरा हाथ सलूर ।
मो निगुणीकै कारणे, काया कीधी दूर ॥—१०८-१८८
राम सरीसा भोगव्या, बारै वरस वनवास ।
तो हु गीणती केतली, दईव लिख्या ते आस ॥ —१०७-१८५
रीसालू कुवरनै छोडनै, क्यू जायै घर और बे ।
पर पुरषा सू नेहडो, किम कीजै निज जोर बे ॥—६३-१३३
रूडा राजिव जाणज्यो, मूझनै चूक न कोय ।
जे हू जाणती मारीयो, तो हु करतो वोय ॥ —१०८-१६७
रग प्यालरा व्यापगत, रात वण्यात ऊमत ।
चद गिगन ऊडन चमक, सजोगण हुलसन ॥ —४४-३१८
रडी भूडी ते करी, माण मूकायो मोह ।
षार दीयो मूझ छातीया, भली करी मूझ दोह ॥ —११६-२०६

रंडी राजो ना हुई, कुमर थकी कर कूड।
मे विदनामी रच गई, नार वेई तुझ धूड ॥ —११०-२०४

ल

लछ(ज)काणो पडीयो लगौं, कारी लगी न काय ॥ —१७२-८२
लाष वात चालू नहीं, टालू नह मन टेक।
तापसी वालक और नृप, त्रिया हठ है छै येक ॥ —४६-३५३
लाष सयाणप कोड वुध, कर देषो सव कोय।
अणहुणी हुणी नहीं, होणी हुवै सु होय ॥ —१४५-२
लाषा वाता लाडला, मांणो महिल मनाय।
हिवडै नवसर हार ज्यू, लेस्या कठ लगाय ॥ —४७-३६५
लाडा था वण लागसी, मानै षारा मैल ॥ —१७४-६५
लावक-झूंवक लाडली। —१७०-नी०
लुलुहीयारो हार। —१७७-४ गीत
लूवा-झूवा लोर। —१७८-८८
लेष विधाता जि लीष्या, तीमहीज भुगतै सोय।
सुगण नरा मन जाणज्यो, वात तणो रस जोय ॥ —५१-२
लोभी देषौ लोयणा, ऐमी नजरि भरि ऐम।
मुष वाणी वोलै मधुर, प्रीतम करि हित प्रेम ॥ —४७-३६४

व

वकीया षारा वैण। —१८५-१४३
वण्यो त्रियाको वेस, आवत दीठो कुवरजी।
जातो दुनीया देख, नाटक कर गयो नागजी ॥ —१५७-४०
वदना नाक विराजीयो च(छ)व कीर चचारा। —१७१-नी०
वरषा रीत पावस करे, नवीया पलके नीर।
तिण विरीया सूकलीणीया, धणीया स्यू धर्यो सीर ॥ —११५-२२६
वरसालो वैरी वू(हू)ओ, वैरण दूजी वीज ॥ —१७८-८६
वागा माहेला मानवी, साहूकार के चोर वे।
दरषत ही छीपतो फीरे, ढाढो गमायो के ढोर वे ॥ —८६-२४
वाडो मेहला आदमी साह अछै किनू चोर वे।
रूषा छीपायो वयू रह्यौं, ढीलो हूवो जू ढोर वे ॥—८६-१०६
वादल कालै वीजली, षवै भली कर षांत ॥—१७३-५३
विधना तु तो वावली, किसका ले किसकू देय वे।
रोतो सामी चालीयो, पाटण मारग लेय ॥ —१११-२११
विडगारा वाषांण, वोडतणां को वाषजे।
वेडातारा वांण, जाण न पावै जेलीयां ॥ —१६७-२८

विसरा-वसरी चोसरा, अमला करडी ताण।
सेझां रग पलाणीयां, अमलां किया पिछांण ।। —११९-२५०
वेधालू मन वीधयौ, मूरष हासो होय।
जांणै सोई सूजाण नर, अवर न जाणै कोय ।। —५१-३
वका लोइण लोइसा, कटि कबांण कसि षग।
सेझ समूद पर नाव ज्यू, तीरता चले तुरग ।। —११९-२४८
व्यापारी ज्यू वटाउडा, वालद ज्यू विणजार।
लदीयां लोथ पडी रही, कागा कुचरे षा'र ।। —१०९-१९८
वैरी चौथा बादला। —१७८-८७

श

श्रीमहाराजा जाणज्यौ, सूरा एह सताप।
सिर उपर रूठा फिरै, त्यांनै केहा पाप ।। —१२६-२८२

स

सग सूहेलो पीउ तणो, दुहिलौ विछडवार वे।
पीउ'र अक्षर जीभथी, नहीं छूटसो नार वे ।। —६३-३६
सजन आंबा मोरीया, आई आस करेह।
ज्यु ज्यु श्रवणे सभलु, त्यु त्युं कपै वेह ।। —१५९-५२
सजन चदन बांवनै, ऐरू कूकारेह।
ज्यु ज्यु श्रवणे सभलु, त्यु' त्यु' कपै वेह ।। —१५९-५४
सजन दुरजन हुय चले, सयणा सीख करेह।
धण विलपती यु कहै, आबा साख भरेह ।। —१५१-१६
सत कीधो ने साहबण, हिंदु तुरक समान।
जस षाटी जालम तणो, जलण बर्‌यो ए प्राण ।। —११०-२०५
सरवर निरमल नीरडै, भरीयो हसा केल।
वागा फूली सूगीधीया, वास बले बहु मेल ।। —१११-२१४
सरवर पाय पषालतां, तेरी पायडली षस जाय।
हु थने पुछु गोरडी, थने क्यु कर रयण वीहाय ।।—१३३-७१
सरवर पाय पषालता, मोरी पायलड़ी षस जाय।
अवर तारा गीणता थकां, यु मोकु रयण वीहाय ।। —१३३-७२
साचौ वैरी सोलमो, रस बरसावै राग। —१७८-९२
साजनीया सू प्यार, कठे वसा दीसौ नहीं।
मिलता सो-सो वार, नैणा ही सासो पड्यौ ।। —१५४-२९
सारग वैरी सातमा, मीठा गावै मोर। —१७८-८८
साली मो मन माहरी, मूडी राड भडाण।
तो सरसी वाली बरस, देषी लोह पडांह ।। —११०-२०९

सासरीया पीहर तणा, कुलनैं करतो पराव वे।
पर पुरुषां मनडो रचे, सकल गमावे आव वे।। —१०४-१७२
साहिब तो सुता भला, करडी बागां तांण।
घण नही लीवी नींदड़ी, ढीला हुवा संधाण।। —१२२-२६२
साई बाजी राप वे, तो सूधो सहु काज।
पच पतीजो पामै वे, वलि रहे सगली लाज।। —१३०-२६१
साई साजन प्रेमका, घण दीवा छीटकाय।
वरपा रुतरी रातडी, दुप म दई विताय।। —१२२-२६३
सांप छोडी काचली, भीत्या छोड्यो लेव।
रीसालू छोडी गोरडी, मन भावै सो लेव। —१२५-२७७
सिघावो नै सिध करो, पूरो मनरी आस।
तुम जीवकी जाणु नही, मो जीव छै तुम पास।। —१५१-१५
सिसक-सिसक मर-मर जीवैं, ऊठत कराह-कराह।
नयण बाण घायल कीया, ओषद मूल न थाय।। —१५२-२०
सिंगालो अरि पीलणो, जिण कुल एक न थाय।
तास पुराणी बाड ज्यू, दिन-दिन मायैं पाय।। —५२-७
सीह तणा जेवा बाछडा, किम वंधीया रहै वच वे।
होणहार सो होयसी, विधना कामना अच वे।। —६५-४४
सुण वडारण केसरी, कथन पुराण कहत।
लछण वाद लुगाईया, अकलि पछे ऊपजत।। —४८-३७३
सुण वीरा वैनी कहै, कुलवती ते होय।
त्रीया-चरित्र जाणै नही, जो आवै सूर-ईंद्र।। —१४१-६९
सुण हो साहिब हठमला, सूरां हदा काम वे।
कायर पडग न वावसी, रकण वैसी दाम वे।। —९१-११८
सूकुलीणी नारी तिका, पति सग रहै अछेह।
जीवतडा नहि वीसरे, न वलगाई नेह।। —१३५-३१८
सूती सहै सहेलिया, गहरी नींद गरव।
दरद नही छै दूसरा, दुपै जिका दरद।। —६-४९
(नागडा) सूतो खूटी ताण, वतलाया बोलै नहीं।
कदेक पडसी काम, नोहरा करस्यो नागजी!।। —१६०-५८
सूतो सवड घरेह, विव पिछोडो पिंडरा।
सादो साद न देह, आवि वले ओ नागजी! —१६०-५६
सूवा किण देसे चला, सूरा किसा विदेस।
जिहा अपणा अन्नपाणीया, जिहा करस्या परवेस।। —१०६-१८०
सेल भलूका कर रह्यो, माढू(ढ़)डा घूमत।
आवो सखी सहेलडी, आज मिलाऊ कत।। —१५३-२८

सेवा सेहुतड़ांह, मांनव काय मानै नही।
पाथर पूजतआंहु, निरफल थई हो नागजी! १६०-५५
सो कोसां सजन वसै, वस कोसां हुवै नार।
तो नारी तेहुनै झूरै, पीउरी न जांणै पूकार॥ —११८-२४२
सो वाळ किण विध सही, ज्यारी काळ जात। —१८१-१२६
सोळ परसरी वीजोगणी, निठ मीत्यो भरतार।
हस्या न बोल्या हे सखी, आइयो लेष अपार॥ —१२२-२६४

ह

हठीया रावत वाकडां, तो विण रैन विहाय।
तेज पराक्रम ताहुरो, सो हिव कागा खाय॥ —१०७-१८६
हरिया हुयजो वालमा, ज्यूं वाडी के सिंग (साग)।
सो नगुणीके कारणे, करक वेसांण्या काय॥ —१०८-१८७
हरीया वागांरा राजवी, फूलां हुंवा हार।
तो तो छेतो बहु पड़ी, कूडे इण ससार॥ १०८-१८६
हीरण भला केहुर भला, सुकन भला के सांम बे।
उठो'र अरजुन बाण ल्यो, सीध करे श्रीरांम बे॥ —७०-१०
हीरां चाहे छैल चित, जोबन हुवो जोर।
किरणालो चाहे कमल, चाहे चद चकोर॥ —६-४३
हीरां मव आतुर हुई, चित प्रीतम की चाह।
विषधर ज्यु चवन बिना, विल की मिटै न वाह॥ —६-४२
हे विधनां तो सु कहू, एक अरज सु ण लेत।
वीछुडण अक'ज मेट कर, मिलबैको लिख वेत॥ —१५०-१०
होणहार सो बुध उपजे, भवीतव्य किण ही न हाथ बे।
तेरा नाम है हठमला, आओ कर मुझ साथ बे॥ —८७-२३
होणहार सो नही मिटै, लेष लिख्या छठी रात बे।
भलो बूरो सहू मांहरो, करसी विधाता मात बे॥ —७५-६६
होणहार सो ही'ज हुवो, स्यांणपथी क्या होय बे।
राजा कोपे भी भरयो, परजण सको कोय बे॥ —६८-५२

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर द्वारा

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला में प्रकाशित

राजस्थानी–हिन्दी-ग्रन्थ

१. कान्हडदे प्रबन्ध, (ग्र. ११), महाकवि पद्मनाभ विरचित; सम्पादक - प्रो. के. बी व्यास । मू. १२.२५
२. क्यामखां रासा, (ग्र. १३), कवि जान कृत, सम्पादक - डॉ. दशरथ शर्मा और अगरचन्द भवरलाल नाहटा । मू. ४.७५
३. लावा रासा, (ग्र १४) अपर नाम कूर्मवंशयशप्रकाश, गोपालदान कविया कृत; सम्पादक - श्रीमहताबचन्द खारेड । मू. ३.७५
४. बाँकीदास री ख्यात, (ग्र २१), बाँकीदास कृत, सम्पादक - श्रीनरोत्तमदास स्वामी । मू. ५ ५०
५. राजस्थानी साहित्य सग्रह भाग १, (ग्र. २७); सम्पादक - श्रीनरोत्तमदास स्वामी । मू. २ २५
६. राजस्थानी साहित्य सग्रह भाग २, (ग्र. ५२) तीन ऐतिहासिक वार्ताएं—बगडावत, प्रतापसिंह महोकमसिंह और वीरमदे सोनगिरा; सम्पादक - पुरुषोत्तमलाल मेनारिया । मू. २.७५
७. कवीन्द्र-कल्पलता, (ग्र. ३४), कवीन्द्राचार्य सरस्वती कृत, सम्पादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत । मू २ ००
८. जुगलविलास, (ग्र ३२), कुशलगढ़ के महाराजा पृथ्वीसिंहजी अपरनाम कवि पीथल कृत , सम्पादिका - रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत । मू १ ७५
९. भगतमाळ, (४३), चारण ब्रह्मदास दादूपथी कृत; सम्पादक - श्रीउदयराज उज्ज्वल । मू. १ ७५
१०. राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर के हस्तलिखित ग्रन्थो की सूची भाग १, (ग्र. ४२), ई. स. १९५६ तक सगृहीत ४००० ग्रथो का वर्गीकृत सूचीपत्र ; सम्पादक - मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य । मू ७ ५०
११. राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान के हस्तलिखित ग्रन्थो की सूची, भाग २, (ग्र ५१), ७८५५ तक के ग्रन्थो का सूची-पत्र ; सम्पादक – श्रीगोपालनारायण बहुरा । मू १२ ००
१२. राजस्थानी हस्तलिखित-ग्रन्थसूची भाग १, (ग्र. ४४), मार्च १९५८ तक के ग्रथो का विवरण , सम्पादक - मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य । मू. ४ ५०
१३ राजस्थानी हस्तलिखित ग्रन्थसूची भाग २, (ग्र. ५८), १९५८-५९ के सगृहीत ग्रंथो का विवरण , सम्पादक – पुरुषोत्तमलाल मेनारिया । मू. २.७५
१४. स्व. पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-ग्रथ-सग्रह, (ग्र ५५), सम्पादक - श्री गोपालनारायण बहुरा और श्रीलक्ष्मीनारायण गोस्वामी । मू ६ २५
१५ मुंहता नैणसी री ख्यात भाग १, (ग्र.४८), मुंहता नैणसी कृत, सम्पादक - आ० श्रीबदरीप्रसाद साकरिया । मू. ८ ५०

१६. मु० नैं० री ख्यात भाग २, (ग्र ४९), सपा०-आ०श्रीवदरीप्रसाद साकरिया। मू ९ ५०
१७. मु० नैं० री ख्यात भाग ३, ((ग्र ७२), „ मू. ८.००
१८ सूरजप्रकास भाग १, (ग्र. ५६), चारण करणीदान कविया कृत, सम्पादक—श्रीसीताराम लाळस। मू. ८.००
१९ सूरजप्रकास भाग २, (ग्र. ५७); सम्पादक - श्रीसीताराम लाळस। मू. ९.५०
२०. „ भाग ३, (ग्र ५८); „ „ „ मू. ९ ७५
२१. नेहतरग, (ग्र. ६३), बूदी नरेश राव बुधसिंह हाडा कृत, सम्पादक - श्री रामप्रसाद दाधीच। मू. ४ ००
२२ मत्स्य-प्रदेश की हिन्दी-साहित्य को देन, (ग्र ६६), लेखक डॉ मोतीलाल गुप्त, मू ७.००
२३ राजस्थान में सस्कृत साहित्य की खोज, (ग्र.३१), अनु० श्रीब्रह्मदत्त त्रिवेदी, प्रोफ़ेसर एस.आर भाण्डारकर द्वारा हस्तलिखित सस्कृत-ग्रथो की खोज मे मध्यप्रदेश व राजस्थान मे (१९०५-६ ई०) में की गई खोज की रिपोर्ट का हिन्दी अनुवाद। मू. ३.००
२४ समदर्शी आचार्य हरिभद्र, (ग्र ६८), लेखक–प० सुखलालजी, हिन्दी अनुवादक–शान्तिलाल म जैन। मू. ३ ००
२५. वीरवाण, (ग्र ३३), ढाढी बादर कृत, सम्पादिका–रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत। मू ४ ५०
२६ वसन्त-विलास फागु, (ग्र. ३६), सम्पादक - एम सी मोदी। मू ५ ५०
२७ रुषमणीहरण, (ग्र. ७४), महाकवि सांयाजी झूला कृत, सम्पादक–पुरुषोत्तमलाल मेनारिया। मू. ३ ५०
२८ बुद्धि-विलास, (ग्र. ७३), बखतराम साह कृत, सम्पादक–श्री पद्मधर पाठक। मू. ३ ७५
२९ रघुवरजसप्रकास, (ग्र ५०), चारण कवि किसनाजी आढा कृत, सम्पादक–श्री सीताराम लाळस। मू ८ २५
३० सस्कृत व प्राकृत ग्रन्थों का सूचीपत्र भाग १ (ग्र ७१), राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर सग्रह का स्वरित रोमन-लिपि मे ४००० का सूचीपत्र, अत मे विशिष्ट ग्रन्थो के उद्धरण, सम्पादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य। मू. ३७.५०
३१ सस्कृत व प्राकृत ग्रन्थों का सूचीपत्र भाग २ अ (ग्र. ७७), सम्पादक–पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य। मू. ३४.५०
३२ सन्त कवि रज्जब–सम्प्रदाय और साहित्य (ग्र ७६), लेखक–डॉ. व्रजलाल वर्मा। मू ७ २५
३३ प्रतापरासो, (ग्र ७५), जाचिक जीवण कृत, सम्पादक–डॉ मोतीलाल गुप्त। मू ६.७५
३४ भक्तमाल, राघोदास कृत, चतुरदास कृत टीका, सम्पादक–श्री अगरचन्द नाहटा। मू ६ ७५
३५ पश्चिमी भारत की यात्रा, (ग्र ८०) कर्नल जेम्स टॉड कृत, अनु० श्री गोपालनारायण वहुरा, एम ए. मू. २१ ००